बाहर दऽ आयलि छलैक ! रवि घुरि आयल छल— लव छिना गेल छलै । कविता खूनी कहने छलैक ओकरा । दोबारा लव हेरा जयतैक तँ माफ नहि करतैक कविता ओकरा, किन्नहु नहि ।

मुदा, कविताक लव गेनमा-बहुक दूध पीबि रहल छैक । सिंहनी छैक गेनमा-बहु ।

रवि निर्णय लऽ लेलक । कविताक मिझायल चिता दिस देखि मोनेमोन कहलकै–'हम फेर घूरि रहल छियौक कविता ! तोहर बात काटि रहल छियौक, क्षमा करिहैं ! तोँ लवकेँ मनुक्ख बनबऽ कहने छलेँ, हम तोहर लवक संग आरो-आरो लवकेँ मनुक्ख बनयबाक संकल्पक संग घुरि रहल छियौक । हमरा करऽ दे एक टा नवारम्भ, नव मनुक्ख, नव समाजक निर्माणक चेष्टा...तोहर लवक लेल । तोहर लव सन-सन हजारो-लाखो लवक लेल...'

तोँ खुशी भेलेँ ने कविता !'



राजा पोखरिमे कतेक मछरी ?

छी आ कहाँ जाइ छी । तोरा मारबो बेकार । अपने हाथमे चोट लगैत अछि । तोँ काठ छैँ, काठ ! शोणिते-शोणिताम भऽ जाइत छैं, मुदा एक ठोप नोर नहि अबैत छौ आँखिमे ।

कठरी बाबाजी चोरबा सभक संग चलैत बाजल- ''हमरा आँखिमे नोर किएक रहत हौ ? कोनो खराब काज कयने छी हम ! खाली एकटा बात पुछलिअऽ ताही लेल डेंगा देलह । अपने पछताइ जेबह ।''

सत्ते पछतायल चोरबा सभ ।

एकटा धनिकहाक घरमे सेन्ह मारलक— बड़काटा सेन्ह । माटि बहुत रास जमा भऽ गेलैक । घर पैसबामे झंझट होइ । एकटा चोर बाजल— ई कठरी बाबाजी बैसल किएक अछि ? इहो माँटि फेकत । केहन तऽ भिसिण्ड अछि !

कठरी बाबाजी आँगनक मुहथरि लग गेल आ जोरसँ हाक मारलक- घरैत छी यौ— घरैत छी यौ, सात जन चोर ठाढ़ छथि, सेन्ह कटने छथि से माटि फेकबा लेल छिट्टा मँगैत छथि ।

जाग भऽ गेलैक । घरबैया सभ दरब्बजा खोलि-खोलि दौड़लाह । चोरबा सभ लंक लगा पड़ायल । पकड़ल गेल कठरी बाबाजी । सभ ओकरे लाते-जुत्ते मारऽ लगलैक । कठरी बाबाजी खाली एतबे बाजल- ''आहि रे बा ! हमहीँ हाक लगा जाग करौलहुँ आ हमरे मारै छी ?''

छौंड़बा सभ कठरी बाबाजीकेँ थाना लऽ जयबाक लेल रहै मुदा बुझनुक सभ कठरी बाबाजीकेँ छोड़ा देलकै । सौंसे देह थूरल, शोणिते-शोणिताम भेल । कठरी बाबाजी ओतऽसँ डेग घिसयिबैत बिदा भेल ।

दोसर राति अन्हारमे सातो चोर निश्चिन्त बिदा भेल जे कठरी बाबाजीकेँ अबस्से मारि देने हेतैक सभ वा अधमरू कऽ जहल पठा देने हेतैक । ओ आइ जतरा नहि बिगाड़त । मुदा कठरी बाबाजी ओही बाटपर धूनी रमौने मौजूद छलैक— ''के तोँ थिका हौ ? के थिका, कहाँ जाइ छऽ, हमरा नहि कहै छऽ?''

लोहछल चोरबा सभ मारैत-मारैत ओधबाध कऽ देलकै-'तोँ जिबिते बाँचि गेलैं काल्हि, मुदा आइ नहि छोड़बौ हमरा लोकनि । ने रहत बाँस, ने बाजत बाँसुरी ।''

कठरी बाबाजी मारि खाइत रहल । एक्को बेर किलोल नहि कयलक । खाली एतबे कहलकै— आहि रे बा ! हमरा एना किएक मारैत छऽ ? हम तऽ खाली एकटा बात पुछने रहियऽ ।

मारैत-मारैत अकच्छ भऽ चोरबा सभ अपने छोड़ि देलकै- ''एकरा मारब बेकार छौ । लऽ चल आइ फेर एकरा । खाली कोनो काज नहि अढ़बियहिक आइ ।''

अपन झोरा-झपटा सरियबैत कठरी बाबाजी चोरबा सभक संग विदा भेल । चोरबा सभ ओइ दिन एकटा दोसर गाम गेल । एकटा बनियाँक दोकानक ताला तोड़ि ओइमे पैसल । शुरुएमे चीनीक पट्टा सभ राखल छलैक । बोरा फाड़ि-फाड़ि चोरबा सभ चीनी फाँकऽ लागल । एकटा कठरी बाबाजी दिस गेलैक । थोड़े चीनी ओकरो दैत कहलकै— ले, तोहूँ खो ।

कठरी बाबाजी अन्हारे घरमे झोरासँ निकालि भगवानकेँ पसारि भोग लगौलक । फेर लागल शंख बजाबऽ । चोरबा सभ लंक लगाकऽ पड़ायल । बनियाँक घरानि सभ लाठी-सोंटा लेने दौड़ल । कठरी बाबाजीकेँ मारैत-मारैत अधमरू कऽ देलकै । कठरी बाबाजी खाली एतबे कहैत रहलै- ''आहि रे बा, हमरा किएक मारैत जाइत छी ?''

बनियाँक घरानि सभ कठरी बाबाजीकेँ ओहिना मारैत रहलैक । फेर अपने थाकिकऽ छोड़ि देलकै । किछु बुझनुक सभ छोड़ा देलकै ओकरा । किछु काल बाद कठरी बाबाजी उठल आ डेग घिसियबैत बिदा भेल ।

चोरबा सभ ओ नग्र छोड़िकऽ भागि पड़ायल— कोनो दोसर नगर दिस !

बाबीक तुराइ तरमे दुबकल खिस्सा सुनैत भास्कर पुछलकै- ''ई कठरी बाबाजी के छलैक बाबी ?''

''बाबाजी छलैक— साधु-महात्मा''- बाबीक सहज उत्तर छलैक ।

''साधु-महात्मा ककरा कहैत छैक बाबी ?''

''महात्मा माने महात्मा ! माने जे घर-संसार त्यागि दैत अछि, जकरा कोनो वस्तुक लोभ नहि रहैत छैक !'' बाबी बुझयबाक चेष्टा कयलकै ।

''ओकरा चोट किएक नहि लगैत छलैक बाबी ?'' भास्कर फेर प्रश्न कऽ देलकै ?

''चोट कोना लगितैक ? ओकर देह तऽ काठक छलैक- तेँ नाम छलैक कठरी बाबाजी।''

बाबी सहजतासँ उत्तर देलकै। भास्करक जिज्ञासा मुदा शान्त नहि भेलैक। पुछलकै- ''काठक छलैक तऽ शोणित कोना बहलैक, कप्पार कोना फुटलैक ?''

बाबी गड़बड़ाय लगलैक। एहि प्रश्नक तत्काल कोनो उत्तर नहि देलकै। भास्करक जिज्ञासाक अन्त नहि भेल छलैक- ''मनुक्खक देह काठक कोना भऽ गेलैक बाबी ? साधु महात्मा मनुक्ख नहि होइत छैक ?''

एहि प्रश्नपर बाबी बड़ गम्भीर भऽ गेलैक। पोताकेँ तुराइ तरमे आर नीक जकाँ अपन जर्जर पाँजरसँ सटा कहलकै- ''मनुक्खे छलै बौआ, मुदा जे मनुक्ख अन्याय-अनीतिकेँ टोकारा दैत छैक, ओकरा एहिना सभक लात-जूता खाय पड़ैत छैक। अपन देहकेँ काठ बनबऽ पड़ैत छैक आ आत्माकेँ अजेय।''

एतबा कहि बाबी चुप्प भऽ गेलीह। डर भेलनि जे भास्कर फेर ने कहीं प्रश्न कऽ दिअय—आत्मा की होइत छैक ? अजेय माने की भेलैक ?

भास्कर सूति गेल छल। अपन प्रश्नक उत्तर सुनैत-सुनैत ओकर आँखि लागि गेल छलैक। आत्मा आ अजेय शब्द ओ नहि सुनि सकल। सुनैत तऽ बाबीकेँ घण्टो आरो सबाल पूछि-पूछिकऽ अकच्छ कऽ दितनि।

ओना बाबी ओकर प्रश्नसँ कखनो अकच्छ नहि होइत छलथिन। सूतल भास्करक माथक झबरल केशकेँ सोहरबैत बाबीक अपनो आँखि झपकऽ लगलनि।

घरमे अन्हार पसरल छलैक। डिबिया नहि जानि कखन मिझा गेल छलैक। घरक कोन महक अगियासीक आगि सेहो भुम्भुर भऽ गेल छलैक, खाली छाउर तर आगि रहि गेल छलैक, भोरे अगियासी फेरसँ पजारि लेबाक हेतु।

साँझसँ अइ घरमे बड़ भीड़ छलैक। पहिने अगियासी ओसारापर होइत छलैक। जाड़ बढ़लैक तऽ घरमे होमऽ लगलैक। बाबीक अगियासी लग आ बिना अगियासियोक बाबीक बैसारमे बारहो मास चौसज्झा आंगनमे सभ आँगनक धीया-पूतासभ साँझेसँ जमा भऽ जाइत छल। आँगनक नामेटा चौसज्झा रहि गेल छलैक। ओ छलनि आब महेन्द्रनाथ चौधरीक, माने भास्करक पिताक। कहिओ भास्करक पितामह अपन चारू भाइक संग एहि आंगनमे छलथिन। चौसज्झा आंगनक चारूकात चारिटा कोठा छलैक— एक-एकटा सभ फरीकक। फेर बाँट-बखरा

भेलैक- तीनटा फरीक अइ आँगनसँ बाहर चल गेला, बदलेनक जमीन आ टाका भेटि गेलनि। आंगनमे रहि गेलाह महेन्द्रनाथ चौधरीक पिता। हुनकर साबिक पछबरिया कोठा छलनि जाहिमे आब महेन्द्रनाथ चौधरीक माय रहैत छलथिन बड़का बिचला कोठलीमे। एक कात पूजाघर छलनि आ दोसर कोठलीमे वस्तु-जात राखल छलैक। पुरान-पुरान सनुकचा आ आलमारीमे ठूसल अड़जाल-खड़जाल सभ। चोरबा-नुक्की खेलाइत काल धीया-पुता सभकेँ बड़का-बड़का अलमारी-सन्दूक सभक पाछाँ नुकयबामे खूब सुविधा होइक- तालो ने लगैक ओइ घरमे आब। दक्षिणबरिया कोठामे महेन्द्रनाथ चौधरी अपने रहैत छथि। उतरबरियामे हुनकर जेठ बालक शचीन्द्रनाथ चौधरी जिनका सभ सचिन बाबू कहैत छनि। भास्करसँ बीस वर्ष पैघ छथिन। पुबरिया कोठावला फरीक बदलेन नहि मानलथिन। जमीन तऽ दऽ देलथिन मुदा अपन सभटा ईटा उखाड़ि ओ ठीक सटले घूमिकऽ अपन आंगन बना लेलथिन। महेन्द्रनाथ चौधरीक पिताक पुबरिया घरक प्लौटसँ सटल हुनकर पछबरिया घर बनि गेलनि आ आंगनक मुँह आर आगू बढ़ा ओ ओहि ठाम बसि गेलाह। महेन्द्रनाथ चौधरीक पिताकेँ असुविधा भेलनि। ओइ पुबरिया प्लौटपर ओ एकटा बड़का भनसाघर बनबा लेलनि, खूब पैघ-पैघ तीनटा कोठली। खूब ऊँच कुर्सी आ ताहि पर ईंटाक देबाल। धरनि-खंभा सभ सखुआक मुदा उपरमे खपड़ा। सभसँ दक्षिणबरिया कोठलीमे भड़ार बनलनि, तकर सटले विधवालोकनि लेल फराक भनसाघर। अरबा खायवाली सभक। बादमे जहिआ विधवा ब्राह्मणी नहि भेटैत छलनि, स्वयं महेन्द्रनाथ चौधरीक माय भानस करैत छलीह। सधवाक छूअल नहि खाइत छलीह। आ तकरे सटल घरमे उसनाक पटल छलैक- ओहूमे एकटा ब्राह्मणिये भानस करैत छलीह- मुदा ओइमे सधवो रान्हि सकैत छल। दलानक दिक्कति रहि गेलनि। साबिक बंगलीमे अपन हिस्सा छोड़ि देने छलाह। पाहुनपरक-कुटुम्बकेँ सोझे अंगना कोना लबितथि ? दलान बनाबहे पड़लनि। कने हँटिकऽ आंगनक मुँहथरिसँ उतरबारि कात दू-तीन सय लग्गा बाद खूब नीक बासक जमीन छलनि। ओतहि अपन दलान बनौलनि। बाड़ी-फुलबाड़ी लगौलनि। ओहूमे दूटा कोठली देलखिन— दुनू कातमे। खूब ऊँच चार- सीटल खढ़सँ छारल। दुनू कोठली आ बीचक बरण्डा सीमेण्ट कयल। ओइ बरण्डामे पाँचो सय आदमी एक संग बैसि सकैत छल। नाचमे भरि गामक लोक ओतहि जुमैत छल। स्त्रिगण सभ लेल शामियाना ठाढ़ कऽ ओकरा तीन दिससँ कनातसँ घेरि आगूमे सिड़की लगाओल जाइत छलैक। महेन्द्रनाथ चौधरीक बाप महारुद्र चौधरी बड़ एकबाली आ रसिक छलाह। हुनके एकबालसँ सभ होइत छलनि— नाच-गान... शोभा सुन्नर।

सुन्नरि-सुन्नरि चारिटा कुलीन कन्यासँ विवाहो कयने छलाह- सभ सोति-योग्यक बेटी । महारुद्र चौधरीक प्रपितामहकेँ जहिया जमींदारी भेटलनि, मैथिल समाजमे मोजर नहि दैनि ! छोटहा बुझनि सभ- कुलीन मैथिल ब्राह्मणक बटीकेँ पुतहु बना अनबाक जिद्द ठानि लेलनि । रसिकक संग-संग महारुद्र चौधरी असली रुद्रक अवतारो छलाह । सौंसे इलाका डरें थर-थर कँपैत छलनि । जकर बहु-बेटीपर नजरि गड़लनि— ओकरा उठा हवेली मंगबा लेबऽमे कनियो देरी नहि होइत छलनि ।

कुलीन ब्राह्मणकेँ उठा अनबामे मुदा बड़ कष्ट भेलनि महारुद्र चौधरीकेँ । हुनक बाप अपन सभ बेटीकेँ द्ररिद्र, बूढ़-बताह-बौन-कैल जेहन भेटलनि तेहने कुलीन ब्राह्मणकेँ बिआहि देलथिन । हुनको चारि विवाह रहनि, चारू विवाह मिला सतरहटा बेटी रहनि । सभकेँ बसौलनि अपने गाममे, घराड़ी देलथिन । बिक्रीमे पूर्ण मूल्य लेबऽक सिद्धान्ती भलमानुस सभ अपन मूल्य पाबि सन्तति ओही गाममे छोड़ि बिदा भेलाह । सतरह बहिनमे चारि भाइ छलाह महारुद्र चौधरी । हुनको अपन बेटी देबामे भलमानुसवर्ग बड़ मोल-तोल कयलकनि । भलमानुसक बेटीक मूल्य ओहि समय बेसी रहैक । राजा-जमीन्दारक घर बेटी देबामे खूब मूल्य भेटैत छलैक । महारुद्र चौधरीक प्रपितामहे तैयार छलथिन मूल्य देबा लेल । मुदा महारुद्र चौधरी जिद्दी, तिकड़मी आ क्रूर छलाह । अपन पैघत्वकेँ कोनो दिशामे कम नहि देखऽ चाहैत छलाह । जाति-गर्वयुक्त समाजक चारिटा कुलीन कन्याकेँ अपन स्त्री बनाकऽ अनलनि । पहिल विवाह बाप छोटे बाभनक बेटीसँ कऽ गेल छलथिन मुदा ओ स्त्री नहि रहलथिन । किछुए दिन बाद मरि गेलथिन । महारुद्र चौधरी तकर बाद चारिटा विवाह कयलनि... चारू सोति-योग्यक बेटी । सभसँ छोट छलथिन महेन्द्रनाथक माय...भास्करक बाबी । चारू स्त्रीसँ एक-एकटा बेटा आ तीन-तीनटा कन्या छलनि । सभ बेटीकेँ बिआहि सासुर पठौलनि । गाममे आर बसैबा जोगर जमीन नहि छलनि । हबेलीसँ सभकेँ मदति भेटि जाइत छलनि । चारू भाइ सचेष्ट भेला धरि एक्के आंगनमे रहलाह । तकर बाद बँटवारा भेलनि आ साबिक आंगनमे रहि गेलाह एकसर महेन्द्रनाथ चौधरी ।

आ साबिक उतबरिया कोठाक ओसारा आ कोठलीमे भास्करक बाबीक अगियासी लग सभ आँगनक धीया-पुताक बैसार होइत छलैक । ओइ ठाम लालटेनक बदला सदिखन एकटा डिबिया जरैत छलैक— माटिक बनल दीपघर पर राखल पैघ सन डिबिया । ओही डिबियाक इजोतमे बाबी खिस्सा कहैत छलैक । भास्कर मुग्ध भेल सुनय... आरो धीया-पुता सभ सुनैत छल । बाबीक रामायण एकटा लाल

कपड़ामे बान्हल लकड़ीक बनल तिनकोनमा फ्रेमपर सदिखन राखल रहैत छलनि— कौखन हुनकर बिछौनपर तँ कौखन हुनकर अगियासी लग । ओही स्टैण्डपर पोथी पसारिकऽ पढ़ब शुरू करैत छलीह बाबी । लगभग दस इंच ऊँच छलैक ओ लकड़ीक स्टैण्ड । जखन पढ़बाक इच्छा होइत छलैक, ओइ लाल कपड़ाकेँ खोलि पोथीक बीच राखल चश्माक टिनही खोल बाबी बहार कऽ लैत छलैक । गोल शीशावला चश्मा, लचपच कमानी-चममच करैत । कमानीकेँ तानिकऽ बाबी कानपर चढ़ा लैत छलैक आ कथा बाँचऽ लगैत छलैक–

मंगल भवन अमंगल हारी
द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी

आ बच्चा सभक भीड़ बढ़ले जाइत छलैक । बीच-बीचमे बाबी माने सेहो कहने जाइत छलैक । बाबीक गला खूब महीन आ कोमल रहैक । गयबा काल भाव-विमुग्ध भेलापर स्वर आर कोमल भऽ जाइत छलैक । रामायण पाठ किछु काल । तकर बाद खिस्सा सभक फरमाइश । खिस्सापर खिस्सा । बेशी धीया-पुता सभ खिस्सा सुनैत-सुनैत ओहीठाम बाबीक अगियासी लग पटियापर ओंघरा जाइत छल । ओकरा आंगनसँ आबि ओकर माय-बहीन ओकरा सभकेँ उठाकऽ जाइत छलैक । कखनो नोकरबाक कोरामे बाबी स्वयम् पठबा दैत छलथिन । आ बैसकी टुटलाक बाद, अगियासीक आगि भुम्भुर भेलाक बाद अपन बिछौनपर आबि, ओढ़ना वा तुराइ तर दुबकल भास्कर असगरे खिस्सा सुनैत छल बाबीसँ । कठरी बाबाजी बला खिस्सा, ओ खिस्सा खतम होइत देरी भास्करक अन्तहीन जिज्ञासा शुरू भऽ जाइत छलैक—

–लोभ ककरा कहैत छैक ?

–चोर लोक किएक बनैत छै ?

–साधु-महात्मा ककरा कहैत छैक ?

–मनुखक देह काठक कोना भऽ सकैत छैक ?

आ उत्तर सुनैन-सुनैत भास्करक पपनी भारी भऽ जाइत छलैक आ ओकर माथक मोलायम केशकेँ सोहरबैत बाबी अपनो सूति रहैत छलीह ।

भोरेसँ भास्करक प्रश्न चालू भऽ गेलैक ।

ओकर माय भनसा-भड़ारक झंझटिसँ आइ-काल्हि निश्चिन्त छलैक । प्रेमा भानस-भात शुरू कऽ देने छलैक ।

विधवा ब्राह्मणी छथि प्रेमा । नैहरमे अपन विधवा माय लग अपन एकमात्र पुत्रक संग रहैत छथि । विधवा भेलाक बाद भैंसुर-देओर मिलिकऽ सभटा हिस्सा हड़पि लेलकै आ गामसँ बैला देलकै । प्रेमाक अयलासँ भास्करक मायकेँ बड़ सुविधा भऽ गेलैक । पहिने एकटा भनसामे सधवा ब्राह्मणी भानस करैत छलीह आ दोसरमे अरबाक पटल स्वयम् भास्करक बाबी सम्हारैत छलीह । गौरी चौधराइन विधवा छलीह आ हुनकर चौका फराक छलनि । स्वयम् रन्हैत छलीह मुदा टहलूमे ठाढ़ि रहैत छलथिन पुतहु-महेन्द्रक पत्नी आशा । भास्करक माय आशा चौधराइन । मात्र एक गोटेक भानस लेल सभटा वस्तुक पूरा ब्योंत करऽ पड़ैत छलनि । प्रेमाक आबि गेलासँ सधवा ब्राह्मणीक काज नहि रहलनि । सभक काज एक्के भनसामे भऽ जाइत छलनि । माछ-माउस जहिआ रन्हबाक भेलनि, तहिये दोसर भनसाघरक उपयोग होइत छलैक आ भास्करक माय अपने रान्हि लैत छलीह । भनसाघरक सभदिना झंझटि प्रेमाक रहलासँ कमल रहैत छलनि ।

भास्करक चलते मुदा झंझटि बढ़ि गेल छलनि । बाबीक औछौनसँ उठि ओ सोझे माय लग अबैत छल । बाबी अन्हरोखे उठि प्रातःस्नानमे चल गेल रहैत छलैक । माय भास्करकेँ कुरूड़-आचमनि करा सभ दिन एक गिलास दूध दैत छलथिन । ओइ दिन गिलास हाथमे पकड़ने एकटा प्रश्न कऽ देलकनि भास्कर— माय, एकटा बात कह । तोँ हमरा सभ दिन पीबऽ लेल दूध दैत छैँ, चलितराक बेटा के कहाँ दैत छहीक ?

ओकर प्रश्नपर अकचकाइत माय बजलैक- "मर, ओकरा किएक देबैक हम दूध ? ओ कोनो हमर बेटा अछि ! पिबऽ जल्दीसँ दूध ।"

भास्कर ओहिना गिलास पकड़ने ठाढ़ रहल । किछु कालक बाद बाजल- जहिना हम तोहर बेटा छियौ, तहिना ठकना चलितराक बेटा छैक । महीस चलितरे चरबैत अछि, ओकरा घास-भूसा वैह दैत छैक, दूध वैह दुहैत अछि, तऽ ओकर बेटा किएक नहि पितैक दूध ?

माय गम्भीर होइत कहलकै— अपन-अपन भाग्य, पछिला जन्मक भोग । तोरा अरजल छऽ, ओकरा नहि छैक ।

पछिला जन्मक अरजल आ भाग्यक बात किछु नहि बुझलकै भास्कर । खाली जिदपर अड़ि गेलैक— "ओकरो पिआ दहीक ने दूध सभ दिन ! हमरे बतारी तऽ अछि ।"

माय एकदम बिगड़ि उठलैक- "दुर जो, हम किएक पिएबैक ओकरा ? हमरा अपना धिया-पुता नहि अछि कोनो ! जल्दी पीबि लैह दूध ।"

मायक तामसपर बिना कोना ध्यान देने भास्कर कहलकै- "खाली अपने धिया-पुताकेँ दूध पिअबैत छैक लोक ? सभक धीया-पूताकेँ नहि पिआ सकैत छैक ?"

माय अवाक् । कोनो उत्तर नहि फुरलनि । गिलास जबर्दस्ती ओकरा मुँहमे सटा देलथिन । दूध बेमनसँ पीबि गेल भास्कर । माय आँचरसँ ओकर मुँह पोछैत कहलथिन- 'जा नहा-सुना लैह । गुरुजी अबिते हेथुन । नहा-सुनाकऽ बस्ता लऽ बैसऽ दलानपर, स्कूलो जयबाक छऽ ।' माय ओकरा टरका देलकै तकर भास्करकेँ दुख भेलैक । चुपचाप ओतऽसँ सहटि गेल । नहा-सोनाकऽ दरबज्जापर गुरुजीक प्रतीक्षामे बैसि गेलि । गुरुजी ओकरा एना प्रतीक्षामे बैसल देखि चौंकि गेलथिन— "की बात छै आइ ? पहिनेसँ मौस्तैज छऽ ।"

—"छै एकटा बात गुरुजी ! अहाँसँ किछु पुछबाक अछि !"

भास्करक गम्भीर स्वरपर उत्सुकतासँ मुसकिआइत गुरुजी कहलथिन— पुछह ।

—"भाग्य ककरा कहैत छैक गुरुजी ?"

गुरुजीक मुसकी हँसीमे बदलि गेलनि- "इएह पुछबा लेल भोरेसँ बैसल छलह ? भाग्य कहै छै लिखलाहाकेँ । सभक कपारमे लिखल छैक फराक-फराक । ककरो देखहक जे कतेक धनिक अछि आ क्यो खयबो लेल बेलल्ल—

भास्कर बीचहिमे बाजल- "कहाँ ककरो कपारमे लिखल देखैत छियैक किछु ? कपार तऽ सभक एके रंग देखैत छिऐक । फेर एना कोना भऽ जाइत छैक ? किएक हम दूध पीबैत छी, आ चलित्तराक बेटा माड़-"

गुरुजीक हँसी बिला गेलनि । विह्वल होइत कहलथिन- "नै पुछऽ ई सवाल तोँ । बड़ बच्चा छऽ अखन । युवावस्थामे एकटा राजकुमारकेँ इएह सभ प्रश्न उठल रहनि मोनमे । आरो-आरो पैघ प्रश्न— मृत्यु, वृद्धावस्था । उत्तर नहि

भेटलनि । उत्तर तकबाक लेल अपन सुन्दर पत्नी आ अबोध बेटाकेँ सूतल छोड़ि घरसँ बाहर भऽ गेलाह, कतेको ठाम बौअयलाह । सभ किछु छोड़ि देलनि, तखन ज्ञान भेटलनि ।''

''की ज्ञान भेटलनि गुरुजी ?'' भास्कर उत्सुकतासँ पुछलकनि ।

''अखन से नै बुझबहक तोँ । बड़ बच्चा छऽ ।''

''मुदा गुरुजी ओ ज्ञान घरमे नहि भेटलनि तऽ कतऽ खसल भेटलनि ? सभकेँ छोड़ि देलाक बाद लोकके ओ खसल ज्ञान भेटि जाइत छैक ?''

गुरुजी निरुतर भऽ गेलथिन । चिन्तित भावे भास्करकेँ देखैत रहलथिन। चेहरापर जेना आँखि सटि गेलनि । अदुभुत रूप, जेहने रंग, तेहने गढ़नि । आकृतिपर एकटा निष्कलुष जिज्ञासा । गुरुजी देखते रहि गेलाह अपन बारह वर्षक शिष्यकेँ।

भास्कर टोकलकनि- ''की देखैत छी गुरुजी ! हमर प्रश्नक उत्तर नहि देलहुँ ?''

गुरुजी उठैत कहलथिन- ''अनेरो प्रश्न सभसँ मोन भारी नहि करी । जिनगी एकटा भारी परीक्षा छैक आ अइमे कठिनसँ कठिन प्रश्न सामने अबैत रहैत छैक । सभक उत्तर मनुष्य अपने तकैत अछि । जकर उत्तर नहि भेटैत छैक ओकरा ईश्वरक लीला मानि माथ झुका लैत अछि । जा, आब आइ आरो पढ़ाइ करब बेकार। तोहर मनमे बहुत रास प्रश्न भरल छऽ । सभटाकेँ बिसरि हल्लुक मोनसँ स्कूल जाह । अपन पाठपर ध्यान दैह ।''

गुरुजी चल गेलथिन मुदा ओकरा मोनमे प्रश्न सभ औनाइत रहलैक । कठरी बाबाजीक खिस्सा मोन पड़ैत रहलैक । निरपराध मारि खाइत शोणिते-शोणिताम भेल कठरी बाबाजीक आकृति आ पसायल माँड़ दिस तृषित नेत्रे तकैत चलित्तराक बेटा ठकना । कखनो आंगनक कोनटा लग ठाढ़, कौखन बथानपर बैसल, कारी भुजुंग, नंग-धड़ंग । डाँड़मे एकटा फाटल चेफड़ी लागल छोटे सन पैण्ट । कारी चेहरापर बड़ीटा आँखि आ ओइ बड़ीटा आँखिमे झलकैत बड़ीटा भूख ।

भूख ओकरा लागि गेल छलैक । भनसाघर आबि प्रेमाकेँ कहलकै- खाय लेल दिअऽ प्रेमा पीसीऽ ! स्कूल जायब ।

प्रेमा झट थारी परसऽ लगलैक- 'लिअऽ बौआ ! भऽ गेल अछि ।''

प्रेमा पीसीकेँ देखिकऽ फेर कतेको सबाल ओकर मोनमे घुरिआय लगैत

छैक । प्रेमा पीसी एतेक सुन्दर किएक छैक ? केहन गोरि आ केहन झलकैत चेहरा ! मैल पानि-माटि लागल बिन-पढ़िया नूओ मे केहन नीक लगै छै प्रेमा पीसी ! मायोसँ सुन्नर । सदिखन छपुआ आ रंगल नूआ पहिरियोकऽ माय प्रेमा पीसी सन कहाँ लगैत छैक ? भास्कर हुनका दखिते रहि गेल । कौर उठबे नहि करैक । प्रेमा लग आबि गेलै- ''की भेल बौआ, खाइ नहि छी ?''

-''आइ भूख नहि अछि ।'' भास्कर उठऽ लागल ।

प्रेमा पकड़िकऽ बैसा देलकै- ''हे देखू, अखने कहै छलहुँ बड़ भूख लागल अछि आ अखने उठल जाइ छी । लिअऽ, हम खुआ दैत छी ।'' प्रेमा अपने हाथे खुआबऽ लगलै । भास्करकेँ नीक लगलै मुदा ऊपरसँ ना-नू करैत बाजल- ''हम कोनो बच्चा छी आब ! छठामे पढ़ै छी, लोक देखत तऽ हसँबो करत ।''

प्रेमा ओकरा मुँहमे कौर दैत बजलैक- ''हँसत किएक बौआ ? माय लेल तँ धीया-पुता सदिखन बच्चे रहैत छैक । हमरो मनोरथ तऽ पूरऽ दिअऽ कनी !

मुँहक कौर चिबा भास्कर बाजल- ''मुदा ब्रह्माकेँ कहाँ कहिओ खुअबैत छियैक अपने हाथे ? अहाँक बेटा तऽ ओ अछि ।''

प्रेमाक चमकैत आकृति मलिन भऽ गेलैक । मुदा ओहिना कौर पर कौर दैत रहलैक भास्करक मुँहमे । कहलकै- ''अहूँ अपने बेटा छी बौआ ! अपन-अपन नसीब छैक । जा धरि बाप जीबैत रहैक, सभ दिन कोरेमे बैसाकऽ खुएलकै । आब हम अभागलि कमेबै-खटेबै, की कोरामे खुएबै ओकरा ?''

प्रेमाक बेटा ओकरे बतारी छलैक । ओकरे संग स्कूल जाइ छलैक मुदा सभदिन भुखले । ओ प्रेमाकेँ टोकै— ''हमरे संग ब्रह्मोकेँ खुआ दिऔ ने प्रेमा पीसी !''

प्रेमा टारि दैक- ''अहाँ खाउ ने बौआ ! ओ खयने छैक । फेर बेरियामे खा लेतैक हमरा संगे ।''

ब्रह्माक सुखायल मुँह देखिकऽ ओ बूझि जाइत छलैक जे भोरेसँ भूखल छैक । दुपहरियामे प्रेमा कहियो हवेलीमे नहि खाइत छलीह । अपन थारी अपन आँगन लऽ जाइत छलीह । ओहीमे अपन माय आ अपन बेटा दुनूकेँ खुअबैत छलीह- भास्करकेँ बूझल छलैक ।

आइयो स्कूल जयबा लेल बस्ता लेने ब्रह्मा ठाढ़ छलैक आ प्रेमा मुँहमे कौर देने जा रहल छलैक भास्करकेँ ।

बेशी खा नहि भेलैक । प्रेमा पीसीक हाथ रोकैत कहलकै- ''आब बस्स ।''

मुँह-हाथ धोकऽ बस्ता लऽ ब्रह्माक संग घरसँ बहरायले छल कि दरबज्जापर क्यो किलोल करऽ लगलैक । दौड़िकऽ बाहर आयल । ठकनाकेँ भैया गाछमे उनटा लटकाकऽ बान्हि देने छलथिन । देहपर घोड़नक छत्ता राखल छलैक आ उपरसँ ओकर खाली देहपर भैयाक बेंत बरसि रहल छलैक । छौँड़ाक किलोलसँ आसमान फाटि रहल छलैक । भास्कर दौड़िकऽ ठकनाक देहपर झूकि गेल । भैया तामसे गरजलाह- ''तोँ हँटि जो भास्कर ! आइ हम एकर जान लऽ लेबैक ।''

''नै भैया, एना नहि मारियौक । मरि जेतैक ।'' भास्कर नेहोरा करऽ लगलनि ।

भैया ओकरा ठेलिकऽ हँटबैत आ ठकनाक देहपर सड़ाक-सड़ाक बेंत मारैत गरजलाह- ''पहिने एकर कसूर तऽ सुन । सरबा नम्बरी चोर अछि । तोहर भौजी कलपर नहाइत छलीह, घड़ी खोलिकऽ रखलनि से अयबाकाल उठायब बिसरि गेलनि । ई गेल तकर बाद आ घड़ीकेँ तेना निपत्ता कयलक जे मारिकऽ हमही थाकि गेल छी, ई नहि गछैत अछि । सरबा सभ दिन भोरेसँ आंगनमे हुलुक-बुलुक करैत रहैत अछि ।''

चलित्तरा लपकिकऽ पैर छानि लेलकनि भैयाक- ''फेर आंगनमे पैर नहि देत छोटका मालिक ! दूगो बसिया रोटी आ कने माँड़ लेल अगोरने रहै हय अंगना। ई अहाँक चीज नहि उठओत छोटका मालिक ! एना मालजाल जकाँ नहि मारियौ . ...मरि जायत हमर नेना ।''

भैया ओकरो चारि बेंत लगा देलथिन- ''भाभट नहि कर । खाली भगल कयने छौक । कोनो चोट लगै छैक एकरा ? आँखिमे नोर छैक ? सार, सेन्हा चोर अछि ।'' भास्कर भैयाक हाथक छड़ी लूझि लेलकनि । तावत गुजरी खबासिनी अंगनासँ दौड़लि अयलैक- ''बौआसिनक घड़ी भेटि गेलनि । कल परसँ उठाकऽ आलमारीमे राखि देने छलथिन । बिसरि गेल छलनि ।''

भैया कने अप्रतिभ भेलाह । फेर बलधकेल हँसैत बजलाह-''ई स्त्रिगणो सभक लीला अपरम्पार होइ छै । अखने अंगनामे मुँह फुलौने छली जे हेरा गेल । लगले भेटियो गेलनि । मुदा ई ठकना सार अछि अबस्से सेन्हा चोर । खबरदार, जौँ फेर आंगनमे अयलैं... ।

तावत भास्कर ठकनाक बन्हन खोलि देने छलैक । लगभग बेहोश सन ठकनाकेँ कोरामे उठौने चलित्तरा बथान दिस चल गेल । दरबज्जापर थहाथही लोक जमा भऽ गेल छलैक । मुदा जेना किछु भेले नहि होइ-अति साधारण बात । सभ अपन-अपन घर बिदा भेल । भैयो अंगना चल गेलाह । खाली भास्कर सुन्न भेल ठाढ़ रहय जेना ओकरे उन्टा लटका कऽ घोड़नक छत्ता देह पर छोड़ि कऽ बेंत मारने होइ क्यो । ओ बड़ी काल धरि ओहिना ठाढ़ रहल ।

ब्रह्मा टोकलकै- स्कूल नहि चलब ?

भास्कर ओकरा विदा करैत कहलकै-''तोँ जो आइ । हमर मोन ठीक नहि अछि ।''

ओ बथान दिस गेल । पुआरपर गमछा बिछा कऽ पाड़ने छलैक ठकनाकेँ । आँखि बन्न छलैक मुदा हिचकीसँ अखनो सौँसे देह सिहरि रहल छलैक । चलित्तरा लगमे कातर सन बैसल छल ।

लग बैसि कऽ भास्कर पुछलकै-''कोनो दवाइ-तवाइ देबहिक ?'' चलित्तरा ओहिना कातर भावसँ तकैत रहलैक ।

भास्कर दौड़ल आंगन गेल । मायकेँ कहलकै-''कोनो दवाइ दे माय ! ठकना बेहोश पड़ल छैक, सौँसे देह फूटल छैक ।''

मायक बदला कोठलीसँ बाबूजीक स्वर अयलैक-''अहाँ एखन धरि स्कूल नहि गेलहुँ भास्कर ?''

-''बस्स, जाइ छी बाबूजी''- बाबूजीक अप्रत्याशित उपस्थितिसँ सहमल बाजल ।

-''जाइ छी नहि, जाउ । स्कूल हरदम समयपर जयबाक चाही ।''

भास्कर स्कूल दिस बिदा भेल । साँझधरि स्कूलेमे रहल मुदा सदिखन तहिना छटपटाइत रहल जेना क्यो ओकरे गाछसँ उनटा टांगि देने होइ आ देहपर घोड़नक छत्ता राखि बेँतसँ पिटने जा रहल होइ ।

भास्करकेँ किछु बजबाक, विरोध करबाक साहसे नहि भेलैक। ओकरा पढ़बा लेल शहर पठा देल गेलैक।

बाबूजी एकाएक ओइ दिन घोषणा कऽ देलथिन— गामक स्कूलक पढ़ाइ ठीक नहि छैक। आब तोँ दरभंगे मे पढ़बह। काल्हि चलिहऽ हमरा संग दरभंगा नाम लिखैबाक हेतु।''

सत्र शुरू भऽ गेल छलैक। जिला स्कूल मे सभ सीट भरि गेल रहैक। दोसर एकटा नामी स्कूल छलैक। गामक स्कूल सँ कक्षा मे प्रथम अयबाक प्रमाणपत्र अनने छल। तैयो ओइ स्कूलक हेडमास्टर स्वयम् परीक्षा लेलथिन आ नाम लिखा गेलैक। होस्टलमे सेहो सीट भेटि गेलैक।

सीट भेटलैक सैह टा। तीन सीटवला कोठलीमे एकटा चौकी। होस्टलमे बारह टा कोठली छलैक, सभमे तीन-तीन टा चौकी। खाली दूटा कोठली सिंगल सीटवला रहैक। स्कूलक पछुआर मे रहैक होस्टल। विद्यालय भवन बड़ सुन्नर रहैक। हल्लुक लाल रंगक पक्का भवन अंग्रेजीक 'इ' अक्षरक आकार मे बनल। पैघ आ सुरुचिपूर्ण। मुदा होस्टल रहैक ओतबे खराब। खपरैल घर। देबाल भखरल। कोनो कोठलीमे पंखा नहि। दस बजे रातुक बाद बिजली सेहो बन्द भऽ जाइ।

ओइ होस्टलमे बड़ डर होइ छलैक भास्करकेँ। बेर-बेर गाम मोन पड़ैत छलैक। माय-भौजी आ प्रेमा पीसी मोन पड़ैत छलैक आ भरि-भरि राति जगले रहि जाइत छल। गर्मीसँ कछमछ करैत, अज्ञात आशंकासँ भयभीत।

कोठलीमे दुनू दसमा क्लासक विद्यार्थी रहैक। बेस पैघ-पैघ छौंड़ा। ओकरा सभक संग रहब भास्करकेँ कहियो नीक नहि लगैक। जहिया सामान लऽ कोठलीमे आयल छल, तहिए पड़ा जयबाक इच्छा भेल छलैक। मुदा बाबूजी मोस्तैद छलथिन। नाम लिखा, होस्टलमे राखि, गाम घुरि गेलथिन। भास्करकेँ किछु कहबाक साहसे नहि भेलैक।

दिनभरि स्कूलमे नीक जकाँ बीति जाइत छलैक। पढ़ाइ बढ़ियाँ होइत छलैक। नव-नव संगी भेटलैक। क्लासटीचर सेहो मानऽ लगलैक।

होस्टलमे अबैत देरी मोन कतहु पड़ा जयबा लेल औना उठैक। ओ छोटछीन गुमसल कोठली आ कोठलीमे सटल-सटल चौकी। ओइ चौकी सभपर दूटा अनचिन्हार आ घिनौन सन छौंड़ा सभ। एकटा दिनभरि अपन मुँहमे पाउडर-क्रीम

मलैत रहैक आ दोसर कच्छा पहिरि भोर-साँझ डण्ड बैसक करैक। भास्कर आँखि बन्द कयने पड़ल रहय।

ओहू राति आँखि बन्द कयने पड़ल छल। कोठलीमे अन्हार छलैक– गुमसल अन्हार। कछमछ करैत घण्टो बीति गेलैक मुदा आँखिमे कनियो निन्न नहि, दोसर चौकीपरसँ गोपाल टोकलकै- ''अन्हारमे एकसर डर लगैत हेतौक भास्कर, हमर चौकीपर आबि जो।''

भास्कर कोनो उत्तर नहि देलकै। अन्हारमे ससरिकऽ गोपाल ओकर चौकीपर आबि गेलैक। ओकर सौंसे देहपर हथोरिया देबऽ लगलैक। भास्कर ओकरा ठेलिकऽ हँटबैत जोरसँ कहलकै- ''अपन बिछौनपर जाउ अहाँ, नै तऽ भोरे सुपरिन्टेन्डेण्ट साहबकेँ कहि देबनि।''

गोपाल अन्हारेमे ससरि गेलैक। किम्हरो कोनो शब्द नहि। भास्करक आँखिसँ निन्न पड़ा गेलैक। नहि जानि कतेक कालक बाद फेर क्यो ससरिकऽ ओकर चौकीपर आबि गेलैक। ओकरा अपन देहसँ सटबैत फुसफुसाकऽ बजलैक ''गोपालकेँ मार गोली। हमरा संग दोस्ती कऽ ले, खुश कऽ देबौ।''

चुन्नूक देहपर खाली एकटा कछिया रहैक। ओकरा बिछौनसँ ठेलैत उठिकऽ कोठलीसँ बाहर आबि गेल। इच्छा भेलैक जे तखने हेडमास्टर साहबक डेरा जा सभटा कहि दैनि। किछु विचारिकऽ रुकि गेल। भोरे पहिने सुपरिन्टेण्डेंट साहबकेँ कहतनि जे कोठली बदलि दिअऽ।

मुदा की-की बदलऽ लेल कहतनि ? मेसक हाल सेहो बत्तर छलैक। दिनमे आँकड़बला उसना चाउरक भात आ निराल पानि दालि। बिन तेल-मसल्लाक खाली मिर्चाइक झोर देल तरकारी। कण्ठ तर घोंटबामे सभ दशा भऽ जाइ छलैक भास्करक। राति कऽ रोटीक नामपर टाँट अकड़ल आँटाक लोइया आ कडू झोर। जलखइमे जे-किछु जकरा संग हो। भास्करकेँ ई होस्टल कनियो पसिन्द नहि छलैक। अपन रूम-मेट पसिन्द नहि छलैक।

भोरे कोठली बदलबाक अनुरोध करऽ होस्टल सुपरिन्टेण्टेडक कोठलीमे पहुँचल तऽ अजीबे दृश्य देखलक। गोपाल हुनकर चौकीपर पसरल छलनि एकदम अधिकारपूर्वक। लगमे सुपरिन्टेण्डेट साहब बैसल छलखिन। भास्करकेँ देखि हड़बड़ाकऽ ठाढ़ भऽ गेलथिन- ''बिना आज्ञाक कोठलीमे कोना अयलह ?''

भास्कर माफी मँगैत कहलकनि- सौरी सर, गलती भऽ गेल। हमर एकटा

प्रार्थना अछि । हमर कोठली बदलि दिअऽ । कोनो सिंगल सीटवला कोठली दिआ दिअऽ ।

–"वाह रे प्रार्थना !" सुपरिन्टेण्डेन्ट साहब बिगड़िकऽ कहलथिन– तोरा बूझल नहि छऽ जे ऐ होस्टलमे कोनो सिंगल सीटलबला कोठली नहि छैक । दूटा छैक से छठा क्लासबलाकेँ भेटब मस्किल । ऊपर क्लासबलाकेँ देल जाइत छैक।

–"मुदा सर...' भास्कर कहऽ चाहलकनि किछु । ओ बीचेमे टोकि देलथिन– "तोहर बड़ शिकायत भेटि रहल अछि हमरा । तोहर बापकेँ लिखऽ पड़त । होस्टलकेँ अपन कायदा-कानून छैक । गोपाल कहैत छल तोँ बड़ी-बड़ी राति धरि किदन-किदन सभ अण्ट-शण्ट बड़बड़ाइत रहैत छऽ, बत्ती जरा-जरा अपन दूनू रूममेटकेँ तंग करैत छहक । एतनी टामे तोहर ई हाल छऽ तऽ पैघ भेलापर की हेतऽ?

"हमरापर मिथ्या आरोप नहि लगाउ सर !" भास्कर दृढ़तासँ बाजल– "हम कोनो नियमक उल्लंघन नहि करैत छी ।"

सुपरिन्टेण्डेंट साहब क्रोधे गरजऽ लगलखिन– "एतनी टा छौंड़ाक ई मजाल ? अखने हम तोरा होस्टलसँ बाहर करैत छी । तोरा रहलासँ होस्टलक सभ विद्यार्थी खराब भऽ जायत ।"

भास्कर अवाक् रहि गेल । गोपाल ओहिना साधिकार सुपरिन्टेण्डेंटक चौकीपर पसरल छल । चेहरापर एकटा कुत्सित हँसी । भास्कर ओइ हँसीसँ दूर भागि गेल । बोरिया-बिस्तर लऽ गाम आबि गेल ।

बाबूजी एकदम रुष्ट भऽ गेलथिन– "गाममे अकच्छ भऽ तोरा शहरक स्कूलमे देलिअऽ । मासो दिन नहि टिकि सकलह । ओहन बढ़ियाँ स्कूल छैक..."

भास्कर बाबूजीकेँ मनबैत कहलकनि– "स्कूल ठीके नीक छलै बाबूजी, मुदा होस्टल बड़ खराब ।"

बाबूजी ओकरा बढ़ियाँ होस्टलवला स्कूलमे राखि देलथिन पटनामे । खूब बढ़ियाँ स्कूल, खूब बढ़ियाँ होस्टल । गंगाक कातमे रहैक स्कूल आ होस्टल । खूब हवादार कोठली, खूब स्वच्छ वातावरण । व्यवस्था एकदम उच्च कोटिक । स्मार्ट आ साफ सुथरा संगी-साथीसभ- हँसमुख आ तेज ।

भास्करक मोन तैयो नहि लगैक । बेशीकाल उदासे रहय । गाम आरो दूर भऽ गेलैक । मोन लगाकऽ पढ़य, खूब बढ़ियाँ नम्बरो अबैक । शिक्षकसभ खूब

मानैक, मुदा भास्करक मोन रहि-रहिकऽ उदास भऽ जाइक । कौखन एकसरमे माथमे बहुत रास प्रश्न औना उठैक आ भास्कर विह्वल भऽ उठय ।

फादर मर्फी ओकरा सभसँ बेशी मानथिन । हुनकासँ पूछि-पूछिकऽ अपन जिज्ञासा शान्त करय भास्कर । मुदा ओकर जिज्ञासाक अन्त नहि छलैक । उदासीक अन्त नहि छलैक । कौखन अनेरो उदास बैसल रहि जाय- घण्टो ।

फादर मर्फी एक दिन पूछि बैसलैक– "व्हाट्स रौंग विद यू माइ चाइल्ड !"

भास्कर हँसिकऽ कहलकै– "किछु ने फादर ! गाम मोन पड़ि जाइत अछि। गामक लोक मोन पड़ि जाइत अछि । एकटा बात पूछू फादर ?"

"येस माइ चाइल्ड !"

"ईसाकेँ एना सलीबपर के ठोकि देने छनि फादर ? किएक ठोकि देने छनि ?

फादर गम्भीर भऽ उठलथिन– "वी हैव डन इट माइ चाइल्ड ! वी हैव आलवेज हैंग्ड दोज हू ट्राइड टू टेल अस दि ट्रूथ...वी हैब आलवेज क्रूसीफाइड आवर जीसस ।"

"ह्वाइ फादर...? ह्वाइ..."

ह्वाइ ? किएक ? भास्करक सभटा जिज्ञासा अही ठाम आबिकऽ ठमकि जाइत छैक । एकर उत्तर ओकरा कतहु नहि भेटैत छैक, क्यो नहि दैत छैक । एक दिन निरपराध ठकनाकेँ भैया गाछसँ उनटा लटकाकऽ मारने छलथिन । भास्कर बेहोश ठकना लेल दवाइ ताकऽ चारू कात दौड़ल छल, मुदा बाबूजी ओकरा स्कूल पठा देने छलथिन । स्कूलसँ घुरलापर साँझखन बाबीक सङ्ग अगियासी लग बैसल ओकर मोन एकदम उदास रहैक । बाबी बेर-बेर टोकलकै, सङ्गी-साथी सभ सेहो टोक-चाल कयलकै मुदा ओकर मुँह लटकले रहलैक । बाबी बौंसैत कहलकै– "एहन छोट-छोट बातपर एना मोन उदास नहि करी । एना तऽ होइते रहैत छैक ।"

भास्कर बाबीक बातपर आर मुँह फुलबैत बाजल— "एकरा तोँ छोट बात कहैत छहीक बाबी ? निरपराध ठकनाकेँ मारैत-मारैत बेहोश कऽ देलखिन भैया आ तोँ एकरा छोट बात कहैत छहीक ?"

"बड़ छोट बात छैक बौआ ! एना तँ होइते रहैत छैक । तोरा देखले की छौक ? अही हवेलीमे कखन खड़ाम आ जुत्तासँ ककर कपार फोड़ि देल जयतैक आ कखन ककर बहु-बेटीकेँ के उठा अनतैक, तकर हिसाब नहि छलैक ?"

"बहु-बेटीकेँ किएक उठा अनतैक ?"

भास्करक चिन्तित प्रश्न छलैक । बाबी हँसऽ लगलैक- "तोँ अखन नहि बुझबहिक बाउ ! बहु-बेटीक इज्जतिक लतखुर्दनि किएक होइ छैक, तोँ नहि बुझबहिक । मुदा हमसभ अपना आँखिसँ देखने छियैक । चौधरी खानदानक ई पुरान होइत हवेली बहुत-किछु देखने छैक बौआ ! ई सब तोँ नहि बुझबहिक । तोँ हवेलीमे जन्म लैयोकऽ एकर लोक सन नहि छैं, तोँ तऽ जेना कोनो दोसरे दुनियाँक लोक छैं ।"

भास्करकेँ जिद लागि गेलैक- "किएक नै बुझबैक बाबी ? आ नहि बुझबै तऽ जाय दहिक । मुदा निरपराध ठकना किएक मारि खयतैक ? ओकर फूटल देहपर दबाइ किएक नै लगतैक ?"

बाबी कहलकै- ओ गरीब अछि तेँ । गरीबकेँ दण्ड देबा लेल अपराधक विचार नहि होइत छैक । ओकर गरीब भेनाइ पर्याप्त कारण छैक । ई अमीर लोकक शौक छैक । कखनो ककरो निरपराधो दण्ड दऽ देब ओकरा क्लेश नहि दैत छैक, ओकरा तऽ आनन्द भेटैत छैक । तोँ किएक मोनकेँ दुखी कयने छैं । ठकनाकेँ टाका देबहिक, तऽ हम देबौ । दऽ अबियहिक भोरे ।

भोरे दौड़ल गेल खतबेटोली । ठकनाक माय अपन खोपड़ीक बाहरमे बैसल छलैक– भोरका रौदमे । ठकना सेहो उघारे देहे बैसल छल । बेस प्रसन्न मुद्रामे । ओकरा मुँहपर कोनो तकलीफक रेख नहि छलैक ।

भस्कर हाथक दसटकही ठकना-मायक हाथमे दैत कहलकै- "लऽ ले, एहिसँ ठकनाक दवाइ करा दियहिक ?" हाथक दसटकही लैत ठकनाक माय कहऽ लगलैक- "बौआ हमसब अहीँक परजा छी । अहीँ सब पालै-पोसै छी । छोटका मालिकक सेहो कोनो दोष नहि हनि । हुनको तँ धोखे भेल रहैन तेँ ने ठकनाकेँ मारलखिन । बाउ, हमसब गरीबनी अहीँक रोटीक टकड़ीपर ने जीबैत छी ।"

भास्कर ई सब सुनि बड़ सोचमे पड़ि गेल । जकरा काल्हिये भैया मारलथिन तकर ओहि परिवारपर एतेक श्रद्धाक संग बाजब सुनि भास्करक मोनमे कोनो अर्थ नहि लगलै । ठकनाक माय नहि जानि कीं सभ कहि रहल छलैक । कमाइ-खटाइ छैक चलितरा, बड़द जकाँ दिनभरि खटैत रहैत छैक, तखन अनकर देल कोना खाइ छैक ठकनाक माय ? एक बेर कनी ठेस लागल रहैक ओकर औँठामे तऽ माय सात दिन तक पट्टी बन्हने रहैक आ मलहम लगौने रहैक । सौँसे देह थूरल गेलैक काल्हिए तऽ आइए सभटा ठीक कोना भऽ गेलैक ? जे भैया मारलखिन तकरे गुण कोना गबै छैक ठकनाक माय ? भास्कर गुनधुन करैत चुपचाप घुरि आयल ।

बाबूजीकेँ सभ खबरि भऽ गेलनि । भास्करकेँ बजा डँटलथिन- "अखनेसँ खतबेटोली-दुसधटोली बौआय लगलऽ तोँ । छोटका लोक सभक संगति ! तोहर गाममे रहब आब अनिष्टकर हैत । आब शहरेमे पढ़बह तोँ ।"

भास्कर चुप्पे रहल । दरभंगाक स्कूलक होस्टलमे दऽ देलथिन तैयो चुप्पे रहल । होस्टल छोड़ि गाम आयल आ बाबूजी कतेक बात कहलथिन, तैओ ओ चुप्पे रहल । फेर पटना दऽ अयलथिन तैयो ओ चुप्पे रहल ।

ओकर मोनमे मुदा सदिखन प्रश्न उठैत रहलैक । होस्टलक कोठलीक एकान्तमे... उमकल गंगाक कछेरमे...गांधी मैदानक घासपर...सभठाम ओ प्रश्न सभ ओकर मोनमे गोंगिआइत रहलैक । फादर मर्फी कहलकै- "वी हैव आलवेज क्रूसीफाइड आवर जीसस..." । आ भास्करक मोनमे गोंगिआइत रहलैक— व्हाइ ?

किएक ?

ओकर मोछक पम्ही करिआकऽ घनगर भऽ गेलैक । आँखिमे, कारी डिम्हावाला पैघ-पैघ आँखिमे लाल-लाल धारी झलकऽ लगलैक । चालिमे एकटा मस्ती आबि गेलैक आ हाथ-पयरमे गस्सल चिकनाहटि । लम्बाइ खिचाकऽ पाँच फीट एगारह इंच धरि पहुँचि गेलैक आ गोर छातीपर कारी-कारी केश बहराय लगलैक ।

छुट्टीमे गाम आयल तऽ माय मुग्ध देखिते रहि गेलैक आ बाबी अपन करेजसँ सटा कहलकै- "तोँ तऽ जवान भऽ गेलैं रे ! आब एकटा कनियाँ लऽ आ अपना लेल....

कनियाँ ओ जल्दीये लऽ अनलक । ओ की अनलक, सभ मिलिकऽ ओकरा लेल एकटा कनियाँ लऽ अनलकै ।

मैट्रिक जहिना पास कयलक, भौजी पछोड़ धऽ लेलथिन- अपन लाल-गुलाब सन देओर लेल एकटा जूहीक कली ताकिकऽ रखने छी हम...बाजू, आनि दिअऽ अहाँ लेल ?

भास्कर कने हँसी करैत कहलकै- ''कोन फुलबारीमे अछि ओ जूहीक कली ? पहिने कने देखाउ ने !''

भौजी झट अपन चेहरा आगू बढ़ा आँखि मूनिकऽ कहथिन- ''हे लिअऽ, देखि लिअऽ । पसिन्द अछि ने ?''

भास्कर लजाइत कहलकै- माने ?

भौजी हँसिकऽ कहलथिन- ''माने एकदम साफ अछि ! हमरे छोट बहिन अछि । बाबू कैक बेर लिखि चुकल छथि । बाजू पसिन्द अछि ने ? अहाँ तऽ ओकरा देखने छिऐक ।''

भास्कर आर बेशी लजा गेल । भौजी ओकरा खूब पसिन्द छलैक— जतबे सुन्दरि, ततबे हँसमुख ।

नहि जानि इम्हर की भऽ गेल छनि ? हरदम गुमसुम आ उदास रहैत छथिन । हुनकर बहिनक चर्चासँ भास्करकेँ गुदगुदी होबऽ लगलैक मोने-मोन ।

ऊपरसँ कहलकै- ''बहिन बड़ फालतू भेल छथि भोजी...एना बँटने फिरैत छी ?''

भौजीपर ओइ हँसीक कोनो असरि नहि भेलैक । मुग्ध भावे कहलथिन- ''ई हमर मोनक अभिलाषा अछि बौआ ! खूब जोड़ी हैत अहाँलोकनिक ? एकदम राम-सीता सन...

''देखू चालाकी ! अखनेसँ बहिनक पक्ष लेबऽ लगलहुँ । अहाँक राम कारी छलाह । बहिन कतबो गोरि हेतीह तऽ हमरासँ बेशी नहि हेतीह ।''

रम्भा एकटक अपन देओरकेँ देखैत रहि गेलीह- ''सत्ते कहै छी बाउ ! एहन गोराइए किएक, एहन रूपो भेटनाइ दर्लभ छैक संसारमे । तेँ तऽ एतेक लोभ अछि अहाँपर ।''

भास्करक मोनमे मुदा कोनो लोभ नहि छलैक । ने रूपक, ने गोराइक, ने नवयौवनक सुवासक । ओकरापर तऽ दोसरे धुनि सवार हरैक- पढ़बा-लिखबाक । मैट्रिकमे स्कालरशिप भेटि गेल छलैक, प्रथम श्रेणीमे नीक स्थान छलैक । ओ आगू पढ़ऽ चाहैत छल, खूब आगू पढ़ऽ चाहैत छल ।

बाबी कहलकै- ''तऽ मना के करैत छौक ? पढ़ ने खूब, पढ़िते रह सभ

दिन, मुदा बिआह-दानक एकटा वयस होइत छैक । तोरा वयसमे हमरा एकटा धियोपुता भऽ गेल रहय ।''

भास्कर कहलकै- ''तहन तऽ सत्ते पछुआ गेलौं बाबी, मुदा चिन्ता नहि कर । विआह होबऽ दे, सभकेँ लगले पछुआ देबनि ।''

बाबी हँसैत गालपर थापर मारैत कहलथिन- ''बुढ़िया बाबीसँ हँसी करैत छँ ? मुदा मोन राख । नहि अनबैं ऐ साल, तऽ कचोट रहि जयतौक । फेर ककरो पछुयेबहिक, हम घुरिकऽ देखऽ नहि अयबौक ।

भास्कर निरुत्तर भऽ गेल । माय लग सेहो ओकर कोनो तर्क नहि चललैक- ''एखन जान बचा दे माय ! पढ़ऽ-लिखऽ दे ! फेर जतहि कहबैं, फँसरी लगा लेबौक ?''

माय डाँटि देलथिन- ''अलाय-बलाय गप्प, फँसरी लगयबौ हमरा लोकनि तोहर गरामे ? बड़की कनियाँक बहिन लाखमे एक छनि । अपनो देखहुन । बीस बरखसँ सासुर बसैत छथि- आइयो कोनो नवकनियाँसँ कम छथि ?''

भास्कर अन्तिम प्रयास कयलक- ''से हम कहाँ कहैत छियौक जे कनाह-घेघही गरामे बान्हि रहल छैं, मुदा महासुन्दरीकेँ लऽकऽ हम की करब अखन ? पढ़ऽ-लिखऽ दे हमरा ।''

मायपर ओइ अन्तिमो चेष्टाक कोनो असरि नहि भेलैक । कहलकै- तऽ पढ़ऽ-लिखऽ ने चैन सँ ! कोन भार रहतऽ तोरापर ओकर ? अखन बाप जिबैत छथुन । हमरा लोकनि छिअऽ । कोनो वस्तुक अभाव नहि छऽ । खाली एतबा बाजऽ ने, कनिआँ पसिन्द छऽ की नहि ? देखबहक ? बजबा दिअऽ कोनो बहाने ?

तकर प्रयोजन नहि छलैक । देखने छलैक भौजीक बहिनकेँ । परुकेँ भौजीकेँ नैहर पहुँचाबऽ वैह गेल रहय । कोनो उपनयन रहनि भौजीक नैहरमे, भरिसक भौजीक पितिऔत भाइक बेटाक । किरणकेँ देखने रहैक ।

आ देखिकऽ मोनमे अजीब सन सनसनी उठल रहैक । जखन कखनो ओ लग अबैक, ओ सनसनी अपन नस-नसमे अनुभव करय । ओतऽसँ घुरियो अयलाक बाद बहुत दिन धरि ओ सनसनाहटि ओकरा अनुभव होइत हरल छलैक ।

फेर ओइ आकृति आ ओइ सनसनाहटिकेँ बिसारि देने छल ओ । मुदा बिसरल नहि छलैक । नुका रहल छलैक तहमे । भोजी जखन चर्चा कयलथिन, ओ

ओइ तहसँ बहराकऽ फेर ऊपर आबि गेलैक । भौजी, माय, बाबी सभक संग ओ ऊपरसँ बहस करैत रहल, मुदा मोनमे ओ सनसनी तीव्रतर होइत गेलै । जखन बाबू अपन समधिकेँ बजबा हुनकर छोटीक कन्याक हाथ अपन छोट बालक लेल माँगि लेलथिन तऽ भास्करक मोनक सनसनी विस्फोटक स्थितिमे पहुँचि गेलैक । ओ दिन गनऽ लागल ।

जहिआ सखी-बहिनपा सभ कोबरमे किरणकेँ ठेलि बाहरसँ जिंजीर लगा देलकै...भास्करक मोनक सनसनी एकटा संगीतमे बदलि गेलैक । भास्कर डूबि गेल ओइमे, किरण सेहो डूबि गेल ।

भास्कर कहलकै– ''अहाँकेँ छुबैत डर होइए । कहुँ दाग ने लागि जाय।''

लजायल किरण कहलकै– कथीमे ? हमर आकृतिमे की अहाँक आंगुरमे ?

किरणक कँपैत देहकेँ अपन बाँहिमे समेटि भास्कर कहलकै– लगा दिअऽ दाग हमर पोर-पोरमे । हमर मोन आ आत्मामे । एहन लगाउ जे कहिओ धोखड़य नहि, कोनो दोसर रंग चढ़य नहि ।

किरण हँसिकऽ कहलकै– ''पुरुषक कोन ठेकान ? एकटा रंग हटा, दोसर रंग चढ़बैत देरिये कतेक लगैत छैक ? मौगी लग ओकरा बान्हबा लेल रहिते की छैक ? खाली समर्पण, सर्वस्व समर्पण । ओइ समर्पणकेँ अपमानित करबामे पुरुषकेँ देरिये कतेक लगैत छैक ?''

भास्करक मोनमे प्रश्न सनसना उठलैक– किएक ? एना किएक ? स्त्री एतेक आश्रित आ पराधीन किएक ? पुरुष एतेक स्वच्छन्द आ निर्लज्ज किएक ?

किरणकेँ डर भेलैक– ''की भेल ? कतऽ चल गेलहुँ अहाँ ? आइ तऽ कमसँ कम नहि जाउ कतहु छोड़िकऽ हमरा ।''

भास्करक बाँहिक बन्हन आर कसि गेलैक– ''जायब कतऽ अहाँकेँ छोड़िकऽ... सभ दिन अहीं लग रहब । देखू हम छी ने अहाँक लग !''

किरण जेना ओकर सम्पूर्ण शरीरकेँ अपनामे समाहित कऽ लेबऽ चाहैत छलैक । ओकरा अपन बाँहिमे समेटैत कहलकै– हँ, अहाँ छी...खाली अहींटा छी, आर सभ मिथ्या...खाली अहींटा वास्तविक छी ।

आ ओ चेष्टा एकटा आलोड़न बनि गेलैक । एक-दोसरमे लिप्त ओ समाहित भऽ जयबाक चेष्टा । दूनूक एकाकार हैबाक उद्दाम चेष्टा । थाकिकऽ

एक-दोसरक बाँहिमे निश्चेष्ट पड़ल रहैत छल किछु क्षण...आ फेर वैह आलोड़न, वैह उद्दाम चेष्टा ।

भोरुका पहरमे किरण उठलैक । पैर दबने बिदा भेलैक । मुदा जा नहि भेलैक– ओकर आँचर भास्करक मुट्ठीमे छलैक । लग आबि कानमे मुँह सटा कहलकै– जाय दिअऽ...भोर भऽ गेलैक ?

भास्कर फेरसँ देहमे साटि लेलकै– ''होमऽ दिऔक...हमर अहाँक मिलन-राति तऽ समाप्त नहि भेल अछि ।''

फेर सभटा बिसरि गेलैक । भोरका चिड़ैक चहचहायब, दरबज्जाक फाँकसँ सखी-बहिनपाक ताकब...घरमे जागल लोकसभक आबा-जाही, सभटा ओइ आलोड़नमे बहि गेलैक ।

किरण फेर ठाढ़ भेलि– ''आब जाय दिअऽ...सभ ठाढ़ हैत चारूकात । लाजे मरि जायब ।''

तावत दरबज्जापर थाप पड़ऽ लगलैक– ''हय किरण....निकलऽ ने हय... घर भरि जागि गेलह । बाहर आबह— राति फेर ओतैक ।''

किरण दरबज्जा खोलिकऽ पड़ायलि । पाछाँ-पाछाँ हँसैत सखी-बहिनपा दौड़लैक । किरण ककरो ने देखलकै । जाकऽ मायक ओछौनपर पड़ि रहलि । आँखि खुजलैक तऽ कोठेलीमे खिड़की बाटे रौद छिड़िआयल छलैक । ओकरा कानमे मायक स्वर अयलैक– ''हय रम्भा ! देखहुन ने चौधरीकेँ । एगारह बाजि गेलैक, सुतल रहथुन की ?''

किरणकेँ आर लाज भेलैक । चुपचाप उठिकऽ स्नानघर दिस जयबाक इच्छा भेलैक । मुदा आलसे उठि नहि भेलैक । फेर गेरुआमे मूड़ी गाड़ि लेलक । लगले निन्न भऽ गेलैक ।

भास्करकेँ दूरसँ हबेली उदास लगलैक । किरणक चिट्ठी मोन पड़लैक– ''अइ हवेलीमे बड़ डर लगैत अछि हमरा । अहाँ जल्दी आउ ।'' भास्करकेँ डेराओन-सन किछु नहि लगलैक । खाली उदास-उदास ।

स्टेशनपर ठकना आयल छलैक । बेश मजबूत आ दमगर काठी छैक । रंग

खूब कारी । खाली देहक मांसपेशी छलछल करैत छैक । भास्करकेँ ओकर नेनपनक आँखि मोन पड़लैक जाहिमे बड़कीटा भूख सदिखन ओकर दूधक गिलास दिस टकटकी लगौने रहैत छलैक । आइ ओइ आँखिमे कोनो भूख नहि छैक, कोनो विद्रोह वा प्रतिहिंसो नहि छैक । ओइमे एकटा असीम सन्तोष आ शान्ति छैक । माँड़ पीबि ठकना ओकर दूधक गिलाससँ पोसल देहसँ बेशी मजबूत भऽ गेल छलैक । ओकर भारी मोटा उठा दौड़ले गाम दिश बिदा भऽ गेलैक ।

ओकर डेगमे नहि सकल भास्कर । गामसँ साइकिल लेने बतहा सेहो आयल छलैक । ओकरो घुरा देलकै, पैदल चलबाक इच्छा भेलैक । अपन डेगे आगू बढ़ैत गेल भास्कर । चिन्हार लोक सभ भेटऽ लगलैक । आन-आन गामक चिन्हार लोकसभ । स्टेशनसँ तीन कोसपर छलैक गाम । पहिने स्टेशनसँ गामधरि कच्ची सड़क छलैक । हरदम धूरा-माटिसँ भरल, बरखा-बुन्नीमे कादो-कादो भेल । स्टेशनसँ हवेली धरि अबैत-अबैत सभ दशा भऽ जाइत छलैक ।

आब हालति बदलि गेल छैक । स्टेशनसँ गाम आ गामसँ दोसर गामधरि पक्की सड़क बनि गेल छैक, ताहिपर रिक्सो चलैत छैक । ओना गामक बेशी रिक्शाबला शहरेमे रिक्सा चलबैत अछि । आब एहि सड़कपर बस सेहो चलैत छैक । दरभंगासँ विदा होइत छैक आ स्टेशन लग होइत ओकर गामबाटे बीस कोस आगू धरि जाइत-अबैत छैक । अइ बसमे चढ़ब बड़ मस्किल । हरदम लदले रहैत छैक । आ बसक चारूकात घुघुरू जकाँ लटकल लोक सभ । छतपर सैकड़ो लोक । आब गामोघरक लोक माइलो दू माइल पैदल नहि चलैत अछि । बस सवारी सेहो फ्री । टिकटक कोनो काज नहि । मुँहगर भेल तऽ सोलहन्नी फ्री । कने मुँहदुब्बरो रहल तऽ आधा फ्री । कन्डक्टरक हाथमे चुपचाप किछु कैंचा राखि निश्चिन्त ।

हवेलीसँ पहिने हाथी अबैत छलैक स्टेशन धरि । भास्करो देखने छलैक एकटा दन्तार हाथी । ओकरा नीक जकाँ मोन छैक ओ हाथी आ ओकर फिलवान उसमान खाँ । पठान रहैक । गोरनार आ लम्बा-चौड़ा सुरेबगर सोटल देह । कारी घनगर आ चमकैत दाढ़ी-मोछ । डाँड़मे लुंगी आ देहपर चरखाना गंजी । कौखन गंजीपर मिर्जइ चढ़ा तुर्की टोपी आ लुंगी उतारि चुस्त पैजामा पहिरि लिअय तऽ भास्करकेँ इतिहासक पोथीमे देखल कोनो मुगल बादशाह सन लगैक । ओ दन्तार हाथी ककरो सम्हारमे नहि अबैत छलैक । एकसर उसमाने सम्हारैत छलैक ओकरा, ओकरे इशारापर ओ हाथी उठैत-बैसैत छलैक । सैह हाथी एकदम बिदकि गेलैक । उसमान आँकुसपर आँकुस लगबैत थाकि गेल, पगलायल हाथी किछु ने सुनलकै ।

सभ किछु पीचैत, धङैत, दौड़ैत रहलैक । उसमान खाँ कूदिकऽ पड़ाइयो नहि सकल । एकटा टिनवला घरक चोखगर टिन ओकर गराक आरपार चीरि देलकै आ ओकर निर्जीव शरीर हाथी परसँ शोणिते-शोणिताम भेल जमीनपर ओंघरा गेलैक । हाथीकेँ जेना होश आबि गेलैक । अपन फिलवानक मृत देह लग संचमंच ठाढ़ भऽ गेल ।

भास्करकेँ ई सभ खिस्सा सुनल छैक । फिलवानक मरितहि महेन्द्रनाथ चौधरी तामसे थरथर काँपऽ लगलाह । बन्दूक निकालि लेलनि । लोक कतबो मना कयलकनि, फिलवानक मृत देह लग संचमंच ठाढ़ हाथीकेँ गोलीपर गोली मारैत चल गेलथिन । हाथी अर्राकऽ अपन फिलवानक देह लग खसिकऽ शान्त भऽ गेल ।

भास्करकेँ बाबी कहैत छलैक ई सभ खिस्सा । महेन्द्रनाथ चौधरी बड़ शौकसँ खरीदने रहथि ई हाथी । हरिहर क्षेत्रक मेलासँ अनने रहथि, मुदा हाथी पागल भऽ गेल छलैक आ फिलवानक जान लऽ लेने छलै । ओहन पागल हाथी के रखैत ? महेन्द्रनाथ चौधरी अपने हाथे गोली दागि देलथिन । हवेलीक अन्तिम हाथी छलैक ओ । महेन्द्रनाथ चौधरी फेर हाथी नहि किनलनि । हुनकर बापक हवेलीक सिंहद्वार लग तीन-तीन टा हाथी हरदम झुमैत रहैत छलनि ।

भास्करकेँ हाथीक सवारी कहियो पसिन्द नहि रहैक । ओकरा घोड़सवारी नीक लगैक । एकटा उजरा घोड़ा रहैक- खूब ऊँच आ तेजगर । बाबू ओइपर एकसर कखनो ओकरा बैसऽ नहि देथिन । भास्कर भैयाक खोसामदमे रहैत छल । अधिक काल भैये ओइ घोड़ापर बहराइत छलथिन । ओइपर बैसल भैया ओकरा बड़ सुन्दर लगैत छलथिन- एकदम परीकथाक राजकुमार सन । ओकरा अपनो ओइपर बैसबाक मोन होइ, मुदा ओकरा क्यो ने बैसऽ दैक ओइ घोड़ापर । सहीस अजीज खानक पाछाँ-पाछाँ लागल रहय । घोड़ाक पीठपर ओकरा बैसा, घोड़ाक लगाम पकड़ि अजीज खान आगू-आगू चलैक । एहन सवारी नहि सोहाइक भास्करकेँ ।

एकदिन सहिसबेकेँ खूब छकौलकनि ओ । जहिना पीठपर बैसल, मारलकै घोड़ाक पाँजरमे लात । घोड़ा हवा भऽ गेलैक । पाछाँ-पाछाँ दौड़ैत अजीज खान बदहवास भऽ गेलैक । भास्कर घोड़ाकेँ दोड़बैत रहल । अन्तमे सहीस लग आबि घोड़ासँ उतरि गेल । अजीज खानक जानमे जान कयलैक- ''जान बचि गेल बौआ ! किछु भऽ जाइत तऽ बड़का मालिक खाल खीचिकऽ भूसा भरबा दितथि ।''

से ठीके भरबा दितथिन महेन्द्रनाथ चौधरी । दया-माया कनियो ने छलनि हुनकर हृदयमे । लोभी आ पाषाणहृदय छलाह ओ । अत्यधिक संचित करबाक व्यसन छलनि । गामक लोक पीठ-पाछाँ कहनि- जालिम चौधरी । जन-बनिहार,

अमला-बटीदारक हेतु तऽ साक्षात् यमराज छलाह ओ । पहिने टाका दऽ जमीन सुदिभरना लैत छलथिन आ बादमे सूदपर सूद जोड़ि निर्दयतापूर्वक सभ-किछु अपना नाम लिखा लैत छलथिन । गामक सभ मोसम्मातक घराड़ी आ जमीन, विधवा-बेसहाराक गहना-गुड़िया, बर्तन-बासन आ जन-बनिहारक थारी-बाटी वैह बन्धक रखैत छलाह। ने मोनमे दयामाया छलनि ने ककरो डर ।

खाली एक गोटेसँ डेराइत छलाह । गौरी चौधराइनक आगूमे ओ मिमिआय लगैत छलाह । माय हुनकर छलथिन, मुदा गाम भरिक लोक हुनकर सन्तान छलनि। दुख-विपत्तिमे पड़ल लोक बूढ़ी मलिकाइनक पैर छानि लैत छलनि- ''आब एगो अहींक आसरा हय बूढ़ी मलिकाइन ! मालिक उजाड़ि देताह हमरा, तबाह कऽ देताह।''

आ गौरी चौधराइन अपन बेटाकेँ बजा कहैत छलथिन- की सभ सुनैत छिअऽ हौ महेन ! कहाँदन तोँ भारी बनियाँ भऽ गेल छऽ । एक टाकासँ दस टाका बनबैत छऽ । कोनो सेठ-साहूकारक घरमे जन्म लितऽ तोँ, हमर काखिमे कोना आबि गेलऽ...?

महेन्द्रनाथ चौधरी घिघिआय लगैत छलाह । अपन बाबीक ओ उग्र रूप देखने छल भास्कर ।

ओकर माय मुदा एकदम विपरीत छलैक । गरीब घरक बेटी रहैक, हरदम घर-गृहस्थीक काजमे ओझरायल रहैत छलैक । जमींदारनीवला रोब-दाब कनियो ने छलैक ओकरामे ।

सत्ते, आशा चौधराइन ओइ वातावरणमे बेछप छलीह । साधारण रूप, मजबूत कदकाठी । पतिकेँ परमेश्वर मानि पूजऽवाली । कहिओ सबाल-जबाब पूछऽवाली नहि । स्वामीक इच्छाकेँ परमेश्वरक इच्छा मानि जीवऽवाली भारतीय नारी, मैथिलानी । पन्द्रह वर्षक रहथि तऽ अइ हवेलीमे अयलीह । दोसरे वर्ष सचिनक जन्म भेलैक । तकर बाद चारिटा बेटी आ टूटा बेटा । क्यो नहि बँचलनि। पीठ पाछाँ भरिगाम कहैक- ई सभ महेन्द्रनाथ चौधरीक पापक फल थिकनि । हुनकर स्त्री तऽ साक्षात् अन्नपूर्णा छथिन ।

सचिनक जन्मक बीस वर्ष बाद जखन भास्करक जन्म भेलैक तऽ ककरो मोनमे कोनो उत्साह-उमंग नहि रहैक । आशा चौधराइनक मोनमे सेहो नहि । सचिनक विवाह पन्द्रहे वर्षमे करा देने रहथिन, पुतहु बसै छलनि । बूझल छलनि जे अन्य छवो सन्तान जकाँ इहो बाँचत नहि । खाली मायक जर्जर छलनी भेल छातीमे

एकटा आर भूर करऽ आयल छथि । सातम भूर—हृदयक आरपार । आशा चौधराइन बेटाक मुँहो ने देखऽ चाहैत छलीह । ने बापेकेँ कोनो उत्साह रहनि ओकर मुँह देखबाक ।

बूढ़ी पितामही ई सभटा खिस्सा कहने रहैक भास्करकेँ । खाली वैह टा नाचल रहैक भरि आँगन । ओकरा कोरामे लेने, निहारैत-निहारैत विभोर भऽ गेल रहैक— ''भास्कर भगवान आयल छथि । आँखि नै टिकैत अछि चेहरापर । सूर्य भगवान थिकाह– कवच-कुण्डल नहि छनि मुदा तेज ओहिना छनि । सूर्य नाम नहि रहतनि । पुरखाक नाम छलनि । भास्कर थिकाह ई...''

आ पितामहीक कोरामे भास्कर जीबि गेल । माय डरे कोरो ने लेथिन, कहीं फेर ने छिना जानि कोरेमेसँ । एकटा महेन्द्र छोड़िकऽ आर कोनो सन्तान नहि भेल रहनि गौरी चौधराइनकेँ । बुढ़ारीमे पोताकेँ करेजसँ सटा एकबेर फेर माय बनि गेलीह । हुनकर सुखायल छतीकेँ मुँहमे लऽ जखन भास्कर चभर-चभर करऽ लगनि, तऽ दूध नहि निकलैक ओइसँ, मुदा सम्पूर्ण शरीरेसँ जेना दूधक धार बहि जानि !

हुनकर पछबरिया कोठामे भास्कर बढ़ल । ओकरे ओसारापर खेलायल, रामायण-महाभारत सुनलक, ओसारा आ घरक अगियासी लग बैसिकऽ कठरी-बाबाजीक आ आर अनेक खिस्सा सुनलक । माय कहिओ डरे दुलारो ने करथिन बेशी जे कहीं फेर हुनकर भाग्य ओकरा छीनि ने लैनि ओकरासँ जेठे छबो सन्तान जकाँ । बापो ने घुरिकऽ तकैत छलथिन । बाबीक घरमे खेलाइत, बढ़ैत भास्करक मोनमे क्रमश: बहुत रास प्रश्न सभ ठाढ़ होबऽ लगलैक । कौखन ठकनाकेँ लऽकऽ, कौखन ब्रह्माकेँ लऽकऽ । बाबूजीकेँ बर्दाश्त नहि भेलनि ओ सभ प्रश्न आ ओकरा सभमे भास्करक बढ़ैत रुचि । गामसँ दूर पठा देलथिन— पहिने दरभंगा, तखन पटना ।

सामान लेने ठकना आगाँ चल गेल छलैक आ ई सभ पुरना गप्प गाम दिस पैरे बढ़ैत काल भास्करकेँ अनायास मोन पड़ि गेल छलैक ।

हवेलीक पुरना चौसज्झा आँगनक मुँहपर सिंहद्वार छलैक, जाहि बाटे हाथीपर बैसल लोक आँगन जा सकैत छल । दन्तार हाथीपर बैसि अपन बापक संग कतेको बेर भास्कर सेहो ओइ सिंहद्वार बाटे आँगन आयल छल— विशेष अवसरपर, पाबनि-तिहार कऽ, दुर्गापूजामे जतरा दिन, मुदा ओइ दन्तार हाथीकेँ महेन्द्रनाथ चौधरी अपने हाथे गोली मारि देलथिन । हाथी पागल भऽ गेल रहैक ।

ओही सिंहद्वारसँ सय लग्गा आगू जाकऽ महेन्द्रनाथ चौधरीक बंगली

छलनि— अपन आ पाहुन-परक लेल बैसार । फूसेक चार, मुदा खूब सजल सीटल । सजल-सजल बाती आ चुनल-चुनल खढ़, लकड़ीक चौपहल-अठपहल सुन्दर खम्भा सभ– सुन्दरसँ रंगल-ढौरल । कुर्सी खूब ऊँच आ ताहिमे दूनू कातसँ सीमेन्ट कयल सीढ़ी । सौंसे ओसारा सेहो सीमेण्ट कयल जाहिपर दू टा सोलहत्थी शतरंजी हरदम बिछायल । एक कात बड़का आरामकुर्सी जाहिपर महेन्द्र चौधरी अपने बैसैत छलाह आ दोसर कात दस-बारह टा कुर्सी । चारमे खोसल सभ आकारक ताड़क पंखा । पाहुन-परकके आ बैसारक लोकके दू टा जन हरदम पंखा हौंकैत छलैक । उत्तरे-दक्षिणे लम्बा बनल बंगली जकर दूनू कात एक-एक टा कोठली छलैक । दक्षिणवारि कोठलीमे देवानजी गौरीशंकर कर्ण रहैत छलाह आ उतरबरियामे स्वयम् महेन्द्रनाथ चौधरी विश्राम करैत छलाह । हुनकर घरमे बड़का गद्दीवला तखतपोश छलनि आ चारसँ बड़का पंखा, झालरिवला, लटकल छलनि जकरा एकटा जन बाहर बैसल खीचैत छलनि । ई सभ भास्करकेँ ओहिना मोन छलैक ।

अही बंगलीक पुबारी कात दने सड़क जाइत छलैक जाहिपर पहिने हाथी, घोड़ा खड़खड़िया आ पैदल सवार चलैत छलैक आ आब बस, साइकिल, रिक्सा आ मोटर चलैत छैक ।

भास्कर पैरे बिदा भेल छल । चिन्हार लोक सभ भेटऽ लागल छलैक । तीन कोसक रस्तामे पहिले गाम छलैक रानीहाट । अपने जमींदारीक गाम छलैक कहिओ । आबो कोलाकोली जमीन बाँचल छैक । हाट लगैत छैक बुध आ शनि कऽ । रानी माँक हाट । जमीन भास्करेक परिवारक कोनो स्त्रीक नाम छलैक– रानी माँ कहैत छलनि हुनका लोक आ गामक नाम पड़ि गेलैक रानीहाट । पहिने कोनो आन नाम रहैक ।

बस्तीमे मुसलमानक संख्या बहुत रहैक । हाटमे आ गामे-गाम घुरिकऽ चूड़ी आ टिकुली-सिन्दुर वैहसभ बेचैत छल, हाटपर दोकान खोलिकऽ ब्लाउज-फ्राक वैह सभ सिबैत छल । रानीहाटक चूड़ी आ सिन्दुर-टिकुली सधवा लोकनि लेल चिर सोहागक प्रतीक छलनि । भरि इलाकाक स्त्रीगण एतहि खरीदैत छल चूड़ी-टिकुली-सिन्नुर । जे लोकनि हाट नहि अबैत छलीह अपने, ओहो सभ हाटसँ खरीदबा कऽ मँगबैत छलीह, अइ गामक चूड़ीहारा घरे-घर दैयो जाइत छलनि ।

आबादी एकदम मिज्झर छलैक अइ गाममे । आधा हिन्दू, आधा मुसलमान । घरो सभ एकदम मिझरायल, फराक-फराक टोल नहि । जेना-जेना

समय बितलैक, फेरी लगाबऽवला सभ हाटक बगलमे सड़कक कातेकात दोकान खोलि लेलक— चूड़ीक दोकान, टिकुली सिन्नुर आ रिबनक दोकान, दर्जीक दोकान, कपड़ाक दोकान । फेरी लगबऽवला चूड़ीहारा गोटेक-आधेक रहि गेल ।

नेनेसँ अइ गामक हाटमे अबैत छल भास्कर– कहिओ दन्तार हाथीपर तऽ कहिओ उजरा घोड़ापर । कहिओ काल पैरो ककरो संग आबि जाइत छल । कने चेतन भेल तऽ साइकिलोसँ आबऽ लागल । ई गाम आ हाट बड़ पसिन्न छलैक ओकरा । लोको सभ बड़ चीन्हैत छलैक ओकरा ।

आइयो ओकरा पैदल जाइत देखि लोकसभक चिन्हार दृष्टि अनुसरण करऽ लगलैक । क्यो प्रणाम कयलकै, क्यो आदाब । जुम्मन मियाँ अपन कपड़ाक दोकानपरसँ उठिकऽ दौड़ल अयलैक– "की बात छै हुजूर ? अहाँ इत्ती दूर पैदले ! घरपर इत्तेला न देलियै ! पसीना-पसीना हो रहल छी ! आउ, कने सुस्ता लू ! कने शर्बत-पानी पी लू ।"

भास्कर ओकर दोकानमे आबिकऽ बैसि गेल । जुम्मन मियाँ पंखा चलबैत बाजल– आब तऽ अहू इलाकामे बिजली आबि गेल हजूर ! अहुँके गाममे खम्भा गिरा देलक ।

भास्करकेँ ई गाम कने सुन्न आ उदास सन लागि रहल छलैक । पुछलकै– "की बात छै जुम्मन काका ! रानीहाटमे पहिला रौनक नहि रहलैक ।"

जुम्मनक हँसैत आकृति एक्के बेर मिझा गेलैक– "ई न पुछू हुजूर ! गाममे बचले के है जे रौनक रहत ! सभ तऽ भागि गेल ।"

भागि गेल ? भास्करकेँ बड़ आश्चर्य भेलैक– गाम छोड़ि पड़ा गेल सभ ! किएक जुम्मन काका ?

जुम्मन ओहिना उदास स्वरमे कहलकै– "न भगैत तऽ मारल जाइत हुजूर ! रानीहाटमे घिरनाके आगि पसरल रहै । आदमी-आदमीक खून के पिआसल हो गेल रहै, माय-बहिनके इज्जति लूटे चाहैत रहे, मासूम बच्चा सभकेँ संगीनके नोकपर उठा लैत रहै । 1947 के दंगामे ई गाममे लोक सभ भाइ-भाइ लेखा रहल, वाकि उहे भाइ-भाइ एक दोसर के जान के दुश्मन हो गेल ।

भास्कर व्यग्रतासँ पुछलकै– एना कोना भेलैक जुम्मन काका ? किएक भेलैक ? के कयलकै ?

जुम्मन ओहिना उदास स्वरमे कहैक– अपन मुलुक के रहनुमा सभ । उहे लोग अपन स्वारथ वास्ते घिरना के आगि पसारने छथि हुजूर !

भास्कर विह्वल होइत कहलकै– "मुदा जुम्मन काका ! एतऽ रामनवमीक उत्सव संगे होइत छल, दाहा संगे उठैत छल । ईद मनबैत छल, दीयाबाती मनबैत छल । एतऽ ई सभ कोना भेलैक ?"

–अहाँ मासूम फरिश्ता छी हजूर ! जुम्मन कहैत गेलैक– ई घिरनाके आगि जेनेसँ अबै हय, उहाँ कुच्छो स्वार्थी भेड़िया रहैय । ऊ सभ सोहागिनके माँग उजाड़ै हय, मासूम बच्चाके खून से होली खेलै हय । ऊहे सभ घिरनाक आगि अइ बस्तीमे ले आयल हजूर ! हमर आका, हमर रहबर– ई जुग के पैगम्बर– उहे सभ घिरनाके आगि पसारने छथि हुजूर ! मंजर देखि लू ईहो । चाहे घर जरल हय, चाहे खाली पड़ल हय । एहू बुढ़बा कन्हा अपन दू-दू गो जवान बेटाके लहास उठौले हय हजूर !

जुम्मन मियाँ कानऽ लगलैक । बड़ी काल तक कनैत रहलैक । भीतरसँ एकटा छौंड़ा शर्बतक गिलास दऽ गेलैक । शर्बत पीबि उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेल भास्कर –"नहि कानू जुम्मन काका ! अहाँक बस्तीकेँ नफरतक आगि नहि जरा सकैत अछि । एतऽ अखनो अहाँ सन लोक रहै अछि जे अपन-अपन दू-दू टा बेटाकेँ अपन हाथे दफना देलाक बादो भास्कर चौधरी लेल स्नेह रखैत अछि, ओकरा स्नेहसँ रोकिकऽ शर्बत पिअबैत छैक । जकरा मोनमे आइयो सभक लेल स्नेह छैक, ककरो लेल प्रतिहिंसा आ घृणा नहि छैक । अइ बस्तीकेँ घृणाक आगि कहिओ डाहि नहि सकैत अछि जुम्मन काका !

भास्कर आगू बढ़ैत गेल । मोन बड़ी काल धरि भारी रहलैक । रानीहाटक बाद नवटोल आ नवटोलक बाद गोपालपुर । चिन्हार लोक सभ दूनू गाममे हाथ जोड़ैत गेलैक आ भास्कर सभकेँ प्रत्युत्तरमे हाथ जोड़ैत आगू बढ़ैत गेल ।

अपन गाम रामचन्द्रपुर लग आबि गेलैक । हवेलीक सिंहद्वार देखाइ पड़ऽ लगलैक आ ओइ सिंहद्वारक पाछाँक ऊँच-ऊँच कोठाक छत सेहो देखार होबऽ लगलैक । भास्करकेँ किरणक चिट्ठी मोन पड़लैक, मुदा ओकरा डेराओन सन किछुओ नहि लगलैक । खाली उदास-उदास आ श्रीहीन ।

लग आबि सिंहद्वारसँ भीतर आँगनमे पैसैत काल हवेली ओहिना सोहाओन आ अपन सन लागऽ लगलैक । किरण बताहि छैक । तीन वर्षक नेनाक माय बनि

गेलैक, मुदा आइयो ओहिना छैक– एकटा अबोध शिशु । अनेरो सभ किछु डेराओन लगैत रहैत छैक ।

रामचन्द्रपुरक हवेलीमे पैर दैत किरणक मोनमे कोनो भय नहि छलैक । खाली उमंग आ स्वप्न छलैक नवजीवनक । भास्करक संग जीवन बड़ मधुर आ आकर्षक भऽ उठल छलैक सोलहे दिनमे ।

जिनगी ओनाहो ओकरा लेल बड़ उमंग आ उत्साहक चीज छलैक । माय कतबो मना करैक ओ हरदम कूद-फान आ हल्लागुल्ला मचौने रहैत छल । भाइ-बहीन सभमे छोट छलि, सभक दुलारू । बड़की बहिन बीस वर्ष पहिने सासुर गेलैक । तकर बाद पाँच टा भाइ आ तखन किरण । सभक खेलौना छलि ओ ।

अपने घर टाक नहि, गाम भरिक । घरे-घर बौआयब...ताश-पचीसी खेलायब...सखी-बहिना-चम्पा-चमेली लगायब...धारमे नहायब...गाछीमे झूला झूलब, टिकुला बीछब, मोछक झक्खा बनायब, सिंहद्वारक फूल बीछब आ भालसरीक लाल-लाल फल तोड़ब आ खायब ओकरा पसिन्द छलैक ।

तेरहम वयस भेलैक तऽ माय टोकऽ लगलैक– "आब बन्द कर ई यत्र-कुत्र बौअयनी । संच-मंच भऽकऽ घरमे बैस, चारि टा लूरि सीख । बापकेँ नहि जानि कोना निन्न होइत छौ, हमरा तऽ तोरे चिन्ता रहैत अछि हरदम ।

कखनो काल माय लग बैसऽ लागलि किरण । टहल-टिकोरा कऽ दैक, भनसोघरमे बैसि जाइ । मायकेँ अपने अकच्छ लगैक । ओकरा ठेलिकऽ बाहर कऽ दैक– "जो । गंगाक आंगनसँ घुमि आ ।"

गंगा ओकर संगी छलैक, पितिऔत बहीन । आरो बहुत संगी रहैक । कुसुम...रजनी...तीरा...फूल...सभठाम टहलि आबय...खेला आबय आ फेर माँ लग बैसि जाय । माय स्नेहसँ निहारैत बाजैक–"नहि जानि हमर ई सोन सन बेटी कोन घर जायत ?"...

किरणो आब बुझऽ लागल छलैक एकर माने । मुँह फुला कहैक— एतेक भार भेल छियौ माय तऽ गरदनि काटि दे । धार-पोखरिमे डुबा दे ।

माय ओकरा लग खीचि केश सोझरबैत कहैक– "कतेक गर्दा पड़ौने रहै

छैँ सौँसे ! जो, नहा ले । गरदनि कटबौक हम तोहर आ भार हैबैं तोँ ? बेटी तऽ जयबे करैत छैक अपन घर बाउ ! तोहर तऽ तेरहम भेलौक, हम तऽ एगारहमे बरखसँ सासुर बसै छी । तोरो अपन घर-गृहस्थी हेतौ, राजकुमार सन स्वामी हेतौ, फूल सन-सन बेटा-बेटी हेतौ...

-''धत्''-कहैत लजाकऽ पड़ा जाय किरण ।

बेदी तर कनखियेसँ देखलकै भास्करकेँ तऽ सौसे देहमे झुरझरी पैसि गेलैक । मायक बात मोन पड़लैक— राजकुमार सन स्वामी हेतौक, फूल सन-सन बेटा-बेटी हेतौक...।

पन्द्रहमे वयस रहैक । सोलहमे दिन द्विरागमन भऽ गेलैक । रामचन्द्रपुर हवेलीमे पैर दैत काल गाछी-बिरछीमे खेलायवाली, घरे-घर बौआवाली, ताश-पचीसीमे मगन रहऽवाली किरण बहुत पाछाँ छूटि गेल रहैक । एकटा बुझनुक समर्पित नारीक डेग पड़ल छलैक ओइ हवेलीमे— प्रेममे भीजल, आकण्ठ डूबल, भविष्यक स्वप्नसँ आह्लादित आ वर्त्तमानक सुखसँ रोमांचित नारीक डेग ।

कखनो ओकर बुझनुक सन गप्पपर हँसी लागि जाइ भास्करकेँ । किरण बिगड़ि जाइ...।

''-एना हँसै किएक छी ? कोनो बच्चा छी हम आब ! पन्द्रहम वयस अछि । आ अपने कोन बड़का दादा-नाना छी ! तीने वर्ष तऽ जेठ छी । पुरुष छी, हाथ-पैर नाम-नाम अछि तऽ बड़का टा बुझैत छी अपनाकेँ !

भास्कर ओकरा अपन बाँहिमे समेटि ओकरा अपन आँखिमे तकैत कहैक— ''देखू केहन बच्चा छी हम ! कतेक छोट भऽ जाइ छी अहाँ लग ! अहाँ छोड़ि आर किछु सुझिते नहि अछि । सदिखन अहीं लग नुड़िआइत रहैत छी, लाजो-धाख ने रहल । घरमे सभ हँसैत हैत । मुदा करू की ? तेना ने बान्हि लेने छी अहाँ ! एक्को क्षण हँटबाक मोने ने करैत अछि अहाँ लगसँ । परसू कालेज खुजि रहल अछि । काल्हि जयबाक अछि आ मोन आइएसँ कोनादन कऽ रहल अछि ।''

किरण विह्वल भऽ उठलैक- ''काल्हिए चल जायब अहाँ ?'' फेर बड़ी काल चुप्प पड़ल रहलैक । ओकर छातीपर अपन गाल रगड़ैत कहलकै- ''पटनामे हम मोन रहब ?''

भास्कर कोनो जवाब नहि देलकै । ओकरा अपन बाँहिक कठोर बन्धन मात्रसँ आश्वस्त करैत रहलैक- ठोरक स्पर्शसँ आश्वस्त करैत रहलैक ।

पटना पहुँचि अपन पत्रसँ ओकरा आश्वस्त कयलकै- ''अइ ठाम सभ-किछु बड़ा सुन्नर छैक, मुदा अहाँ सन किछुओ नहि छैक । बेर-बेर मोन होइ-ए जे एकटा अहाँ आबि जैतहुँ एतऽ तऽ सभ-किछु कतेक सुन्दर आ कतेक अप्पन भऽ जाइत !''

बहुत रास चिट्ठी लिखलकैक । सभ चिट्ठीमे किरणकेँ आश्वस्त करैत रहलैक । किरण लिखलकै- खूब परतारै छी हमरा ! पुरुषक कोन ठेकान, जिम्हरे गेल, तिम्हरे बन्हा गेल । मुदा हमहूँ अहाँकेँ बान्हिकऽ रखबा लेल मजबूत किलाबन्दी कऽ लेने छी । अहाँ बूझू तऽ । किन्हु ने बूझब । हम अहाँकेँ अपन गर्भमे बन्दी बना लेने छी । अहाँ हमर कोखिमे पनपि रहल छी । अहाँक अस्तित्वक सुगबुगी हम सदिखन सुनैत छी आ आतुर प्रतीक्षामे छी ओइ दिनक जहिआ हमरा कोरामे खेलायब अहाँ ।

पत्र कालेजमे भेटल छलैक । आनर्सक क्लाससँ बहरायल रहय । किरणक बुझनुक सन चिट्ठीपर अनेरो बिहुँसऽ लागल । ओम्हरसँ आरती आबि रहल छलैक। टोकि देलकै- ''ककर चिट्ठी अछि भास्कर ? एकसरे पढ़ि-पढ़िकऽ मुसकिया रहल छी ।''

आरती सिनहा ओकर क्लासफेलो छलैक । ओकर एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी । प्रतिद्वन्द्विताक संग मधुर सम्बन्धो छलैक दूनूमे । बेशी घनिष्ठता नहि, मुदा बेस मधुर औपचारिक सम्बन्ध ।

भास्कर चिट्ठी ओकरा दिस बढ़बैत कहलकै- ''बाते तेहने अछि आरती ! एकटा प्लेजेण्ट सरप्राइज । हम बाप बनऽ जा रहल छी ।''

एकाएक जेना किछु नहि बुझलकै आरती ! फेर बूझिकऽ कने लजा उठलैक आ उदास सन भऽ उठलैक- ''अहाँक विवाह कहिआ भेल भास्कर ?''

भास्कर कने लजाइत कहलकै- ''सौरी आरती ! अहाँकेँ मधुर नहि खौओलहुँ । पछिला बेर गाम गेल रही तऽ कनियाँ आनिकऽ घुरल रही । बाप बनि जाय दिअऽ, दुनू मधुर एक्के बेर खुआ देब ।''

ओकर अतिरिक्त उत्साह आ प्रसन्नता देखि आरतीकेँ हँसी लागि गेलैक- ''ए बेरी एक्साइटेड बेबी-फादर !'

भास्कर नाटकीय गम्भीरतासँ कहलकै- ''हम अहाँकेँ बेबी सन लगैत छी ? पाँच फीट एगारह इंच, वजन 160 पौण्ड, सीना चालीस इंच ।

''बस-बस बस ।'' आरतीकेँ भभाकऽ हँसी लागि गेलैक- ''मानि गेलहुँ हम । बाप बनबा लेल 'क्वालिफाइ' कऽ गेल छी अहाँ ।''

फेर गम्भीर होइत कहलकै- ''मुदा नहि जानि किएक भास्कर, हमरा अखनो विश्वासे ने भऽ रहल अछि जे अहाँक विवाहो भऽ गेल आ अहाँ बापो बनि गेल छी । इट्स आल सो अनएक्सपेक्टेंड एण्ड सडेन ! हमरा तऽ आइयो अहाँ एकटा अबोध मुदा विलक्षण प्रतिभावान शिशु सन लगैत छी जकरा हरैबाक इच्छा हमरा सभ दिन रहैत अछि मोनमे ।''

एतबा कहि गम्भीरताकेँ हँटबैत कने दुष्टतापूर्वक मुसकिया उठलैक आरती । भास्कर सहज भाव सँ कहलकै- अहाँक इच्छा अबस्स पूर्ण हैत आरती !

-'शुभकामना लेल धन्यवाद । हमरो चेष्टा जारी अछि, अहूँ सावधान रहब । नवकनियाँक दुलार आ भावी सन्तानक आगमनक आह्लादमे बिसरि नहि जायब जे एकटा प्रतिद्वन्दी अहाँकेँ पछाड़बा लेल सदिखन उद्यत अछि । अपन कनियाँकेँ हमरो दिससँ बधाइ लिखि दिअनु ।'

भास्कर किरणकेँ लिखलकै- ''अहाँ हमरा सुखपर सुख देने जा रहल छी किरण ! अहाँक ऋणसँ उऋण हैब मस्किल । लगैत अछि जेना किछुए दिनमे बड़ पैघ भऽ गेल छी अहाँ, ततेक पैघ जे हमरा अपन कोरामे खेलायब अहाँ । अपन ध्यान राखब । बड़ छोट छी अखन । अहाँ हँसब जे लगले बड़ पैघ आ लगले बड़ छोट लिखि रहल छी । दुनू बात ठीके लगैत अछि हमरा । अहाँ माय बनब से सोचि लगैत अछि जेना बड़ पैघ भऽ गेल होइ । फेर मोन पड़ैत अछि जे अहाँ तऽ स्वयम् एकटा अबोध नेना छी, माय कोना बनब ? बड़ चिन्ता भऽ रहल अछि । केहन छी, कोना छी, सभ दिन लिखैत रहू । प्राण सदिखन अहींपर टाँगल रहैत अछि ।''

बाबी सुनैत देरी नाचऽ लगलैक- ''अही लेल रुकल रही हम राजा बौआ ! आउ, जल्दी आउ आ आबिकऽ हमरा छुट्टी दिअऽ ।''

किरणक चारूकात सदिखन छाया जकाँ संग लागि गेलथिन बाबी- ई खाउ, ओ खाउ । ई करू, ओ नहि करू । किरणकेँ बुढ़िया बाबीक ई अतिरिक्त स्नेह बड़ नीक लगैक ।

गामक मौगीसभ लग बैसि-बैसि ओकरा डेरा जाइ- ''पन्द्रहमक गर्भ छनि, सोलहममे जन्म देथिन । हे भगवती 'रच्छा' करबनि ।''

बाबी सभकेँ डाँटिकऽ भगा देथिन । एकसरमे अपनो खूब कबुला-पाती

करथि मुदा सभक सामने कहथिन- ''अहाँ सभक ढकोसला थिक खाली । सोलहममे भेने की हेतैक ? अनेरो डेरबैत छी हमर फूल सन नेनाकेँ ...।

स्त्रिगण सभ हाथ-मुँह चमकबैत लोहछिकऽ चल जाय । बाबी लग आर किछु बजबाक साहसे ने होइ । बाबी तखन किरण लग बैसल रहैक घण्टो- ''ई सभ अन्धविश्वास थिकैक । कोनो चिन्ता नहि करब । हमरा अपने भेल अछि सोलहममे । एहिना सभ पहिनहिसँ डेराकऽ अधमरू कऽ देने छल ।''

भास्करक मायकेँ बजाकऽ डँटलथिन- ''अहाँ तऽ एकदम अपरोजक छी हीरा बौआसिन ! नहि जानि कोन काजमे लागल रहैत छी ! थम्हा दिअनु ओ सभ प्रेमाकेँ । कने अपन पुतहुकेँ देखू, ओकरा लग बैसू, ओकर ध्यान रखियौ, नीक-नीक चीज खाय लेल दियौ, नीक-नीक गप्प कहियौ ।''

बाबी आशा चौधराइनकेँ हीरा बौआसिन कहैत छलथिन । रम्भाकेँ सेहो बजाकऽ डँटलथिन- ''अहाँ तऽ नहि जानि कोन दुनियाँमे रहैत छी, हरदम पट बन्द । अपना तऽ कहिओ भेल नहि, की जाने गेलियैक जे केहन जनमारा होइ छैक ई पहिल सन्तान । ताहिपरसँ सोलहम वयस । देयादिनिये नहि, छोट बहिनो अछि अहाँक । कनेक ओकर ध्यान रखियौ आइ-काल्हि...

बड़ पैघ बात कहि देलथिन बाबी ! आन क्यो कहने रहतैक तऽ तिलमिला जाइत रम्भा । बाबीक स्नेह देखिकऽ हँसी लागि गेलैक । मूड़ी झुका हँसिकऽ कहलकनि- ''ई सभ छथिने तऽ हम किएक चिन्ता करियैक...'

अपन बेटोकेँ डाँटि अयलीह बाबी-''कोन दुनियामे रहै छऽ तोँ महेन ! आंगनमे कुलदीपक आबऽ लेल छऽ, आ तोँ एकदम निश्चिन्त छऽ ! कने डाक्टरनी बजाकऽ सभटा पहिनेसँ जाँच-ताँच कराकऽ देखाऽ लहक ।''

दरभंगासँ नामी डाक्टर आयलि अपन मोटर चढ़िकऽ । देखिकऽ सन्तोष व्यक्त कयलक— एवरी थिंग इज नार्मल । चिन्ताक कोनो प्रयोजन नहि ।

जहिया नवजात शिशुक क्रंदन पसरलैक, बाबी ओकरा कोरामे लऽ नचैत-नचैत बेहाल भऽ गेलीह, हमर राजा...हमर सोना...

वर्षे दिन बाद बिछौन धऽ लेलनि । सभकेँ बजाबऽ कहलथिन— आब बेर आबि गेल, आब हम जायब । भास्करोकेँ बजबा लियौ...

भरि गामक लोक गामक रानी माँक दर्शन करऽ अयलनि । ककरो विश्वासे

ने होइ जे हिनका किछु हेतनि अखन । सभक संग गप्प कयलथिन । सभकेँ आशीर्वाद देलथिन । भास्करकेँ बजबऽ आदमी गेलैक पटना आ संगे लेने घुरलैक। ओही दिन बाबी बिदा भऽ गेलीह ।

जयबासँ पूर्व बाबी स्वयम् कहलथिन- ''उठा ले भास्कर अपन कोरामे । घरसँ बाहर लऽ चल, आंगनमे तुलसीचौरा लग पाड़ि दे ।'' भास्कर नीक जकाँ कोरामे समेटि बाबीकेँ आंगनमे लऽ अनलकनि ।

भरि गाम चकित छल । कोना हँसि-बाजि रहल छलथिन ! अखन कोना किछु हेतनि ? मुदा आंगन अयबाक दसे मिनटक भीतर गरामे घरघरी आबि गेलनि। भास्कर मुँहमे गंगाजल देलथिन चम्मचसँ । एक घोंट कंठ तर गेलनि । दोसर घोंट मुँहमे रहि गेलनि । गरा टगि गेलनि आ गंगाजल मुँहसँ बाहर टघरि गेलनि ।

भास्कर आँखिक कोरसँ बलबल नोर फेकि देलकै । आँगनमे जमा सौँसे गामक स्त्री-पुरुषक आँखिमे नोरे-नोर छलैक । जे सुनलकै, जतऽ छलै, ततहिसँ कनैत अयलैक ।

आ बाबीक चिता लग ठाढ़ भास्करक मोनमे फेर बहुत रास प्रश्न घुरघुरा उठलैक— बाबी चल गेल । किएक चल गेल ? लोक एना किएक चल जाइत छैक ? गुरुजी मना कयने रहथिन ई सभ सोचबा लेल भास्करकेँ । एकटा राजकुमारक मोनमे युवावस्थामे ई सभ प्रश्न उठल रहनि । अपन सूतल पत्नी आ पुत्रकेँ छोड़ि ओइ प्रश्न सभक उत्तर ताकऽ विदा भऽ गेल छलाह ।

भास्कर कतहु पड़ाय नहि चाहैत छल । किरण आ राजाकेँ छोड़ऽ नहि चाहैत छल । ओ तऽ सभक संग जीबऽ चाहैत छल । मुदा बेर-बेर कोनो सबाल ओकरा मोनमे ठाढ़ भऽ जाइत छलैक । एकटा अनचिन्हार लोक ओकरा मोनमे जनमऽ लगैत छलैक । एकदम अनचिन्हार नहि छलैक ओ लोक । नेनेसँ बेर-बेर मूड़ी अलगबैत-अलगबैत किछु चिन्हार सन भऽ गेल छैक । मुदा ओकरासँ कोनो मतलब नहि राखऽ चाहैत अछि । ओ तऽ अपन परिवार— पत्नी-बेटाक संग एकटा साधारण लोकक जिनगी जीबऽ चाहैत अछि । फेर ई असाधारण प्रश्न सभ कोना जनमि जाइत छैक ओकर मोनमे ? बाबीक काज-तिहार भरि वैह सभ प्रश्न ओकरा मोनमे गोंगिआइत रहलैक- जे प्रिय छैक, जे अप्पन छैक, से कतऽ चल जाइत छैक ? किएक चल जाइत छैक ? घुरिकऽ किएक ने अबैत छैक ?

घुरिकऽ कालेजक होस्टलमे आबि गेल, तैयो ओ प्रश्न सभ पछोड़ धयने

रहलैक । बाबीक गप्प.....ओकर खिस्सा...ओकर रामायण— सुतली-सुतली राति कऽ कानमे गोंगिआइत रहलैक ।

ओ किरणकेँ पत्र लिखि-लिखि अपना मोनकेँ दोसर दिस लऽ जयबाक चेष्टा करय- जे कोरामे खेलाइत अछि, सदिखन तकरे ध्यानमे मगन रहैत छी की कौखन ओकरो ध्यान अबैत अछि जे सुदूर पाटलिपुत्रमे अहाँक नामक जाप करैत बैसल अछि ? हमरा अपने सन्तानसँ ईर्ष्या करबा लेल विवश नहि करू । कहिओ काल इम्हरो ध्यान करू हे ममतामयी !

किरण लिखलैक- 'बड़ चालाक भऽ गेल छी । हमरा प्रसन्न करबा लेल बात गढ़ैत रहैत छी । हम आभारी छी तकर । हमर तऽ सदिखन— जगैत-सुतैत हरदम अहीँपर ध्यान रहैत अछि । हमर कोरामे जे प्रतिमूर्ति दऽ गेल छी अपन तकरा संग मोन बहटारबाक चेष्टा करैत छी, मुदा नहि जानि किएक बड़ डर लगैत अछि आब हमरा अइ हवेलीमे । अहाँक गेलाक बाद ई हवेली भयावह भऽ जाइत अछि । बाबी नहि रहलीह, माय अपन दुनियाँमे रहैत छथि । बहीनक कोठलीक पट्ट बन्द रहैत छनि- सदिखन गुमसुम । लगिते नहि अछि जे हमरे जेठ बहिन छथि, जोर दऽ अहाँक सङ्ग हमर विवाह करौने छथि । चौधरी राति भरि लुच्चा-लफंगा सभक संग बोतल लेने बैसल रहैत छथि हवेलीमे । हुनका टोकबाक साहस ने अहाँक मायमे छनि, ने हमर बहिनमे । हमरा तँ लगैत अछि जेना बाबूओ डेराइत छथिन हुनकासँ । बाबूक कोठलीमे जयबाक साहस ककरो नहि छनि । दुनू बाप-बेटाक आमना-सामना कम होइत छनि । कहिओ काल होइतो छनि तँ हमरा लगैत अछि जे बाबुए आँखि बचबैत पड़ा जाइत छथि । ओइ कालमे चौधरीक आँखि धहधह जरैत रहैत छनि । ओइ धधरासँ हमरा बड़ डर होइ-ए । लगैत अछि जेना परिवारक कोनो अनिष्ट होमऽवला होइ । भऽ सकैत अछि हमर भ्रम हो । मुदा हमरा जे लगैत अछि, से अहाँकेँ लिखि देलहुँ ।

हमरा बड़ डर लगैए- अहाँ लेल, राजा लेल । सौँसे परिवार लेल । कोनो अनिष्टक आशंकासँ कोंढ़ हरदम कँपैत रहैत अछि । अहाँ जल्दी पढ़ाइ खत्म करू आ चल आउ । राजा आब बाजब सीखि रहल अछि । एक बेर ओकरो मुँहे सुनि जइयौक- कोना 'पप्पा' कहैत अछि अहाँकेँ....।''

भास्कर नहि जा सकलैक तुरत । औनर्सक परीक्षा भऽ गेल छलैक । परिणामो निकललैक । आरती अपने आयलि रहैक अखबार लेने- ''ऐ बेर फेर बाँचि गेलहुँ अहाँ । पहिल स्थान फेर मारि लेलहुँ । मुदा एम.ए. मे नहि छोड़ब । कांग्रेचुलेसन्स बेबी-फादर !

आरती ओकरा बेबी फादर कहऽ लागल छलैक । ओकरा क्रोध नहि होइत छलैक । आश्चर्य होइत छलैक जे सेकेण्ड भेलोपर...ओकरासँ हारि गेलोपर ओतेक प्रसन्न कोना रहैत छलैक आरती ! ओ सेकेण्ड भऽ जाइत तँ मुँह लटकि जइतैक ।

एम.ए. मे नाम लिखौलाक बाद एक दिन भास्कर आरतीसँ कहलकनि- ''अहाँक हृदय कतेक पैघ अछि आरती ! अहाँ सन कम्पीटीटर पाबि भाग्यशाली छी हम ।''

आरतीक आँखिमे नहि जानि कोन भाव आबि लुप्त भऽ गेलैक । हँसैत कहलकै- 'सत्ते । हृदयक बात बूझि लैत छियै अहाँ !'

भास्कर चौँकिकऽ ओकरा दिस देखलकै । आरती सम्हरि गेल रहैक- ''एना चौँकू नहि बेबी फादर ! हँसी कयने रही हम । अहाँक एही सरलतापर तऽ दया आबि जाइत अछि आ सभ परीक्षामे छोड़ि दैत छी । सेकेण्ड हैब तँ नेना जकाँ कानऽ लागब, फेर हमरे आँचरसँ नोर पोछऽ पड़त...। छी ने हम बहादुर लड़की— ए ब्रेब गर्ल...

भास्करो कने दुष्टतासँ कहलकै- ए ब्रेब नौटी स्वीट गर्ल....।

आरती बनाबटी क्रोधसँ कहलकै- ''कनियाकेँ चिट्ठी लिखि देबै बेबी फादर....।''

भास्कर अपन चिट्ठीमे लिखलकै- ''परीक्षामे नीक जकाँ पास भेलहुँ, एम.ए.मे नामो लिखा लेलहुँ । गाम नहि आबि सकलहुँ । छुट्टी छल मुदा प्रतियोगिताक फार्म भरि लेने छी । अहाँ तामस नहि करब । अहीँ सभ लेल ई सभ कऽ रहल छी । राजाक 'पप्पा' कहब तँ हम एतहुसँ सुनैत रहैत छी ।

अहाँकेँ तँ हम बहादुर बुझैत रही । एतेक डेरबुक कोना भऽ गेलहुँ अहाँ ? हवेलीक कोनो अनिष्ट नहि हेतैक । अपन मोनसँ भ्रम बाहर कऽ दिअऽ ।

भैया लेल अहाँ चिन्ता नहि करू । हुनकर स्वभाव शुरुएसँ एहिना छनि । भौजी सन स्त्री पाबियोकऽ नहि बदललाह । शराब हुनकर पुरान संगी छनि । बाबूजीकेँ हुनकासँ डेरेबाक कोनो कारण नहि छनि । अहाँकेँ भ्रम भेल अछि । एक तरहे दुनू गोटेक स्वभाव आ व्यवहार मिलैत छनि । घरमे अपवाद हमहीं छी ।

भौजी लेल हमरो चिन्ता रहैत अछि । ओ एना गुम्म-सुम्म किएक भऽ गेलीह ? हरदम हँसैत-हँसबैत रहैत छलीह भौजी । भितरे-भीतर कोनो दुख हुनका

घुन जकाँ खा रहल छनि । भैया लेल नहि हेतनि ओ दुख । हुनकर आदति आ अत्याचारक अभ्यस्त भऽ गेलि छथि ओ । भरिसक धीया-पूता नहि हेबाक दुःख मोनक कोनमे दबल पीड़ा दऽ रहल हेतनि । वयस भेलनि आब । अहाँ राजाकेँ बेशी काल हुनके लग छोड़ि दिऔक ।

किरणक दोसर पत्रमे एकटा भारी विस्फोट भेलैक— जकर डर छल, सैह भेल । प्रेमा पीसी कनैत चिचिआइत आँगनसँ चल गेलीह । हुनकर गेलाक बाद हुनकर बेटा, अहाँक संगी ब्रह्मा, हवेलीमे पैसिकऽ भैया-बाबूजी आ सौँसे चौधरी खानदानकेँ गारिक तर कऽ गेल । तामसे बताह भऽ गेल छल । ओकर मायक इज्जतिपर हमला भेलैक हवेलीमे । ओ हवेलीमे आगि लगा देबऽ चाहैत छल । भैया तऽ घरेसँ लापता भऽ गेलाह, बाबूजी नहि जानि कोना बर्दाश्त कयलथिन । हुनकर आँखिमे एकटा भयानक भाव हम देखलियनि । नहि जानि प्रेमा पीसी आ ब्रह्माक की हेतनि ?

ओना हैबा लेल आब किछु बाँकी नहि छनि । प्रेमा पीसी अपने हमरा कहलनि । अइ हवेलीमे हुनकर सभ-किछु पहिने लुटा गेल छलनि । पहिने अहाँक बाबू आ तखन अहाँक भैया । प्रेमा पीसी पाथर भऽ गेल छलीह । सुनिकऽ हमहूँ घृणासँ सिहरि गेलहुँ ।

ई सभ कहबा लेल नुकाकऽ आयल छलीह । कनैत कहलनि- ''आइ अहाँकेँ सभटा कहब कनियाँ ! बिना सभटा कहने मोन चैन नहि हैत । भास्करकेँ अपन बेटा जकाँ पोसलियैक- अपन ब्रह्मोसँ बेशी दुलार कहब तऽ डाइन सन लागब । मुदा से हम कयलियैक । अइ हवेलीमे सभक लेल, नोकरो-चाकरक लेल दिन-राति चूल्हिमे झोंकाइत रहलौं । हवेलीक मालिक एक दिन एकटा दोसर आगिमे झोँकि देलनि । विधवाक धर्म नष्ट कयलनि । कनैत-कनैत बताहि भऽ गेलहुँ । फेर आहँक भैसुर ओकरा दोहरौलनि । बेरा-बेरी दुनू दिस झिकाइत रहलहुँ । खाली एकटा मुर्दा देह बनिकऽ रहि गेलहुँ । आत्मा मरि गेल । नहि जानि किएक, ओहि राति जखन जानवर जकाँ नोचऽ-काटऽ लगलाह अहाँक भैसुर तँ मोन विद्रोह कऽ उठल । चिचिआइत पड़ैलहुँ, भरि गाम बूझि गेल । आब कोनो डर नहि रहल । हमर निर्णय तँ ऊपर हैत । समाजक हमरा डर नहि अछि । डर अछि ब्रह्माक । ओकरा कहि पछता रहल छी हम । ओ बताह भेल अछि । हवेलीक ओ की बिगाड़तैक... मुदा ओकर रक्षा के करतैक ? अहाँ भास्करकेँ लिखि दिऔ कनियाँ....वैह टा बचा सकैत छैक ब्रह्माकेँ ।''

तेँ लिखै छी जे जल्दी आउ । हमरा बड़ डर लगैत अछि । अहाँ हँसब जे हमरा कथीक डर ? अपन घरमे कोन डर ? हम आइ निस्संकोच भऽ लिखैत छी जे ई हवेली ओतबे दिन हमर घर रहैत अछि, जतबा दिन अहाँ रहैत छी एतऽ । अहाँक जाइत देरी ई हवेली एकटा भुतहा घर बनि जाइत अछि आ हमरा सभ ठाम डर लगैत अछि । बाबी छलीह तँ हवेलीक एक भागमे सुख-शान्ति आ आराम भेटैत छल । आब ओहो नहि रहलीह । ई हवेली एकदम डेरौन लगैत अछि । अहाँ जल्दी आउ ।

किरण प्रतीक्षामे छलि ।

दिन-पर-दिन बितल जा रहल छलैक । भास्कर ने कोनो चिट्ठी देलकै, ने समाद । दुर्गापूजा-दीयाबाती सभ बीति गेलैक । किरणक मोनमे एकटा आहत अभिमान छटपटाइत रहलैक ।

हवेलीमे आब एक्को क्षण ने रहल जाइत छैक ओकरा । सदिखन कोनो भय । ऊपरसँ हवेली बड़ शान्त लगैत छैक । प्रेमा पीसीक काण्ड आ ब्रह्माक उग्र विद्रोह आ दोषारोपणक बाद हवेली आर शान्त भऽ गेल छलैक । हवेलीमे लोक ओहिना कम छलैक, खबासे-खबासिनी, चरवाहे-नौकर बेशी । ओहो सभ जेना डेरायल सन रहय— सदिखन सहमल ।

महेन्द्रनाथ चौधरीक खबास छलनि गोपिया । ओ हरदम हुनके लग रहैत छलनि । अनकर कोनो काज ओ नहि करैत छल । आशा चौधराइनक कोनो खास खबासिनी नहि छलनि । भनसाघरक काज देखैत छलैक रेमनी । वैह हुनको टहल-टिकोरा करैत छलनि । सचिनक खबास छलनि सुरजा आ खबासिनी रहनि ओकर बहिन गुजरी । रम्भाक खबास रहनि बतहा आ किरणक खबासिनी रधिया । गाय-महीसमे चलितराक सङ्ग ओकर बेटा ठकना आ सुबधा रहैत छलैक । ओ सभ दोसर खण्डमे रहैत छलैक । पछबरिया घरक पाछाँ, जतऽ माल-जालक घर आ जरनघरा छैक ।

अपन दीदीक कोठलीक बगलेमे किरणक कोठली छलैक । बतहा अधिक काल रम्भाक कोठलीमे घोसिआयल रहैत छल । शुरू-शुरूमे कोनादन लगैक ओकरा एकटा खबासक एना कोठलीमे दिनराति घोसिआयल रहब । बादमे अभ्यस्त भऽ

गेलि । दीदीक एकान्तवास आ ओकर चुप्पी आ उदासी ओकरा रहस्यमय लगैक । एक दिन साहस कऽ दीदीक कोठलीमे गेलि । रम्भा ने ओकर कोठलीमे अबैत छलैक ने ओकरा अपन कोठलीमे बजबैत छलैक । ओहि दिन कोठलीमे पैसि किरण देखलकै जे ओकर दीदी बिछौनपर पड़ल छलैक- लाल-लाल आँखि, केश छिड़िआयल । ओकरा डर भेलैक । लग जा पुछलकै- मोन खराप छौ दीदी ?

दीदी हँसऽ लगलैक- "आइ बहिन कोना मोन पड़ि गेलौक ? बगलक कोठलीमे दीदी एकसरि पड़ल रहैत छौक, लगमे कहिओ हुलकियो देबाक मोन नहि होइत छौक ? हमरासँ डर होइत छौक ? लगमे बिछौनपर बैसैत किरण कहलकै— "उन्टा दोष नहि दे दीदी ! छोट बहिन छियौ, अपने जोर लगा अइ हवेलीमे अनलैं । एकसर एहि अनचिन्हार आ डेरौन हवेलीमे सभसँ त्रस्त रहैत छी, कहिओ घुरिकऽ खबरि नहि लेलैं । अइ कोठलीक एकान्तमे नहि जानि कोना तोहर मोन नहि अगुताइत छौ ? आइ जबर्दस्ती हमहीँ चल आयल छियौ ।"

रम्भा जेना डेरा उठलैक । एकदम निषेध करैत बाजि उठलैक- "नहि आ, नहि ताक एम्हर । ई संसार, हवेलीक अइ कोनाक संसार अभिशप्त छैक, एहिमे हमरे जीबऽ दे । तोँ अपन दुनियाँमे प्रसन्न रह । इम्हरका छाया तक स्पर्श नहि कर । हमरा छोड़ि दे एहि कोठलीक एकान्तमे ।"

किरण अपन बहिनक गरामे दुनू बाँहि दऽ छातीपर पड़ि रहल— किएक दीदी ? किएक छोड़ि दियौ तोरा ? नहि छोड़बौ आब एकसर ओकयबा लेल । कोन एहन दुःख छौ तोरा जकरा लेल एना एकान्तमे प्राण देबैं ? जे नहि छौ, तकरा लेल कोन दुख ! हमरा लोकनि तऽ छियौ- राजा छौक...

अपन छोट बहिनक बुझनुक सन गप्पपर रम्भाकेँ हँसी लागि गेलैक— "अपन बाँझ हेबाक दुखसँ नहि नुकायल छी । तोँ तऽ छोट बहिन छैंहे । अइ हवेलीमे आबि भास्करोकेँ अपन सन्ताने जकाँ पोसलियैक, तेँ तोरा मायक ममताक संग कहैत छियौ- "इम्हरका छायो दिस नहि बढ़ा हाथ । जरि जयबैं, अपवित्र भऽ जयबैं । एहि आगिमे एकसरे जरऽ दे हमरा..."

किरण क्रोधे लहकि उठल- "आबऽ दहुन आइ । अबस्स पुछबनि हम । सभटा मर्यादा तोड़िकऽ पुछबनि । भैंसुर छथि, जेठ बहिनोइ छथि । दुनू तरहें श्रेष्ठ छथि । मुदा आइ अबस्स पुछबनि हुनकासँ जे ई शोभा दैत अछि अहाँकेँ ? घरमे सुन्दरी युवती स्त्री एक्सर पड़लि बाट तकैत रहैत अछि आ अहाँ जहाँ-तहाँ मुँह

मारैत रहैत छी । एक्कोटा मौगी अछि अइ परोपट्टामे हमर बहिन सन आ अहाँ छुतहरनी सभक कोरामे ओंघरायल रहैत छी । आइ अबस्स लेबनि हम जवाब ।''

रम्भा अपन छोट बहिनक तमसायल आकृतिकेँ स्नेहसँ तकैत रहल । आँखिमे बहुत रास नोर भरि अयलैक । ओकरा नुकबैत कहलकै- ''जवाब तोरा नहि भेटतौक किरण ! ओ नहि दऽ सकथुन जवाब तोरा । आइ हमहूँ नहि कहि सकबौक किछु, कहबाक साहसे नहि अछि । भरिसक कोनो दिन कहबाक साहस होअय । यदि ककरो कहि हैत, तऽ तोरा अबस्स कहबौ । ताधरि दूरे रह... एम्हर नहि ताक...नहि पुछहिक ककरोसँ किछु....।

किरण आर उदास भेल घुरि आयलि । दीदी आ ओकर कोठली आर रहस्यमय भऽ उठलैक । फेर बहुत दिन धरि नहि गेल ओम्हर । भास्करक कोनो चिट्ठी-पत्री नहि आबि रहल छलैक । मोन उद्विग्न छलैक...राति कऽ निन्न नहि होइ । आ राति बितलापर दीदीक कोठलीसँ कखनो जोरसँ हँसबाक तऽ कखनो सिसकि-सिसकि कऽ कनबाक स्वर ओ स्पष्ट सुनैक । सुनिकऽ मोन औनाय लगैक । पैर ओम्हर जाय लगैक । फोर दीदीक निषेध मोन पड़ैक आ पैर बन्हा जाइक ।

कोनो-कोनो राति दीदी जोरसँ बतहापर चिचिया उठैक-''निकल....निकल अइ कोठलीसँ ! तोहर एहन मजाल...हमरापर हुकूमति करबैं तोँ...दू कौड़ीक नौकर, निकल अखने अइ घरसँ !''

दीदीक उन्मादिनी स्वर सुनिकऽ ओकर इच्छा होइ जे दौड़िकऽ ओइ कोठलीमे जाय आ लतियाकऽ बाहर कऽ दैक बतहाकेँ... दीदी बताहि भेल छैक...सुतली रातिमे एकटा नौकरकेँ घर घुसौने रहैत छैक...आर क्यो नहि भेटलैक ओकरो...छि: छि: छि: !

फेर दीदीपर दया आबि जाइत छलैक । क्रोध आ घृणा बिला जाइत छलैक । क्रोध, घृणा आ दयाक ई चक्र सभ दिन ओकर मोनमे उठैत छलैक मुदा दीदीक कोठली धरि जा नहि होइत छलैक । दीदीक निषेध ओकर पैर बान्हि देने छलैक ।

फेर जेना एकटा बिहाड़ि उठलैक हवेलीमे । राति बेशी नहि भेल छलैक । किरण खयनो नहि छल तावत । प्रेमा पीसी चिचिआइत सचिनक कोठलीसँ पड़यलथिन । हुनकर चीत्कार सुनि किरणो अपन कोठलीसँ बाहर आबि गेल आ रम्भो । आशा चौधराइन सेहो अपन कोठाक ओसारापर आबि गेलीह । भनसाघरक रेमनी आ पछुआड़क नोकर-चाकर सभ जमा भऽ गेल छलैक । बीच आँगनमे

अर्धनग्न ठाढ़ि छलीह प्रेमा । कपड़ा चिर्री-चिर्री भेल छलनि, सौसेँ मुँह नोछड़ल-काटल छलनि, मुदा अपना देह झँपबाक होश नहि छलनि । ओ खाली चिचिया रहलि छलीह बताहि जकाँ । जेना क्यो कण्ठ मोकि रहल होनि, ओ अपन प्राणरक्षार्थ चिचिया रहल होथि....चिचिआइत-चिचिआइत बताहि भऽ गेल रहथि- ''पापक हवेली थिक ई । एतऽ मनुक्ख नहि, जानवर रहैत अछि । नोचिकऽ खा लैत छैक मनुखकेँ । अबै जो, अबै जो, देखहिक अइ इवेलीक जानवर सभक चेहरा ।''

सभ अपन-अपन स्थानसँ हुलकैत रहलैक, आँगनक मुँहथरि धरि अयलैक, मुदा क्यो आगू नहि बढ़लैक । प्रेमा चिचिआइत आँगन सँ बाहर दौड़लीह— तोँ सभ नहि बिगाड़बहिक एकर किछु । डर होइत छौक तोरा सभकेँ । हमर बेटा देखतैक एकरा सभकेँ । बजबैत छियै ओकरा...

आँगन शान्त भऽ गेलैक । नौकर-चाकर अपन-अपन काजमे लागि गेल । रम्भा आ आशा चौधराइन सेहो अपन-अपन घर गेलीह । खाली किरण अपन जगहपर ठाढ़ि रहलि, जेना पैर सटि गेल होइ । प्रेमा पीसीक ओ उन्मादिनी रूप देखि ओ स्तम्भित रहि गेल छल ।

नहि जानि कतेक काल ठाढ़ि रहलि ओ ! तखने ब्रह्मा एकसर गरजैत आँगनमे अयलैक । खाली हाथ, मुदा क्रोधे थरथराइत, अभद्र गारि पढ़ैत- ''निकल घरसँ आइ यदि एक बापक जनमल छेँ । निकल सार सचिन आ महेन्द्र चौधरी । आइ दुनू बाप-बेटाकेँ चीरिकऽ राखि देबौक अही आँगनमे !''

आँगनमे क्यो नहि बहरेलैक । खाली किरण ठाढ़ि छलि अपन ओसारापर । ओ ब्रह्माकेँ चीन्हैत छलैक । ओकर स्वामीक दोस्त । केहन शान्त आ सभ्य छलैक ! स्वस्थ शरीर आ सुन्दर आकृति, रंग कने पिण्डश्याम । भौजी कहैत छलैक किरणकेँ आ रम्भोकेँ। आशा चौधराइन घरसँ बहरयलीह, रम्भो घरसँ बहरैल । दूनू अपन-अपन ओसारापर ठाढ़ि भऽ गेलीह ।

ब्रह्मा जेना ककरो नहि देखलकनि । ओ तऽ महेन्द्रनाथ चौधरी आ हुनकर बेटाकेँ ताकि रहल छलै— 'अइ पापक हवेलीकेँ जराकऽ सुड्डाह कऽ देबैक । जे हाथ हमर मायक देह दिस बढ़ल, तकरा काटि देबैक हम । निकल बेटी...

गारिक तर कऽ देलकै ब्रह्मा । सचिन घरसँ निपत्ता छल । महेन्द्रनाथ चौधरी तामसे थरथराइत अपन ओसारापर आबि गेलाह । किरणकेँ डर भेलैक जे ब्रह्मा कोनो काण्ड करतैक । मुदा ओ ओहिना आँगनमे ठाढ़ सातो पुरखाक उद्धार करैत

रहलैक । महेन्द्रनाथ चौधरीक आँखिमे रक्तिम ज्वाला दहकऽ लगलनि, मुदा किछु बजलाह नहि ।

नौकर-चाकर सभ आगू बढ़लैक । ब्रह्माकेँ पकड़िकऽ आँगनसँ बाहर लऽ गेलैक । जाइतो-जाइतो गारि दैत रहलैक ब्रह्मा ।

फेर सभ अपन-अपन कोठलीमे घुरि गेल । हवेली एकदम शान्त भऽ गेलैक जेना किछु भेले नहि होइ ! किरणकेँ हवेली आर डेरौन लागऽ लगलैक। भास्करपर क्रोध होबऽ लगलैक । चुप्पी सधने कोना निश्चिन्त दूर बैसल छलैक !

प्रेमा पीसी ओइ साँझ नुकाकऽ अंगना अयलथिन । कल जोड़िकऽ कानऽ लगलथिन । अपन सभटा कथा कहलथिन । ब्रह्माक अनिष्टक आशंकासँ ओ काँपि रहल छलीह । खाली भास्करक भरोस छलनि । नेहौरा कऽ चिट्ठी लिखऽ कहऽ आयल छलथिन ।

किरण लिखलकै चिट्ठी । सभ बात लिखलकै चिट्ठीमे । तैयो कोनो उत्तर नहि अयलैक । आहत अभिमान मोनमे छटपटाय लगलैक ।

दीदीपर सेहो बड़ क्रोध भेलैक । एना कोना बर्दाश्त करैत अछि ओ ? प्रेमा पीसीक संग एहन काण्ड कयलथिन भैया, तैयो चुपचाप देखैत रहलीह । फेर अपन कोठली चल गेलीह, जेना किछु भेले नहि होइ ! ओइ राति दीदीक निषेध बिसरि गेलैक किरण । रम्भाक कोठलीमे बत्ती जरि रहल छलैक आ बतहा ओही कोठलीमे छलै । तामसे हनहनाइत किरण ओइ कोठलीमे पैसि गेलि । बिछौनपर पेटकुनियाँ देने पड़लि छलैक दीदी । छाती तर दूटा गेरुआ छलैक, आ दहिना हाथ पलंगक नीचाँ लटकल छलैक । मुँहपर केश छिड़िआयल छलैक । पलंगसँ सटल राखल एकटा छोटका टेबुलपर एकटा पैघ सन बोतल राखल छलैक जे आधा खाली भऽ गेल छलैक । बतहा एकटा कोनमे सहटिकऽ सहमल ठाढ़ छलैक । किरणकेँ देखिते कोठलीसँ पड़यलैक । किरण पलंग लग जा अपन दीदीक देहपर हाथ राखि देलकै।

रम्भाक आँखि खुजलैक । फेर बन्द भऽ गेलैक । बड़ मस्किलसँ फेर खुजलैक, फेर बन्द भऽ गेलैक । तेसर बेर चेष्टापूर्वक आँखि खोलैत किरणकेँ चिन्हलकै- ''देखिए लेलैं तोँ ? मना कयने छलिऔक ने जे इम्हर नहि ताक !''

किरण घृणापूर्वक कहलकै- तोहर ई हाल दीदी ! छि: ! लाजे मरि गेलौं हम तऽ । माय बाबूजी सुनथुन तऽ की हाल हेतनि ? ई सभ कहाँसँ सीखि लेलैं दीदी ?

''सिखा देलक गय— समय सभटा सिखा देलक । सभटा लाज, सभटा संस्कार छीनि हमरा निर्लज्जि आ भ्रष्ट बना देलक । तोहर चौधरीकेँ पीबाक शौक छलनि, कहिओ काल जबर्दस्ती चटा दैत छलाह । बोकरैत-बोकरैत बेहाल भऽ जाइत छलहुँ, कण्ठ तैयो जरिते रहैत छल । फेर नहि जानि कहिआसँ, ओही बुन्दसँ कण्ठ तर होमऽ लागल— बिना एकरे एक्को क्षण बितब पहाड़ लागऽ लागल । अइ हवेलीक अइ सुन्न घर-आँगनमे इएह टा चौबीस घंटाक संगी भऽ गेल । क्यो संग नहि देलक हमर, मात्र यैह टा संग देलक....एकरे संग जीबैत छी हम ।

किरण ओहिना घृणापूर्वक कहलकै- ''घरमे आर की क्यो छौक ? हमरा सभक संग जीवन नर्क भऽ जाइ छौक आ कोठलीक अइ एकान्तमे अइ बोतल-गिलासक संग स्वर्ग भेटैत छौक ! किएक ने जीबैत छैं सभक संग... के मना कयने छौक तोरा पूजा-चौकामे जयबासँ ?''

रम्भा ओकर घृणासँ विकृत मुँह देखि हँसऽ लगलैक- 'मना कयने अछि गय...सभठाम वर्जित छी हम । कतहु ने जा सकैत छी । हमर स्पर्शसँ अपवित्र भऽ जयतैक सभ । विश्वास नहि होइत छौक हमर बातक ? पूछि लिअहुन मायसँ, हुनका सभ बूझल छनि । जाय देतीह हमरा पूजाघर आ चौकामे ?

किरणक घृणा विलीन होबऽ लगलैक । फेर अपन बहिनपर दया होबऽ लगलैक । ओकर देह झकझोरैत कहलकै- ''किएक दीदी ? किए ने जाय देथुन तोरा ? कोन अपराध भेल छौ तोरासँ...?

रम्भा जोरसँ ठेलि देलकै ओकरा- नहि छू हमरा । मना कयने छलियौ, हमर छायोक स्पर्श जुनि कर । हमर अपराध अक्षम्य अछि । हमरा क्यो क्षमा नहि देत । ने तोहर चौधरी- ने हुनकर माय । ने ई समाज । सभक घृणा चाही हमरा । हम ओकरे पात्र छी ।

किरण खसैत-खसैत बाँचल । किछु काल अवाक् ठाढ़ि रहल ओइ कोठलीमे । रम्भाक उत्तेजित शरीर फेर शिथिल भऽ गेलैक । हाथ ओहिना पलंगसँ नीचाँ लटकि गेलैक । मुँहपरसँ केश हँटि गेलासँ सुन्दर गोर आकृति रोशनीमे चमकि उठलैक- अपन दुधिया कान्तिक संग ।

किरण कोठलीसँ बाहर आबि गेल । बतहा चौखटिक बाहर ठाढ़ छलैक । ओकरा घृणासँ तकैत ओ अपन कोठली दिस जाय चाहलक । बतहा दौड़िकऽ बाट छेकि लेलकै- ''बचा लिअनु छोटकी कनियाँ, अपन बहिनकेँ बचा लिअनु । हमर

किछु ने सुनैत छथि । सभदिन ई जहर हमहीं आनिकऽ दैत छिअनि । नहि आनि दैत छिअनि तऽ गारि देबऽ लगैत छथि, सहि जाइत छी । फेर बताहि भऽ जाइत छथि, कपड़ा-लत्ता फाड़िकऽ नाङ्गट भऽ जाइत छथि, घरक चीज-वस्तु तोड़ऽ-फोड़ऽ लगैत छथि । नै देखल जाइत अछि छोटकी कनियाँ हमरासँ ई सभ । आनि दैत छिअनि फेर जहर । मरि जयतीह पीबैत-पीबैत बड़की कनियाँ । बहिन छथि अहाँक... कहुना बचा लिअनु । हम नौकर छी... हमर बात नहि सुनैत छथि ।''

किरण एकटा नव दृष्टियें देखलकै बतहा खबासकें । अधबयसू बतहा खबास । बतहा धानुक । मजगूत देह आ कारी रंग । नाक कने पीचल । ठोर पातर आ कपार चाकर । आँखि छोट-छोट । कने भुट्ट सन । कठमस्त देह सदिखन उघारे । खाली जाड़ मासमे देहपर एकटा सलगा । साफ खीचल धोती ठेहुनसँ उपरे धरि । ई खबास ओकर क्यो नहि छलैक, ओकर बहिनक क्यो नहि छलैक । मुदा ओ कानि रहल छलैक, आ ओकर बहिनक जिनगीक भीख माँगि रहल छलैक । किरणकें अपनापर लाज भेलैक- बतहाकें ओ की बुझैत छलैक, एकटा नीच स्वार्थी नौकर ! ओकरा सभसँ कतेक पैघ छैक ओ...अइ हवेलीक कोनो लोकसँ पैघ । बतहाकें ओ कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलै । अपन कोठलीमे आबि गेल ।

अपन दीदी आ बहिनोइक बारेमे सोचि-सोचि ओ बताहि होमऽ लागल । की छैक दूनूक बीचमे, कोन एहन दरारि छैक जे पाटल नहि जा सकैत छैक ? मायसँ पुछतनि जे दीदीकें की दुःख छैक ? अबस्स पुछतनि । हुनका सभ बूझल छनि ।

किरणकें अपन माय मोन पड़लैक । किरणक बिआहक गप्पपर ओ बड़ प्रसन्न छलैक । अपन बड़की बेटी लेल ओकरा दुख रहैक- भगवान कोनो सन्तान नहि देलथिन । छोटकी बेटी ओही घर जयतैक, ओकरा धीयापुता हेतैक, दुनू बहिन सुखसँ रहत । मुदा से कहाँ भेलैक ? हवेलीमे जे देखि रहल छल किरण... ताहिसँ हाथ पैर सुन्न भेल जा रहल छलैक आ मोन आतंकित ।

आ जहिआ ब्रह्माकें बान्हिकऽ बीच आँगनमे ओंघरा देल गेलैक, तहिओ किरणक हाथ पैर सुन्न भऽ गेलैक । सचिनक तीनू लठैत- बेचू, मिट्ठू आ गणेश ब्रह्माकें बान्हिकऽ अनने छलैक । कपार फूटल, सौंसे देह लाठीसँ चूरल ।

ब्रह्मा किलोल कऽ रहल छल- ''हमरा झूठ-मूठ फँसा रहल छथि । हम तऽ अपन घरमे सूतल रही । ई तीनू सचिन बाबूक कुकुर छथि, हुनके इशारापर बान्हिकऽ अनने छथि ।

तीनू लठैत बेरा-बेरी ओकरा मारैत रहलैक- ''चुप चोरा नहितन ! सेन्ह मारैत पकड़ल गेलाह तऽ बात बनबैत छथि ! भड़ारेघरमे सेन्ह दैत छलाह ।''

आँगनमे लोक जमा भऽ गेलैक । मुदा क्यो आगू नहि बढ़लैक । मारिसँ बेहोश होबऽ लागल ब्रह्मा, मुदा चेतनाहीन होमऽसँ पहिने एक बेर जोरसँ चिकरल- यदि अइ अन्यायक बदला नहि ली....महेन्द्रनाथ चौधरी आ ओकर खानदानकें तबाह नहि कऽ दी...अइ हवेलीकें जराकऽ सुड्डाह नहि कऽ दी तऽ हम एक बापक बेटा नहि ।

बेहोश ब्रह्माक देहपर प्रेमा ओंघरा गेलीह । सभकें हाथ जोड़लथिन, नेहोरा कयलथिन, मुदा क्यो नहि सुनलकनि । महेन्द्रनाथ चौधरी आ शचीन्द्रनाथ चौधरीक पैरपर ओंघरा गेलीह । ओ ठोकर मारि देलथिन । चौकीदार ब्रह्माकें बान्हिकऽ लऽ गेलैक ।

कनैत-कनैत बताहि भेलि प्रेमा किरण लग अयलीह- ''अहाँ भास्करकें लिखियौ कनियाँ ! ब्रह्मा ओकर संगी छैक । ओ जनैत अछि जे हमर बेटा चोर नहि अछि । हम पहिने कहने रही कनियाँ, ओकरा लिखियौ...ने तऽ फाँसी चढ़ा देत हमर बेकसूर बेटाकें ई निर्दैया सभ ।''

किरण लिखलकै । तैयो नहि अयलैक भास्कर । ने कोनो चिट्ठिये अयलैक । किरणक मोनमे एकटा आहत अभिमान छटपटाइत रहलैक- बहुत दिन धरि ।

तखन एकटा मोट सन लिफाफ अयलैक । भास्कर लिखने छलैक- ''तामस नहि करब किरण ! अहाँक ओतेक चिट्ठी पाबियोकऽ कोनो उत्तर नहि देलहुँ । ओहन स्थितिमे पत्र आ ओइमे देल सान्त्वना कोनो काज नहि दैत । अहाँ एकसरि छलहुँ हवेलीमे आ हमर समीप चाहैत छलहुँ । हमरो मोन औनाइत छल जल्दीसँ जल्दी अहाँक लग पहुँचबाक लेल— अहाँक लग, राजाक लग, अहाँ सभक लग । मुदा उपाय नहि छल । मोनकें जाँतऽ पड़ल । हम एहन व्यवस्थामे लागल रही जाहिसँ सभ दिनक लेल अहाँ सभ हमर संग रही । अहाँकें हवेलीसँ बहार लऽ चली कतहु । प्रतियोगिता परीक्षा भऽ गेल, ओकरे तैयारीमे लागल रही । यदि सफल हैब, तऽ किछुए दिन, प्रशिक्षणकाल धरि, फराक-फराक रहब । फेर अपन डेरा हैत- डेरामे अहाँ रहब, राजा रहत । मायो-बाबूजी औताह कौखन— भैया-भौजी सेहो । ओ हवेलीसँ नीक लागत । ओ अहाँक अपन घर हैत । ओ घर, अप्पन घर अहाँकें भेटि सकय, तकरे चेष्टामे रही । तें, नहि लिखलहुँ तीन वा चारि माससँ किछुओ । अहाँकें एहि लेल नहि लिखलहुँ जे अहाँपर ध्यान गेल तऽ रहल

नहि जायत । दौड़ल गाम जाय पड़त, सभ तैयारी बेकार भऽ जायत । आ बाबूजी-भैया सभकेँ एहि लेल नहि लिखलियनि जे तुरत लिखताह— कोन काज छऽ नौकरी-चाकरीक । अपन घरमे रहऽ, खा पिबऽ । कोन चीजक कमी छऽ ! भगवानक देल सभ किछु छऽ....

इएह भगवानक देल सभ-किछु, नहि सोहाइत अछि हमरा । ओना तऽ अपनो जे कमायब से भगवानेक देल हैत, मुदा बाप-पुरखाक कमाइ बैसिकऽ खयनाइ नीक नहि लगैत अछि । नहि जानि किएक बेर-बेर मोनमे प्रश्न उठैत अछि जे पुरखाक अरजल सम्पत्तिमे कतहु कोनो दोष तऽ नहि अछि ! ई प्रश्न कखनो अनुचितो लगैत अछि- अपने पुरखाक कीर्तिपर अविश्वास ? मुदा लाख दबैलोपर ई प्रश्न मोनमे उठैत रहैत अछि । चाहैत छी जे अइ अरजलकेँ बिसरि अपन कमाइसँ खाइ, अहाँ सभकेँ खुआबी- जतबे जुड़य, जैह जुड़य । बुझियैक तऽ जे अपन बुद्धि आ पसेनाक इमानदार कमाइसँ कतेक अरजल जा सकैत छैक ? अहाँ हमर संग देब, ई हमरा बूझल अछि । तैयो ई सभ पहिने नहि लिखलहुँ अहाँकेँ । हवेलीक वातावरणमे पहिनेसँ डेरायल आ भयभीत रही ।

प्रतियोगिता परीक्षाक बादो एम.ए.क पढ़ाइ चलि रहल अछि । यदि सफल भेलौं कम्पीटीशनमे तऽ एम.ए. बादोमे कऽ लेब । नहि तऽ एम.ए. करब । फेर कम्पीटीशनमे बैसब । कोनो कालेजमे नौकरी करब । अहाँ संग रहब । सभ मास पहिली तारीख कऽ अपन मेहनतिक कमाइ अहाँक हाथमे देब । अहाँ ओही टाकामे घर चलायब- ककरो अरजल वा ककरो दानक भरोसपर नहि । अखन अहाँकेँ अपन गाम-घरसँ आनि एकटा एहन हवेलीमे राखि देने छी जे हम्मर एहि लेल अछि जे हम ओहिमे जनमल छी, हमर पुरखा ओकरा बनौने छलाह । ओइमे अहाँ डेरायलि रहैत छी, हमहूँ एतऽ निश्चिन्त नहि छी । अहाँक लेल एकटा घरक निर्माणमे लागल छी- छोटे-छीन मुदा अप्पन, हमर-अहाँक-राजाक...

हमरापर जे तामस होअय, तकरा आब थूकि देब । अहाँ एको क्षण लेल मोनसँ हँटल नहि रही । अहाँकेँ पत्र नहि लिखि हम स्वयम् अपनाकेँ यातना दऽ रहल रही । एकटा लोभ अछि हमरा मोनमे जे एकर बाद आब सभ दिन हमरा लग रहब...कोनो चौधरीक हवेलीमे नहि ।

ओना, हवेली हमरा प्रिय सेहो अछि । हमर बाबी छल ओइमे, हमर माय अछि ओतऽ, हमर नेनपन बितल ओइमे आ हमर माय-बाप-भाइ-भौजी रहैत छथि, मुदा अपन सभ स्नेहक बादो, ओइमे रहैत काल एकटा प्रश्न हमरा नेनपनेसँ तंग करैत

रहल अछि जे कोना ककरो हवेली बनि जाइत छैक आ क्यो खोपड़ीमे रहि जाइत अछि ! ईमानदारीक कमाइसँ हवेली ठाढ़ भऽ सकैत छैक वा नहि । हम अपने कमाकऽ ई देखऽ चाहैत छी जे हमर कमाइसँ, हमर ईमानदारीक कमाइसँ, अहाँ लेल कोनो घर ठाढ़ भऽ सकैत अछि वा नहि ? हम अपन नेनपनक प्रश्नक उत्तर ताकि रहल छी किरण !

अहाँ हमर संग दिअऽ आ तामसकेँ थुकरि दिअऽ । परीक्षा भऽ गेल अछि । हमरा पूरा विश्वास अछि जे हम अहाँक लेल एकटा हवेली नहि, एकटा घर अबस्स बना सकब । तखन पुरनो हवेलीमे किछु दिन काटि लिअऽ । हमहूँ आबि रहल छी, किछु दिन गाममे रहब । अहाँ अपने अकच्छ भऽ कहब-"जाउ आब । पढ़ू-लिखू गऽ । दुलार-मलार बड़ भेल ।"

दुलारक नामपर प्रेमा पीसी आ अहाँक चिट्ठीमे हुनकर गप्प मोन पड़ि गेल । सत्ते बड़ मानैत छलीह हमरा । बिपत्तिमे अहाँक मार्फत समाद देलनि आ हम कायर जकाँ नुकायल रहलहुँ । हुनकर कथा सुनि अपन हवेली आ बाप-भाइसँ घृणा सन होबऽ लागल । भैया दऽ तऽ हम सभ बुझैत छलियनि । मुदा बाबूजी ! अहाँक पत्रसँ देहमे आगि लागि गेल छल । अपन देहक शोणितसँ घृणा भेल छल । प्रेमा पीसी हमरालोकनिकेँ......हमरा क्षमा करतीह वा नहि, से नहि जनैत छी । मुदा अहाँ हुनका कहि देबनि जे हमरा अछैत ब्रह्माक कोनो अनिष्ट नहि हेतैक । हम अबस्स छोड़बा देबैक ओकरा । ब्रह्मा हमर दोस्त अछि, हम चिन्हैत छियैक ओकरा । ओ चोरि किन्नहु ने कऽ सकैत अछि ।

बस्स, नौटा दिन आर अछि । आइ शुक्र छैक, अगिला शनिकऽ भोरे गाम पहुँचि जायब । राजाकेँ नीक जकाँ पप्पा कहब सिखौने छियैक ने ? अहाँ की कहब हमरा- राजाक बाबू ? पुरना सम्बोधन सभ मोन अछि ने ?"

चिट्ठी पढ़िकऽ किरन हुलसि उठल । भास्कर आबि रहल छैक । ओकरा सभटा तामस अपने मोनमे रहतैक । बाहर नहि आबऽ देतैक । अबस्स कम्पीटीशनमे सफल हेतैक ओ । अपना संग अइ हवेलीसँ बाहर लऽ चलतैक ।

खुशीसँ नाचऽ लागलि किरन । राजाकेँ कोरामे उठा हवामे फेकऽ लगलैक । राजा आब नीक जकाँ बाजऽ लागल छैक । हँसैत हँसैत फदकलै- माय, बड़ खुशी छैं आइ ?

ओकरा छातीसँ सटा लेलकै किरण- "सत्ते बेटा ! आइ बड़ खुशी छियौ

हम । तोहर पापा आबि रहल छथुन । तोरा हमरा सबकेँ अइठामसँ लऽ चलथुन । आब हुनके संग रहबैं तोँ ।''

राजा प्रसन्न होइत मायसँ लपटि गेल- ''सत्ते माँ !''

रम्भाकेँ नहि जानि किएक आइ बेर-बेर मोन पड़ऽ लगलैक ओ सभ जे बीति गेल छलैक, जे फेर घुरिकऽ नहि ओतैक कहिओ ।

भोरे भास्कर गोड़ लागऽ आयल छलैक । सूर्य माथपर आबि गेल छलैक मुदा रम्भा बिछौनेपर पड़लि छलि । देह अलसायल छलैक आ आँखिमे छलैक लाल-लाल डोर । रतुका नशाक असरि अखन धरि मौजूद छलैक । भास्करकेँ देखि सम्हरैत उठि बैसलि-''गाड़ी आबि गेलैक ? एतेक दिन बीति गेलैक ?''

भास्करक ठोरपर दुष्ट हँसी पसरि गेलैक- ''अखनो धरि वैह हाल अछि भौजी अहाँक ! दिन कतेक बीति गेलैक, सेहो होश ने रहैत अछि मुदा से वाजिबे। अहाँकेँ देखिकऽ अखनो लोककेँ दीन-दुनियाक खबरि बिसरि सकैत छैक ।''

रम्भोक ठोरपर ओहने दुष्ट हँसी पसरि गेलैक- अच्छा ! अहाँ तऽ खूब होशियार भऽ गेल छी पटनामे रहिकऽ । हम कहबैक किरणकेँ जे होशियार रह, उड़न्त भऽ गेल छथुन ।

''रहऽ कहाँ देलहुँ भौजी ! उड़न्त रही कहिओ । अहाँ दुनू बहिन तऽ कामरु कमख्यासँ जादू सीखि आयलि छी । उड़न्तकेँ झट पोस बना दैत छियैक आ पिजड़ामे बन्द कऽ दैत छियनि । मजाल छैक जे कहिओ इम्हर-ओम्हर पाँखि फड़फड़ाओत ?''

ओकर हँसीपर रम्भाक हँसी बिला गेलैक । एकदम उदास भऽ गेलैक । भास्करकेँ अपन बातपर अपने गरानि लागऽ लगलैक । कोना बजा गेलैक एहन बात ? भैया एमहर-ओमहर बौआइत छथिन, से सभकेँ बूझल छैक । कहियो भौजीक पोस नहि मानलथिन, सेहो सभकेँ जानल छैक । तखन कोना एहन निर्दय उपहास कऽ देलकै भास्कर ?

मुदा भास्करक ई सोचब जे भैया कहिओ भौजीक पोस नहि मानलथिन- एकदम असत्य छलैक । घरमे आर क्यो जानथि वा नहि, रम्भा नीक जकाँ जनैत

अछि जे सचिन पोस मानने छलैक । बताह भऽ गेल रहैक रम्भाकेँ देखिकऽ । बारहे वर्षक छलि रम्भा । चतुर्थीक दिन घघरा केँचुआ उतारि जहिना साड़ी-ब्लाउज पहिरा देलकै— एकटा अल्हड़ि किशोरीसँ सज्ञान वयस्क आ सलज्ज परिणीता बनि गेल रम्भा । आ ओइ सलज्ज परिणीताकेँ निहारैत सचिन अवाक् रहि गेल । लालटेनक मद्धिम इजोत ओइ आकृतिक धवलतासँ आर प्रखर भऽ गेल छलैक । रम्भाक स्निग्ध, सुचिक्कन आ निदग्ग त्वचाक स्पर्शसँ भास्करक देहमे झुनझुनी पैसि गेल रहैक । ओकर पैघ-पैघ कारी पपनीसँ झाँपल आँखिकेँ स्पर्श करबा लेल ओकर ठोर व्याकुल भऽ उठल रहैक आ आँखिक स्पर्श करैत ओकर ललचाइत ठोर नीचाँ पातर-पातर ठोर धरि पहुँचि गेल छलैक । ओकर स्पर्श आ देहगंधमे मातल सचिन ओकर घनगर रेशम सन मोलायम छह-छह करैत केशमे भुतिया गेल । भरि राति भुतिआयले रहल ।

रम्भाकेँ ओहिना मोन छैक सभटा । किछुओ बिसरल नहि छैक । सचिनक ओ अथाह स्नेह । ओ पागलपन भरल दुलार । मुदा लगैत छैक जेना पछिला जन्मक गप्प होइ । भास्कर की जाने गेलैक ई सभ गप्प । जनमिकऽ ठाढ़ो ने भेल रहय धरतीपर ।

तहियो मुदा सचिनकेँ इम्हर-ओम्हर मुँह मारबाक प्रवृत्ति रहैक । कम्मे वयसमे परकि गेल छल । अपनासँ पैघ-पैघ मौगी सभक चस्का लागि गेल रहैक । ब्राह्मणी-सधवा-विधवा-कुमारिसँ राड़-रोहिया तक कोनो परहेज नहि छलैक । सासुर पैर दितहि ई बात बूझि गेल छल रम्भा ।

पहिल बेर पकड़ायल तऽ लाजे काठ भऽ गेल सचिन । पैर पकड़ि कानऽ लगलैक, माफी मांगऽ लगलैक । रम्भा बेशी मान नहि कयलकै । दोसर बेर पकड़यलैक तऽ कने जब्बर भऽ गेलैक, जेना किछु भेले नहि होइ । कहऽ लगलैक- ''आदति भऽ गेल अछि रम्भा ! अहींक सप्पत, अहाँक स्थान आर क्यो नहि लऽ सकैत अछि । कहिओ नहि । ई सभ तऽ मौज-मस्ती थिकैक- जवानीक खेल, एकरा अधलाह नहि मानू ।''

रम्भाकेँ कोनादन लगलैक । ओ निषेध करिते रहलैक । मुदा सचिनक साहस बढ़िते गेलैक । पहिने चोरानुकाकऽ करैक । फेर घिनौन-घिनौन मौगीकेँ ओकरे बिछौनपर लाबऽ लगलैक तऽ मान आ क्रोधसँ ओकर छाती फाटऽ लगलैक । मुदा सचिन लेखे धनसन । ओकरा लगबे नहि करैक जे कोनो नीच काज कऽ रहल छल । ओकरा लेल ओ जवानीक खेल छलैक- मौज-मस्ती छलैक ।

आ ओइ मौज-मस्तीक लेल ओ जन-बनिहारक संग ताड़ी पीबि लै छलैक, बाहरसँ बोतल लऽ अनैत छलैक- कीमती विदेशी शराब । रम्भा मना करैक । मुँहाबज्जी बन्द कऽ दैक, बोतल उठा फेकि दैक, मुदा सचिनपर कोनो असरियें नहि होइ । उन्टे रम्भेकेँ ओइ मौज-मस्तीमे शामिल करऽ लगैक ओ । जबर्दस्ती एक घोंट कण्ठ तर ढारि देने रहैक, कण्ठ लहरि गेल रहैक । सौंसे देह जरि गेल रहैक आ बोकरैत-बोकरैत बेदम भऽ गेल छलि ।

फेर ठोपे-ठोपे ओकरो कण्ठ तर जाय लगलैक ओ तरल पदार्थ । ओतेक अधलाह नहि लगैक । कण्ठ ओतेक नहि लहरैक, रद्दो ने होइ बेशी । खाली सौंसे देहमे विचित्र सन उम्माद आ सुरसुरी उठऽ लगैक । सचिन आरो नीक, आरो प्रिय लागऽ लगैक ।

भास्करकेँ नहि बूझल छैक ई सभ । रम्भा नीक जकाँ जनैत अछि ।

वर्ष-पर-वर्ष बितैत गेलैक, सचिनक प्रेमक आवेग कहिओ शिथिल नहि भेलैक । मौज-मस्तीमे ओ ओहिना मगन रहैत छल । रम्भाकेँ ओ सभदिन अखरैत छलैक । मुदा सचिन ओकर मान, ओकर क्रोध, ओकर आहत आत्मा आ अपमानित नारीत्वकेँ एकटा शुद्ध प्रेमी बनि मना लैत छलैक । ओकर प्रेमक आवेगमे रम्भा बहि जाइत छल- सचिनक सभ उचित-अनुचित बिसरि जाइत छल ।

मुदा एकटा तेहन बाढ़ि अयलैक जे रम्भाक सभटा खुशी बहाकऽ लऽ गेलैक । सचिनक प्रेम ओइमे बहि गेलैक । रम्भाक प्रेमी पति ओइमे डूबि गेलैक । आँगनक सुख-शान्ति आ रम्भाक सभटा स्वप्न आ सभटा पवित्रता ओइमे बहि गेलैक । महेन्द्रनाथ चौधरी अपन कोठा दिस चल गेलाह । विस्मयाहत, बज्राहत रम्भा दौड़िकऽ अपन कोठलीसँ बहरायलि आ हुनका जाइत देखैत रहलि । मुदा ओ एकसरि नहि छलि । कतहुसँ आबि सचिन सेहो बरण्डापर ठाढ़ छल आ दक्षिणबरिया कोठा दिस जाइत अपन पिताकेँ आग्नेय दृष्टिसँ निहारि रहल छल । रम्भापर ओकर दृष्टि बड़ी कालक बाद गेलैक । रम्भा चाहलक जे सचिन आगू बढ़ैक आ ओकर कण्ठ मोकि दैक । मुदा ओ अपन जगहपर ठाढ़ रहलैक । घृणापूर्वक ओकरा दिस तकैत हनहनाइत हवेलीसँ बाहर चल गेल । ओ इहो ने देखलकै जे दक्षिणबरिया ओसारापर ओकर माय ठाढ़ छलैक । मूड़ी झुकौने चलल जाइत महेन्द्रनाथ चौधरी सेहो नहि देखलथिन ओकरा । भरिसक देखियोकऽ अनठा देलथिन ।

आशा चौधराइन बड़ी कालधरि ओसारापर पाथर बनलि ठाढ़ि रहलीह । जेना कोनो चेष्टे ने रहि गेलनि शरीरमे । सामने उतरबरिया कोठाक ओसारापर ठाढ़ि रम्भा एकटक अपन सासुकेँ देखि रहल छलि ।

बड़ी काल बाद आशा चौधराइन ओम्हर तकलनि । रम्भाक आँखिमे पीड़ा, किछु घटित भऽ जयबाक आदंक आ नोर छलैक । आशा चौधराइनक आँखिमे घृणा नहि छलनि, छलनि मात्सर्य आ बलबलाइत नोर ।

रम्भाकेँ लगलैक जेना ओकर सासु ओकरा घृणासँ ताकि रहल छैक । ओ ओहीठाम ओंघरा गेलि । क्यो दौड़िकऽ लग नहि गेलैक । आशा चौधराइन अपन ओसारापर ठाढ़े रहलीह । हुनको होश नहि छलनि- नोरसँ आँखि अन्हरायल छलनि आ घृणा ओ आघातसँ मोन ।

आशा नोरे लेने एहि घरमे आयलि छलीह । बाप घूटर झा बड़का पंजीवला छलथिन- महादरिद्र । तेहने क्रोधी । चारिटा बेटिये रहनि । तीनूकेँ बेचि कहुना वयस खेपि गेल छलाह । पचपनक धक्कामे पहुँचि गेल रहथि । सभसँ छोटि बेटी रहनि आशा । दसे वर्षक रहनि । खूब काजुल, खूब बुधियारि । ओही वयसमे सभटा घर-आश्रम सम्हारि लेने रहनि । खूब मजबूत काठी रहैक.... आँखियो-कान कोनो तेहन बेजाय नहि रहैक, मुदा रहैक कारी । घूटर झा अपने कोइलोसँ कारी छलाह, तेहन नहि छलि आशा । माय खूब गोरि रहैक आ तीनू जेठकी बहिनियोक रंग साफ रहैक ।

महेन्द्रनाथ चौधरीक पिता महारुद्र चौधरी उच्च कुलशीलक पुतहु चाहैत छलाह । धन-सम्पत्ति अरजि लेने छलाह । पुरखाकेँ सौंसे परगना दऽ देने रहनि बादशाह । मुदा मैथिल समाज धनक बलपर उच्च स्थान देबऽ लेल तैयार नहि रहनि । अपन विवाह पाँजि-पाटिमे कयने छलाह- छोटका पाँजिमे । महादेव झा पाँजिक कन्या घरमे अनबाक सेहन्ता रहनि । घूटर झा सेहो चारिम बेटीमे नीक जकाँ गना लेबाक पक्षमे छलाह जे ओहीसँ दुनू व्यक्तिक बाँकी जिनगी कटि जानि । महारुद्र चौधरी ततबा दऽ देलथिन ।

आशा कनिते आयलि नैहरसँ । भरि बाट कनैत आयलि । गाम आ माय-बाबूकेँ छोड़ैत करेजा फाटि गेलैक । महेन्द्रनाथ चौधरी वेदिये तरसँ बिदकल छलथिन । कारी कनिया हुनका नहि सोहयलनि । चतुर्थियो रातिमे मुँहे फुलौने

रहलथिन, आशा कनैत माटिपर पड़लि रहल । प्रात भेने नैहर छोड़ि कनैत हवेलीमे आबि गेल । आशाक आँखिमे नोरे-नोर छलैक ।

गोरी चौधराइन अपन आँचरसँ पोछि देलथिन सभटा नोर । सभटा बीध-व्यवहार तेना करौलथिन जेना अपने बेटी होनि । आशाक आँखिक नोर सुखा गेलैक । गौरी चौधराइन स्नेहसँ कहलथिन- ''हमरा बेटी नहि बाँचल कोनो, अहीं बेटी छी हमर। फेर नहि कानब कहिओ ।''

फेर घुमिकऽ नहि गेलि अपन नैहर कहिओ । बापे आबिकऽ कहिओ काल भेंट कऽ जाइत छलथिन । जाधरि जिबैत रहलथिन, मायो तीन बेर गामक बाहर मन्दिरमे आबि भेंट कऽ गेलथिन । महेन्द्रनाथ चौधरी ने फेर कहिओ सासुर गेलाह, ने अपन स्त्रीकेँ जाय देलनि ।

आशा हवेलियेमे पैघ होमऽ लागलि । अपन सासुसँ सभ-किछु सीखऽ लागलि । भनसा-भड़ार सभ सम्हारऽ लागलि । गोसाउनिक पूजा करऽ लागलि । गौरी चौधराइन दुलारसँ कहथिन– अबस्स पूर्व जन्मक बेटी छी हमर ।

आशा हँसिकऽ कहथिन-''अहाँक बेटी कोना हैब हम ? अहाँक एहन गोर दपदप आ राजरानी सन रूप आ कहाँ झरकल सन ई मुँह !''

सासु दुलारसँ मुँह लऽ लेथिन दुनू हाथमे– ''के कहत हमर बेटीकेँ झरकल–एहन चमकैत आ सुन्दर कारी पाथर छैक कतहु विश्वमे ? भागमन्त छथि हमर महेन ।

महेनकेँ कारी पाथर पसिन्द नहि छलनि । कहिओ काल बिछौनपर अपना लग घिचियो लैत छलथिन तऽ बादमे ठेलियो दैत छलथिन- ''केहन रुच्छ हाथ पैर अछि जेना सभ दिन माटि कोड़ैत होइ ! आ ई असर्ध कारी खटखट चाम ।''

आशाक आँखिमे खाली नोरे-नोर छलैक ।

कोखिमे मुदा भगवान खाली इजोते-इजोत दऽ देलथिन । सचिन खूब सुन्दर छलैक । जेहने रंग, तेहने नाक-कान । गौरी चौधराइन कहलथिन- बापक रंग छैक आ मायक गढ़नि । महेन्द्रनाथ चौधरी खूब खिसियाथि मोने-मोन, मुदा मायक आगाँ बजबाक साहस नहि होइनि ।

सभटा तामस आशापर उतारि देथिन– हमरे भागमे बथायल रही अहूँ । एहिसँ तँ एकटा महीससँ बिआह करा दितथि बाबू हमर । जेहने रूप-रंग तेहने अकिल ।''

आशाक आँखिमे नोरे-नोर रहैत छलैक, बलबल करैत सदिखन ।

भनसा-भड़ार-गोसाउनि-बिहारी भाइ आ सासुक सेवामे व्यस्त रहैत छलि । महेन्द्रनाथ चौधरीक ख्याति गाममे नहि, इलाकामे छलनि । खाली विधवा आ अबलाक गहना आ घराड़िये बंधक नहि रखैत छलाह, ओकर इज्जतिक सौदा सेहो करैत छलाह– ओइमे खूब बोली उठबैत छलाह । खाली मायक डरे घर लैबाक साहस नहि होइत छलनि । मौजे सभपर अपन बंगली छलनि, अमला छलनि, मोसाहिब छलनि । जे चाहैत छलाह, भेटि जाइत छलनि ।

कहिओ काल असर्ध आशाकेँ सेहो हुनकर बिछौनपर स्थान भेटि जाइत छलैक । एकक बाद एक जखन छौटा सन्तान चल जाइत रहलैक, ओहो कहिओ कालक सुख यातना लागऽ लगलैक । सुख तऽ ओ कहिओ ने छलैक, तैयो सहि जाइत छल । फेर एकदम असह्य भऽ उठलैक ।

जहिआ खगता होनि, महेन्द्रनाथ चौधरी नहि मानथिन । सक्कत माटिक बनल छलीह आशा । छौटा सन्तानक बादो देहक माटि ओहिना सक्कत छलनि । ओइ देहपर कहिओ काल महेन्द्रनाथ चौधरीकेँ लोभ भऽ जाइत छलनि आ आशा ओइ अनिच्छित उपकार आ दयाकेँ सहि जाइत छलीह ।

जहिआ भास्करक जन्म भेलैक, दुख आ आशंकाक संग लाजो भेलैक आशाकेँ । सचिन बीस वर्षक भऽ गेल छलैक । पुतहु घर आबि गेल छलैक । बीच महक कोनो सन्तान बाँचल नहि छलैक । इहो बचतैक, तकर कोनो आशा नहि छलैक । मुँहो नै देखऽ चाहैत छलैक आशा । मायक छातीमे फेर एकटा भूर करऽ आयल छलैक । ओइ नेनापर बेशी सिनेह नहि देखौलनि आशा ।

पितामही गौरी चौधराइन पोसि लेलथिन नेनाकेँ । सूर्य सन देदीप्यमान छलैक । पितामही नाचऽ लगलथिन– ''सूर्य भगवान आयल छथि । कवच-कुण्डल नहि छनि, मुदा थिकाह ओहने तेजसँ भरल । सूर्य नाम नहि रहतनि, पुरखाक नाम छनि । भास्कर हेताह ई...भास्कर चौधरी-''

नेना जीबि गेलनि तऽ आशाकेँ जेना विश्वासे ने भेलनि ! नीक जकाँ दुलारो ने करैत छलथिन जे कतहु फेर ने छीनि लेथि भगवान । ककरो लग जीबि लेथुन पहिने । पितामही छथिने...

आ पहिल बेर आशाक नोर-भरल आँखिमे प्रसन्नताक लहरि छलैक... जीबाक उमंग छलैक । जेना-जेना ओकर रूप आ बुद्धि बढ़ैत गेलैक, महेन्द्रनाथ

चौधरीक अनुशासन आ अत्याचार सेहो बढ़ैत गेलनि । आशामे ओकर विरोध करबाक साहस आबऽ लगलैक ।

जहिआ दरभंगा पठबऽ लागल छलथिन, आशा तनिकऽ ठाढ़ि भऽ गेल छलीह– नै, ई हर्गिज नहि हैत । एतनीटा नेना एकसर नहि रहत । कोनो टूअर-टापर अछि जे एकसर रहत ! कोन वस्तुक कमी देने छथिन भगवान ? गामेक स्कूलमे पढ़त ।

महेन्द्रनाथ चौधरी डाँटि लेलथिन– रहि गेलौं वैह गोबर । होस्टलमे टूअर लोक सभ नहि, पैघ-पैघ लोकक धीयापुता रहैत छैक । ओतऽ पढ़त, नीक लोकक संगति हेतैक तऽ किछु सीखत, संस्कार बदलतैक, पैघ लोक बनत ।

भास्कर भागि अयलैक होस्टलसँ तऽ आशाकेँ चैन भेलनि जे खिस्सा खतम । मुदा महेन्द्रनाथ चौधरी जिद पकड़ि लेलथिन– पटनाक स्कूलमे पढ़त... मिशन स्कूलमे । बड़का-बड़का राज-रजवाड़ाक धीयापुता पढ़ैत छै ओइमे । आशा मुदा अनशन शुरू कऽ देलनि– ''प्राण दऽ देब हम । हमर सोन सन नेना एतेक दूर रहत एकसर ? बाज अयलहुँ एहन पढ़ाइसँ हम ! गामेक स्कूलमे पढ़त ।

सासु बुझौलथिन- जाय दिऔक हीरा बौआसिन ! पढ़ि-लिखि जायत तऽ हमरे-अहाँक नाम हैत । नेनाकेँ कतेक दिन आँचरसँ झाँपिकऽ राखब ?

भास्कर चल गेलैक आ आशाक आँखिमे फेर खाली नोरे-नोर भरि गेलैक । एकदिन बूढ़ी सेहो चल गेलथिन । जायसँ पूर्व आंगनमे एकटा सुन्दर सन पुतहु आ सोन सन पोता देने गेलथिन ।

ओइसँ पहिने बहुत-किछु देखलक आशा । सुकुर जे बूढ़ी किछु नहि बुझलथिन । सुन्न आ अवाक् भेलि ठाढ़ि रम्भाकेँ देखि फेर आइ ओकर आँखिसँ बलबल नोर फेकऽ लगलैक । राति खन अबेर धरि अपन दलानवला कोठलीमे छलाह महेन्द्रनाथ चौधरी । आँगनमे अपन कोठलीक ओसारापर बैसलि छलि आशा। इजोरिया राति छलैक । लड़खड़ाइत डेगे अपन स्वामीकेँ आँगनमे प्रवेश करैत देखलक ओ । मुदा अपन कोठामे अयबाक बदला उतरबरिया कोठामे चल गेलथिन ओ । आशाकेँ जोरसँ चिचियाकऽ टोकबाक इच्छा भेलैक, मुदा कण्ठसँ बकार नहि बहरेलैक । महेन्द्रनाथ चौधरी रम्भाक कोठलीमे पैसि गेलथिन तैयो ओकर मुँहसँ बकार नहि बहरेलैक । कोठलीमे अन्हार छलैक । सचिन सेहो नहि घुरल छलैक, गाममे कतहु बहरायल छलैक । अकस्मात ओकरो आँगनमे प्रवेश करैत देखलकै

आशा । इजोरिया आँगनमे छिड़िआयल छलैक । सचिन रम्भाक कोठली लग पहुँचि गेल छल, तखने बापकेँ रम्भाक कोठलीसँ बहराइत देखलक । गाम दिस जाइत काल, दलानवला कोठलीमे अपन मोसाहिब सभक संग बोतल-गिलास लेने बैसल देखने रहनि हुनका । रम्भाक कोठलीसँ हुनका बहराइत देखि विचित्र दशा भऽ गेलैक । हुनका जाइत देखिते रहल, टोकि नहि भेलैक पाछूसँ । रम्भा बहार भेलैक । ओकरा देखिकऽ जेना सुन्न भऽ गेल ! सचिनक मोनमे क्रोधक लहरि अयलैक जे रम्भाक गरदनि दाबि, दौड़िकऽ अपन बापोकेँ पकड़िकऽ चीरि दीअय । मुदा ओ घृणासँ रम्भाकेँ ताकि एकबेर आँगनसँ हनहनाइत बाहर भऽ गेल ।

आशाक आँखिमे नोरे-नोर छलनि । उतरबरिया कोठामे जा रम्भाकेँ छातीसँ लगा पुचकारि नहि भेलनि । अपन ओसारापरसँ देखैत रहलीह आ आँखिसँ बलबल नोर फेकैत रहलनि ।

एहिना देखैत रहि जाइत छथि आशा । रोकबाक आ प्रतिवाद करबाक साहसे नहि होइत छनि । महेन्द्रनाथ चौधरी कहै छथिन....''चुप रहू अहाँ । हमर काजमे दखल नहि दिअऽ । बेटीबेच्चाक बेटीक मुँहे पैघ-पैघ बात केहनदन लगैत अछि ।''

तैयो ओ प्रतिवाद कयने रहथिन । जहिआ प्रेमा ओकर पैर पकड़ि ओंघरा गेल रहथि दस वर्ष पूर्व तऽ तामसे एकदम तनिकऽ ठाढ़ि भऽ गेल रहथि– ''भाँड़ छूबाक अभ्यास अछि, छुबैत रहू । मुदा कुकुर भऽकऽ भगवतीक चौरामे मुँह किएक लगौलहुँ ? आब हम चुप्प नहि रहब । एहि गरीब विधवाक कथा हम भरि गामकेँ कहबैक ।''

महेन्द्रनाथ चौधरी हाथ उठा देने रहथिन । मारैत-मारैत बेदम कऽ देने रहथिन- अहाँक एहन मजाल जे हमरा कुकुर कहब । अपन औकाति बिसरि गेल ! अन्न-वस्त्र भेटैत अछि । बेटा-पुतहु घर-द्वार सभ किछु अछि, ओहीमे रहू । दोसरा दिस तकबाक कोशिश नहि करू । हमर काजमे दखल देब तऽ एहि वयसमे ओ सभ हैत जे नहि भेल अछि ।

यत्र-तत्र थूरल देह आ ग्लानिसँ भरल मुँह लेने नुकायलि रहलीह आशा । ककरो सोझाँ जयबाक साहसे नहि होनि । प्रेमा दिस तकले नहि जानि ।

एकदिन प्रेमे अयलनि कोठलीमे चुपचाप- ''एना किएक पड़ल छी भौजी ? हमरा लेल एतेक मोन खराप नहि करू । हमर इज्जति गेल... आब घुरत

नहि । गरीब विधवाक इज्जतिपर ओहुना सभ दिन आफते रहैत छैक । कोना बाँचल एतेक दिन से आश्चर्य ! राक्षस तँ सभ ठाम भरले अछि । हमरा अही घरमे आबिकऽ लुटैबाक छल । गरीब विधवाक इज्जतिक मोले कतेक.... । हवेलीक मालिकक बात तऽ जाय दिअ हुनकर मुसाहिब-जिरतिया धरि भाटा-मूरक भावे इज्जति खरीदैत रहैत अछि ।

प्रेमाक आँखिमे नोर नहि छलनि । सभटा नोर बलबलाकऽ आशा चौधराइनक आँखिमे भरि आयल छलनि ।

आइ फेर सभटा नोर हुनके आँखिमे आबि गेल छलनि । रम्भा अपन ओसारापर ओहिना स्तम्भित ठाढ़ि छलि । ओकरा आँखिमे नोर नहि छलैक । बलबलाकऽ बहरायल नोरसँ आशा चौधराइनक आँखि अन्हरा गेल छलनि । रम्भा खसि पड़लैक, सेहो ने देखलनि ओ ।

बड़ी काल बाद उठिकऽ ठाढ़ि भेलीह । अपन कोठलीमे बिछौनपर धुत पड़ल छलाह महेन्द्रनाथ चौधरी । आशाकेँ लगलनि जेना कोनो जानवर मनुखक स्वरूप धऽ पलंगपर पसरि गेल हो । घृणासँ मुँहपर थूकि देबाक इच्छा भेलनि, मुदा से नहि कऽ भेलनि । मुँहसँ एतबे बहरेलनि- कुकुर ।

महेन्द्रनाथ चौधरीक कानमे ओ शब्द भरिसक गेलनि । देह कने सुगबुगा उठलनि । 'पट पड़ल छलाह, पड़ले रहलाह । आशा घृणासँ थरथराइत ओइ पलंग लग ठाढ़ि रहलीह । आ बेर-बेर बजली- कुकुर.... ।

गरजिकऽ महेन्द्रनाथ चौधरी ठाढ़ नहि भेलथिन । अनठौने पड़ल रहलथिन । आशा बगलवला कोठलीमे अपन बिछौनपर चलि गेलीह ।

राति नमरिकऽ पहाड़ सन भऽ गेलैक आ निन्न ओइमे कतहु हेरा गेलैक । सचिनक सभटा मौज-मस्ती हेरा गेल छलैक ।

शराब अखनो पिबैत छल । पहिनेसँ बेशिए पिबैत छल । मुदा नशा नहि होइत छलैक । खानगी मौगी सभ लग अखनो जाइत छल । पकड़िकऽ, उठबाकऽ, जकरा मोन होइ छलै, मंगबाइये लैत छलैक आइयो । मुदा ओ मस्ती नहि अबैत छलैक । ओइ रातिक इजोरियामे जेना सभटा मौज-मस्ती, सभटा उन्माद-उत्तेजना हेरा गेल छलैक ।

पहिने उत्तेजनासँ पागल भऽ गेल छल ओ । खून कऽ देबाक इच्छा भेल छलैक । भारि राति गाममे बौआइत रहल छल ओही उत्तेजनामे । भोरुकबामे घर

घुरल छल । अपने कोठलीसँ नेपाली कत्ता हाथमे लऽ लेने छल । फेर अपन शयन-कक्ष धरि आयल छल ।

बिछौन खाली छलैक । सीमेण्टपर रम्भा ओंघराछल छलैक । जागल छलैक की सूतल से कहब मस्किल । ओकर इच्छा भेलै जे एहिना सुतलेमे गरदनि उड़ा दैक । हाथ तनियो गेलैक, मुदा चला नहि भेलैक । कत्ता ओकर तनल हाथमे थरथराइत रहलैक । ओ पड़ाकऽ फेर अपन कोठलीमे आबि गेल ।

बड़ी कालक बाद फेर अपन शयनकक्ष दिस गेल । अइ बेर हाथमे कत्ता नहि छलैक । रम्भा ओहिना ओंघरायलि छलैक । सीमेण्टपर सचिन लग बैसि गेल । ओकर छिड़िआयल केशकेँ समेटिकऽ ओकर पीठ थपथपा देबाक, मुँह कान हँसोथिकऽ दुलार करबाक इच्छा भेलैक, मुदा ओकर हाथ नहि उठलैक, जेना लोथ भऽ गेल होइ । मुदा डेराकऽ हाथ खीचि लेलक । लगलैक जेना कोनो असर्ध वस्तुपर हाथ पड़ऽ जा रहल छलैक । सौंसे देह घृणासँ थरथरा उठलैक । ओ उठिकऽ बैसि रहल । चारि डेग पाछाँ हँटि गेल जेना ओकर छाहो स्पर्श करतैक तऽ छुआ जायत, अपवित्र भऽ जायत । ओ पड़ाकऽ अपन कोठली आबऽ चाहैत छल । मुदा पैर माटिमे सटि गेलैक । रम्भा उनटिकऽ चित्त भऽ गेलैक । आकृति रातिए भरिमे मुर्दा सन उज्जर भऽ गेल छलैक, जेना सभटा शोणित क्यो सूइ लऽकऽ घीचि लेने होइ देहसँ । निरीह कातर आ पश्चात्तापक आगिमे जरैत । आँखिमे बजबज करैत नोर । सचिन पड़ाय चाहलक । रम्भाक ठोर थराथरा उठलैक- हमरा मारि दिअऽ जानसँ ।

सचिन पड़ा आयल । रम्भाक ओ उज्जर आकृति आ ओइ आकृतिक निरीह-कातर भाव ओकर पछोड़ धयने रहलैक । ओकरासँ पिण्ड छोड़बऽ लेल ओ ओरो बेशी शराब पीबऽ लागल- दिनराति पीबऽ लागल । दिनराति जकरा-तकरा आँचर तर पड़ल रहय । मुदा पछोड़ नहि छोड़लकै ओ आकृति आ ओकर ओ निरीह-कातर भाव । ओकरा ओ मुँह एकदम निष्पाप आ निष्कलंक लगैक ।

ओ घुरिकऽ अपन कोठलीमे आबय । रम्भा लग जाय चाहय । ओकर स्पर्श करऽ चाहय । रम्भाक विवर्ण मुँहपर लाली घुरऽ लगैक, निरीह आकृतिपर फेर जिनगी आबऽ लगैक, मुदा तखने सचिन जोरसँ चीत्कार करैत पड़ा जाय । स्पर्श करबाक साहसे नहि होइ । लगैक जेना कोनो अपवित्र, अस्पृश्य चीज राखल होइ ओकर कोठलीमे । ओ बेर-बेर ओइ कोठलीमे जाय आ बेर-बेर पड़ा आबय । पड़ाकऽ फेर घुरि आबय । स्पर्श लेल बढ़ल हाथ थरथराकऽ रहि जाइ ।

बहुत दिनसँ बौक बनलि रम्भा एकदिन टोकलकै- ''हमर स्पर्शो ने करब कहिओ ? हमर अपराध ?''

सचिनकेँ किछुओ जवाब नहि दऽ भेलैक । उनटे तामस भऽ गेलैक, ओहि क्षणमे । निरपराध कोना अछि ? अपन आँखिसँ देखने छियैक । ओ तामसे हनहनाइत ओइ घरसँ पड़ा आयल । आँगनसँ बहराइते काल बुझयलैक जे ओकापर तामस व्यर्थ छैक । जकरापर तामस हैबाक चाहियैक, तकरासँ डर होइत छैक । जिनका लाजे मूड़ी गाड़िकऽ चलबाक चाहियनि से आइयो मूड़ी तानिकऽ चलैत छथि । ओ तनल गरदनि छोपि लेबाक चाही ।

ओ तनल गरदनि सचिनक सामने अपने झुकि जाइत छलैक । बचलोपर यदि सामना भैये जाइत छनि, महेन्द्रनाथ चौधरी मूड़ी झुकाकऽ पड़ा जाइत छथि ।

सचिनो पड़ा जाइत छल । रम्भाक डबडबायल आँखि आ ओइ आँखिक प्रश्न ओकरा बर्दाश्त नहि होइत छलैक– हमर अपराध ? कोनो अपराध ओ ताकि नहि पबैत छल । प्रत्यक्षदर्शी छल सभ घटनाक, तैयो नहि जानि किएक ओकरा अपराधी मानबा लेल मोन तैयारे नहि होइत छलैक । बेर-बेर पैर ओकर कोठली दिस बिदा भऽ जाइत छलैक ।

आ कोइलीमे अबैत देरी बिछौनपर बैसल स्त्री ओकरा अपवित्र आ अस्पृश्य लागऽ लगैत छलैक । ओकर छायोसँ पड़ाइत छल ओ ।

आ पड़ाकऽ जानवर भऽ जाइत छल । स्त्रीक देह ओकरा गिजबाक आ नोचऽ-काटऽक वस्तु बुझाइत छलैक । ओकरा लस्त-पस्त, शोणिते-शोणिताम आ क्षत-विक्षत कऽ दैत छलैक ।

प्रेमाकेँ सेहो क्षत-विक्षत कयने छलैक ओ । प्रेमा सुन्दर छलैक आ वयस भेलोपर ओकर देहमे ककरो लोभा सकबाक शक्ति छलैक । सचिन सेहो लोभायल रहैत छल । मुदा साहस नहि होइत छलैक । प्रेमाक लग माय हरदम मड़राइत छलैक । राति-विराति ओकरा कोठा दिस आबहु नहि दैत छलैक । रम्भाक कोठलीसँ पड़ायल, मौगीक देहकेँ क्षत-विक्षत करबा लेल बौआइत सचिनकेँ प्रेमा अभरि गेल रहैक एक राति ! भम्होरिकऽ छोड़ि देने रहैक ओकरा ।

प्रेमा सहि गेल छलैक । जहिया वर्षोक संचित सतीत्वकेँ, विधवाक इज्जतिकेँ महेन्द्रनाथ चौधरी कलंकित कऽ देने रहथिन, आशाक पैर पकड़ि कानलि छलि प्रेमा । मुदा सचिनक लीला ओकरा नहि कहि भेलैक । ने आशा भौजीकेँ, ने

बड़की कनिया रम्भाकेँ । ओ सहि गेल सभटा । सचिन परकि गेलैक । देखैत देरी नोचऽ काटऽ लगैक । ओइ राति सहब मस्किल भऽ गेलैक आ चीत्कार करैत पड़ायलि प्रेमा ।

से बादमे भेलैक । पहिने चेष्टा कयने छल सचिन । रम्भाकेँ क्षमा कऽ अपना लेबाक चेष्टा कयने छल । बेर-बेर ओकरा कोठलीमे गेल छल आ पड़ा आयल छल ।

जखन नहि भऽ सकलैक तऽ रम्भाक आगू हाथ जोड़िकऽ ठाढ़ भऽ गेल– मुक्त कऽ दिअऽ हमरा रम्भा । एना बंशीमे फँसल माछ जकाँ नहि नचाउ । आब थाकि गेल छी हम । हमरा मुक्त कऽ दिअऽ । अहाँसँ प्रेम करबाक चेष्टा सफल नहि होइत अछि आ घृणासँ मुँह फेरि फराक भऽ जायब सेहो बर्दाश्त नहि होइत अछि । प्रेम-घृणाक एहि खेलसँ मुक्त करू हमरा आब ।

आ रम्भा मुक्त कऽ देबाक चेष्टा कयने छलैक । एक दिन जहरक जे बुन्द जबर्दस्ती ओकर गराँ तर ढारि देने रहैक, से बोतलक बोतल गटागट पीबि जाय लगलैक । हरदम नशामे धुत्त रहऽ लगलैक । ओकरा देखिकऽ सचिनक अपन सभटा नशा उतरि जाइ– चाहे कतबो बोतल ढारिकऽ ओकर कोठलीमे पैसि जाय ।

ओ फेर प्रार्थना कयलकै– बन्द करू रम्भा ई सभ । ई अहाँक जान लऽकऽ रहत । एना अपनाकेँ नहि मारू रम्भा !

रम्भाक पैघ-पैघ आँखिमे कोनो मरल स्वप्न चमकि उठैक-''तऽ जिआ दिअऽ । घुरा दिअऽ हमर सभ-किछु जे छिना गेल अछि ।''

सचिनकेँ कोनो जबाब नहि दऽ होइ । तामसे बतहाकेँ मारऽ दौड़ैक-'' जान लऽ लेबौक सार तोहर । पिआ-पिआकऽ जान लऽ लेबहुन हिनकर । कोन जन्मक दुश्मनी छौक तोहर ?

बतहाकेँ नहि बूझल छलैक जे दुश्मनी कोन जन्मक छलैक । कहियो, कोनो जन्ममे अबस्स रहल हेतैक किछु । ने तऽ किएक ओकरा भागिकऽ पड़ा नहि होइत छैक ! किएक ओकर चीत्कार ओकरा सुनल नहि जाइत छैक ! तमसाकऽ बन्द कऽ दैत छैक...दू-दिन चारि-दिन । फेर एकदिन किलोल करऽ लगैत छै– डकूबा छेँ रे बतहा ! हमर दुश्मन छेँ, तोँ जान लैयेकऽ रहबेँ हमर । छातीमे केहन जनमारा दर्द अछि रौ....आनि दे, आनि दे जल्दीसँ ।

आ बतहाकेँ आनऽ पड़ैत छलैक । देखिते देरी प्रसन्न भऽ जाइत छलैक

रम्भा–"तों अवश्य ओइ जन्ममे बाप रहल हैबें हमर । एतेक दया–माया आर ककरा हेतै ?"

बतहा कानऽ लगैत छल–"दया–माया रहितैक...तऽ ऐना जान लितैक ओकर ? बाप कतहु एहन कसाइ होइत छैक ? अबस्से कोनो जन्मक दुश्मनी छल हेतैक । सचिन बाबू ठीके कहैत छथिन ।

ओकरा इहो नहि बुझाइ छैक जे कोन दुख छैक बड़की कनियाँकें । एहन सुन्दर घर–वर । एकटा धीया–पुता नहि छैक– ताहिमे अपन कोन सक्क ? ताहि लेल क्यो ऐना जान दैत अछि अप्पन ?

बतहाकें के बुझा कऽ कहतैक जे रम्भा किएक जान दैत छैक ? सचिन किएक पड़ायल फिरैत छैक ? बतहा कोना बुझतैक जे कोन दुख छैक बड़की कनियाँकें ?

कतेको बेर कहि चुकल छैक– "अहाँकें कोन कमी देने छथि भगवान ? ई अधलाह चीज छोड़ि दिअऽ, ई ककरो ने नीक कयने छैक आइ धरि । अहुँक नहि करत । हमरा कहू अप्पन दुख । हम अप्पन जान दऽकऽ ओकरा दूर करब । दैबक देल दुखपर मनुखक कोन जोर ?"

जहिआ बतहाक मनो कयलापर रम्भा नहि मानैक....ढारने चल जाइक तऽ सचिन ओकर कोठलीमे धरना दऽ दैक–"आइ एतऽसँ नहि उठब हम, एना मरऽ नहि देब अहाँकें ।"

आ रम्भाक आँखिमे फेर वैह मुइल स्पप्न चमकि उठै– "तऽ जिआ दिअ हमरा ।"

जिआ देबाक साहस नहि छलैक सचिनमे । चेष्टा ओ करैत छल । पूर्ण निश्चयक संग जाइत छल जे रम्भाकें बाँहिमे समेटि ठोरसँ ओकर सभटा नोर पीबि ओकरा जिआ देतैक । मुदा ओकर कोठलीमे जाइत देरी ओ निश्चय गलि जाइत छलैक । स्पर्श लेल उठल हाथ लोथ भऽ जाइत छलैक आ बिछौन पर बैसलि रम्भा ओकरा अपवित्र आ अस्पृश्य लागऽ लगैत छलैक ।

भास्कर गाममे किछु बेशिये दिन रहि गेल अइ बेर ।

किरणक पत्रसँ बड़ चिन्ता भऽ गेल रहैक । पहुँचल तऽ ओहन डेराओन

किछु नहि लगलैक । किछु उदास सन लागल रहैक शुरूमे । हवेलीमे प्रवेश करैत देरी सभ–किछु बड़ सहज आ सोहाओन लागऽ लगलै ।

भगवती, माय–भौजी सभके गोड़ लगलक । बाबूजीकें प्रणाम कऽ आयल आ बाबीक कोठलीकें गोड़ लगलक । भैया घरमे नहि छलथिन । अपन काठलीमे पहुँचल तऽ किरणक कोरासँ ललकि कऽ राजा बाजि उठलैक– पप्पा ।

उदासी आरो बिला गेलैक । कोरामे राजा छलैक । भास्करकें सौंसे हवेली खिलखिल कऽ हँसैत लगलैक ।

किरणोक प्रसन्नताक अन्त नहि छलैक । भास्कर आबि गेल छलैक आ हवेली किछु दिन लेल फेर घर बनि गेल छलैक– सुन्दर, सुखद आ आत्मीय ।

ओकर तामसोक अन्त नहि छलैक । ओकर मोनक आहत अभिमान छटपटा रहल छलैक । ओकर बेर–बेर चिट्ठी देलोपर भास्कर चुप्पी सधने छलैक । कोनो चिट्ठीक उत्तर नहि देने छलैक । अयबासँ मात्र नौ दिन पहिने चुप्पी तोड़लकै आ बड़की टा कैफियत देलकै ।

किरण ओइ कैफियतसँ सन्तुष्ट नहि भेलैक । भास्कर भरि राति मनबिते रहि गेल । किरणक मोनक आहत अभिमान आ विश्वास छटपटा रहल छलैक– "एतेक छोट बुझलहुँ हमरा ? एकटा चिट्ठियो लिखबाक फुरसति नहि छल ?"

भास्करकें कोनो उत्तर नहि फुरलैक । चुप्पे रहब ठीक बुझयलैक । खाली किरणकें छुबैत रहलैक, दुलारसँ छुबैत रहलैक, सभ ठाम, सौंसे देह । पहिने तऽ बड़ी काल धरि देह अकड़ने रहलैक किरण । फेर सिहरऽ लगलैक । सिहरैत देहसँ चिपकि गेलैक आ फुसफुसाकऽ बजलैक– "बड़ होसियार भऽकऽ आयल छी । के सिखबैत छल ई सभ ?"

भास्करोकें दुष्टता सुझलैक । कहलकै– छल एकटा । खाली अहीं टा छी दुनियाँमे !

किरणक स्वरक आह्लाद बिला गेलैक– खाली हमही टा किएक रहब ? मुदा के छथि से तऽ सुनी ।

आनन्द लैत भास्कर गम्भीर मुद्रामे कहलकै– अहाँ कोना चिन्हबनि ? पटनेक छथि ।"

किरण ओकर देहसँ हँटि गेलैक आ दोसर दिस तकैत पुछलकै– "केहन छथि ?"

भास्कर फेरसँ ओकरा अपन बाँहिमे समेटैत कहलकै– ''छथि तऽ बड़ सुन्नर मुदा अहीं जकाँ कने तमसाहो छथि । तामसमे नाकक टुनगी अहिना लाल भऽ जाइत छनि । छथि तऽ बेश दुब्बरि मुदा गुदगरियो खूब छथि, जतऽ हैबाक चाही । रंग जतबे गोर छनि, ततबे ओइमे आलता सेहो घोरल छनि । ठोर जतबे पातर, ततबे लालो छनि । आँखि जहिना पैघ छनि, तहिना कारी आ कटगर । केश ठेहुन धरि लटकल रहैत छनि– खूब कारी घनगर आ मोलायम...एकदम तस्सर जकाँ छह-छह करैत । बिना तेल-फुलेलेक हरदम गमकैत रहैत छनि । सौंसे देह गमकैत रहैत छनि । कोठलीमे पैर देतीह कि सभ-किछु गमकऽ लागत । आँगुरोसभ जेना रचि-रचिकऽ बनल होनि– छुबि देतीह तऽ करेण्ट लागि जायत आ बाँहि समेटि लेतीह तऽ हवामे उड़ऽ लागब ।

तामसे अपन देह बाँहिसँ छोड़बैत किरण जोरसँ बाजलि– भारी निर्लज्जि छथि !

भास्कर ओहिना दुष्टतापर्वक हँसैत किरणकेँ आरो लग समेटि कहलकै– ''से तऽ छथिए । देखिऔन ने, अखनो कोना सटल छथि हमरा संग ! लगमे बेटा सूतल छनि तकरो होश नहि छनि ।''

किरण पलंगक सामनेवला बड़का अयना दिस देखलक । सौंसे पलंग प्रतिबिम्बित छलैक । ओ भास्करक बाँहिमे छल आ भास्करक आँखिमे दुष्टता भरल हँसी छलैक ।

किरण ओकर छातीमे मुक्का मारऽ लगलैक– अहाँ बड़ दुष्ट भऽ गेल छी !

भास्कर ओकर कानमे ठोर सटा फुसफुसा कऽ कहलकै– ''अहाँ बड़ मधुर भऽ गेल छी, पहिनहुँ सँ बेशी ।

किरण अगराकऽ ओकर देहपर ओलड़ैत कहलकै– बेशी मधुर मोन फेरि देत ।

भास्कर ओहिना आँखि बन्द कयने कहलकै– बीच-बीचमे अचार खा लेब ।

किरण ओहिना ओकर देहपर ओंघराइत कहलकै– अचार कतऽसँ आओत ?

–''बजारसँ''

भास्कर झट उत्तर देलकै आ आँखि खोलि दुष्टतापूर्वक हँसऽ लगलैक । किरणक आँखिमे एकटा सन्तुष्ट आ गर्वयुक्त भाव छलैक । तर्जनी ओकर

ठोरपर रखैत कहलकै– फेर वैह दुष्टता !

आ राति पड़ाइत रहलैक ।

भोरे राजा उठलैक पहिने । उठिकऽ दुनूक बीचमे आबि गेलै । किरणक निन्न टूटि गेलैक । उठिकऽ जाय लागल । राजा ओकर आँचर धऽ लेलकै– बैस ने माँ ! पप्पा अहूँ उठू ने !

भास्करो जागि गेल । एक कात किरण आ दोसर कात ओ । बीचमे राजा आ राजाक अनन्त प्रश्न । भास्करकेँ अपन नेनपन मोन पड़ि गेलैक । बाबी मोन पड़लैक । एना माय-बापक बीच कहाँ कहियो सूतल ओ ? बाबिए ओकर माय-बाप सभ छलैक । राजा अखन बड़ छोट छैक, तीन वर्ष पुरबे कयल छैक मुदा बड़ पकठोसल गप्प करैत छैक ।

एक राति सुतबासँ पहिने जिद कयलकै– खिस्सा कहू ।

भास्करकेँ खिस्सा कहबाक अभ्यास नहि छलैक– झट कोनो खिस्सा मोने नहि पड़लैक । ओकरा बाबीक खिस्सा मोन पड़लैक– कठरी बाबाजीवला खिस्सा । सैह कहऽ लगलैक ।

खिस्सा खतम होइत देरी राजा पूछि बैसलैक– ''कठरी बाबाजी के छलैक पप्पा ?

भास्करकेँ बाबीक उत्तर मोन पड़लैक– साधु-महात्मा छलैक ।

उत्तर सुनिकऽ राजा दोसर प्रश्न कऽ देलकै– ''साधु-महात्मा ककरा कहै छैक ?''

भास्करक ठोरपर फेर बाबीक उत्तर आबि गेलैक– साधु-महात्मा माने साधु महात्मा । माने जे घर-द्वार सभ त्यागि दैत अछि ।

कठरी बाबाजीकेँ चोट किएक नहि लगैत छलैक ?– भास्करक नेनपन जेना घुरि आयल छलै राजाक रूपमे । भास्करक ठोरपर बाबीक सहज उत्तर छलैक– ''चोट कोना लगितैक ? ओकर देह तऽ काठक बनल छलैक ।''

राजा सूति रहलैक । भास्करकेँ बाबी कहने छलैक– ''जे अन्याय-अनीतिकेँ ठोकरा दैत छैक तकरा अपन देह काठक बनबऽ पड़ैत छैक आ आत्माकेँ अजेय ।''

ओकर आत्मा ओकरा धिक्कारऽ लगलैक । ओकर अपने घरमे अन्याय

भेलैक, तकर चिट्ठी देलकै किरण, मुदा ओ तकरा बिसरि अपन स्वार्थमे लीन रहल। बाबीक खिस्सा, ओकर उपदेश सभ व्यर्थ गेलैक । ओकर शरीरक स्वार्थी सामन्ती खून जीति गेलैक । ब्रह्माक संग अन्याय भेलैक, प्रेमा पीसीक संग अमानवीय व्यवहार भेलैक । ककरो आन द्वारा नहि, ओकरे बाप-भाइ द्वारा आ ओ सभटा बिसरि पटनामे नुकायल रहल, गाम आबि पत्नीक संग रंग-रभसमे लागल अछि । ओकरामे साहस नहि छैक जे अपन बाप आ भाइसँ किछु पूछत ? हुनकर अन्यायकं प्रतिकार करत । नहि जानि ब्रह्मा छुटबो कयलैक वा नहि ? प्रेमा पीसी कोना छैक ? किरण पुछलोपर किछु नहि कहैत छैक । किछु नुका रहल छैक ओकरासँ । माय सेहो ने कहैत छैक किछु, मुदा ओकरा लगैत छैक जेना कोनो गम्भीर बात छैक जकरा ओकरासँ नुकाओल जा रहल छैक ।

राजासँ मुदा किछुओ नुकायल नहि रहैत छैक । ओ सभटा देखैत रहैत छैक, सभक बारेमे पूछैत छैक । भोरे ओकर हाथ-मुँह धोआ दैत छैक किरण आ कोठलियेमे एक गिलास दूध लऽ अबैत छैक- 'ले, पीबि ले चुपचाप, अकर-बकर नहि कर ।'

राजा नहि मानैत छैक । हाथमे गिलास लऽ पूछि दैत छैक- गेनमोकेँ दूध पीबऽ लेल दहिक ने माय ! बथानपर बैसल हेतैक । किरणक ठोरपर भास्करक मायक उत्तर छलैक-''मर, ओकरा किएक देबैक हम दूध ? हमरा कोनो अपन नेना अछि ?

राजा चुपचाप दूध पीबि लेलकै । अखन तीने वर्षक नेन्ना छैक । बड़ बजैत छैक, बड़ सवाल पुछैत । किरण अकच्छ रहैत अछि ।

भास्करकेँ ओ सभ सबाल मोन पड़ैत छैक जे नेनपनमे ओकर मोनमे उठैत छलैक । आइ राजाक मोनमे उठि रहल छैक । प्रश्न तऽ उठिते रहैत छैक । समाधान कतऽ भेटतैक ? चलितराक बेटा ठकना, ठकनाक बेटा गेनमा, एहिना सभटा दूध दूहि अनका दैत रहतैक आ ओकर अपन बेटा एहिना माँड़ पिबैत रहतैक । मेहनति-मजदूरी करऽबला लोककेँ माँड़ टा नसीब रहतैक आ हवेलीमे पोसाइत कोनो भास्कर, कोनो राजाक लेल सभ दिन दूधक गिलास सुरक्षित रहतैक ।

गेनमाकेँ देखने छलैक भास्कर । राजासँ दुइये वर्ष पैघ हेतैक । पाँचे वर्षक अवस्थासँ बापक संग बथानपर आबि जाइत अछि । झाड़ुओ लगा लैत अछि, कस्तर उठाकऽ फेंकि अबैत छैक । संगमे मायो रहैत छैक । हवेलीमे पर्दा करैत छैक- मोट ननगिलाटक साड़ीक घोघ रहैत छैक सदिखन, गोबर कढ़ैत काल, चिपड़ी पथैत

काल, आँगन गोबरसँ नीपैत काल । मायक आँचर धयने लटकल गेनमा हवेलीक चीजकेँ देखैत रहैत अछि । ओइ आँखिमे भूख छैक । ओतबे पैघ भूख जतबा ओकर बाप ठकनाक आँखिमे रहैक नेनपनमे वा ठकनाक बाप चलितराक आँखिमे रहल हेतैक ओकर नेनपनमे । ई भूख पुश्त-दर-पुश्त अहिना झलकैत रहतैक एकरा सभक आँखिमे आ माँड़ पीबि-पीबि दूध दुहैत रहबा लेल मजबूर रहतैक सभ ?

एकर सभक आँखिमे खाली भूख छैक । कोनो प्रतिहिंसा वा विद्रोह किएक ने छैक ? अइ हवेलीमे पुश्त-पुश्तैनसँ खटैत आयल अछि, शोषित होइत आयल अछि, तैयो एतेक स्नेह किएक छैक एहि हवेलीसँ ? गेनमा-माय निरपराध बेटाकेँ मारि लगलोपर कहने रहैक भास्करकेँ- ''परबरिसो तऽ अही हवेलीसँ होइत छैक मालिक !'' एना निरपराध मारि खाइत, अपन निरन्तर श्रमक बदलामे भेटल अल्प मजूरीकेँ कहिया धरि ई सभ दया बुझैत रहत, परवरिश मानैत रहत ? आ हवेलीमे पोसल कोनो भास्कर वा कोनो राजा ओकरा सम्मुख पैघत्व देखबैत रहतैक !

भास्करकेँ लाज भेलैक । ओ खाली छुच्छ आदर्शवाद देखबैत रहल अछि। पैघ बात सोचबाक अपन अहंकेँ सन्तुष्ट करैत रहल अछि । वस्तुतः ओ अपन परिवारक, अपन लोकक छोटछीन, संकुचित परिधिमे सोचैत रहल अछि सभदिन । ठकना आ ब्रह्मा सन लोक लेल ओकर चिन्ता नकली छैक ? प्रेमा पीसी लेल ओकर आदर आ स्नेह नाटक छैक ? गाम अयना एतेक दिन भेलैक, एक्को बेर खोजो खबरि लेने छनि ?

आ ठकना वा ब्रह्मा एकसर तऽ नहि छैक । बहुत रास ब्रह्मा आ ठकना छैक । प्रेमा पीसीक कलंकक कथा एकसर नहि छैक । ओहन-ओहन बहुत रास कलंकक कथा छैक, अही हवेलीसँ उपजल कलंक आ शोषणक कथा छैक । तें विरोध करबाक साहस छैक ओकरामे ? ओ तऽ किरण आ राजा लेल एकटा सुन्दर घर बनैबाक स्वप्नमे बाझल अछि...हवेली छोड़िकऽ एकटा दोसर हवेलीमे जायत । जमींदारक हवेली छोड़ि एकटा हाकिमक हवेली । ठकना आ ब्रह्मा ओतहु हेतैक । नौकर-चाकर-भनसीया सभ हेतैक । एहि हवेलीक कथाक अन्त करबाक बदला एकटा नव हवेलीक कथाक जन्म देत भास्कर । सामन्तक सन्तान अपन आदर्शवादी अहंकं सन्तुष्टि लेल पैघ-पैघ बात सोचि सकैत अछि वा सोचबाक स्वांग कऽ सकैत अछि । ओइ संस्कारसँ मुक्त भऽ किछु कऽ सकबाक साहस कतऽसँ औतैक ओकरामे ?

अपनाकेँ धिक्कारि लेलासँ ओकर मोन चैन नहि भेलैक । ओकर मोनकेँ

बहुत रास सवाल मथैत रहलैक— हमरामे साहस नहि अछि मुदा आरो लोक तऽ अछि । चलित्तरा ठकना आ गेनमा सन-सन लाख-करोड़ लोक अछि । ओ कोना मानि लैत अछि एकरा अपन नियति ? ओकरा सभक मोनमे, पुश्त-पुश्तैनसँ बेगारी खटैत, चाकरी करैत, अपन उचित मजूरीक लेल प्रश्न नहि उठैत छैक ? अपन अधिकार लेल किएक ने लड़ैत अछि ओ ?

कालेजमे आ पटनाक बैसकी सभमे बहुत रास गप्प होइत छलैक— आन-आन देशक उदाहरण देल जाइत छलैक, मजदूर क्रान्तिक गप्प होइत छलैक, श्रमक महत्तापर गप्प होइत छलैक— ओकर जागरणक गप्प होइत छलैक । अपनो देशमे मजदूरक जागृतिक गप्प होइत छलैक । मुदा भास्कर गाममे आबि देखैत अछि जे चलितरा बूढ़ भेल तऽ ठकना, ठकना बुढ़ायल तऽ गेनमा । ओ खिस्सा तऽ चलिए रहल छैक । ओ जागृति देशक कोन भागमे नुकायल छैक ?

पटनोमे तऽ सभठाम सैह देखलकै । छात्र आन्दोलनक नामपर मात्र किछु गोटेक सक्रियता, जकरा पढ़बा-लिखबासँ बेशी मतलब नहि छलैक । जुलुसमे पाछाँ-पाछाँ चलैत बेशी मन्हुआयल लोक, डेरायल लोक । मुदा आगि आ ज्वाला ककरो आँखिमे नहि । अपन स्वार्थ लेल किछु लोक छात्रशक्तिक अपव्यय करैत छैक, ओकरा हाथमे मशाल आ हथियार थमा दैत छैक । हाथ आ शरीर ककरो आ निशाना कोनो आन लक्ष्यपर । सभ जुलूस, सभ हड़ताल आ आनदोलनमे भास्करकेँ सैह अनुभव भेलैक । छात्र वर्ग वा मजदूर वर्ग लग सहानुभूतिक नकली शब्द सुना कोनो दूरस्थ स्वार्थ लेल तथाकथित छात्र आ मजदूर नेता हिंसा आ उपद्रव करबा दैत छैक । असामाजिक तत्त्व अपन हाथक गोला आ बन्दूक छात्र आ मजदूरक नाम लिखि दैत छैक । जघन्य अपराध राजीतिक कार्य बनि जाइत छैक ।

पार्टी बदलैत छैक, सरकार बदलैत छैक, मुदा आम जनताक हालति ओहने रहि जाइत छैक ।

कहिया धरि ? कहिया धरि अनकर देल हथियार आ अनकर नकली आक्रोशसँ काज चलबैत रहत ई सभ ? कहिया धरि कोनो भास्कर-सन खुदरा सामन्तक नकली सहानुभूति आ कोनो तथाकथित नेताक इशारापर जीबैत रहत ई वर्ग ? ठकना वा गेनमाक आँखिमे विद्रोह आ प्रतिहिंसाक भावना कहिया जगतैक ? प्रतिहिंसा नहि, खाली विद्रोह....वर्तमान व्यवस्थाक प्रति विद्रोह, नव व्यवस्थाक स्थापना लेल विद्रोह !

ब्रह्मा विद्रोह कयने छलैक । ब्राह्मण छैक ब्रह्मा, मुदा ओकरामे आ ठकनामे

कोनो अन्तर नहि छैक । दूनूक आर्थिक स्तर एक्के छैक । सामाजिक स्तरपर भने ब्रह्मा सन लोक अपन उच्चताक नकली घमण्ड कऽ लिअय, वास्तविकतामे ओकरामे अन्तर नहि छैक । एक तरहेँ ठकनाक स्थिति नीक छैक । ओ कमा सकैत अछि, शारीरिको श्रमसँ अपन परिवारक भरण-पोषण कऽ सकैत अछि, मुदा ब्रह्मा बुते से नहि हेतैक । ओकरा अपन जातीय उच्चताक मिथ्या अभिमान हेतैक । शारीरिक श्रम करबामे लाज हेतैक । माय हवेलीमे काज कऽ लेथिन, अपने कतहु भनसीयाक काज कऽ लेताह, मुदा हर जोतैत, खेतमे श्रम करैत लाज हेतनि । ई हिपोक्रेसी अइ वर्गक सभसँ पैघ समस्या छैक । ब्रह्माक विरोध कोनो व्यवस्थाक विरोध नहि छलैक । ओ तऽ एकटा घटनाक विरोध छलैक । अपने मायक अपमानसँ विचलित छल ओ । ओकरा मायक अपमानक बदला लेबाक छलैक ।

ब्रह्मा आ ओकर मायक बात सोचैत-सोचैत एक बेर फेर प्रेमा पीसी मोन पड़लथिन । ओ हवेलीसँ बहरा गेल । ककरो संग नहि कयलक, ककरो किछु नहि कहलकै । सोझे ब्रह्माक अँगना गेल । नेनपनमे अनेको बेर गेल छल । घर ताकऽमे कोनो असुविधा नहि भेलैक । सोझे ओकर आँगनमे पहुँचि गेल । आँगन एकदम सुन्न छलैक जेना क्यो नहि होइ घरमे ! प्रेमा पीसीक कोनो पता नहि छलनि । टाटक दक्षिणवारी घर मात्र छलैक । बाँकी तीन दिस खाली । टाटेसँ तीन कात घेरल । दक्षिणबरिए घरमे दू टा कोठली आ ओकरे ओसारापर भानस-भात । पछबारी कात चुलहा बनाओल । भास्कर देखने छलैक ई सभ । कइ बेर एहि ओसारापर बैसिकऽ भोजनो कऽ गेल अछि । जा धरि ब्रह्माक बाबी जीबैत छलथिन, अपने लग बैसा खुअबैत छलथिन । हुनकर बाद प्रेमा पीसी अपने । अन्तिम बेर ब्रह्माक द्विरागमनमे आयल छल....मुँह देखाइ दऽ गेल रहैक ओकर कनियाँकेँ ।

भास्कर घरक लग आयल । एकदम सुन्न छलैक । ओ डेग उठौनहि छल घुरबा लेल कि घरसँ एकटा किरणेक बतारी स्त्री निकलिकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक ओसारापर आ एकटा पीढ़ी खसबैत कहलकै— आउ । बैसू ।

मुँहपर कने घोघ छलैक । मुँह खूब साफ नहि देखाइ । भास्कर बैसल नहि । अंदाजसँ बुझबामे भांगठ नहि रहलैक जे ब्रह्माक स्त्री छैक । नूआ ठाम-ठाम सीअल, चिप्पी लागल । ब्लाउजक बाँहिपर सेहो चिप्पी । खरकट मैल मुदा ओइ मैल नूआक छोट-छीन घोघो तरसँ ओकर गोर आकृति झलकि रहल छलैक । स्वास्थ्यो रहैक मांसल । भास्कर प्रशंसापूर्वक देखिते रहि गेल । फेर अपने लजाकऽ दृष्टि हँटा लेलक आ पुछलकै— प्रेमा पीसी नहि छथि भौजी ?

ब्रह्माक स्त्री हाथसँ इशारा कयलकै । ओ ओकर पाछाँ पुबरिया कोठलीमे गेल । दिन-देखार आयल छल । आँगनमे खूब रौद आ इजोत छलैक । कोठलीमे किछु सुझबे नहि कयलैक । एकदम अन्हारगुज्ज । फेर आस्ते-आस्ते सभटा फरीछ भेलैक । कोठलीक माटिपर प्रेमा पीसीकेँ बान्हिकऽ ओंघरा देने छलैक । देहपर कोनो वस्त्र नहि, एकदम नाङ्गट । सौंसे माथ-कपार फूटल भाँगल, शरीरपर मारि खरोच । तामसे भास्कर जोरसँ बाजि उठल– "ई की भौजी ? एना बान्हिकऽ किएक रखने छियनि प्रेमा पीसीकेँ ?"

तावत प्रेमा जोरसँ हँसऽ लगलैक– अट्हास करऽ लगलैक....आउ आउ.... अहूँकेँ चाही...अहूँ इज्जति लेब ? लिअऽ-लिअऽ मुदा हमर ब्रह्माकेँ छोड़ि दिऔक । गरीब विधवाक एक्के टा आस अछि...ओकरा छोड़ि दिऔक ।

प्रेमा पीसी जोर-जोरसँ कानऽ लगलैक । भास्कर घरसँ बाहर आयल । पाछाँ-पाछाँ ब्रह्माक स्त्री अयलैक– "प्रचण्ड पागल भऽ गेल छथि माय ! कोनो कपड़ा-लत्ता शरीरपर रहऽ नहि दैत छथिन । चीरीं-चीरीं कऽ फाड़ि दैत छथिन । "एहिना नङ्गटे बाटे-घाटे बौआइत फिरैत छथिन । धीयापुता सभ रोड़ा मारैत छनि । पाथरसँ कान-कपार फोड़ि दैत छनि मुदा हिनका लेल धनसन । जहिया बेटाकेँ पुलिस लऽ गेलनि सभकेँ नेहोरा कयलथिन, कल जोड़लथिन । मुदा क्यो ने सुनलकनि । ओ बेटाक जाइत देरी प्रचण्ड बताहि भऽ गेलीह । कथुक होश नहि रहलनि, आब तऽ...

भास्कर लाजे मरि गेल । प्रेमा पीसी ओकर मदति चाहने छलैक, ओ नहि आबि सकलैक । प्रेमा पीसी पागल भऽ गेलैक आ सभठाम नङ्गटे बौआइत रहैत छैक । आब ओकरा ककरो मदति नहि चाहियैक ।

ओ अँगनासँ बहराय लागल । ब्रह्माक स्त्री टोकलकै– बैसब नहि ? सुनै छी सभदिन एहि आँगनसँ खा-पी कऽ जाइत छलहुँ । आइ ओ होशमे नहि रहलीह तऽ कमसँ कम एक गिलास पानियो पीबिकऽ जाउ । अहाँक दोस्त कहिओ घुरताह तऽ हमरा तमसयताह जे किछुओ आदर नहि कयलहुँ अहाँक ।

भास्कर ठाढ़ भऽ गेल । ब्रह्माक स्त्रीक मुँह देखलकै । ओइपर कोनो व्यंग्यक रेखा नहि छलैक । घुरि आयल आ पीढ़ीपर बैसि गेल– दिअऽ भौजी ! भौजी दौड़िकऽ घरक भीतर गेलैक । एक टा गिलासमे पानि आ रिकबीमे कनेटा गुड़क ढेप लेने अयलैक । गुड़ खा पानि पीबि लेलक आ बिदा भेल । आँगनसँ बहरयबासँ पूर्व कहलकै– "अहाँ चिन्ता नहि करू भौजी ! सभ ठीक भऽ जयतैक । बुह्मा घुरि आओत आ पीसी फेरसँ नीके भऽ जयतीह ।" ब्रह्माक स्त्रीक आँखिमे अविश्वास छलैक । ओ दृष्टि हँटा लेलक ।

ओतऽसँ ओ सोझे देवानजी लग गेल । देवानजी बूढ़ भऽ गेल छलाह । सुझितो कम छलनि । तैयो सभटा काज, मामिला-मोकदमा वैह देखैत छलथिन । भास्करकेँ देखि हड़बड़ा गेलथिन– आउ-आउ बौआ, हम तऽ कतेक बेर कहलियनि मालिककेँ जे हम आब नहि सकैत छी । अपनहुँ बूढ़ भेलहुँ । सचिन बाबूकेँ कोनो मतलबे नहि छनि । भास्कर बौआकेँ कहियनु जे सभटा कागज-पत्तर बुझि-सुझि लेताह । भास्कर हुनका लग बैसिते कहलकनि– ओ सभ अखन अपने लग राखू देवानजी ! हम ओ सभ सीखिकऽ की करब ? अखन दोसर काजसँ आयल छी । झूठ-मूठ केसमे फँसा दैत गेलियैक ब्रह्माकेँ, जमानतो नहि भेल छैक आइ धरि । से किएक देवानजी ?

"के करतैक ओकर पैरवी ? के रखतैक ओकील ? नीक जकाँ फँसा देल गेल छैक ब्रह्माकेँ । ओकरा छोड़बऽ लेल नामी वकील करऽ पड़तैक, तखने जमानति देतैक ओकर । के करतैक से ओकरा लेल ?"

–हम करबैक । भास्कर अविलम्ब कहलकै– अहाँ खर्च-वर्च लेल चिन्ता जनि करू, कहुना ब्रह्माकेँ जमानति दिआ दिऔक ।

देवानजी अवाक् । डेराइत कहलथिन– "मालिक बुझता तऽ बड़ बिगड़ताह ।"

भास्कर हुनका आश्वासन देलकनि– तकर चिन्ता अहाँ नहि करू । सभटा जिम्मेदारी हमर ।

आँगन घुरैत काल ओकर मोन किछु हल्लुक लागि रहल छलैक ।

भोरसँ नेना बड़ दिक कयने छलैक ।

सुधा बेर-बेर ओकरा परतारि दैत छलैक । अपन दूध लगा दैत छलैक, मुदा छौंड़ा झट मुँह हँटा लैत छलैक । पाँच बरखक भेलैक, कहियासँ अन्न खाइत छैक ! ओकर सुखायल छातीसँ कोना पेट भरितैक ?

सुधा छटपटाकऽ रहि गेल छलि । अपन नेनाकेँ एक मुट्ठी सुखलो अन्न देबा लेल नहि छलैक । अपन चिन्ता ओकरा नहि छलैक । घरमे बान्हलि बतही सासुओक चिन्ता ओकरा नहि छलैक । मुदा अबोध नेना ! ओकरा कोना परतारतैक ? कोना देखल जयतैक ओकर भूखे सुखायल मुँह ?

बापकेँ जहलमे रखने छैक सभ । तीन माससँ ऊपर भेलैक । कोना दिन खेपलक अछि, से की बुझतैक लोक ? भोरे उठि बतही सासुक गूँह-मूतक सफाइ...हुनका बान्हलेमे स्नान करौनाइ । खुजितहि भागि पड़ेथिन । कोनो ब्योंत कऽ हुनकर पेटमे दूटा अन्न, आ दू कौर अबोध नेनाक पेटमे । अपने खाली पानि पीबि... घरे-घर जायब...कुटाइ-पिसाइ करब, मानस-भात करब...कपड़ा-लत्ता खीचि देब । ककरो सिलाइ कऽ देब, ककरो किछु कूटि देब । सभ काज कऽ लैत छलि सुधा आ तखन रौद चढ़लापर... एक बजे धरि आँगन अबैत छलि, आँचर तर एक थारी भात वा हाथमे कनेटा पोटरी लेने । ओहीमे तीन प्राणीक गुजर होइत छलैक ।

आइ सेहो नहि भेलैक, सभ आँगन घुरि आयल, ककरो खगता नहि छलैक आइ । जकरा छलैको से दू-एकटा बेगारी करा निश्चिन्त भऽ गेलैक, किछु देबाक चर्चे नहि कयलकै । भुखायल छौंड़ा आँचर धयने छलैक सभ ठाम...ठुनकैत पछोड़ धयने छलैक । लोहछिकऽ दू चाट धऽ देलकै । खाली पीठपर पाँचो आँगुर उखड़ि गेलैक ।

कनैत-कनैत छौंड़ा बेहाल भऽ गेलैक । कोरामे लेने कहुना आँगन आयल। कतेक दुलार-मलार कयलकै, मुदा कनिते रहलैक छौंड़ा । कनिते सूति रहलैक । फेर खाय लेल नहि मंगलकै । निन्नोमे ओकर हिचुकी जारी छलैक ।

आ सुधाक छाती फाटऽ लगलैक । केहन परीक्षा लऽ रहल छथिन ईश्वर ! कहिआ घुरिकऽ औतैक एकर बाप ? आब नहि सम्हरैत छैक ओकरासँ एतेकटा जिम्मेदारी । ओइ दिन आँगन आबि कहि गेलैक भास्कर- अहाँ चिन्ता नहि करू भौजी ! ब्रह्मा घुरि आओत आ प्रेमा पीसी नीकेँ भऽ जयतीह । अइ परतारबकेँ तहिये बूझि गेल रहैक सुधा । तैयो नहि जानि किएक सभ दिन बाट ताकऽ लागल रहैक । भरिसक छोड़ाइये दैक ! मुदा दिन-पर-दिन बितैत गेलैक- आ ब्रह्मा नहि छुटलैक । ओइ दिन जखन भास्कर आँगनमे आयल रहैक, छौंड़बा कतहु बाहर खेलाइत छलैक । जाइत काल भास्करकेँ देखलकै । अपन मायसँ पुछलक- ई के छलथिन माय ? अपना अँगना किएक आयल छलथिन ? ई तऽ हवेलीक छलथिन ।

सुधा कहलकै- हवेलीएक छथिन मुदा तोहर बाबूक दोस्त छथिन ।

छौंड़बा हुलसि गेलैक- तऽ हिनका कहुन ने माय जे बाबूकेँ लऽ अनथिन । नहि जानि कतऽ लऽ गेलनि सभ ?

सुधा ओकरा कोरामे लैत कहलकै- "कहलिअनि अछि बौआ ! ई अबस्से छोड़ा देथुन तोहर बाबूकेँ ।"

आ से खाली नेन्नाकेँ परतारबाक लेल नहि कहने छलैक सुधा । भास्करक गप्पपर पहिने अविश्वास भेल छलैक । फेर पूरा आस बन्हा गेल छलैक । अबस्से छोड़ा लेथिन हुनका ई ।

दिन बितलैक । सप्ताहो बीति गेलैक, ब्रह्मा नहि छुटलैक । नेना खाइ लेल जिद करैत छलैक आ ओ धयले चाट लगा देलकै ।

सुधाक मोन छटपट कऽ रहल छलैक । दू आँगनसँ माँगि घुरि आयलि । आइ सभ सप्पत खा लेने छलैक जेना ! हताश सुधा आँगनक अरड़नेबा-गाछसँ बहुत रास अरड़नेबा तोड़लक लग्गीसँ । सभकेँ काटि, उसिनि लेलक आ नून मिला बूढ़ीकेँ खुआ अयलनि ।

छौंड़ा ओहिना सूतल छलैक । साँझ भऽ गेल छलैक । सुधा जगा देलकै ओकरा । मुँह हाथ धोकऽ आँचरसँ पोछि देलकै आ फेर अपने हाथे ओ उसनल अरड़नेबा खुअबऽ लगलैक- "आइ इएह खा ले बाउ ! काल्हि अबस्से भात रान्हि देबौक ।"

छौंड़ा किछु ने बजलैक । चुपचाप खाय लगलैक । सुधाक आँखिसँ नोर बहऽ लगलैक ।

छौंड़ा टोकि देलकै-"कनै किएक छैँ माय ? हम नहि जिद करबौ कहिओ आब । कानै नहि ।"

सुधा आर कानऽ लागलि । आ बेटाकेँ करेजासँ साटि लेलक- "हमही डाइन छी रे ! सभकेँ खा जयबौ । भुखायल नेनाक पीठपर चाट मारलौं । हाथ टूटि जायत हमर ।"

छौंड़बा बुझनुक जकाँ जल्दी-जल्दी चारि कौर खा लेलकै आ कहलकै- "हमर पेट भरि गेल माय, आब तोहूँ खा ले ।"

अपने हाथे खुअबऽ लगलैक । सुधाक आँखिक नोर आर बढ़ि गेलैक । ओहिना कनैत दू कौर खा लेलक ओहो, उसनल अरड़नेबा नोनक संग ।

छौंड़ा मुदा ओतबे खाकऽ प्रसन्न भऽ गेलैक । मायक कोरामे खेलाय लगलैक । सुधा टांग पसारि देलकै । छौड़बा दुनूकात टांग दऽकऽ ओइपर बैसि गेल । सुधा ओकर दुनू बाँहि बेरा-बेरी आगू-पाछू झीकैत कहलकै–

दालि दड़री
मरीच दड़री
राजा पोखरि मे कतेक मछरी ?

छौंड़बा बीचेमे प्रश्न कऽ देलकै– राजा ककरा कहै छैक माय ?

सुधा कहलकै– जकरा लग सभ-किछुक अम्बार रहैत छैक, जे हमरा-तोरा जकाँ खाय लेल बेलल्ल नहि रहैत अछि । जेना हवेलीक लोक सभ छौ, वैह सभ राजा छैक ।

छौंड़ा फेर प्रश्न कयलकै– पोखरिक माछ ओकर कोना भऽ जाइत छैक ?

सुधा कहलकै– जकर पोखरि, तकर माछ ।

छौंड़बा नहि मानलकै– पोखरि कोना ओकर भऽ गेलैक ?

सुधा कहलकै– ओकरे छैक बौआ ! ओकर पुरखाक खुनाओल छैक । ओकर माछ, ओकर पानि, सभटा ओकरे छैक ।

छौंड़बाकेँ मायक गप्प नीक नहि लगलैक । परसू पोखरिमे मछहर रहैक– बड़का महाजाल खसल रहैक । ललमुँहा रहु-भाकुर सभ पानिमे कूदऽ लगलैक तऽ बड़ नीक लगलैक ओकरा । भीड़पर ठाढ़ माछक ओ खेल देखैत रहल । मलहा सभ जाल घीचि माछ सभ बहार कऽ लेलकै । एकटा मलहाक खोंगीसँ एकटा रहुक थरि कूदि कऽ बाटपर खसि पड़लैक । ओ ओकरा उठा लेलक ।

ताही कालमे सोनू चौधरीक बेटा ओकर गट्टा पकड़ि लेलकै– चोरा नहि-तन ! माछ चौरौने छैं ?

ओ कानऽ-कानऽ सन भऽ गेल– "नहि मालिक, हम चोरी नहि कयने छी । माछ बाटपर खसल छलैक, उठा लेलियैक, अहाँ लऽ लिअऽ ।

ओ माछ छीनैत कहलकै– "देखू ने अखनेसँ एकर चालि ! चोरक बेटा चोर ।"

आ जाइत-जाइत एक चाट धऽ देलकै ओकर गालपर । कनैत माय लग आयल । माय नोर पोछैत कहलकै– "जाय दहिक बौआ ! ओ मालिकक बेटा

छैक । ओकरासँ अराड़ि नहि करी । तोहर बाबू कयलथुन, अनेरो झंझटमे फँसलथुन ।

ओ चुप्प भऽ गेल, मुदा मोनमे किछु सुनगऽ लगलैक । आ आइ फेर माय कहैत छैक पोखरि ओकरे छैक, ओहि महक माछ ओकरे छैक । ओ सभ राजा छैक ।

ओ मायसँ पुछलक– "ई राजा के बनबैत छैक ?"

सुधा कहलकै– कपार ! अपन कपारेसँ क्यो राजा होइ-ए आ क्यो फकीर ।

–"झूठ । एकदम झूठ सरबन"– एकाएक अपन स्वामीक स्वर सुनि सुधा चौंकि उठल । लगेमे एकटा पुरुष ठाढ़ छलैक । लम्बा बाँस जकाँ ठाढ़ । मुँहपर दाढ़ी-मोछ छलैक बेश घनगर । हाथमे झोरा छलैक । इजोरियामे अपन स्वामीक बदलल रूप चिन्हलक सुधा आ बेटाकेँ गह्वरित होइत कहलक— तोहर बाबू घुरि अयलथुन ।

आ कानऽ लागलि । सरबन अह्लादित होइत बाप दिस दौड़ल । फेर मायकेँ कनैत देखि थकमका गेल । ब्रह्मा ओकरा लग धीचैत कहलकै– तोहर माय तोरा झूठ खिस्सा कहैत छलथुन । आ बैस हमरा कोरामे, बैस । हम तोरा खिस्सा कहैत छिऔक ।

सरबन बापक टाँगपर बैसि गेल ओही ठाम । ब्रह्मा ओकर बाँहि झीकैत कहलकै–

दालि दड़री
मरीच दड़री
बाबा पोखरि मे कते मछरी ?

सरबन हर्षित होइत बाजल– "ककर बाबाक पोखरि छैक बाबू ?"

ब्रह्मा सुधा दिन तकैत कहलकै– "सभक बाबाक पोखरि छैक बाउ ! पोखरि आब कोनो एक गोटेक नहि रहतैक । सरकारक छैक आ सरकार सभक छैक । ककरो बापक खुनयलासँ पोखरि ककरो बपौती नहि भऽ जयतैक । पोखरि सभक छैक, तोरो छौक ।

सरबनकेँ ई खिस्सा बड़ नीक लगलैक । खिस्सा सुनैत-सुनैत ओ फेर सूति रहल आ लगले सपना देखऽ लागल । पोखरिमे महाजाल खसल छलैक ।

ललमुहाँ रहु-भाकुर सभ कूदि रहल छलैक । भरि गामक लोक जालमेसँ माछ बीछि रहल छल । सरबनो बीछि लेलक दूटा माछ आ दुनू हाथमे एक-एकटा माछ लेने अँगना दिस दौड़ल ।

ब्रह्मा उठिकऽ ठाढ़ भेल-''मायकेँ नहि देखैत छियैक ! कतहु गेल अछि ?''

सुधाक करेज काँपऽ लगलैक । फेर कोनो काण्ड हेतैक । मायक दशा देखितहि फेर पागल भऽ जयतैक । ओ बाट छेकैत जकाँ कहलकै- ''नहि, जयथिन कतऽ ? कोठलीमे सूतल छथिन खा-पीकऽ । भोरे गप्प करब ।''

ब्रह्मा तेयो बढ़ैत कहलकै- चलू, सुतलेमे गोड़ लागि लेबऽ दिअऽ ।

सुधा देहरिपर ठाढ़ भऽ गेलैक- लागि लेबनि भोरे । अखन आँखि लागल छनि । निन्न बड़ पातर भऽ गेल छनि अहाँक गेलाक बाद । एक बेर उठि गेलीह तऽ फेर निन्ने नहि हेतनि ।

ब्रह्माकेँ आशंका भेलैक- ''सत्त बजैत छी ने ! माय अछि ने घरे मे !

सुधा झट कहलकै- अहाँक सप्पत । घरेमे छथि ।

सरबन निन्नमे स्वप्न देखि रहल छलैक । सुधाक आँखिमे ने निन्न छलैक, ने स्वप्न । सूतल सरबनकेँ उठाकऽ कोठलीमे देलकै । अपनो सभक बिछौन कयलक । फेर टप-टप नोर खसऽ लगलैक । ब्रह्मा ओकरा लग बैसिऽ नोर पोछैत पुछलकै- ''एना कनै किए छी आब ? आबि तऽ गेलहुँ हम ।''

सुधा कनिते रहलैक- एतेक दिनपर अयलहुँ घर आ आगूमे देबा लेल अछि इएह उसनल अरड़नेबाक एक कौर ।

ब्रह्माक आँखिमे किछु लहकि उठलैक । फेर लगले ओ मिझाओ गेलैक । झोरासँ बहार करैत कहलकै- तऽ ताहि लेल किएक कनैत छी ! देखू, हम की अनने छी । सरबन तऽ सूति रहल । भोरे खुआ देबैक ।

झोरामे मुरही लाइ छलैक । ब्रह्मा अपनो फाँकऽ लगलैक आ सुधोकेँ देलकै । सुधाकेँ एको फक्का गीड़ल नहि गेलैक । गरामे काँट जकाँ गड़ऽ लगलैक । नेन्ना दिन भरि उपासे रहलैक, रातियोकऽ भुखले सूति रहलैक ।

कनैत-कनैत सुधो सूति रहलि । ब्रह्माक छातीसँ नीक जकाँ सटिकऽ सूति रहलि । सौसे मुँह अखनो नोरसँ भीजल छलैक मुदा निश्चिन्त सूतलि छल । कतेक

मासक बाद आइ अपन स्वामीक छातीपर मूड़ी राखि सभ चिन्तासँ मुक्त भऽ गेल छलि जेना !

ब्रह्माक आँखिमे मुदा निन्न नहि छलैक । कतेक मास जहलमे बिता आइ अपन घर घुरल छल । बहुत दिनपर अपन बिछौन आ बिछौनपर अपन पत्नीक सामीप्य आ स्नेह भेटल छलैक । बड़ी राति धरि सुधा कनिते रहलैक, ओ ओकरा शान्त करैत रहलैक । दुलार करैत रहलैक । दुलार आ स्नेहसँ सभटा बिसरि गेलैक सुधा आ सूति रहलैक । मुदा ब्रह्माक आँखिसँ निन्न पड़ायल छलैक । ओकरे मायक इज्जति गेलैक आ वैह निरपराध जहलो गेल । सचिन बाबूक कुकुर सभ नाटक कयलकै आ भरि गाम ठाढ़ भेल तमाशा देखलकै । मारैत-मारैत बेहोश कऽ देलकै ओकरा, मुदा ककरो किछु बजबाक साहस नहि भेलैक । अइ गामक लोक, गरिबहा लोक एतेक निर्बल, एतेक असहाय कहिआ धरि रहतैक ?

जहलमे ओकर खिस्सा सुनि दादा कहने रहैक जे तोँ उचित काज कयने छेँ, अन्यायक विरोध कयने छेँ । ई विरोध जारी राख । अइ लड़ाइमे हमरा लोकनि तोहर संग देबौक । देशक आनो-आनो भागमे लड़ाइ जारी छैक । एना असहाय भऽ जुलुम नहि सहतैक आब लोक ।

जहलोमे सभ दादे कहैत छलैक ओकरा । ओकर असल नमा जेना ककरो बूझले ने होइ । जहलोमे खूब बढ़ियाँ-बढ़ियाँ कपड़ा पहिरैत छलैक- आ नीक खेनाइ भेटैत छलैक । लगैत छलैक जेना जहलमे नहि, कोनो पहुनाइमे आयल हो ! आधा पेट खिच्चड़ि आ मोट-मोट रोटी खाइत-खाइत ब्रह्मासभ तबाह छल ।

दादा बड़ दयालु छलैक । जहलोमे सभक दुखनामा सुनैत छलैक । जाइत काल ब्रह्माकेँ कार्डो देलकै- ''ई अपने घर छियौक । कहिओ काज होउ, एहि पतापर चल अबिहें ।''

ओ कार्ड ब्रह्माक झोरामे पड़ल छलैक । डाँड़मे जहल जाइत काल बीसटा टाका छलैक । नहि नजरि गेलैक ककरो, ने तऽ निकालिए लेने रहितैक । ओकरा कोनो होश छलैक !

जहलसँ बहरायल तऽ एकटा झोरा लेलक आ सनेसमे मुरही-लाइ कीनि लेलक । दाढ़ी-मोंछ खूब बढ़ि गेल छलैक । कान्हपर ओ झोरा लटका चलऽ लागल तऽ कोनो नेता सन लागऽ लागल । ब्रह्माकेँ ई सोचि अपने हँसी लगलैक । चोरीक इलजाममे जहलमे छल आ नेताक हुलिया बनि गेलैक । खाली जहलसँ बहराइत

काल माला लेने कोनो भीड़ नहि ठाढ़ छलैक बाहर । अपन परिवारक लोक नहि छलैक । के रहितैक ? छैके के ? माय, सुधा आ नान्हि टा सरवन । ओ सभ कोना औतैक एतऽ ?

नहि जानि कोना एतेक दिन खेपने हेतैक ! घरमे ने टाका छलैक, ने अन्न । माय अपमान आ दुःखसँ बताहि जकाँ भऽ गेलि रहैक । एकसर सुधा की-की सम्हारने हेतैक ?

एतबा सोचिते ओकर आँखिमे ज्वाला धधकऽ लगलैक- यदि हमर माय, स्त्री आ बच्चाकेँ किछु भेल तऽ आगि लगा देबैक महेन्द्र चौधरीक हवेलीमे । ओही आगिमे झोंकि देबैक ओकर सौंसे परिवारकेँ । ओही आगिमे धधकैत, उद्विग्नतामे डूबल ओ ट्रेन पकड़ि गाम दिस बिदा भेल । साँझ भेलापर गामक स्टेशनपर उतरल। दुइये स्टेशन छलैक दरभंगासँ ।

जहलसँ बहराइत काल आ गाममे अपन घर दिस बढ़ैत काल एकटा आरो प्रश्न ओकर मोनकेँ मथि रहल छलैक- हमरा के छोड़ा देलक ? कोना भेल हमर जमानति ? आ अही गुनधुनमे रातुक झलफलमे अपन आँगनमे आबि गेल छल । गाममे क्यो नहि चिन्हलकै । सुधा पहिने अकचका गेलैक । सरबनकेँ टाँगपर बैसा खिस्सा कहि रहल छलैक । ब्रह्माक मोनक दुश्चिन्ता समाप्त भेलैक ।

सुधा सूति रहल छैक, मुदा ओकर दुश्चिन्ता अखनो समाप्त नहि भेल छैक । अइ अन्यायक प्रतिकार कोना हेतैक ? बदला कहुना लेबहे पड़तैक । एना सहि जायब ओकर मायक अपमान हेतैक, ओकर गरीबी आ असामर्थ्यक अपमान हेतैक ।

मुदा की कऽ सकतैक ओ ? महेन्द्र चौधरी आ ओकर पुत्रक सामर्थ्य असीम छैक । कुकुर सभ पोसने अछि ओ । दसटा लठैतकेँ बैसाकऽ खुअबैत अछि । ओकरा अपन आ अपन परिवारक पेट भरब मस्किल छैक । भनसीयाक काज करैत छल महेन्द्र चौधरीक देयादीमे । माय महेन्द्र चौधरीक आँगनमे छलैक ओकर नेनपनेसँ । दुनूक काज गेलैक । मायक इज्जति गेलैक आ काज गेलैक । ओ जहल गेल आ महेन्द्र चौधरीक दयाद, उपेन्द्र चौधरी, आब ओकरा नहि रखतैक अपन आँगनमे । ओकरा बूझल छैक ।

मिडिल तक पढ़ि गेल छल कहुना । सभ गुरुजी कहैक जे बड़ तेजगर रहय । भास्कर जखन चल गेलैक गामसँ, तऽ वैह फस्ट करय । हाइस्कूलमे तैयो

नाम नहि लिखा सकलैक । असगर मायक कमाइसँ तीनू प्राणीक गुजर मस्किल भऽ गेलैक । नानी जीबैत रहैक । ओकर बिआहक जिद धऽ लेलकै । पन्दरहे वर्षक छल तऽ बिआह करा देलकै । नानी गेलैक आ सरबन आबि गेलैक । कहुना गुजर भऽ जाइत छलैक ।

सुधाक चेफड़ी लागल साड़ी आ फाटल ब्लाउज देखि कानऽ सन मोन भऽ गेलैक । गरीबक नसीबमे फाटल-पुरान तऽ रहिते छैक, मुदा ई तऽ देहो झपबा जोगर नहि छलैक । नहि जानि कोना खेपलकै एतेक दिन ?

आ माय कोना खेपलकै ? एतेकटा अपमान आ दुख कोना सहने हेतै माय ? सुधा गोरो ने लागऽ देलकै राति । परतारि कऽ घर लऽ अनलकै । ओहो जिद नहि कयलकै । मायकेँ देखि फेर ओकर शोणित खौलऽ लगितैक ।

निन्न नहिए भेलैक । चिड़ै-चुनमुन्नी बाजऽ लगलैक । सुधा तैयो निभेर सूतल छलैक । ओकरा बड़ सिनेह आ दया भेलैक । नहि जानि कतेक रातिक बाद सूतल छैक एना । सरबनो सुतले छलैक । माय-बेटाकेँ ओहिना सूतल छोड़ि ओ कोठलीसँ बाहर आबि गेल ।

आँगनमे इजोत पसरि गेल छलैक । मायक कोठलीक केबाड़ खूजल छलैक । सुतबा काल भिड़का देने रहैक सुधा । भरिसक कुकुर-बिलाड़ि पैसल छैक कोठलीमे । ओ कोठलीमे पैसल । सामनेक हाल देखि ओ स्तब्ध रहि गेल । घरमे पटियापर ओकर माय पड़ल छलैक । हाथ-पयर दूटा रस्सीसँ बान्हल । देह एकदम उघार । चीरी-चीरी कयल धोती एक कात फेकल छलैक । कपारपर टेटर, देहमे नछोड़, ठाम-ठाम चमड़ा नोचल ? मायक केश गर्दा आ माटिसँ भरल ।

ब्रह्माक आँखिक धधरा लपलपा उठलैक । नस-नसमे एकटा हिंसक आवेश तड़तड़ा उठलैक । फेर नोर खसऽ लगलैक । कानऽ लागल ब्रह्मा । अपन मायक दुर्दशा आ अपन सामर्थ्यहीनतापर कानऽ लागल । माय पागल भऽ गेलैक आ ओ जहलमे पड़ल रहल ।

सुधापर तामस भेलैक । एना बान्हिकऽ किएक रखने छैक मायकेँ ? जल्दीसँ चीरी भेल धोती देहपर राखि देलकै आ बन्हन खोलऽ लगलैक । हाथ-पैर एकदम ठरल छलैक ।

बन्हन खोलि टोकलकै- "माय, उठ ने माय ! देख, हम आबि गेल छियौ ।"

कोनो उत्तर नहि । ब्रह्मा विकल भऽ गेल- ''बजै किए ने छैं ? उठ ने माय ! हम आबि गेलियौ ।''

तैयो कोनो उत्तर नहि । हड़बड़ाकऽ सौंसे देह डोला देलकै । सर्द हेमाल देह– निष्प्राण । ब्रह्मा तेना चीत्कार कयलक जेना क्यो गला रेति रहल होइ ।

सुधा दौड़लि अयलैक । मायक देहपर झुकि गेलैक- ''उठथु ने ! देखथु, हिनकर बेटा घुरि अयलथिन, किछु कहथिन नहि हिनका ।''

प्रेमाकेँ आब ककरोसँ किछु कहबाक नहि छलनि । सुधा हुनकर सौंसे देह झकझोरि कानऽ लगली- ''नै, से नहि हेतनि । बाजथु ई । ई तऽ भारी अकलंक देने जाइ छथि हमरा । गामक लोक आ हिनकर बेटो कहताह जे किछुओ दिन नहि सम्हारि सकलियनि हिनका । हिनका बेटाकेँ की जबाब देबनि हम ? हमरा एतेक पैघ दण्ड नहि देथु...बाजथु किछुओ ।''

बजनिहारि तऽ छलीहे नहि । सभदिन लेल चुप्प भऽ गेलि छलीह, ने तऽ लगले उठिकऽ ठाढ़ भऽ जैतथिन- आउ आउ, अहुँ लेब हमर इज्जति...लऽ लिअऽ... खाली हमर ब्रह्माकेँ छोड़ि देबैक...ओकरा छोड़ि आर क्यो नहि अछि हमर...नेहोरा करैत छी हम...

ओ चुप्प छलीह आ सभदिन चुप्प रहऽवाली शान्त गंभीर सुधा चिचिआ कऽ कानि रहल छलीह– ''ई उचित नहि भेलनि हिनकर ? हमर सेवा, हमर मेहनतिक ई इनाम दऽ गेलीह ई ! जिनगी भरि लेल एतेक भारी अकलंक !''

ब्रह्मा सेहो कानऽ लागल— अहीं मायसँ भेट नहि करऽ देलहुँ हमरा रातिमे । हमरा देखि लैत तऽ बचि जाइत माय । किएक ने भेट करऽ देलहुँ हमरा ? माय ओइ घरमे मुइल पडलि छलि आ हमरा लोकनि...

सुधा आर जोरसँ कानऽ लगलैक- ''से की जाने गेलिऐक ! हमरा तऽ भेल जे मायकेँ ओना बताहि बनलि देखबनि तऽ रातियेमे कोनो काण्ड भऽ जायत । एतेक पैघ अयश लिखल छल हमरे भागमे ।...उठबियनु आब...लऽ चलिअनु आँगनमे ।

ब्रह्मा उठा लेलकै कोरामे । जे माय कोरामे खेलौने छलैक ओकरा, तकरे निर्जीव शरीर आइ ओकर कोरामे छलैक । घरे-घर मेहनति-मजदूरी कऽ पोसने छलैक ओकरा । विधवा-बेसहारा होइतो पोसिकऽ एतेक पैघ कयने छलैक ओकरा। अपन मायोकेँ पोसने छल ओही मेहनतिक कमाइसँ । मुदा पापक हवेली ओइ

मेहनतिपर पापक मोहर लगा देलकै । ओ नहि बचा सकल अपन मायकेँ । आँगन आनि तुलसीचौरा लग पाड़ि देलकै आ लगमे बैसि गेल । सुधो बैसि गेलैक लगेमे । आंगनमे रौद पसरि गेल छलैक । सुधा अपन स्वामी दिस तकितहि डेरा गेलि । ओकर आँखिमे फेर कोनो हिंसक ज्वाला लपलपा रहल छलैक ।

आशा चौधराइन अपन पोताकेँ खेला रहल छलीह ।

साँझ भऽ गेल छलैक । साँझे नहि, राति भऽ गेल छलैक । झलफल अन्हार । खूब तरेगन रहैक आकाशमे । चन्द्रमा नहि । पोता अन्हारमे किम्हरो निकलि ने जाय तेँ रोकिकऽ रखने छलथिन । भास्कर घरेमे छलनि । किरणोकेँ ओम्हरे पठा देने छलथिन । बड़ नीक लागि रहल छलनि हुनका । जहिआसँ छोटका बेटा आयल छलनि, सभ किछु बड़ नीक लागि रहल छलनि । हवेलीक ओ स्वप्न, अपने आँखिए जगैतमे देखल ओ डेराओन स्वप्न हुनका बिसरि गेल छलनि । मोनो नहि राखऽ चाहैत छलीह ओकरा ।

मोन हुनका ओनाहो किछु ने रहैत छनि । खिस्सा-पिहानी तऽ आरो नहि । सचिन आ भास्करकेँ तऽ पितामहिये खिस्सा कहलथिन सभ दिन । आब ओ अपने पितामही बनि गेल छलीह आ राजा जिद धयने छलनि ।

किछु ने फुरेलनि तऽ दुनू टांग पसारि लेलनि आ ओइपर राजाकेँ बैसा दूनू हाथ बेराबेरी झीकैत कहय लगलथिन–

दालि दड़री
मरीज दड़री
बाबा पोखरि मे कतेक मछरी ?

राजा बीचेमे टोकलकनि- ''ककर बाबाक पोखरि छैक बाबी ?''

आशा चौधराइन सगर्व कहलथिन- तोहर बाबाक ।

आ राजा फेर पूछि देलकनि- ''हमर बाबाकेँ के देलकनि पोखरि ?''

आशा चौधराइन आरो सगर्व कहलथिन– 'हुनकर बाबा ।'

राजा फेर प्रश्न कऽ देलकनि- ''आ हुनकर बाबाकेँ के देलकनि बाबी ?''

आशा चौधराइन कहऽ जा रहल छलथिन जे ''हुनकर बाबा...'', कि आँगनमे गरजैत महेन्द्रनाथ चौधरी पैसलाह- ''देखि लिअऽ अपन सुपुत्र सभक करनी। एक बेटा ओइ दिन नाक कटौलनि आ एकटा ऐरू-गैरू आँगनमे आबि गारि पढ़ि गेल। आब दोसर बेटा ओकर पैरबीकार बनल छथि, जमानति दिआ देलथिन, हमर सभक कयल मोकदमाकेँ झूठ साबित करताह ओ। छथि कतऽ अहाँक देव-पुरुष ? गरीबक उद्धारक बनताह। अपन औकाति की छनि ?

भास्कर कोठलीसँ बाहर आबि गेल- ''किछु कहैत छलहुँ बाबूजी ?''

महेन्द्र चौधरी ओकरा देखितहि जोर-जोरसँ गरजऽ लगलाह- 'आर कटाबह अइ हवेलीक नाक ! तोहर तऽ रंगे-ढंग विचित्र छलऽ नेनपनेसँ ! तैं ओतेक पढ़ा देलिअह जे सुबद्धि हेतह ! मुदा पढ़ि-लिखिकऽ मूर्ख बहरेलह तोँ ! अपन माय-बापकेँ गारि देबऽवलाकेँ देखि की अयलह ? ओकरा जहलसँ छोड़ा देलहक ?

भास्कर हर्षित होइत बाजल-''ब्रह्माक जमानति भऽ गेलैक बाबूजी ?''

महेन्द्र चौधरी अपन स्त्रीपर घुड़कलाह- ''देखि लिअऽ अपन सुपुत्रक हाल ! तेना प्रसन्न भऽ रहल छथि जेना अपने जेठ भाइ छूटि गेल होथि ! जा', आइए चल जा पटना तोँ। तोरा गाममे रहबाक कोनो काज नहि छऽ। तोँ नहि छऽ जमीन्दारिक काज बुझबा जोगर।

भास्कर बड़ दुखसँ कहलकै- ''चलि जायब बाबूजी ! हमरा तऽ जयबाक अछिए। छूट्टीमे आबि गेल रही। हमरा बूझल छल जे हम अयोग्य छी। कोनो काजक नहि छी। मुदा ई नहि बूझल छल हमरा जे छुट्टियोमे हमर आयब नीक नहि लगैत अछि अहाँलोकनिकेँ।''

महेन्द्र चौधरी कने नरम पड़लाह- ''से कखन कहलिअऽ हम ? अपन घर छऽ। आबह जा, मुदा आब बच्चा नहि छऽ। खाली मायासँ काज नहि चलैत छैक। जे हमर अपमान कयलक, हमर पुरखाकेँ गारि पढ़लक, तकरा कोन बुद्धिये छोड़बा देलहक तोँ ? हमर अपमान तोहर अपमान नहि भेलह ?''

भास्कर दृढ़तापूर्वक कहलकै- ''अबस्स भेल। मुदा ओ होशमे नहि छल। अइ हवेलीमे ओकर माइक अपमान भेलैक। ओकर इज्जति लूटल गेलैक। ओइ अवस्थामे ककरो माथा खराब भऽ सकैत छलैक। तकरा लेल एहन दण्ड ! झूठ-मूठक केसमे पठा देलियैक ओकरा जहल। माय दुःख आ अपमानसँ बताहि

भऽ गेलैक। स्त्री-नेना अन्न बेतरेक मरि रहल छैक। ओकरा छोड़ाकऽ हम कोनो गलती कयने छी ? अहीँ कहू बाबूजी ! माय तोहीँ बाज !''

माय किछु ने बजलैक, मुदा बाप गरजि उठलथिन- ''ई तोँ हमरासँ पुछैत छऽ ? एहन काज क्यो आन कयने रहैत तऽ गरदनि छोपबा लेने रहितियैक।''

भास्कर गरदनि झुका देलकै- तऽ गरदनि कटबा दिअऽ बाबूजी ! मुदा जा धरि जीबैत छी, ई अन्याय हमरासँ बर्दास्त नहि हैत। बस्स करू बाबूजी आब। बहुत भेल ई सभ खेल। युग बदलि गेल छैक...कोनो युगमे गरीबकेँ सतौनाइ नीक काज नहि कहल गेलैक अछि। हमरा अइ आत्मग्लानिसँ बचाउ बाबूजी ! भैयोकेँ कहियनु। जिनका हम प्रणाम करै छी, जे हमर आदरक पात्र छी, तिनकर कर्मपर हमरा गर्व हेबाक चाही। एहन किछु ने करथि ओलोकनि जाहिसँ मूड़ी नहि उठा सकी हम...

माय ओकरा ठेलिकऽ हँटबऽ लगलैक- ''जा, घर जा। बाप-पित्तीक मुँह नहि लागी।''

राजा पहिनहि डरेँ पड़ा गेल छलैक माय लग। ओकर हाथ पकड़ि किरणो अपन कोठलीसँ बाहर आबि गेल छलि। रम्भा सेहो ओसारापर आबि गेल छलि।

आँगनमे थरथर करैत महेन्द्रनाथ चौधरी ठाढ़ छलाह- ''अही दिन लेल तोरा शिक्षा भेटल छलह ? आइ तोँ बापक मुँहपर कर्म-कुकर्मक ज्ञान बघारि रहल छऽ। बर्दास्त करबाक एकटा सीमा होइत छैक। फेर कहिओ एहन बात अपन मुँहपर अनलऽ तऽ हमरासँ खराप लोक दुनियामे नहि भेटतह। चलि जा भोरे...पढ़ऽ लिखऽ गऽ...जा धरि नहि लिखिअऽ, गाम अयबाक काज नहि छऽ...। हवेली,... कुल खानदानक मर्यादाकेँ नष्ट कऽ देलह तोँ।''

.भास्कर गोड़ लागिकऽ ठाढ़ भऽ गेल- ठीक छै बाबूजी, चल जायब भोरे। ता धरि मुँह नहि देखायब जाधरि नहि लिखब अहाँ। मुदा विश्वास राखू, एतऽ रही वा कतहु,...कुलक मार्यादा, हवेलीक मार्यादा नहि तोड़ब हम। अन्यायक विरुद्ध ठाढ़ भेलासँ.....सत्य लेल लड़लासँ कुलक मर्यादा बढ़ैत छैक.... घटैत नहि छैक....।

भास्कर अपन कोठलीमे चल गेल। आँगनमे तामसे थरथराइत महेन्द्रनाथ चौधरी आ सकपकायल आशा चौधराइन ठाढ़ छलीह।

किरणो दौड़ल कोठलीमे गेल। माथ दुनू हाथसँ पकड़ने बिछौनपर बैसल

छल भास्कर । किरण लग आबि कहलकै– ''बाबूक बातक एना जबाब किएक देलियनि ? श्रेष्ठ छथि । अहीं सहि जैतहुँ ।''

भास्कर मूड़ी उठौलक । आश्चर्यसँ किरण दिस देखलकै– ई अहाँ कहि रहल छी किरण ? सभटा जनैत ? बाबू हमरा किछु कहितथि तऽ सहि जैतहुँ हम। मुदा जे बात ओ कहि रहल छथि, से हमरा मान्य नहि अछि । बराबरि अपन इच्छासँ नचबैत आयल छथि हमरा । मुदा अपन आत्माक आवाजकेँ मारिकऽ कतेक दिन जीबि सकब ? जाय दिअऽ । आइ खिस्से खतम कऽ देलनि बाबू । काल्हि भोरे चल जायब । कोनो व्योंत हेतइ । तखन अहूँ चल आयब । राजाक संगे । अइ हवेलीसँ सम्पर्के ने रहत कोनो ।

किरण लग बैसैत कहलकै– सत्ते, नहि रहत कोनो सम्पर्क । अहाँक माय-बाबू छथि, भैया-भौजी छथि । तमसाकऽ विदा भेने सभ सम्बन्ध टूटि जायत।

भास्कर कने शान्त होइत कहलकै– सम्बन्ध नहि टूटत, मुदा ने देखबैक किछु, ने बाजब । सम्पर्के ने रहत तऽ एतुक्का नीक-बेजायसँ सेहो मतलब छूटि जायत ।

किरण गम्भीरतासँ प्रश्न कयलकै– एतुका नीक-बेजायसँ मतलब छूटि जायत, मुदा अधलाह काज तऽ सभ ठाम होइत छैक । ओतहुसँ पड़ा जायब ? ओतऽ अन्तरात्मा नहि किछु कहत ?

भास्कर असहाय जकाँ बाजल– तखन की करू हम ? अही कहू ने !

स्नेहसँ ओकर माथ सोहरबैत कहलकै किरण– किछु करबाक नै काज, तामस थुकरि दिअऽ । बाबू जे कहलनि तकरा बिसरि जाउ ।

–''मुदा अहीं कहू किरण ! ब्रह्माकेँ छोड़बा देलामे कोनो अन्याय भऽ गेल हमरासँ ?''

–''से कखन कहलहुँ हम ? हम तऽ खाली इएह कहैत छी जे बाबू जे कहलनि से बिसरि जाउ । ओ श्रेष्ठ छथि, हुनका अधिकार छनि ।''

–ओही अधिकारसँ आइ धरि हमर मुँह बन्द करैत आयल छथि । आब अतत्तह भऽ गेल । अहीं तऽ लिखने रही अपन चिट्ठीमे । प्रेमा पीसी बताहि भऽ गेलीह, से अहाँ नहि लिखलहुँ । कहबो नहि कयलहुँ । बाबी कहने छलि किरण जे अन्याय-अनीतिकेँ जे टोकारा दैत छैक, ओकरा मारि-गारि सहऽ पड़बे करैत

छैक...। हमरो सहऽ पड़त....अहूँकेँ सहऽ पड़त किरण....हम सभटा स्पष्ट देखि रहल छी । अहूँ तैयार रहू किरण...

किरणकेँ डर होबऽ लगलैक– ''ई की सभ बाजि रहल छी ? किछु ने हैत । चैनसँ सूतू, मोन स्थिर करू ।''

भास्कर गम्भीर स्वरमे कहलकै— हमर मोन स्थिर अछि किरण ! भोरे हम जायब ।

नहि जा सकल भास्कर । तैयारीमे लागल छल । किरण बुझाकऽ थाकि गेल रहैक । भरि राति बुझबैत रहलैक मुदा भास्कर अड़ल छल– ''अहाँ ई नहि बूझू किरण जे बाबू जाय लेल कहलनि, तेँ जा रहल छी हम । जयबाक दिन तऽ आबिए गेल अछि । बाबूओक बात रहि जेतनि । ब्रह्मा छूटि गेल अछि, अपन माय-स्त्रीक ध्यान राखत । एतबे प्रायश्चित्त भऽ सकल हमरासँ । प्रेमा पीसीक ममताक आर कोनो मूल्य नहि दऽ सकलियनि । ममताक मूल्य आँकलो नहि जा सकैत अछि ।

तैयारी भऽ चुकल छलैक । माय कोठलीमे अयलथिन– जिद नहि करऽ भास्कर ! आइ नहि जो । प्रेमा राति मरि गेलीह । क्रियाकर्म धरि रुकि जो । कने ओइ आँगन जा देखहक जे कोनो व्यवस्था भेलैक वा नहि ।

भास्कर अवाक् मायक मुँह तकैत रहल । के कहैत छैक जे अइ हवेलीमे माय छैक । एतऽ ओकर माय रहैत छैक, जकरा कोनो छोट विचार स्पर्शे नहि कऽ सकैत छैक । मायक पैर छूबि लेलक भास्कर । माय हाथ पकड़ैत कहलथिन– एना किए करैत छऽ, नहि मानबऽ जयबे करबऽ ?

–नहि माय, खाली आशीर्वाद दे सभ दिन जे सत्यक बाटपर चलि सकी ।

भास्कर शीघ्रतासँ प्रेमा पीसीक घर दिस दौड़ल ।

भास्कर श्मशानसँ घुरल तऽ चारि बाजि गेल छलैक ।

कोठलीमे अबितहि कहलकै– सभटा सामान सरिया दिअ किरण ! गाड़ी नौ बजे रातिमे अछि ।

किरण कनौन सन भऽ उठलैक– नहि मानब ? कमसँ कम आइ रुकि जैतहुँ।

भास्कर ओकरा बुझबैत कहलकै- ''एना उदास नहि होउ । हम जा नहि सकब । अहाँकें बूझल अछि, जायब कतेक जरूरी अछि । युनिभरसिटी कहिआ ने खुजलैक ! बड़ा दिनक तातिलमे आयल रही । बहुत रास क्लास छूटि गेल । फेर अपन इन्तजामो करबाक अछि ।

किरण डेरा उठलैक- ''केहन इन्तजाम ?''

भास्कर कहलकै- ''अपन पढ़बा-लिखबाक इन्तजाम । जल्दीसँ अइ हवेलीसँ अहाँकें लऽ चलबाक इन्तजाम । आजुक घटनाक बाद आब घरक पाइसँ पढ़ब तऽ नहिए भऽ सकत ।''

किरण कहलकै-''किएक ने भऽ सकत ? बाबूजी कोनो नहि देताह ? बातकें बतंगड़ बना रहल छियै अहाँ ।''

भास्कर ओकर बातकें टारैत कहलकै- ''तकर इन्तजाम करहे पड़त । अहाँक लग पन्द्रह सय टाका हैत किरण ? हमरा लग जे छल, मोकदमा लेल देवानजीकें दऽ देलियनि ।''

किरणो आब गम्भीर भऽ उठलि- ''हमरा लग टाका तऽ नहि अछि । गहना सभ अछि, वैह लऽ जाउ ।''

भास्करकें जेना चोट लगलैक किरणक बातक- ''अहाँक गहना लऽ जायब हम ? आ टाका हमरा लऽ जैबाक नहि अछि, ब्रह्माकें देबाक अछि श्राद्ध लेल । कोनो उपाय तऽ करहे पड़त ।''

– ''कोनो चिन्ता करबाक काज नहि छऽ । टाका हम देबह । पटनो जाकऽ कोनो इन्तजाम करबाक काज नहि छऽ । अखन खाली पढ़ह । टाका लेल हम जिबैत छिअऽ अखन । झगड़ा बापसँ भेल छऽ, हमरासँ नहि ।'' –कोठलीमे अकस्मात सासुकें देखि किरण हड़बड़ा गेलि ।''

भास्कर मायक पैर छुबैत बाजल- ''तोहर पैर छुबिकऽ कहैत छियौक माय, बाबूजीक बातक दुख नहि अछि हमरा । ई तऽ सिद्धान्तक लड़ाइ छै । बाबूजीकें एक दिन हमर बात मानऽ पड़तनि, तोँ देखि लिहैं !''

भास्कर मायसँ टाका लऽ फेर ब्रह्माक आँगन दिस गेल । पाँच सय अपना लेल राखि लेलक । एक हजारमे कहुना काज चलि जयतैक ।

भोरे ब्रह्माक आँगनमे पहुँचल छल तऽ लाश ओहिना पड़ल छलैक तुलसीचौरा लग । ब्रह्मा आ ओकर स्त्री सेहो ओतहि बैसल छलैक । टोलक किछु स्त्रीगण-पुरुष सेहो जमा छलैक । भास्करकें देखितहि सभ बाट बना देलकै ।

प्रेमा पीसीक लाश लग बैसि गेल भास्कर । पैर छुबि प्रणाम कयलकनि आ बाजल– आब उठ ब्रह्मा । लऽ चलबाक तैयारी करहुन ।

ब्रह्मा ओकरा दिस तकलकै । आँखिमे धधरा छलैक । भास्कर ओकरा अनठबैत कहलकै– तोँ उठ ने ब्रह्मा !

भास्कर अपने उठिकऽ व्यवस्थामे लागि गेल । बाँस अयलैक, चचरी बनि गेलैक, हाटसँ नव कपड़ो आबि गेलैक । चारि टा कान्हपर उठा लेलकै लाशकें लोक— राम नाम सत्त है । ब्रह्माक स्त्रीक संग आरो स्त्रीगण सभ जोरसँ कानि उठलैक ।

भास्करो कान्ह देने छलैक । ब्रह्मा आगाँ-आगाँ छल । गामक लोकक आँखिमे आश्चर्य आ अविश्वास छलैक ।

आगि देलकै ब्रह्मा । चिता धधकऽ लगलैक । ओहने धधरा ब्रह्माक आँखियोमे छलैक । भास्कर भोरेसँ देखि रहल छलैक । किछु कहऽ चाहैत छलैक ओ, मुदा ब्रह्मा एकदम गुम्म छलैक । एक्को शब्द नै बाजल छलैक भोरसँ ब्रह्मा । श्मशानोमे टोकलकै एक बेर-''साहस कर ब्रह्मा । पीसी तऽ गेलथुन ।''

वैह धधरा फेर लपलपा उठलैक । कोनो उत्तर नहि । भास्करो छोड़ि देलकै । फेर नहि टोकलकै।

श्मशानसँ घुरिकऽ लोह पानि आगि छूबिकऽ अपन अंगना घुरऽ लागल तऽ सुधा टोकलकै– किछु पानि पीबि लितहुँ बौआ ?

भास्कर ओकर विवशताकें देखलकै जे आग्रह कऽ देलाक बाद आँखिमे पसरि गेल छलैक । जल्दीसँ विदा होइत कहलकै– ''हम कने आँगनसँ अबै छी भौजी, तखने पीबि लेब ।''

टाका लेने दोबारा पहुँचल भास्कर तऽ ब्रह्मा अपन दलानपर बैसल छल । दलान की छलै दू हाथ चाकर आठ हाथ नाम कने ऊँच ओसारा, दक्षिणबरिया घरक । बाँसेक खम्हेली, बिनु-लेबल टाट आ चारपर छेहर खढ़ । दलानमे एकटा टूटल सन चौकी छलैक, मुदा ब्रह्मा माटिपर एकटा फाटल सन कम्बलक आसन बना बैसल छल । गरामे उतरी छलैक ।

भास्करकेँ देखियोकऽ किछु बजलैक नहि ब्रह्मा । ओ किछु काल ओइ टुटलाहा चौकीपर बैसि गेल । ब्रह्मा ओकरा दिस तकलकै । आखिमे वैह धधरा लपलपा रहल छलैक । दाढ़ी-मोछसँ झाँपल चेहरा ओ धधकैत आँखि भयावह लागि रहल छलैक । भास्करे टोकलकै— "हमरा आइ राति जयबाक अछि ब्रह्मा । हम गाम नहि रही, जे भेलैक ताहि लेल हमरा अफसोच अछि । तोहूँ सभ बिसरि जो ब्रह्मा ! फेरसँ जिनगी शुरू कर ।"

-"कोन जिनगी ? हवेलीक भनसीयाक जिनगी ?" ब्रह्मा रुच्छतासँ बजलैक । पहिल बेर बाजल छलैक भोरसँ ।

-"नहि, भनसीयेक जिनगी किएक ? जे तोरा पसिन्द होउ । काज कोनो छोट-पैघ नहि होइत छैक । छोट-पैघ मनुक्ख होइत अछि ।"

-"गरिबहाकेँ ठकबा लेल, ओकरा शोषण लेल एहने-एहने उपदेश गढ़ल गेल छैक । हमरा जे करबाक अछि, से हम अबस्स करब ।"

ब्रह्माक स्वरमे भयानक प्रतिहिंसा छलैक । भास्कर शान्त स्वरमे कहलकै -"जे करबाक छौक, से अबस्स कर । मुदा सोचि-विचारिकऽ कर । कोनो प्रतिक्रिया वा क्रोधावेशमे नहि कर । कोनो फायदा नहि हेतौक । एक अनर्थसँ दोसर अनर्थमे ओझरा जयबैं । तोँ तऽ सभदिनसँ शान्त आ बुझनुक छैं । जे करिहें, विचारि कऽ करिहें । हम आब चलै छियौ, आँगनमे कने भौजीक भेट कऽ लैत छियनि ।"

सुधा ओसारेपर बैसल छलैक- एकसरि । लगेमे सरबन सेहो बैसल छलैक । भास्करकेँ देखि दूनू ठाढ़ भऽ गेलैक । पीढ़ी खसबैत कहलकै सुधा- "बैसू ने बौआ ।"

भास्कर टाका ओकरा दिस बढ़बैत कहलकै- "ई राखि लिअऽ भौजी ! कम्मे अछि, मुदा कहुना पीसीक सभटा काज सम्पन्न करा देबनि । ब्रह्मोकेँ दितिऐक, मुदा ओकर गराँमे उतरी छैक आ माथो खराब भेल छैक । अहाँ बुझनुक छी, सभटा सम्हारि लेब । हम रहि नहि सकब, आइए राति पटना जा रहल छी । युनिवर्सिटी खुजि गेल अछि ।"

सुधा हाथ नहि बढ़ौलकै- 'मुदा बौआ... हुनका बिना पुछने...

भास्कर टाका ओकर पैर लग माटिपर रखैत कहलकै- राखि लियऽ भौजी ! कोनो पुछबाक काज नहि । अखन ओकर माथ गरम छैक । फेर भोरसँ कोन

ओकरा पूछि-पूछि काज भेल छैक ! पीसी हमरो पोसने छलीह, हमरो कर्त्तव्य अछि । हम अपन दिससँ ई भार अहाँकेँ देने जाइत छी ।

भास्कर आँगनसँ बहरा गेल । सुधाक उत्तरक प्रतीक्षा नहि कयलकै । किरण सभटा वस्तुजात सरिया देने छलैक । माय थारी ओही ठाम कोठलीएमे लऽ अनलकै । भोजन कऽ भगवतीकेँ गोड़ लागि आयल । मायक पैर छूलक, बाबूजीक चौखटि लग जा गोड़ लागि अयलनि ।

सामान लऽ ठकना स्टेशन विदा भऽ गेलैक । भैया-भौजीकेँ गोड़ लागब रहि गेल छलैक । आयलो छल तऽ भैयाकेँ गोड़ नहि लागि सकल छल । तीन दिन बाद भेंट भेल छलैक । गोड़ लगलकनि तऽ खाली एतबे पुछलथिन- "कखन अयलैं ?"

आइ जयबाकाल फेर हुनकर कोठलीमे गेल । भैया घरमे एकसरे छलाह । ने सुरजा खबास छलनि, ने खबासिनी गुजरी । ओकरे सभक द्वारे भास्कर भैया लग नै गेल ओतेक दिन । किरण कहने रहैक जे गुजरिये हुनकर पलंगपर मलिकाइन जकाँ पड़लि रहैत छनि ।

आइ एकसरे छलथिन भैया । गोड़ लागि भास्कर कहलकनि— जाइ छी भैया !

सचिन हड़बड़ाकऽ उठि बैसल- जाइ छैं ? एतेक जल्दी ?

भास्कर हँसिकऽ कहलकनि- "जल्दी कहाँ भैया....अइ बेर तऽ बहुत दिन रहि गेलहुँ । यूनिभरसिटी खुजि गेल छैक ।"

सचिन हताश जकाँ बैसि गेल— तैयो रहितैं तऽ नीक छल । कने देखितहिक अइ हवेलीकेँ । मायकेँ...अपन भौजीकेँ...।

भास्कर चौंकल । भैयाक मुँहसँ एहन गप्प ! कहलकनि— "अहाँ तऽ छीहे भैया, अहाँ देखबै सभकेँ...

सचिन जोरसँ माथ झकझोरैत कहलकै— "नै, हम नहि देखबै ककरो । नहि देखलियै कहिओ । आब देखियो ने सकबैक, मुदा तोँ बचा सकैत छहिक । रम्भाकेँ बचा सकैत छहिक, अइ हवेलीकेँ बचा सकैत छहिक । नहि जानि किएक हमरा बड़ डर भऽ रहल अछि । लगैत अछि जेना भारी अनिष्ट होमऽवला छैक । तोहर भौजी बड़ दुखी छथुन भास्कर...हुनका देखियहुन...।"

भास्कर अवाक् । भैयाकेँ आइ की भऽ गेल छनि ? सचिन हँसैत बाजल- ''एना आश्चर्य नहि कर भास्कर ! नशामे नहि छी आइ । बहुत दिनपर होशमे छी । तेँ तोरा कहैत छियौक...हमहूँ मनुक्खे छी । जानवरोसँ गेल गुजरल काज कयने छी, तैयो मनुक्खे छी । क्षमा कऽ दिहैं हमरा, बिसरि जैहैं हमर करनीकेँ । अपन भौजीकेँ देखिहैं...ओ निरपराध छथि ।''

– ''एकटा बात पूछू भैया ?" भास्करकेँ आइ भैयाक ई रूप देखि किछु साहस भेलैक ।

– ''पूछ ने !'' सचिन उत्सुकतासँ कहलकै ।

– भौजी एतेक सुन्दर छथि आ अहाँक मोनमे एतेक चिन्ता अछि, तखन एना किएक ? ओ एकसरि दुखी पड़ल रहैत छथि आ अहूँ नशामे लीन रहैत छी । एकरा रोकबाक उपाय नहि छलैक ?

सचिन जेना कोनो सोचमे पड़ि गेलैक । कहलकै- ''प्राय: नहि छलैक भास्कर ! एतऽ आबिकऽ सभकेँ भाग्यवादी बनऽ पड़ैत छैक । हम सभ दिन भोगवादकेँ मानैत रहलहुँ । तोहर भौजी आबि गेलीह तैयो ओ अतिशय भोगक प्रवृत्ति नहि गेल । अपना मोने ओकर औचित्य ताकि लैत रही, तोहर भौजीक निषेधपर ध्यान नहि देलियनि । जहिआ ध्यान गेल, दोसर कोनो बाटे नहि छल । अही बाटपर बढ़ैत चल गेलहुँ, ई जनैत जे ई हमरा गर्त्तमे खसाकऽ रहत । अपने खसलहुँ तकर ओतेक दुख नहि अछि भास्कर ! तोहर भौजियो ओइमे डूबि गेलीह । हमर पाप हुनको लऽ डुबलनि । सभटा दोष हमर अछि, ओ जानि-बूझिकऽ अपनाकेँ मारि रहल छथि, आत्महत्या कऽ रहल छथि । हुनका बचा लिअहुन कहुना ।''

सचिन एक्के साँसमे बाजिकऽ थाकि गेल जेना ! आशा भरल नेत्रसँ अपन छोट भाइ दिस तकैत रहल । भास्करकँ आँखिमे स्नेह, सहानुभूति आ सद्भावना छलैक । बड़ आत्मीय आ आश्वस्त स्वरमे कहलकै- ''अहाँ चिन्ता जुनि करू भैया ! भौजीक भार हमरापर रहल । मुदा अखन से किएक दैत छी हमरा भैया ? अखन तऽ अहाँ छीहे...अहाँ देखबनि भौजीकेँ ।''

सचिन करुण स्वरमे कहलकै-''हमर हैबाक गिनती नहि कर । एतेक दिन की देखलियनि, जे आब देखबनि । तोँ हुनकर भार गछि लेलेँ, तऽ मोन बड़ हल्लुक लगैए । नहि जानि किएक, किछु दिनसँ लगैत अछि जे शीघ्रे अइ सभ चिन्ता, सभ पश्चात्तापसँ मुक्ति भेटि जायत हमरा...''

भास्कर बीचेमे रोकि देलकै- एहन बात नहि बाजू भैया ! अहाँकेँ रहबाक अछि, हमरालोकनिक संग जीबाक अछि । अखन आब जाइ छी हम ।

सचिन जेना हड़बड़ा उठलैक- ''जाइ छैं ? बेस जो....।''

भास्करक डेग जेना जमीनसँ सटि गेलैक– भैया आइ एना किएक कऽ रहल छथिन ? एना हारल-थाकल आ निराश सन भैया एकदम अनचिन्हार छलथिन ओकरा लेल । बड़ भारी मोनसँ कोठलीसँ बाहर आयल । चौखटिक बाहर भौजी ठाढ़ छलथिन । भास्कर पैर छुबैत कहलकनि- ''जाइ छी भौजी !''

रम्भा कनेकाल गुमसुम रहलैक । किछु बुदबुदाकऽ आशीर्वाद देलकै भरिसक । फेर स्पष्ट बजलैक-''अपन भैयाक हालति तऽ देखनेहे जाइ छी ।''

भास्कर कहलकै— हमरा तऽ डर भऽ गेल भौजी ! भैया तऽ एहन नहि छलाह । हरदम स्फूर्ति आ उत्साहसँ भरल रहैत छलाह । आब तऽ चिन्हले ने जाइत छथि ! प्रेमा पीसीक घटनाक पश्चात्ताप छनि, किछु दिनमे ठीक भऽ जयतनि । अहाँ ध्यान रखबनि । ओ हमरा अहाँक ध्यान रखबाक लेल कहैत छलाह, मुदा हमरा तऽ बेशी ध्यान राखऽ जोगर हुनके हालति लगैत अछि ।

रम्भा नहि कहि सकलैक । नहि कहि सकलैक जे कारण प्रेमा पीसी नहि, ओ स्वयम् अछि । ओकरे कारण सचिनक ई हाल भेल छैक । ओ सभटा जनैत अछि, मुदा ककरो कहि नहि सकैत छैक । सचिनो ने कहि सकैत छैक ककरो । भास्कर कोना बूझि सकतैक ई बात ?

भास्कर आँगनसँ बहराय लागल । पाछाँसँ राजा जोरसँ बजलैक- ''पापा ! जल्दी आयब पापा !"

किरण ओकरा डँटलकै— ''पाछूसँ नहि टोकबाक चाही राजा !''

आशा चौधराइन किरणकेँ मना कयलथिन— ''नै डँटियौ कनियाँ, नेन्ना छैक, ओ की जाने गेलैक ई सभ !"

बाबीक सह पाबि राजा हाथ हिलबऽ लगलैक— टाटा पापा...टाटा... ।

आरती टोकलकै— अइ बेर बड़ देरी लागि गेल बेबी-फादर । ए वेरी लेट हनीमून ।

भास्करकेँ हँसी लागि गेलैक— लेट नहि, एन एवरलास्टिंग हनीमून कहियौ आरती ! अपनालोकनिमे सैह होइत अछि- नो क्विक हनीमून...नो लेट हमीमून... ए परमानेंट एवर लास्टिंग हनीमून....। अहाँकेँ चिन्ता करबाक काज नहि अछि आरती ! वेट फार योर टर्न.... ।

आरती कने लजा गेलैक । फेर सहज होइत कहलकै- गामसँ घुरिकऽ बड़ होशियार भऽ जाइत छी अहाँ । अच्छा छोड़ू ई सभ । क्लास सत्ते बड़ छूटि गेल अहाँक । हमर नोट्स लऽ लेब ।

भास्कर ओकरा दिस कृतज्ञतासँ तकैत कहलकै- अहूँ विचित्र कम्पटीटर छी हमर ! अपन नोट्स हमरा दैत छी ।

आरती हँसऽ लगलैक— असली नोट थोड़बे देब ! दू नम्बरी नोट सेहो रखैत छी हम । तेँ ने मंगनी मे एतेक उदार बनि रहल छी ।

भास्कर गम्भीर भऽ गेल- ''अहाँक उदारता लगैत अछि व्यर्थ जायत आरती ! एम.ए.क क्लास पूरा कऽ सकब तकर संभावना बड़ थोड़ बुझाइत अछि । बहुत रास बात छैक, चैनसँ कहब ।''

आरती झट आमंत्रित कऽ देलकै- तऽ चलू ने काल्हि साँझ हमर डेरापर । पप्पोसँ भेट भऽ जायत ।

अइ आकस्मिक निमंत्रणपर कने चकित भऽ गेल भास्कर । ओकर आश्चर्यकेँ लक्ष्य करैत आरती कहलकै- ''चिन्ता नहि करू बेबी-फादर ! हमर पप्पा अहाँकेँ चीन्हैत छथि ।''

भास्करक आश्चर्य बढ़ि गेलैक । कहिओ गेल नै अछि आरतीक डेरा । ने कहिओ भेटघाँट छैक । तखन कोना चिन्है छथिन ? ओकरा तऽ खाली एतबे बूझल छैक जे आरतीक बाप एकटा बड़का अधिकारी छथिन, सीनियर कमिश्नरक रैंकमे ।

ओकरा एना चकित होइत देखि आरती आरो हँसऽ लगलैक- ''चीन्हैत छथि, तकर की मतलब लगा रहल छी अहाँ ? अहाँसँ भेट नहि छनि हुनका, मुदा अपन विलक्षण प्रतिभासम्पन्न पुत्रीक एकमात्र प्रतिद्वन्द्वीसँ ओ नीक जकाँ परिचित छथि आ रुष्टो रहैत छथि जे ओकरे द्वारे हुनकर बेटी सभ बेर पिछड़ि जाइत छनि । कने सम्हरिकऽ चलब- ही हैज ए वेरी बैड टेम्पर ।

भास्करो हँसऽ लागल । ई आरतियो विलक्षण लड़की छैक ! जतबा ओकरा बारेमे जनैत छैक, ततबे ओकरा प्रति स्नेह आ आदर बढ़ल जाइत छैक । केहन अपूर्व सुन्दरी छैक ! भास्कर ध्यानसँ ओकरा देखऽ लगलैक । एतेक दिनसँ भेट छैक, मुदा कहिओ ऐना गौर नहि कयने छलैक । एकटा प्रतिभाशालिनी छात्रा आ सहपाठिनीक रूपमे आतरी आकर्षित कयने छलैक, एकटा उदार हृदया नारीक रूपमे सेहो ओकरा प्रति मुग्ध छल, मुदा आइ धरि गौर नहि कयने छलैक जे आरती एतेक सुन्दरी छैक ! एकटक देखिते रहि गेलैक भास्कर ।

आरती कने लजा उठलैक- एना की देखि रहल छी भास्कर ? पहिने नहि देखने छी कहिओ ?

भास्कर ओहिना ओकर आकृतिपर दृष्टि गाड़ने कहलकै— सत्ते आरती, लगैत अछि जेना आइ पहिल बेर देखि रहल होइ । एतेक दिन तक खाली अहाँक प्रतिभा आ मोनक सौन्दर्य देखने रही, देहक सौन्दर्य नहि । ओहुना हमर ध्यान पहिने मोनक सौन्दर्य दिस जाइ अछि, तनक सौन्दर्य हमरा ओतेक आकर्षित नहि करैत अछि । अहाँ सुन्दर छी से सभ दिन लगैत छल, मुदा आइसँ पहिने ई नहि बूझि सकलहुँ जे अहाँ एतेक सुन्दर छी ।

आरती लाजे लाल भऽ गेलैक— ई की भऽ गेल अहाँकेँ आइ ? कीसभ बजने जा रहल छी ?

भास्कर ओहिना सहजतासँ कहलकै— मिथ्याऽ नहि कहि रहल छी हम । मिथ्या हम बजिते नहि छी ।

आरती सहज हैबाक चेष्टा करैत हँसलैक- ''हमरो मिथ्या बजबाक अभ्यास नहि अछि । अहाँक ई सौन्दर्य-वर्णनक नव प्रवृत्तिसँ अहाँक पत्नीकेँ अवगत करा दैत छिअनि...होशियार रहतीह । आइ अपन पप्पोकेँ कहबनि जे हुनकर बेटीक प्रतिद्वन्द्वी आब सौन्दर्योपासक सेहो बनि गेल छथि, एण्ड ही हैज ए रियली बैड टेम्पर ।

भास्कर नकली गम्भीरतासँ कहलकै— अहाँक धमकीसँ डेरायवला नहि छी हम । जे मोनमे आयल से कहि देलहुँ । अहाँकेँ पसिन्द नहि भेल तऽ घुरा दिअ हमर बात ।

आरती ओहिना हँसैत रहलैक— एहन बकलेल नहि छी हम । एतेक दिनपर अहाँसँ एतेक पैघ कम्प्लीमेण्ट भेटल आ तकरा हम घुरा दिअ ? खाली मोन राखू- अपन देल सर्टिफिकेट वापस नहि माँगऽ लागब फेर ।

एतहि आबिकऽ भस्कर हारि जाइत अछि । आरतीक एहि सहजता आ उदात्त सरलता लग नतमस्तक भऽ जाइत अछि ओ । ठाढ़े-ठाढ़ बड़ीकाल भऽ गेलै । चारूकातसँ लड़का-लड़की सभ निहारऽ लागल छलैक । आरती ओहि ठामसँ विदा भऽ गेलैक— तऽ काल्हि साँझक कार्यक्रम पक्का ।

भास्कर आगू बढ़ल तऽ छौंड़ा सभक कमेण्ट कानमे पड़ऽ लगलै–चानी हई बाबू तोरे... घरमे बीबी आ एतऽ फुलझड़ी...

गुम्मा मुनि तऽ बड़ तेज निकललौक रे ! असलिए माल टपा देलकौ... कम्बल ओढ़ि कऽ घी पीबै हौ- पीले रे बाबू पीले !

भास्कर छड़पिकऽ ओइ लड़का सभक झुण्डमे कूदि गेल । एकटाक कालर पकड़लक आ दोसरक केश– बाज तऽ फेरसँ, की बजैत छलैं ?

तेसर छौंड़ा ओकर दुनू हाथ झटकि देलकै– जो रे बाउ, किताब चाट । ई दादागिरी तोरा बुते नहि हेतौक । दुइए हाथमे जमीन सुंघऽ लगबैं ।

तीनू-चारू छौंड़ा युनिभरसिटिएक छलैक । कोनो आन विषयक । चेहरा चीन्हैत छलैक भास्कर । एतबे धंधे छलैक एकर सभक । भास्कर एक बेर फेर झपटऽ चाहलक । एकटा छौड़ा आँखि गुरेड़िकऽ बजलैक- एकबेर छौड़ि देलियौ, दोसर बेर नहि छोड़बौ । पेटसँ अँतड़ी बहार भऽ जयतौक एक्के हाथमे । चुपचाप अपन रस्ता नाप आ किताबक पन्ना चाट...

भास्कर रुकि गेल । ओ एकसर छल आ ओकर पूरा गुट छलैक । चुपचाप ससरि जायबे सुरक्षित काज हेतैक, से जनितो ओ ओहिना डटल रहल, तामसे देह थरथर काँपि रहल छलैक ।

तखन भास्करक क्लासक लड़का सभ जुटि गेलैक । बदमसबा सभ ओतऽसँ सहटि गेल । भास्करो अनठा देलकै । अनेरो बात बढ़ि जइतैक ।

आरती घूरिकऽ फेर लग अयलैक— ई कोन काज करऽ लागल रही अहाँ ? गुण्डा-बदमासक मुँह नहि लगबाक चाही ।

भास्कर प्रतिवाद कयलकै– एना तऽ ओकर सभक मोन बढ़ि जयतैक । डरक लेल क्यो ओकरा टोकबे नहि करतैक तऽ साहस बढ़ले जयतैक ओकर सभक । अहू कैम्पसमे गुण्डा-गर्दी बढ़बाक इएह कारण छैक- क्यो टोकऽवला नहि छैक । टोकबाक साहसे नहि छैक ककरोमे– ने विद्यार्थीमे, ने प्रिंसिपल-प्रोफेसरमे ।

एकरा सभक घरोमे प्रायः क्यो रोकऽवाला नहि छैक, ककरो टोकबाक साहस नहि छैक । दस-पाँच टा गुण्डा सौंसे केम्पसकेँ आतंकित कयने रहैत अछि आ हजारो लोक डरल-सहमल तमाशा देखैत अछि । तऽ एना हैबे करतैक ।

आरती कने रुष्ट स्वरमे कहलकै- सौंसे संसारक ठेका लेने छियैक अहाँ ? करऽ दिऔक जे करैत छैक । अहाँ नहि चीन्हैत छियैक ओकरा सभकेँ, किछुओ कऽ सकैत अछि ई सभ । नाम मात्रक विद्यार्थी अछि ई सभ । चक्कू-छूरा चलायबे एकर सभक असली काज छैक....

भास्कर तैयो अविचलित रहल । एतबे कहलकै- 'हमरा बुते ई नहि हैत आरती ! नेनपनेसँ बाबी खिस्सा कहैत छल कठरी बाबाजीक । चोरबा सभ रोज ओकरा मारैत छलैक, तैयो ओ सभदिन टोकि देबे करैत छलैक– के थिका...कहाँ जाइ छऽ... हमरा नहि कहै छऽ । जे अन्याय आ अनीतिकेँ टोकारा देतैक तकरा ई खतरा उठाबहे पड़ैत छैक...

आरती एकदम बिगड़ि उठलैक— अहाँ नहि उठायब कोनो खतरा....बस्स हम कहि देलहुँ । फेर एकरा सभसँ लागब तऽ बेजाय बात भऽ जायत ।

ओकर उत्तरक प्रतीक्षा नहि कयलकै आरती । चल जाइत रहलैक । फेर दोबारा गप्पो नहि भेलैक । आरती लेल ओकर स्नेह आ श्रद्धा बढ़िते गेलैक । आइ कने खतरामे पड़ल देखि अस्थिर भऽ गेलैक ।

भास्करोकेँ नहि जानि किएक जिद लागि गेलैक आइ । आरती लेल खराब बात बाजल ओ गुण्डा सभ आ ओ बर्दाश्त कऽ लेलक । आरतीकेँ कोना कहितैक ई बात ?

खाली आरतिएक बात तऽ नहि छैक । युनिभरसिटी कैम्पसक हालति बदलि रहल छैक । गुण्डा तत्वक प्रधानता भऽ रहल छैक । सभ अइ तत्वक संरक्षक छैक । वाइस चांसलर...प्रिंसिपल ककरो पीटि दैत छैक... लाचार पुलिस अबैत छैक....दू चारि टाकेँ पकड़ैत छैक । मुदा लगले मुक्त । शक्तिशाली पोषक सभ फेर ओइ गुण्डा सभकेँ छोड़ा कैम्पसमे छुट्टा छोड़ि दैत छैक । कालेज वा युनिभरसिटी दिससँ कनियो कड़ाइ भेलैक, वा रस्टिकेट कऽ देल गेलैक वा फाइन भेलैक, त झट हड़ताल, बड़का जुलुस । गुण्डा तत्वक पाछाँ-पाछाँ निरीह विद्यार्थी सभ सेहो ठाढ़ भऽ जाइत अछि । दसटा छौंड़ा गेट बन्द कऽ ठाढ़ भऽ जाइत छैक आ ककरो कालेज जयबाक साहसे नहि होइत छैक ।

भास्करक पाँचम वर्ष छैक अइ विश्वविद्यालयमे । ओ देखि रहल छैक जे कोना स्थिति दिनानुदिन खराब भेल जा रहल छैक आ सभ तमाशा देखि रहल अछि ।

पुलिसो तमाशे देखैत छैक आब । क्यो ओकर टोपी लऽ भगैत छैक तऽ क्यो ढेपा फेकि दैत छैक । ओ संचमंच रहैत अछि । किछु करतैक तऽ प्राते भेने पुलिस-जुलुमक खिलाफ जुलुस बहार भऽ जयतैक आ विपक्ष दिससँ पुलिस अधिकारीक निलम्बन आ न्यायिक जाँचक माँग हेतैक । तैयो जखन नहि सहल जाइत छैक, रोड़ा-ढेपा खाइत-खाइत पुलिस बौखला जाइत छैक तऽ अनधुन लाठी चलबैत छैक...दनादन फायर करैत छैक । बदमशबा सभ नुकायल रहैत अछि आ निरपराध लोकक जान जाइत छैक, राहगीर घायल होइत अछि ।

आ तैयो आरती कहैत छैक चुप्पे रहू ! गाममे बाबू साफे भऽ कहलथिन जे तोरा कोन मतलब छऽ अइ न्याय-अन्यायसँ ? चुपचाप पढ़ऽ लिखऽ गऽ ।

भास्कर बाबूजीक बात नहि मानलकनि । आरतियो बिगड़िकऽ चल गेलैक । मुदा बड़का अन्तर छैक आरती आ बाबूजीमे । बाबूजी स्वयम् ओइ अनीति आ अन्यायकेँ बढ़ा रहल छथिन । आरती खाली स्नेहवश ओकरा रोकि रहलि छलैक, ओकरा खतरा दिस नहि जाय देबऽ चाहैत छलैक ।

प्रातो भेने आरती गुमसुमे रहलैक । एक्को बेर गप्पो ने भेलैक । क्लासक बाद भास्करे टोकलकै- बिगड़ले रहब ? अजुका नोत कैंसिल !

आरती हँसऽ लगलैक- ''छी असली ब्राह्मण अहूँ । खयबाक लोभे दिन भरिक तामस बिसरि गेल । भरि दिन मुँह फुलौने रही आ साँझखन नोत मोन पड़ि गेल ! यू आर मोस्ट वेलकम बेबी फादर !

भास्कर नहि कहलकै जे मुँह तऽ आरतिए फुलौने छलैक । साँझ बितलापर आरतीक डेरापर गेल । बड़की टा बंगला, ओतबे पैघ कम्पाउण्ड । नौकर-अर्दली । एकदम साहबी ठाठ । बंगलाक बाहरे बड़का नेमप्लेट छलैक- पी.सी. सिन्हा आइ.ए.एस. । आरती बाहरेमे ठाढ़ि छलैक बरण्डापर । ओकरा भीतर लऽ गेलैक- भी.आइ.पी. गेस्ट आबि गेलाह पप्पा ! योर डौटर्स ओनली हर्डल इन गेटिंग टौप औनर ।

आरतीक पप्पा उठिकऽ स्वागत कयलथिन- आउ आउ, भास्कर ! आरती दुष्ट अछि...कालेजोमे तंग करैत हैत, मुदा मोन एकर बड़ पैघ छैक...

आरती आँखि गुरेड़िकऽ चुप्प कऽ देलकै— बस्स, अबैत देरी अपन बेटीक गुणगान शुरू ! कने जे आयल छथि, तिनको गुणगान करियनु । पहिने बैसऽ कहियनु ।

भास्करकेँ हँसी लागि गेलैक । सिनहा साहब कहलथिन- अच्छा....अच्छा तोँ जो भीतर, चाह-पानिक बन्दोबस्त कर । बैसू भास्कर !

आरती चल गेलैक । भास्कर बैसि गेल । सिन्हा साहब कहलथिन- ''अहाँक बारेमे ततेक बक-बक करैत रहैत अछि आरती जे एकदम चिन्हार सन लगैत छी । हरदम रट लगौने रहत– बेबी फादर । सत्ते अहाँकेँ देखि अनुमान करब मस्किल अछि जे अहाँक विवाह-दान भऽ गेल....आ बापो बनि गेल छी अहाँ ? गाम गेल रही ने अहाँ...सभ नीकेँ छथि ने ?

भास्कर मूड़ी डोला देलकनि । सिनहा साहब जेना कोनो बात मोन पाड़ैत कहलथिन- अहाँ तँ कम्पीटीशनमे बैसल छी ने अइ बेर ! आब तऽ रिजल्टो औतैक । केहन चान्स अछि ?

भास्कर उत्साहसँ कहलकै- नीके अछि । ओना पहिले चान्स अछि, कोनो गाइड वा कोचिंग तऽ छल नहि...

सिन्हा साहब हँसऽ लगलथिन- अबस्से हैत । गाइड आ कोचिंग सभ नहि होइत छैक । अपन मेरिट चाही । हमरा सभकेँ कोन गाइड छल ! घरमे क्यो नौकरियो ने करैत छल । ने पढ़ले-लिखल छल । अपन आत्मसंकल्प हैबाक चाही । आरतीकेँ बड़ कहलियैक मुदा नहि बैसलि । अच्छा, अहाँ कहू तऽ अहाँ किएक बैसलहुँ प्रतियोगितामे...

भास्करकेँ एकाएक कोनो उत्तर नहि फुरलैक । किछु सोचैत कहलकै— ''एकर जवाब मस्किल अछि । वास्तवमे किछु सोचिकऽ नै बैसल रही । अपन पैरपर ठाढ़ हैबा लेल, अपन मेहनतिक कमाइ खयबा लेल कोनो काज करऽ चाहैत छी । सभ नीक विद्यार्थीकेँ प्रतियागितामे बैसैत देखलियैक तऽ हमरो इच्छा भऽ गेल । नोकरीक कोनो विवशता नहि अछि, मुदा पुरखाक हवेलीमे हुनकर अरजल बैसिकऽ खायब पसिन्द नहि अछि । चाहैत छी जे एकटा अपन घर होअय, छोट-छीन, जाहिमे अपन परिवारक संग रुक्खे-सुक्खे खाकऽ जीबि सकी... अपन अन्तरात्माक विरुद्ध किछु ने करऽ पड़य ।

सिनहा साहब किछु चिन्तित भऽ गेलथिन- तखन तऽ ई काज अहाँक लेल

उपयुक्त नहि हैत । एहिठाम सभटा काज अन्तरात्माक आवाजकेँ मारिएकऽ होइत अछि । चारूकातसँ दवाब रहैत छैक- तरह-तरहक । आरती देखने अछि ओ सभ नाटक । ओ बैसहे नहि चाहैत अछि प्रतियोगिता परीक्षामे । ओ टीचर बनत...नर्स बनत...। कहाँ-कहाँक गप्प सुनिकऽ, पढ़िकऽ ओकरा मोनमे विचित्र आदर्शवादी संकल्प सभ बैसि गेल छैक । अपन देशमे अइ सभ वर्गक नैतिकताक की हाल छैक से ओ देखियोकऽ नहि देखैत अछि । समझौता तऽ आइ-काल्हि सभ नौकरीमे करऽ पड़ैत छैक ।

आरती ट्रेमे चाह-बिस्कुट आदि लऽकऽ आबि गेलैक- ''हमर खूब निन्दा भऽ रहल छल पप्पा ! हम सभ सुनैत रही ।''

चाह बना भास्करकेँ दैत कहलकै- खाली चाह पीबू तावत । नो नाश्ता । डिनरमे बेशी देरी नहि लागत । पप्पा, ई कप अहाँ लिअऽ बिना चीनीवला.... बिस्कुट खा सकैत छी भास्कर....

अपनो एकटा प्याली लऽ बैसि गेलैक आ दुष्टतासँ कहलकै— एक टा बात कहू पप्पा ! काल्हि भास्कर कहैत छल कालेजमे जे हम खाली बुद्धिमतिएटा नहि छी...रूपवती सेहो छी । अहाँ तऽ कहैत छी सभदिन जे हमर नाक कने टेढ़ अछि टुनगी लग-

भास्करक हाथक प्याला थरथरा उठलैक, मुँह पाकि गेलैक आ चाह सौंसे कपड़ापर खसि पड़लैक । हड़बड़ाकऽ सिनहा साहब उठऽ लगलथिन । तावत आरती ओकर हाथक प्याली लऽ लेलकै । गिलासमे पानि आनि चाहक दाग धो देलकै कपड़ापरसँ । दोसर कप चाह बनाकऽ दैत कहलकै— ''एना हड़बड़ा किएक गेलहुँ भास्कर, पप्पा बेंत लऽकऽ नहि मारताह....प्रसन्न हेताह । बेटीक तारीफ कयलिअनि अछि अहाँ । कमसँ कम पाँचो सालक बाद तऽ अहाँकेँ सूझल जे हम सुन्दरो छी...अहाँ तऽ मोनक सौन्दर्य देखैत छियैक लोकक...रूप देखबाक फुरसति कहाँ अछि अहाँकेँ ? कोना लिटरेचरमे एतेक नम्बर आबि जाइत अछि से आश्चर्य ! नै पप्पा ?

—ई अहाँक बदमाशी अछि आरती ! घर बजा बेज्जति कऽ रहल छियैक । माफी मँगियौक ।—सिनहा साहब कने दुलारसँ डँटैत कहलथिन ।

आरतीक मुँह कनौन भऽ गेलैक— ''वाइ गाड, बेबी फादर ! अपमान लेल नहि कहने रही । हम तऽ हँसी कयने रही । आइ एम रीयली बेरी सॉरी भास्कर...''

ताबत भास्करो सहज भऽ गेल छल— ''नै, नै, अपमान किएक करब अहाँ ? अहाँकेँ चीन्हैत नहि छी हम ! अहाँक ई हँसी कने बेशी अप्रत्याशित आ खतरनाक छल ।''

आरती बिहुँसि उठलैक— ''हँसी खतरनाक छल कि मोनमे चोर छल ? सुन्दर कहि कम्पलीमेन्ट देलहुँ, तऽ ऐ मे हड़बड़यबाक कोन काज ? हम तऽ काल्हिए कपार पीटि लेने रही जे हाय रे भाग्य ! हिनका आइ सुझलनि अछि जे हम सुन्दरो छी ?''

फेर भास्कर दिस तकैत कहलकै- ''इहो चाह नहि खसा लेब । आब नहि अछि पौटमे । फेरसँ बनाबऽ पड़त ।''

भास्कर हँसऽ चाहलक मुदा सिनहा साहबक उपस्थिति द्वारे आरतीक हँसी-मजाक ओकरा असहज बना रहल छलैक । सिनहा साहब प्राय: बूझि गेलथिन । आरतिओकेँ जेना होश भेलैक । गम्भीर होइत कहलकै— काल्हि कालेजमे किछु कहऽ लागल रही अहाँ ! की बाधा अछि अहाँक आगू पढ़बामे ? कहू ने ? हमरा लोकनिकेँ कहबामे कोनो हर्ज ?

ई दोसरे आरती छलैक । क्षणेमे जेना कायाकल्प भऽ गेल छलैक— शान्त, गम्भीर । भास्कर कहलकै । सभटा कहलकै— हवेलीक गप्प, प्रेमा पीसीक गप्प, बाबूजीक गप्प । ब्रह्माक बारेमे, भौजीक बारेमे । माय आ किरणक बारेमे । भैयोक सभ गप्प कहलकै । बड़ी राति धरि कहैत रहलैक ।

सभटा सुनि सिनहा साहब कहलथिन- ''अहाँ जे कयने छी, तकरा लेल चिन्ताक कोनो काज नहि । मनुष्यताक यैह कसौटी छैक । अपना लेल अहाँ चिन्ता नहि करू । पढ़ू मोन लगाकऽ, हमरा लोकनि छी । बाबूजियोक तामस शान्त हैबे करतनि ।

आरती सभटा सुनैत जेना कोनो ध्यानमे लीन भऽ गेल छलैक ! ओकरा टोकैत सिनहा साहब कहलथिन— आब खेनाइ लगबाउ आरती ! हिनका दूर जयबाक छनि ।

हार्डिंज रोडक ओ क्वार्टर पी.जी. होस्टलसँ ठीके बड़ दूर छलैक । रिक्सा भेटब ओतेक रातिमे मस्किल भऽ जयतैक । भास्कर बाजल— हँ, आब चलबाक चाही । आरती चल गेलैक तऽ सिनहा साहब चिन्तित स्वरमे कहलथिन- ''एकटा चिन्ता हमरो अछि भास्कर ! आरतीक चिन्ता । माय नहि छैक, कोनो भाइयो-बहिन

नहि छैक । खाली हमहींटा छियैक । तेँ हम ओकर सब बात जनैत छियैक । जे बात ओ हमरा नहि कहैत अछि, सेहो हम बूझि लैत छियैक । अहाँ दऽ सभ बात हमरा कहलक....अहाँक प्रतिभा आ चरित्रक बारेमे, अहाँक परिवारक बारेमे । मुदा एकटा बात हमरा नहि कहलक । भरिसक कहिओ नहि सकत । मुदा हम जनैत छियैक ओ बात । अहाँक रूप, अहाँक प्रतिभा, अहाँक स्वभाव आ चरित्र ओकर मोनक कल्पनासँ ततेक मिलैत छैक जे सभटा बात जनितो अहाँ दिस खिचायले चलल जाइत अछि ।

भास्कर सिनहा साहबक मुँह ताकऽ लागल । हुनकर आकृतिपर कोनो रोष वा लांछन नहि छलनि । छलनि एकटा बुझनुक पिताक चिन्ता । ओ कहैत गेलथिन– अहींटा हमर मदति कऽ सकैत छी भास्कर ! अहाँ कहिऔ ओकरा कहिओ जे हमर बात मानि विवाह कऽ लेत । अपन घर हेतैक, बाल-बच्चा हेतैक तऽ सभटा आस्ते-आस्ते बिसरि जयतैक । अहाँक बात ओ अबस्स मानत, हम जनैत छी । अहाँसँ भेट करऽ चाहैत छलहुँ हम । आरती लऽ आयलि तऽ बड़ प्रसन्नता भेल । अहाँकेँ अइमे लज्जित हैबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि । आरतियो लेल अइमे कोनो लाजक बात नहि छैक । मुदा हम कहि देबैक तऽ भरिसक बर्दाशत नहि हेतैक ओकरा । नहि जानि की कऽ बैसत ? अहाँ ओहिना कहबैक प्रसंगवश कहिओ । आवश्यकता होइ तऽ जोर दऽ कहबैक । हम बड आभारी हैब ।''

आरती डाइनिंग हालसँ चिचिया उठलैक- ''औनरेबल गेस्टकेँ लऽ अनियनु पप्पा !''

डाइनिंग टेबुलपर फेर दोसरे आरती छलैक—प्रसन्न, चंचल । जबर्दस्ती परसि-परसि बेशी खुआ देलकै भास्करकेँ । सिनहा साहबकेँ नहि दैनि किछु । अहाँकेँ मना कयने अछि पप्पा ! सुक्खा रोटी आ साग खाउ...टमाटरो अछि...

बिदा हैबाकाल अपने गाड़ी निकालि लेलकै आरती– ''चलू, पहुँचा दैत छी ।''

भास्कर कने संकोचमे पड़ल— हम चल जायब आरती !

सिनहा साहब कहलथिन- रिक्शा नहि भेटत । ई रोड राति कऽ ओहिना सुन्न रहैत छैक । ड्राइवरोकेँ लऽ लिअऽ आरती ।

ड्राइवर पछिला सीटपर बैसि गेलैक । भास्कर सिनहा साहबकेँ नमस्कार कऽ आगू बैसि गेल । गाड़ी स्टार्ट कऽ देलकै आरती । भरि बाट दुनू चुप्पे रहल । आरती एकदम गम्भीर भऽ गेल छलैक । भास्कर सिनहा साहबक बात सोचि रहल

छल । कहलकै— अहाँ हमरा ठकैत रही आरती ! योर फादर हैज ए वेरी सोबर टेम्पर....

होस्टलक गेटपर ओकरा उतारि देलकै । धन्यवाद कहबा लेल गाड़ीक दोसर कात आयल भास्कर । आरती रोकि देलकै— कोनो औपचारिकता नहि । आजुक संध्या मोन रहत । आइ आर पसिन्द भऽ गेलहुँ अहाँ । फेर दुष्टतासँ हँसलैक— नो जोक बेबी फादर ! आइ रियली लाइक यू । यू आर सिम्पली ग्रेट...

आरतीक गाड़ी चल गेलैक । भास्कर होस्टलक भीतर आबि देखलक— बरण्डाक बेंचपर देवानजी बैसल छलथिन ।

आशा चौधराइन पाथर भऽ गेल छलीह ।

चौबीस घण्टासँ अहिना पाथर बनलि बैसल छलीह । ने कोनो गप्प, ने कोनो स्पंदन । लगैत छैक जेना शरीरक सभटा चेष्टा, सभटा स्पंदन क्यो बन्द कऽ देने होइ आ तैयो ओ जीविते एकटक शून्यमे निहारैत बैसल होथि !

खाली शून्ये तऽ बाँचलो छलैक आब । निहारबा लेल किछु नहि छलैक । सभ-किछु जरिकऽ समाप्त भऽ गेल छलैक ।

आ जे बाँचल छलैक तेम्हर ताकल नहि जाइत छलनि आशा चौधराइनसँ । दुनू तीन-चौथाइ जरल लाशकेँ उज्जर चादरिसँ झाँपि देल गेल छैक नीक जकाँ आ पाडल छैक आँगनक तुलसी चौरा लग । लगेमे बैसल छथि आशा चौधराइन आ हुनकर दुनू पुतहु । पोतो अपन मायक कोरामे डेरायल आ त्रस्त बैसल अछि । सदिकाल जारी ओकर बकबक सेहो अखन बन्द छैक । जे भेलैक से ओ बूझि नहि रहल छैक, मुदा जे देखलकै तकर आतंक ओकर मोनमे ओहिना पैसल छैक ।

ओ तऽ अखन नेन्ना छैक, जे देखलकै तकरे आदंक पैसि गेलैक । ककरो बँचेबाक दिस ध्यान नहि गेलैक । सभ अपन-अपन घरपर चढ़िकऽ ओकरा बचैबामे लागि गेल । हवेलीक तीनू कोठा धू-धू कऽ जरि रहल छलैक– पक्कोमे नीक जकाँ आगि पकड़ि लेने छलैक आ खपरैल भनसोघर नहि बाँचल छलैक । खाली चरवाह आ नौकर-चाकर सभ दौड़ि रहल छलैक घैल आ बाल्टी लऽलऽ ।

पछबरिया, उतरबरिया आ दछिनबरिया कोठा आ भनसाघरमे एके संग आगि धयलकै जेना ! भनसाघरसँ रेमनी आ भंडारसँ आशा चौधराइन चिचिआइत बहरेलीह । किरणो राजाक संग भनसेघरक ओसारापर छल । राति अन्हरिया छलैक। किम्हरो किछु सूझि नहि रहल छलैक । रम्भाकेँ दोसर आँगनमे नोत छलनि, ओ अंगनेमे नहि छलीह ।

सचिन छलाह घरमे आ महेन्द्रनाथ चौधरी सेहो । दुनू कोठा जरि रहल छलैक, मुदा ओइमे कोनो प्राणीक स्वर नहि बुझाइत छलैक । आँगनसँ आशा चौधराइन चिचिआय लगलीह- ''बाहर निकल सचिन....घरमे आगि लागल छौक । चिचिआइत-चिचिआइत गराँ बाझि गेलनि । नौकर-चाकर सभ संग मिलि बड़का आ छोटका मालिकके ँ सोर पाड़ऽ लगलनि । कौखन लगैक जेना दुनू कोठाक भीतरोमे क्यो चीत्कार कऽ रहल होइ । मुदा भीतर पैसबाक बाट बन्द छलैक । सभ दरबज्जामे आगि लागल छलैक, सभ खिड़कीमे धधरा छलैक । भरिसक बाहरसँ सभ दरबज्जा बन्द कऽ देने छलैक क्यो । आगि लगले धधकि उठलैक जेना क्यो किरासन वा पेट्रोल ढारिकऽ दियासलाइ खड़रि देने होइ !

रम्भा दौड़लि आँगनमे आयलि । चिचिआइत-चिचिआइत बेहोश होइत सासुकेँ देखलक । निस्तब्ध आ सुन्न भेल राजाकेँ अपन कोरामे समेटने ठाढ़ि किरणकेँ देखलक आ देखलक चारूकात दौड़ैत लोकसभकेँ । ओहो चिचिआइत उतरबरिया कोठा दिस दौड़ल । ठीक आगिमे पैसबासँ पहिने नहि जानिकेँ सभ पकड़ि लेलकै । टँगने आँगनमे लऽ अनलकै । रम्भाकेँ होश नहि छलैक ।

सौंसे गाम आँगनमे जुटि गेलैक । बड़का घैल आ बाल्टीसँ पानि देबऽ लगलैक । माटि आ गर्दा फेकऽ लगलैक । दू घण्टा आगिसँ लड़लाक बाद किछु धधरा कमलैक । मुदा आगि मिझबैत-मिझबैत भोर होबऽ लगलैक । दुनू कोठलीक दरबज्जा-खिड़की जरिकऽ टूटि गेल रहैक, मुदा बाट बनबैत-बनबैत प्रात भऽ गेलैक।

आ तखन निकललैक ओ दुनू लाश । पहिने उतरबरिया घरसँ । ततेक जरल जे किछुओ चिन्हबा जोग नहि बाँचल छलैक । बताहि सन भरि राति कनैत रम्भा एक बेर फेर बेहोश भऽ गेलि ।

तखन दछिनबरिया घरक लाश निकललैक । नाममात्र अवशेष बचल । सभटा जरिकऽ समाप्त । आशा चौधराइन ओकरा देखैत पाथर भऽ गेलीह । राति भरि आँगनमे बैसल-बैसल जरैत घर-आंगनकेँ देखैत सुन्न जकाँ भऽ गेलि रहथि। भोरे दुनू जरल लाशकेँ देखैत एकदम पाथर भऽ गेलीह ।

दुनू लाशकेँ तुलसीचौरा लग राखि कतहुसँ उज्जर चादरि आनि झाँपि देलकै । लगेमे बैसलि छलीह आशा चौधराइन । राति भरि कखनो पलक नहि खसल छनि । चिचिआइत-चिचिआइत जखन बेहोश भऽ गेल रहथि, सभ आंगनेमे छोड़ि देने रहनि । लगमे रहनि दुनू पुतहु आ पोता । होश भेलनि तऽ जरैत घर सभकेँ देखैत सौंसे देह दुःख आ आघातसँ सुन्न भऽ गेलनि, फेर एक्को बेर नहि चिचियलीह ।

रम्भो नहि चिचियलीह फेर । बेहोश देहकेँ टाँगि सभ आँगनमे धऽ देने रहनि । बड़ीकाल बेहोश रहलीह । ककरो देखबाक फुर्सति नहि छलैक । होश भेलनि तऽ सभ समाप्त छलनि । जरल लाशक अवशेषक तकाइ भऽ रहल छलैक ।

लाश भेटलैक तऽ रम्भा एकबेर फेर बेहोश भऽ गेलि । आशा चौधराइन पाथर बनलि बैसल रहलीह ।

किरण तऽ रातिए पाथर भऽ गेल छलि । आगि लागल देखितहिँ कहुना राजाकेँ लऽ आँगनमे चल आयल छलि । तकर बाद की भेलैक, कोना भेलैक, किछुओ होश नहि रहलैक । डेरायल-सहमल राजा कतेको बेर पुछलकै– बाबा घरेमे छथिन गे....कक्को घरेमे रहि गेलथिन गय...निकलथिन कोना गय माँ....कोना निकलथिन कक्का बाबा....

किरण कोनो जबाब नहि देलकै । राजा कानऽ लगलैक— अपनो सभक कोठली जरि गेल माँ ? हम्मर बिछौना...हमर खेलौना...सभ जरि गेल माँ...?

कनैत-कनैत ओ अपस्याँत भऽ गेलैक । किरण ओकरा छातीसँ सटने अवसन्न भेलि बैसल रहलैक । एक्को शब्द ने बहरेलैक मुँहसँ । राजाकेँ चुप्पो ने करा भेलैक । कनैत-कनैत छौंड़ा अपने चुप्प भऽ गेलैक ।

लोक सभ मुदा चुप्प नहि रहलैक । चारूकात गलगुल होमऽ लगलैक— गामक लोकमे...नौकर चाकरमे...

-''ब्रह्मक काज थिक ई । लाउ बान्हिकऽ ओकरा, फेकि दिऔ ओकरो अही आगिमे ।''

-ताहि लेल बैसले अछि ओ ? निपत्ता भऽ गेल गामसँ ।

बद्री चौधरी बेशी तमसायल छलाह । महेन्द्रनाथ चौधरीक भनसाघरसँ सटल जे हुनकर पछबरिया घर छलनि, सेहो सुड्डाह भऽ गेल छलनि । ओ पठौलथिन

आदमी सभकेँ ब्रह्माक अंगना । किछुए कालमे सभ घुरि आयल— कोनो पता नहि छैक । आंगनमे ओकर स्त्री अपन बच्चाकेँ लेने कनैत बैसल छैक ।

क्यो-क्यो देखने छलैक भगैत । महीसक घरमे छल ठकना । ओ देखलकै पछुआर बाटे भगैत ककरो, चीन्हि नै सकलैक । पकड़िओ ने सकलैक । आगि मिझबऽ दौड़ल । ओहो ने भेलैक । माल-जालक घर आ जरनघरा पर्यन्त जरि गेलैक । कहुना माल-जालकेँ खोलि बैला देलकै...प्राण बाँचि गेलैक ।

हवेली गेलैक । हवेलीक दुनू मालिको गेलाह । भास्कर पटनामे छलैक आ आँगनमे दू-दू टा लाश पड़ल छलैक । साँसे आँगनमे गलगुल होमऽ लगलैक ।

पटना जाकऽ लाबहोमे आर दू दिन लागि जयतैक । एतेक काल जरल लाश राखब मस्किल । दुर्गन्ध करऽ लागत ।

मुदा के देतनि आगि ? पोता एतेक छोट छनि, जनउओ ने भेल छैक ।

भातिज लोकनि छथिन ।

आशा चौधराइन किछु ने सुनि रहल छलीह । पाथर भऽ गेलि छलीह । गौआँ सभ आपसमे कनफुसकी कऽ थाकि गेल । बूढ़ा देवानजी अन्तमे आगू बढ़लाह- ''किछु आज्ञा करियौ मलिकाइन ! एना कोना काज चलत ? साहस करियौ । लौकिकताक निर्वाह तऽ करहे पड़त ।''

आशा चौधराइनक देहमे स्पंदन घुरलनि । बजलीह— अहाँ अपने जाउ देवानजी ! भास्करकेँ संगे लेने अयबैक ।

देवानजी चल गेलाह । चौबीस घण्टा बीति गेल छैक । आँगन एकदम सुन्न भऽ गेल छैक । खाली दुनू पुतहु आ पोता लगमे छनि । आशा चौधराइन पाथर बनलि बैसल छथि ।

काल्हि दिनभरि आंगनमे बड़ भीड़ रहनि । नौकर-चाकर सभ आगि मिझबैत रहल । कोइला-छाउरक ढेरी हँटबैत रहल । जरल-अधजरल धरनि-कड़ी हँटबैत रहल । जरल-अधजरल ठाढ़ रहल देबालक ईंटा सभपर पानि ढारैत रहल । आंगनमे तीनटा स्त्री आ एकटा बच्चा ओहिना बैसल रहल । राजाकेँ कने काल जिद कऽ लऽ गेलथिन बद्री चौधरीक पुतहु, खुआ-पिआ देलथिन । कने काल सुताइयो देलथिन अपने घरमे ।

तीनू स्त्री ओहिना आंगनमे रहलीह— निराहार । मुँहमे जल तक नहि ।

पलको ने झपकलनि किनको एको बेर । बीच आंगनमे ओइ झाँपल लाश सभक लग बैसल रहलीह ।

लोक सभ बड़ जोर देलकनि— अपन-अपन आंगन चलऽ कहलकनि । आशा चौधराइन नहि मानलथिन । हारिकऽ सभ कहलकनि जे अपने बंगलामे चलि जाउ, ओ तऽ अपने घर थिक । लाशकेँ अगोरिकऽ पुरुषपात बैसताह ।

आशा चौधराइन टस्ससँ मस्स नहि भेलथिन । एक बेर एतबे कहलथिन- ''जा धरि लाश नहि उठत, हम एतहि रहब ।''

आ चौबीस घण्टा बीति गेलनि । देवानजी नहि घुरल छलथिन । भोरक ट्रेनो चल गेल छलैक । आशा चौधराइन ओहिना पाथर बनलि बैसलि छलीह ।

राति राजाकेँ उठाकऽ अपन घर लऽ गेल छलथिन बद्री चौधरीक पुतहु । अन्हरोखे उठिकऽ ओ फेर मायक लगमे बैसि गेल- एकदम संच-मंच ।

आँगनमे फेर लोक जुटऽ लगलैक । महेन्द्रनाथ चौधरीक भैयारी सभ जोर देबऽ लगलथिन- ''जिद नहि करू भौजी ! जाउ बंगलीवला घरमे । हमरा सभकेँ अपन काज करऽ दिअऽ । काल्हिएसँ सभटा बन्दोबस्त भेल अछि । हमरो सभक तऽ किछु कर्त्तव्य अछि । भाइकेँ हम आगि देबनि आ सचिनकेँ इन्नर दऽ देथिन ।

आशा चौधराइन पाथर बनल बैसलि रहलीह । लोकसभ बिगड़िकऽ बाट धयलक । आंगनमे तीनू स्त्री आ एकटा अबोध नेना आ नौकर-चाकर मात्र रहि गेल । रौद माथपर आबि गेलैक । तखन एकटा टैक्सी गाममे अयलैक । देवानजीक उतरबासँ पहिनहि भास्कर टैक्सीसँ उतरि हवेली दिस दौड़ल । मुदा हवेली कहाँ छलैक ? खाली जरल घरक ढहल देबाल आ कोइला जमा छलैक । आंगनमे एक पतिआनीसँ तीनटा स्त्री बैसल छलैक- ओकर माय, भौजी आ स्त्री । मायक हाथक चूड़ी फोड़ल छलैक आ सीथक सेन्नुर पोछल । भौजीक हाथ सुन्न छलनि आ माथक केश छिड़िआयल, सेन्नुर पोछल । किरणक चेहरा पर छाउर मलल कारी-स्याह भेल । आँखिमे आदंक आ भय । भास्करकेँ देखि जेना भयक भाव किछु तिरोहित भेलैक ।

राजा दौड़लैक ओकरा दिस- पप्पा अयला माँ देखू...माँ, पप्पा अयला ।

भास्कर ओकरा कोरामे लऽ लाश लग बैसि गेल । ओकरा बाबूक बात

मोन पड़लैक- ''ताबत तक गाम नहि अबिहऽ जाबत बजबिअऽ नहि । ओ बिनबजौने आबि गेल छल आ बाबूजी शान्त पड़ल छलथिन । उठिकऽ डँटबो नहि कयलथिन । आब नहि डँटथिन कहिओ ककरो । आ भैया सेहो हुनकर बगलमे पड़ल छलथिन । भास्करकेँ कहने रहथिन– हमरा लगैत अछि जेना जल्दिये अइ सभसँ मुक्ति भेटि जायत ।

सत्ते सभटासँ मुक्ति भेटि गेलनि भैयाकेँ । आब कोनो चिन्ता, कोनो कष्ट नहि रहलनि ।

भास्कर कानऽ लागल । बाप आ भाइक झाँपल लाश लग बैसिकऽ बच्चा जकाँ कानऽ लागल भास्कर । बड़ी काल धरि कनिते रहि गेल ।

उपेन्द्र चौधरी आँगन अयलथिन । भास्करक पीठपर हाथ दैत कहलथिन— आब जल्दी करऽ । तोहर माय जिद पकड़ि लेने छलथुन, ने तऽ कखन ने सभटा क्रिया-कर्म भऽ गेल रहितनि । तेसर दिन भऽ गेलै आइ । माय लोकनिकेँ कहुन जे बंगलीवला कोठलीमे जैथुन । निराहारे छथुन सभ क्यो ।

भास्कर उठिकऽ ठाढ़ भेल । सभ चीजक ब्योंत भऽ गेल छलैक । दूटा चचरीपर दूनू लाशकेँ राखल गेलैक आ हवेलीक सिंहद्वारसँ दूटा लाश संगे बहरेलैक— बाप-बेटाक लाश । -'राम नाम सत्त है ।'

आगि देलकै भास्कर, बेराबेरी दुनू चितामे । बाप आ भाइक चिता । चिता धधकऽ लगलैक । धधकैत चिता लग बैसल भास्करकेँ ब्रह्मा मोन पड़ऽ लगलैक- 'हमरा जे करबाक अछि से हम अबस्स करब ।'' आ ओकर आँखिमे लपलपाइत ओ धधरा । ई की कयलकै ब्रह्मा ? ओकर सभटा विश्वासकेँ चूर-चूर कऽ देलकै । अही लेल ओकरा जमानतिपर छोड़बौने छलैक ? प्रेमा पीसीक लाश जराकऽ गेल छल आ बाप-भाइक चिता लग बैसल अछि । एकर दायित्व ककरापर छैक ? ब्रह्मा एहन भऽ गेलैक ? अपन बाप-भाइक खूनक लेल ओ स्वयम् उत्तरदायी अछि । वैह छोड़ौने छलैक ब्रह्माकेँ । वैह हत्यारा अछि ।

पँचकठिया फेकिकऽ घुरती काल वैह सभ सवाल मोनकेँ मथने छलैक । एकटा अपराध-बोधसँ ग्रस्त छल भास्कर । मायक सोझाँ कोना जायत ? भौजीक मुँह कोना देखि हेतैक ? जीवन भरि ई अपराध-बोध ओकरा एहिना पीड़ा दैत रहतैक ।

–ई कोन नरककुण्डमे धकेलि देलैं ब्रह्मा हमरा ?'

पहिल चिट्ठी आरतीकेँ लिखलकै ।

आरती ! अहाँ होस्टलमे उतारिकऽ गेलहुँ आ कोठलीक बाहर बेंचपर देवानजी बैसल छलाह । साँझेसँ बैसल छलाह । हुनका सङ्ग पहिने जहाज, ट्रेन, बस, अन्तमे टैक्सी कऽ कहुना गाम पहुँचलहुँ । बाबू आ भैयाक अन्तिम संस्कार भऽ गेलनि ।

ओइ दिन बाटमे, श्मशानमे आ ओतऽसँ घुरितो काल ई सवाल मोनकेँ मथैत रहल– एना किएक भेल ? ककर पापसँ भेलैक ई ? एना आगिमे झरकाकऽ ब्रह्मा किएक मारि देलकनि बाबू आ भैयाकेँ ?

ब्रह्मा दऽ कहने रही अहाँकेँ पछिला बेर । ओकरा मोनमे प्रतिहिंसा छलैक । अपन माइक अपमान आ मृत्युक बदला लेबाक भावना छलैक । मुदा एहन जघन्य कृत्य ! हवेलीकेँ जरा देलकै आ दूटा प्राणीकेँ बाहरसँ दरबज्जा बन्द कऽ जिबिते झरका देलकै ।

से के कयलकै ? हमर संगी ब्रह्मा । ओकरा दऽ पूरा नहि कहने रही हम । खाली कहने रही जे नेनपनक संगी अछि । ओकर माय हमर घरमे भानस-भात करैत छलीह । हमरा बड़ मानैत छलीह । मुदा ई नहि कहने रही जे जखन प्रेमा पीसी हमरा खुअबैत रहैत छलीह, ओ चौखटि लग बस्ता लेने ठाढ़ रहैत छल । प्रेमा पीसी हमर आग्रहोपर ओकरा नहि खुअबैत छलथिन । कतेक चीज लऽ जाइत रही हम स्कूल, ब्रह्माकेँ कतबो आग्रह करियैक, नहि खाय । कहय— ''भूखे नहि अछि । भोरे खा लेने रही । फेर घुरिकऽ जयबै अंगना तऽ खयबै मायक संगे । हबेलीसँ लबैत छैक थारी सभ दिन ।''

ओ केहन थारी छलैक आरती से बुझबैक अहाँ ? ओ थारी होइत छलैक प्रेमा पीसीक खयनाइ । ताहिमे तीन गोटे– ब्रह्माक नानी, ब्रह्मा आ ओकर माय । तैयो ब्रह्माकेँ ने कहिओ कनैत देखलियैक, ने तमसाइत देखलियैक । पढ़बामे तेहने विलक्षण छल ! पैघ लोकक धीयापुता रही, तेँ गुरुजी सभ हमरे फस्ट करा दिअय से दोसर बात, मुदा प्रथम स्थानक सही हकदार वैह छल । जेहने स्मरणशक्ति, तेहने प्रत्युत्पन्नमति । तहिया के जनैत छल जे मिडिल पास कयलाक बाद भनसीया हैत

ब्रह्मा ? मुदा ओहूमे सन्तुष्ट छल ओ । अपन गरीबी....अपन अभावमे अपन माय स्त्री बेटा संग सुखसँ रहैत छल ।

फेर ओहू सुखमे आगि लागि गेलैक । पहिने मायक इज्जति गेलैक आ अपने जहल गेल । ओ जहलसँ छूटल, माय दुनियासँ विदा भऽ गेलै ।

आ तकर बाद सभटा गड़बड़ भऽ गेलैक । बूझि नहि पबैत छी जे ओकरा जमानतिपर छोड़ा हमरासँ कोनो अपराध भेल वा नहि । बेर-बेर लगैत अछि जे हम स्वयम् अपन बाप-भाइक हत्यारा छी । हमरा अइ ग्लानि आ अपराध बोधसँ बचाउ आरती ! अहाँ कहू जे हमरासँ कोनो गलती भेल ? ब्रह्माकेँ छोड़ा देब कोनो गलती काज भेल हमरासँ ?

ओना एकटा गलती आइयो भेल हमरासँ । पुलिस आयल छल गाममे । हमर देयादोक एकटा घर जरल छलनि, पुलिसमे लिखा आयल छलाह । ब्रह्मापर शक लिखा आयल छलाह । हमरो लग आयल पुलिस । हम कहलियैक क्यो ने देखलकै किछु । नहि जानि, कोना लगलैक आगि ? ब्रह्मापर कोनो सन्देह नहि अछि हमरा । ओ हमर मित्र अछि । हमर घर किएक जराओत ? केस भेल छलैक मुदा ताहि लेल एहन काज किएक करत ओ ? जमानतिपर तऽ छूटल अछि । ओकरापर शंका बेकार ।

पुलिसकेँ हमरेपर शक होबऽ लगलैक— अहाँ किछु नुकबऽ चाहैत छी। गामक लोक तऽ दोसर बात कहैत अछि । क्यो-क्यो देखबो कयलकै ओकरा पड़ाइत ।

भास्कर दृढ़तासँ कहलकै— धोखा भेलैक ओकरा सभकेँ । क्यो नहि चिन्हलकै ककरो । खाली लगलैक जे किरासनक टीन फेकि क्यो पड़ा रहल अछि। ओइ टिनोकेँ आगिमे फेकि देलकै ।

पुलिस-दरोगा हमरा विचित्र दृष्टियेँ तकैत चल गेल । देयाद हमरा जरैत दृष्टियेँ तकैत रहलाह जेना गीड़ि जयताह ।

आँगन गेलहुँ तऽ माय कहलक— ''ठीक कहलहक । बिना देखने कोना नाम कहि देबैक ककरो ? ककरो ने देखलियैक हमरालोकनि, ककरो पड़ाइतो नहि देखिलियैक । भगवान निसाफ करथिन ।''

मायकेँ भगवानमे बड़ आस्था छैक....ओ हुनकर निसाफक आसरामे शान्त अछि । सभटा दुख पीबि शान्त अछि ।

हमरामे ओतेक आस्था नहि अछि आरती ! हमरा अहाँक विचार चाही । हमरासँ कतहु अन्याय भेल ? अहाँ लिखब तऽ हमर मोन चैन हैत ।

ओना बाबूजीक काजमे अहाँकेँ अबस्स बजबितहुँ । मुदा अखन हमरा लोकनि स्वयम् बेघर छी । पुरखाक हवेली नहि रहल । ओइ घराड़ीपर आब जल्दी-जल्दी फूसक दू टा कोठली ठाढ़ भऽ रहल अछि । एकादशाहसँ पहिने अबस्स ठाढ़ भऽ जायत । अखन एकटा भनसाघर कहुना ठाढ़ भेल अछि— एकचारी । पूजोघर ओहीमे तावत । हमरा लोकनि बंगलीमे छी ।

हवेलीक संग बहुत-किछु जरि गेल । जरि गेल शोषण आ अन्यायक सभटा चिट्ठा जे भरना आ केबालाक कागत-रूपमे बाबूजीक बक्सामे भरल छलनि । सामन्ती व्यवस्थाक सभटा अवशेष... सभटा चिह्न मेटा देलक ई आगि । खेत बाँचल अछि । शुद्ध खेतिहार रहब आब हम । गाममे रहब ।

एम.ए.क पढ़ाइ आब भरिसक नहिए भऽ सकत । मौका लागत तऽ कहिओ प्राइवेटेसँ कऽ लेब । नहियो करब तऽ की फर्क पड़त ? गाममे रहबाक अछि । अपन मेहनतिक कमाइसँ एकटा छोटछीन घर बनाकऽ अपन स्त्री... अपन बेटाक संग रहबाक स्वप्न देखैत रही हम । आइ पुरखाक विशाल डीहपर छोटछीन घर बनि रहल अछि । हुनके अरजल जमीन छनि मुदा ओइमे मेहनति करब हम । सभहक उचित मजूरी देबैक हम । अही ठाम नव ढंगसँ जीबाक चेष्टा करब । अहाँक शुभकामना चही । मनुष्य की चाहैत अछि आ की भऽ जाइत अछि ? भरिसक ओ अपने नहि बूझि पबैत अछि जे ओ की चाहैत अछि । हम आइ.ए.एस. मे जयबाक स्वप्न देखैत रही, नै तऽ प्रोफेसर हैबाक इच्छा छल । पुरखाक हवेली आ अरजल सम्पत्तिसँ दूर पड़ाय चाहैत रही । आब लगैत अछि जेना ओ हमर इच्छा नहि छल, ओ हमर सख-सेहन्ता छल । हम तऽ गामक वासी छी, खेतमे काज कयनाइए हमर असली पेशा अछि, हम सैह करब...

हमर निर्णय केहन अछि आरती ? अहाँ अबस्स लिखू ।

अहाँक बाट निष्कंटक भेल । चैनसँ फर्स्ट करैत रहू अहाँ । ओना हम अहाँक चालाकी पकड़ि लेने रही । खाली हमर अहं केर सन्तुष्टि लेल पिछड़ि जाइत रही अहाँ । फर्स्ट करबाक अहाँक इच्छे नहि छल कहिओ । अहाँक सभटा सहानुभूति हमरा संग छल । एकर आभारी रहब हम सभदिन ।

एकटा बात आर अहाँकेँ कहबाक इच्छा छल । जहिआ अहाँक डेरापर

गेल रही आ अहाँ होस्टल पहुँचाबऽ आयल रही, तहिए कहबाक मोन छल । डरे नहि कहलहुँ जे अहाँ झट कहब "पप्पा एक्के डिनरमे अपन ओकील बना लेलनि अहाँकेँ ।" मुदा सत्ते कहै छी आरती, हमरा बड़ प्रसन्नता हैत । अहाँकेँ सभदिन प्रसन्न देखबाक कामना अछि । अहाँ जिनगीक बाटपर चलबा लेल कोनो संगी चुनि लेबाक अपन पप्पाक आग्रहकेँ यदि मानि लेबनि तऽ सत्ते हमरा बड़ प्रसन्नता देत। बूझब जे एकटा आर मान हमरा देलहुँ अहाँ, हमर इहो बात मानि लेलहुँ ।

देखू, की लिखैत-लिखैत की लिखऽ लगलहुँ । मृत्यु आ आगिक विभीषिकासँ शुरू कयने रही आ विवाह आ जीवनसंगीक गप्प धरि आबि गेलहुँ । ई जिनगी एहिना अछि आरती ! एहिमे सभ-किछु होइत छैक, सभटा संभव छैक । कालि्ह तक जकरा नहि रहलासँ किछुओ हैब संभव नहि लगैत छैक, आइ ओकरो बिना सभ काज सहजेँ चलऽ लगैत छैक । परसुए जराकऽ घुरल छिअनि बाबू आ भैयाकेँ आ बात पुरान सन भेल जाइए । आँगनमे आयल रही तऽ जे माय पाथर बनलि बैसलि छल, से आब काजमे व्यस्त अछि । घर बनयबाक सभ आदेश दऽ रहल छैक, श्राद्धक सभ विध आ लौकिक दानपुण्य आ भोजक इन्तजाममे सेहो लागल अछि । देवानजीक संग विचार-विमर्श कऽ टाका-पैसाक जोगारमे से व्यस्त अछि । हम खाली उत्तरी पहिरने बैसल छी । मायकेँ देखि बेर-बेर इएह सोचैत छी जे स्त्रीगणमे अपनाकेँ अभियोजित करबाक कतेक शक्ति होइत छैक !

भौजी खाली अभियोजित नहि भऽ सकल छथि । लगैत अछि जेना ओ स्वयम् एकटा जीवित लाश होथि । आकृति विवर्ण भऽ गेल छनि । उज्जर साड़ी आ सुन्न सीथवाली अइ भौजी दिस ताकब मस्किल अछि, करेजा फाटऽ लगैत अछि । चिरदुखिया हमर अइ अपूर्व सुन्दरी भौजीक ई वैधव्य-दुखकेँ देखि हमर माय अपन दुख आरो बिसरि गेल अछि । सदिखन हुनके लेल व्यस्त रहैत अछि, एक्को क्षण एकसर नहि छोड़ैत छनि । ओना मायक दृष्टि विपत्तिक अहू समयमे सभ दिस छैक । हमरा कखन फलाहार हैत, कखन दूध पीअब— सभटाक ध्यान रहैत छैक ओकरा । सभदिन बाबिए लग पोसैलहुँ हम । नीक जकाँ मायकेँ चीन्हि नहि सकलियैक । जानि-बूझिकऽ हमरा छोड़ि देने छल ओ हमर प्राण रक्षा लेल । जीबि गेलहुँ तऽ बाबिएक लग रहि गेलहुँ । मायकेँ जेना-जेना आब चीन्हि रहल छियैक, माय ऊँच भेल जाइत अछि । गर्वसँ कहि सकैत छियैक लोककेँ— हम अइ माइक बेटा छी, आशा चौधराइनक बेटा छी हम ।

परसूसँ मोन बड़ भारी छल आरती ! कटिहारीसँ घुरलाक बादेसँ लगैत छल

जेना माथ फाटि जायत ! बहुत रास बात मोनकेँ मथि रहल छल । अहाँकेँ चिट्ठीमे एतेक रात बात लिखि देलहुँ तऽ मोन बड़ हल्लुक लागि रहल अछि । बड़ विचित्र सम्बन्ध अछि हमरो-अहाँक । हमर किछुओ ने भऽकऽ बहुत-किछु छी अहाँ ।

हे बान्धवी, हमर सादर नमस्कार निवेदित अछि ।"

चिट्ठी लिखि लिफाफमे बन्द कयनहि छल कि राजा आबि गेलैक- "ककरा चिट्ठी लिखलियै पप्पा ?"

भास्कर लिफाफ ओकरा हाथमे दैत कहलकै- "तोहर मौसीकेँ । जो, चिट्टी ठकनाकेँ दऽ अबहिक, डाकघरमे खसा औतैक ।"

राजा चल गेलैक । चौखटि लग किरण ठाढ़ छलैक– किनका एतेक टा पोथा लिखल गेल छनि ? हमर बहिन कतऽसँ आबि गेलीह पटनामे ?

स्वरक भंगिमासँ भास्करकेँ आश्चर्य भेलैक— हमर संगी छथि किरण !

किरण झूठ कहलकै- "तऽ पीसी कहितिऐक, मौसी किएक बना देलिऐक ? खूब हँसी-ठट्ठा होइत अछि ?"

भास्कर बिगड़ि उठलैक— "एहन बात नहि बाजी किरण ! जे नहि बुझैत छियैक, ताहिमे अनेरो टांग अड़ा रहल छी ।"

किरण भास्करक तामस देखि आर जिदिया गेलैक- "नै, हम सभ किएक बुझबैक किछु ! हम सभ तऽ बिनपढ़ल-लिखल जाहिल छी । बुझनाहरि सभ तऽ पटनामे बैसलि छथि ।"

भास्कर आरो तमसा उठलैक– "लज्जाक बात अछि किरण ! अहाँक मोनमे एहन छोट विचार ! जाउ, माय लग जाउ ओइ कोठलीमे । कोन समयमे कोन राग अलापऽ लगलहुँ ?"

अपमानित किरण चल गेलैक । आँखिमे नोर छलैक से भास्कर नहि देखलकै । दोसर अवस्था छैक किरणक, सेहो ने बूझल छैक भास्करकेँ । जखनसँ अयलैक, उतरी गराँमे पहिरि बाहर बरण्डापर वा दोसर कोठलीमे कम्बल बिछा बैसल छैक ।

एक कोठलीमे माय भौजी आ किरण छैक राजाक संग । दोसरमे देवानजीक संग भास्कर अछि । जाड़ अखन पड़िए रहल छैक । बाहर सूतब मस्किल छैक ।

कनैत किरणकेँ देखि आशा चौधराइन चौंकलीह– "की भेल कनियाँ ? एना कनैत किएक छी ?"

किरण झट नोर पोछि लेलक— "किछु ने माय ! एहिना हवेली मोन पड़ि गेल छल ।"

आशा चौधराइन बूझि गेलथिन– "भास्कर किछु कहने अछि ?"

किरण कोनो उत्तर नहि देलकै । सासु कहलकै– "अखन ओकर मोन अस्थिर छैक । एतेक भारी काण्ड भेलैक । गराँमे उतरी छैक, खयबा-पीबाक ठेकान नहि छैक । माथ गरमायले रहैत छैक । ओकर तामसपर अखन ध्यान नहि दिऔक । अपन ध्यान राखू, अखन दोसर समय अछि अहाँक ।"

किरणक मोनमे कचोट रहिए गेलैक । एहन कोन बात कहलकै ओ जाहि लेल एना झझकि लेलकै ! कहिओ तऽ नै बिगड़ल छलैक आइ धरि । आइ की भऽ गेलैक ? ककरा लिखल गेलैक एहन मोट पोथा ? अपनोपर तामस भेलैक । किएक कयलकै ओकरापर सन्देह ? आइ धरि कहिओ कोनो बात भेल छैक ? तखन एहन समयमे एहन-ओहन गप्पे किएक ? तामस तऽ उचिते भेलैक ।

राजा घुरि अयलैक । किरण पुछलकै— चिट्ठी दऽ देलहिक ठकनाकेँ ?

राजा उल्लाससँ कहलकै– हँ माँ ! राजाक हाथ पकड़ि किरण फेर ओइ कोठली लग गेल । भास्कर माय-बेटाकेँ देखि सोझ भऽ बैसि रहल ।

– "हमरा नहि बाजऽ चाहैत छल ओहन बात !" किरण कहलकै ।

– "हमरो अनेरो तामस भऽ गेल । मोन ठीक नहि रहैत अछि अखन ।" भास्कर कहलकै ।

सन्ध्या भऽ गेल छलैक । किरणक हालतिपर ध्यान गेलैक भास्करकेँ । ओहो अनोना करैत छलैक ओकरे संग । द्वादशाह दिन तक करतैक । बड़ कमजोर भऽ गेल छैक एतबे दिनमे । भास्कर चिन्तासँ पुछलकै– "एना किएक किरण ! मोन तऽ ठीक रहैत अछि ?"

किरण लजा गेलैक– "ठीके रहैत अछि । तखन पहिल बेर सन नहि ।"

भास्कर पहिने नहि बुझलकै । फेर किरणक लजायल आकृति देखि सभ बूझि गेलैक । प्रसन्न भऽ उठल । फेर उदास भऽ गेल । केहन समयमे समाचार

भेटल छैक । राजाक बेरमे खबरि सुनितहि गौरी चौधराइन नाचऽ लागल रहथिन । हरदम छाया जकाँ किरणक संग रहैत छलथिन । अइ बेर के करतैक ओ सभ ? घर पर्यन्त नहि रहलैक । भास्कर चिन्तामे पड़ि गेल ।

किरणकेँ हँसी लागि गेलैक— अखनेसँ कोन चिन्तामे पड़ि गेलहुँ अहाँ ? अखन बड़ देरी छैक । बस्स बुझू जे अखन शुरुए भेल अछि ।

किरण चौखटिक ओइ पार बैसि गेलैक । राजा ओकर कोरामे आबि गेलैक । भास्करकेँ बड़ नीक लगलैक एना चौखटि लग किरणक बैसब । एना घुरिकऽ आबिकऽ अपन गलती मानब । अपन तामसपर ओकरा अपने लाज भेलैक ।

आ समय ससरि गेलैक ।

मायक प्रस्ताव एकदम अप्रत्याशित छलैक ।

भास्कर एकदम हड़बड़ा गेल– "नहि माय । एना एकसर छोड़िकऽ नहि जो । सभ तऽ गेल । आब तोहूँ छोड़ि देबैँ ?"

काज-तिहार भऽ गेलैक । तीनू दिन भरि गाम खूब खयलकै । भास्कर जिद कऽकऽ दरिद्रनारायणक भोजनक सेहो व्यवस्था रखबौने छल । माय आ देयाद लोकनिकेँ आपत्ति रहनि–"ई नव चलनि नेतासभवला । ई सभ शास्त्र-पुरानक गप्प छैक, ब्राह्मणे भोजन विहित छैक । मुदा भास्करो अड़ल रहल । मनाइयेकऽ छोड़लकनि ।

ओइ दिन नहि मानलकै माय । एकदम अड़ल रहलैक । शान्त, गम्भीर आ अविचलित । भास्करकेँ कहलकै– अखन जोरसँ तोँ राखि लेबह तऽ रहि जायब, मुदा चलि जैतहुँ तऽ ठीक रहैत । काशीवास करब । दुनू सासु-पुतहु । हमरा कोन, वयस भेल, कहुना खेपि लेब । मुदा तोहर भौजी ! हुनको लेल तऽ सोचबाक अछि । काशीमे रहती, बाबा विश्वनाथमे मोन लगौती तऽ समय कटि जयतनि ।

"घरेमे मोन लगौतीह से नहि हेतनि माय ! हमरालोकनि छी, राजा छनि ।

कोनो तकलीफ नहि होबऽ देबनि हम । भैया हुनकर भार हमरे दऽ गेल छलाह ।''
भास्कर किन्नहु जाय देबऽ लेल तैयार नहि छल ।

माय शान्त स्वरमे कहलकै-''से तऽ तोहीं लेबहुन भार । हम कतेक दिन देखबनि ? हमर बाद तऽ फेर तोरेपर औतह ई सभ भार । अखन जाय दैह ।''

भास्कर ब्रह्मास्त्र छोड़लक- ''अखन किरणक ओहन हालति छनि, एनामे ककरा भरोसे छोड़ि देबहुन ?''

माय चिन्तामे पड़लैक– इएह एकटा समस्या अछि । मुदा तकरो इन्तजाम भऽ जयतैक, तोँ चिन्ता जुनि करह ।

बेटा लग आबऽसँ पहिनहि आशा चौधराइन बड़की पुतहुसँ गप्प कयने रहथि । एके कोठलीमे छथि । बाबीवला पछबरिया कोठाक घराड़ीपर मात्र दू कोठलीक फूसक घर बनि गेल छैक । उतरबरिया कोठलीमे भास्कर-किरण आ दक्षिणबरियामे ओ दूनू सासु-पुतहु । एक्के कोठलीमे रहैत, अपन पुतहुक ओहन विवर्ण आ हताश आकृति देखल नहि जाइत छलनि । कहलथिन– ''चलू बड़की कनियाँ ! हमरा संग काशी चलू । ओइठाम बाबा विश्वनाथमे ध्यान लगायब । जेना सभक दिन कटैत छैक, हमरो अहाँक दिन कटिये जायत ।''

रम्भाकेँ जेना विश्वासे नहि भेलैक । माय रहथिन ओकरा संग बनारसमे ? ओकरा संग पूजा करथिन ? ओ अविश्वासक दृष्टिसँ अपन सासुकेँ देखैत रहल ।

आशा चौधराइन बूझि गेलथिन । ओकर पीठ थपथपबैत कहलथिन— बिसरि जाउ सभटा । ओ एकटा दुःस्वप्न छल । ओकर स्मृतिए मेटा दिअऽ । दूटा जे जनैत छलाह से गेलाह । बाँचल छी हम-अहाँ ! गाड़ि दिअऽ ओइ घटनाकेँ अपन मोनेमे । आइसँ हमरो सभकेँ बिसरि गेल ओ घटना । जे जिनगी बाँचल अछि तकरा शुद्ध मनसँ बाबाक पूजामे लगायब ।

–''हमर पूजा स्वीकार हैत माय ?'' अविश्वाससँ रम्भा पुछलकै ।

– अबस्स स्वीकार हैत । एकसँ एक पापीक भगवान उद्धार करैत छथिन । अहाँ तऽ निष्पाप निष्कलंक छी । अहाँक हाथक पूजासँ पवित्र आर ककर पूजा हेतैक ?

– सत्ते कहैत छिअनि माय ! हम किछुओ ने...

रम्भाकेँ नहि कहऽ देलथिन आशा चौधराइन— बिसरि जाउ ओ सभ । फेर कहिओ एकर चर्चा नहि करब । एकटा असर्ध-घिनौन पन्ना छल जिनगीक, जकरा फाड़िकऽ फेकि देलियैक । ओकर प्रसंग फेर कतहु ने आबय कहिओ ।

ओ प्रसंग रम्भाक पछोड़ नहि छोड़ैत छैक कखनो । सुतैत-उठैत सदिखन ओकर आत्मापर भारी पाथर जकाँ पड़ल रहैत छैक । जाबत सचिन जीबैत रहलैक, ओकरो छातीपर सदिखन लादल रहलैक । कतबो चेष्टा कयलकै ओ सभटा बिसरि रम्भाकेँ अपना लेबाक, नहिए भऽ सकलैक । ओ चल गेलैक छातीपर बोझ लेने । जयबा दिन कतेक सहज भऽ उठल रहैक ! दिन भरि घरेमे रहैक । कतहु ने गेलैक, किताब पढ़ैत पड़ल रहलैक । साँझ खन रम्भा टोकलकै- जाउ ने, कने बाहरसँ घूमि-फीरि आउ ।

सचिन नहि गेलैक । ओइ आंगन नोत खाय जाय लगलैक रम्भा तऽ जिद करऽ लगलैक- ''छोड़ू नोंत-फोंत । बैसू ने हमरा लग !''

रम्भा बुझौलकै- ''जाय दिअऽ । लोक की कहत ? जे कहबाक अछि से कहू ने ! हे लिअऽ हम बैसि गेलहुँ, कहू ने की कहबाक अछि ?'' सचिन चुप भऽ गेलैक । की कहबाक छलैक से तऽ ओकरो बूझल नहि छलै ।

रम्भा उठैत कहलकै– तऽ जाउ हम ?

सचिन चुप्पे रहलैक । रम्भा अपने कहलकै– बस्स गेलहुँ आ अयलहुँ । कनियो देरी नहि हैत । आबिकऽ सुनब अहाँक गप्प ?

बड़ देरी भऽ गेलैक । गप्प कहबा लेल क्यो बचबे नहि कयलैक । ओही अंगनामे छल तऽ गर्द मचलैक । दौड़लि आयल । ताबत दुनियाँ उनटि गेल छलैक । बेहोशे पड़लि छलि अंगनामे तऽ क्यो चूड़ी फोड़ि देलकै ।

एहि घर-आँगनमे आब नहि रहल जयतैक । माय ठीके कहैत छथिन । बाबा विश्वनाथक शरणमे चलबाक चाही, वैह उद्धार करताह ।

आशा चौधराइन तैयार छलीह । भास्कर बाट रोकने छलनि । किरण लेल कोनो व्यवस्था करबाक छलनि से जायसँ पूर्व अनायासे भऽ गेलैक ।

सुधा अयलैक ओइ दिन कनैत-कलपैत । बेटा सेहो छलैक संगमे । एतेकटा काज-तिहार भेलैक, कहिओ ने अयलैक, ने अपने, ने बेटे । नोतो खाय ने अयलैक ।

ओहि दिन कर जोड़िकऽ ठाढ़ भऽ गेलैक– ''हम बड़ लज्जित छी अपन स्वामीक करनीपर बौआ ! एतेक कयलियनि अहाँ, तकर बदला एहन देलनि ?''

भास्कर स्नेहसँ कहलकै– ''जाय दिऔ भौजी ओइ गप्पकेँ । नहि जानि के कयलक ई सभ ! बिन देखने ककरापर सन्देह करियौक हम ? इएह हेबाक छलैक ।

सुधा जोरसँ कहलकै– ''हम जनै छी बौआ ! ई आन ककरो काज नहि छैक । वैह कयने छथि ई काण्ड आ हत्या । भगवान निसाफ करथिन हुनकर । हमरा सभकेँ तऽ जिविते मारिकऽ निपत्ता भेल छथि । आब तऽ घुरबो मस्किल छनि । पुलिस पछोड़ धयने हेतनि । अङनोमे आयल छलनि । अहाँ तऽ अइ दुनियाक लोके नै छी बौआ, कोनो देवदूत छी ! एतबा भेलोपर बचा देलियनि । किछु ने कहलियैक पुलिस दरोगाकेँ । मुदा सभ तऽ अहीँ सन लोक नहि अछि बौआ ! पुलिसकेँ कहलकै । आरो कहतैक । पकड़ल जेताह तऽ फाँसी हेतनि । नहि पकड़यताह तऽ रेन-वने पड़ायल फिरताह । बाप अछैत बेटा टूगर जकाँ बिलटि जयतनि, भूखे मरि जयतनि ।''

भास्कर ओकरा सान्त्वना देलकै– '' एना नहि बाजू भौजी ! किछु ने हेतैक ब्रह्माकेँ । हम कोनो केस नहि कयने छियैक । अनका कहलासँ की हेतैक ? झोंकमे किम्हरो पड़ा गेल अछि, अबस्स घुरत । अपन करनीपर पछतायत, घुरत आ प्रायश्चित्त करत । तावत हमरालोकनि छी । सरबन टूगर नहि हैत । आइएसँ रहू एतहि अहाँ । माय-भौजी काशी जाय चाहैत छथि । किरण एकसर पड़ि जयतीह । अहाँ संग रहबनि तऽ बल भेटतनि । अखन मोनो किछु दोसर रंगक छनि ।

सुधाकेँ जेना विश्वासे नहि भेलैक- ''ई की कहैत छी बौआ ! अहाँ अंगनामे हमरा आश्रय भेटत ? एक बेर सहारा देलहुँ तँ घरे सुड्डाह भऽ गेल । एतेक दया नहि देखाउ हमरापर । सहल नै जायत हमरासँ ।''

भास्कर ओकरा बुझबैत कहलकै– कोनो दया नहि भौजी, ककरोपर दया नहि । ई तऽ आपसी स्वार्थक व्यवस्था भेल । अहूँक काज चलत आ हमरो काज चलि जायत । राजा आ सरबन संगे स्कूल जायत, जेना हम आ ब्रह्मा जाइत रही कहियो । की रे सरबन, जयबैं ने आब स्कूल ?

छौंड़बा मूड़ी डोला देलकै । सुधा ओहिना इतस्ततःमे छलि ? एतेक लेल तैयार नहि छल ओ । आँखिमे नोर आबि गेलैक । टघरऽ लगलैक । बहुत दिनसँ कानलि नहि छल । पड़ाइयो गेलैक ब्रह्मा तऽ कानलि नहि छल । एक तरहेँ ओइ दिन लेल तैयारे भऽ गेल छल । जहिआ माय मुइलैक आ ओकरा डाहिकऽ ओ घुरलैक कटिहारीसँ, तहिएसँ जनैत छलि सुधा जे एहन किछु हेतैक आ जल्दी हेतैक । ब्रह्माकेँ रोकबाक कोनो उपाय नहि छलैक । जतबा दिन उतरी पहिरने रहैक, दलानपर संच-मंच बैसल रहलैक, मुदा आँखिमे सदिकाल कोनो धधरा लपलपाइत रहलैक । केश-दाढ़ी-मोंछ कटि गेलैक तऽ मुँह किछु कम्म डेराओन लागऽ लगलैक, मुदा आँखि ओहिना धहधह जरैत ।

काजक बादो, एकसरि नहि छोड़ैक सुधा । भरि-भरि राति लपटल रहैक, नेहोरा करैक, विनती करैक, अपन सप्पत दैक, सरबनक सप्पत दैक । मानि जाइ ब्रह्मा, संग-संग कानहो लगैक, मुदा नोर खसितो आँखिमे धधरा ओहिना लपलपाइत रहैक । सुधा बूझि गेल छलैक जे किछु अबस्स घटतैक– भयावह, अमंगलकारी ।

ओइ राति अट्टहास करैत आयल छलैक- ''फूकि देलियै चौधरीक हवेली सुधा ! झोंकि देलियै ओहीमे दुनू बाप-बेटाकेँ ! भागि नहि सकत । दुनूकेँ पहिने नीक जकाँ बान्हि देलियै घरेमे । मायक बदला लऽ लेलियै । खाली अहाँ लेल चिन्ता रहि गेल । नहि जानि की हैत अहाँ आ सरबनक । हमरा क्षमा कऽ देब सुधा अहाँ । आर कोनो उपाये नहि छल ।

उपाय भास्कर देखा देलकै, तैयो सुधाकेँ संशय छलैक– ''अहाँ मानि गेलहुँ बौआ ! मुदा अहाँक माय, भौजी आ कनियो लोकनि स्वीकार करतीह हमरा एहि घरमे ? घृणासँ लतियाकऽ बाहर नहि कऽ देतीह ?''

आशा चौधराइन अयलथिन । रम्भो अयलैक । किरणो अयलैक । सभ एक्के ठाम जमा भऽ गेलैक । आशा चौधराइन कहलथिन– अहाँ कोनो लाज वा हीनता अनुभव नहि करब सरबनक माय ! अहाँ कोनो पाप वा अपराध नहि कयने छी । जे कयलक अछि, से भोगत । भगवान न्याय करथिन । हमरो लोकनि तऽ भगवानेक शरणमे जा रहल छी । आँगन सुन्न रहत । छोटकी कनियाँ एकसरि रहतीह । असक्क छथि । अहाँ रहबनि तऽ संगतुरियो हेबनि आ काजो-ताजमे मदति हेतनि । चल आउ आइएसँ, कोनो संकोच नहि करू । हमरा लोकनि काल्हि भोरे चल जायब । अहीं लेल थम्हल छी ।

सुधा झट झुकिकऽ पैर छूबि लेलकनि । रम्भाकेँ गोड़ लगलकै– आशीर्वाद देथु ई लोकनि, जे हिनके सभ सन मोन उदार आ पवित्र रहय । कहियो कोनो छोट बात नहि आबय मोनमे ।

आ सरबनक हाथ पकड़ि कनैत आङनसँ चल गेलि !

गाममे दिन बितऽ लगलैक ।

एक तरहे निर्णय लऽ लेने छल भास्कर जे आब आगू नहि पढ़त, गाममे रहत, अपन खेत-पथारमे काज करत ।

झंझट लगले शुरू भऽ गेलैक । माय-भौजी जखन काशी जाय लगलैक, देवानजियो जिद्द धऽ लेलथिन- "हमरो छुट्टी दिअऽ । गामे जाकऽ रहब... धीया-पुता सभ हरदम टोकैत रहैत छथि जे छोड़ू नोकरी ।"

भास्कर रोकि लेलकनि- "अहाँ कोनो नोकरी करै छी देवानजी जे छोड़ब ? अहाँ तऽ गार्जियन छी हमर । हमरा किछु बूझल-सूझल अछि ? सभटा अहीं देखब ।

आशा चौधराइन सेहो रोकि देलथिन- "भास्कर ठीक कहैत अछि देवानजी ! अहाँ किछु दिन रहियौ । सभ क्यो एके बेर चल जयबैक तऽ अबूह लगतैक भास्करकेँ । सभटा समझा-बुझा दिऔ...."

माय-भौजीक संगे नहि जा सकल भास्कर । संगे गेलैक खबास ।

जायमे मुदा देरी भेलैक । देवानजी कहलथिन- "ओना कोना चल जयबै मलिकाइन अहाँ ? सभटा हिसाब-किताब ठीक करऽ पड़तैक । बैंकसँ अहींक नामसँ रुपैया निकलतैक ।"

किछु दिन रुकि गेलीह । हुनकर जाइते आरो नोकर-चाकर सभ बिदा भऽ गेलैक । सभकेँ कहलकै भास्कर— हमरा एतेक नौकर-चाकरक काज नहि अछि, मुदा ई नहि बूझ जे हम काजसँ हटा रहल छिऔक । जकरा इच्छा होउ, जतबा दिन इच्छा होउ, रहि सकैत छैं ।

रहि गेलैक मात्र रेमनी । एकमात्र खबासिनी । सभकेँ जयबाकाल देवानजीसँ बन्दोबस्त करा यथेष्ट टाका देलकै आ हाथ जोड़ि कहलकै— तोँ लोकनि जे हमर परिवारक सेवा कयलैं, तकर प्रतिदान नहि भऽ सकैत छैक, हमरा दिससँ तुच्छ भेंट बूझि लऽ जाइत जो... ।

सभ गेलैक तऽ जरल सुन्न आँगन एकदम खाली भऽ गेलैक । जरलाहा लकड़ीक धरनि आ छाउर-कोइला हँटा देल गेलैक । आधा ढहल देबालकेँ खसाकऽ सभटा ईंटा एक ठाम जमा कऽ देल गेलैक– उतरबारी कोठावला घराड़ीपर । पुबरिया आ दक्षिणबरिया घराड़ी एकदम साफ आ चिक्कन बना देल गेलैक । श्राद्धमे अही दूनू घराड़ी आ बड़का आँगनमे बैसिकऽ ब्राह्मण सभ खयलकै । दक्षिणबरिया घराड़ीक पछबरिया कोनपर एकटा एकचारी खसाकऽ भनसाघरक बन्दोबस्त भेल छैक । अन्न-पानि सभ जरिए गेलैक । भोजक जे सामान अयलैक से बंगलीक दूनू कोठलीमे रहलैक । अखनहु ओतहि छैक सभ चीज ।

ठकना रहि गेलैक । महीस आ गाय दूनू वैह चरबै छैक । पछबरिया घरक पाछाँमे एकचारी खसा टाटसँ घेरि एकटा घर बना देल गेल छैक— मालजाल लेल । सभपर एक-एक जोड़ा बड़द फराक छलैक आ फराक-फराक जिरातियो छलैक । सभकेँ चिन्हा दलथिन देवानजी । सभकेँ चिन्हितो छलैक भास्कर ।

खेत-पथारक उपजा आबऽ लगलैक तऽ एकटा कोठली आर जोड़ऽ पड़लैक, पछबरिये घरमे, उत्तर दिससँ । वैह भड़ार बनि गेलैक । आँगनकेँ ठीक-ठाक कऽ देलकै आ उतरबरिया घराड़ीपर ईंटाक विशाल टालसँ हँटि कऽ पैघ-पैघ बखारी बना देल गेलैक ।

भास्करकेँ सभटा अजीब सन लगैक । फूसक छोट-छीन घरमे रहैत छल, मुदा अन्न-पानिक टाल लागल छलैक । हाथ-पैर हिलेबौक काज नहि पड़ैत छैक । सभटा अपने जुटि जाइत छैक ।

देवानजी मुदा सन्तुष्ट नहि छलथिन । सभटा कागज-पत्तर जरि गेल छलैक– भरनावला सभक कागज, केवालावला कागज । देवानजी केवालावला सभक नकल-कौपी बनबा लेने छलथिन बहुत रास, मुदा भरना आ सूदिक कागज नहि बनल छलनि । ओ चाहैत छलथिन जे सभपर जोर दऽ दोसर कागज पर लिखा लेल जाइ । हुनकर खातामे टीपल छलनि सभटा ।

भास्करकेँ नीक नहि लगलैक ई सभ । कहलकनि– छोड़ू देवानजी, जे जरि गेलैक से जरि गेलैक । सूदिवलासँ मूलसँ बेसी सूदि भेटिए गेल हैत । जे बन्हक छलैक से जरि गेलैक । आब आर कतेक लेबैक ओकरा सभसँ ?

खबरि आगि जकाँ पसरि गेलैक । जकर-जकर भरना छलैक, सभ अपनेसँ अयलैक । कबूल कयलकै आ आशीर्वाद दऽ गेलैक । जयजयकार कऽ

गेलैक । देवानजी लोहछि गेलथिन– एना तऽ सभ चौपट भऽ जायत । लूटि लेत सभटा लोक ।

सैह भेलैक । देयादे सभ लूट शुरू कऽ देलथिन । जनिकर आरिमे जतऽ जमीन छलनि, जोति लेलथिन । देवानजी बड़ जोर देलथिन तऽ भास्कर अनिच्छापूर्वक गेल । उनटे वैह लोकनि उपराग सुना देलथिन– तोहर छऽ तऽ कागज देखाबह । तोहर बाप जबर्दस्ती हथिया लेने छलथुन हमर जमीन । कागज देखि लैह ।

भास्कर घुरि आयल । बेशी घमर्थन करब बेकार लगलैक । देवानजी हताश आ रुष्ट भऽ गेलथिन– ''एना तऽ नहि चलत बाउ ! अपना आँखिए सभटा एना नष्ट होइत नहि देखि सकब हम । हमरा छुट्टी दिअऽ । अपन अधिकारकेँ एना नाजायज दवाबसँ छोड़ि देब, गलत लोकक हाथमे छोड़ि देब कोनो उदारता नहि भेल, ई तऽ कायरता भेल । लोक तऽ जान दैत अछि जमीन लेल । जमीन माय थिक– ओकरा अनकर हाथे छोड़ि देब अपराध छैक ।

बूढ़ देवानजीक भावना भास्कर बुझैत छलनि । किछु नहि कहलकनि । मोनमे भेलैक जे पुछनि जे धरती माय थिक तऽ ओइपर लोकक स्वामित्व कोना भऽ जाइत छैक ? सभ तऽ ओकर सन्तान भेलैक । ओकर स्नेह,....ओकर उपजा सभकेँ भेटऽक चाहिऐक ।

जल्दिए ओकरा बुझबामे आबि गेलैक जे देवानजिए ठीक कहि रहल छथिन । ओकर उदारता आ मानवताकेँ लोक कायरता बूझि लेने छलैक । जन-बनिहार तकमे कनफुसकी होबऽ लगलैक– 'मालिक तऽ एकदम सुधंग हइ ...जकरे जे मोन होइ हइ ठकि लै हइ...

किरणो कहि देलकै ई बात । ओहो सुनने छलैक ककरो मुहेँ । भास्कर अधलाह नहि मानलकै, सुनिकऽ हँसि देलकै । बाबी मोन पड़लैक...कठरी बाबाजीक खिस्सा मोन पड़लैक । सभ कठरी बाबाजीकेँ लतमारा बाबाजी बनौने रहैत छलैक, मुदा चोरकेँ ओकरे द्वारे नग्र छोड़िकऽ पड़ाय पड़लैक ।

राजा आ सरबनकेँ गुरुजी लग लऽ गेलैक । नाम लिखा गुरुजीकेँ कहलकनि– ''हमरे बेरबला गप्प नहि करबैक गुरुजी ! ब्रह्मा बेसी तेज छल हमरासँ, तैयो सभदिन सेकेण्ड रहि जाय । सरबनकेँ देखबै । राजा आ सरबनमे जे बेशी तेज निकलय, तकरे फर्स्ट होबऽ देबैक, खाली बाप-पुरखाक नामपर नहि ।''

गुरुजी हँसलथिन– हम तऽ तोरो बेरमे न्याये कयने छलिअऽ । ब्रह्मा तेज छल, मुदा तोरासँ बेशी नहि ।

भास्कर ठकनाक पाछाँ पड़ि गेलैक— गेनमाकेँ स्कूल पठबहिक ।

ठकना गिड़गिड़ाय लगलैक— इस्कूल जाकऽ की करतैक मालिक ? दू गो लूरि सिखतैक तऽ अपन पेट भरतैक ।

भास्कर ओकरा बुझौलकै— ''कांज कोनो करबामे हर्ज नहि छैक । मुदा ज्ञान आवश्यक छैक, विद्या आवश्यक छैक । गेनमाकेँ पढ़ऽ दहिक । खाली भेट भरि लेलासँ मनुष्य-जन्मक सार्थकता नहि होइत छैक । पेट तऽ माल-जाल, कीड़ा-मकोड़ा सभ भरि लैत अछि ।

ठकना किछु ने बुझलकै ओकर बात । भास्कर जिद धऽ लेलकै— तों चिन्ता नहि कर । जतबा ओ कमाकऽ दैत छौक, ततबा हमहीं दऽ देबौक तोरा । तोरा की दरमाहा भेटैत छौक ?

ठकनाकेँ अजीब सन लगलैक— मालिककेँ दरमाहा नहि बूझल हनि । सवा बीघा खेत भेटल हय ओजहमे, ओकरे उपजा भेल दरमाहा । हवेलीमे दुनू साँझ खेनाइ आ सँझुका पनपिआइ । फाटल-पुरान नूआ-वस्त्र । सुकरातीमे नव कपड़ा...

भास्करकेँ आश्चर्य भेलैक— ''कोनो दरमाहा नहि छौक तोरा ? मात्र सवा बीघा खेतक उपजा ! खेत हमरे नाम ! पहिने ई खेत तोरा बापकेँ भेटल छलौक ओजहमे....''

–''हँ मालिक !'' –ठकना चकित छलैक ।

''आ तोहर बाद गेनमाकेँ भेटतैक वैह जमीन ओजहमे ? पुश्त-पुश्तैन खटैत रहि जयबैं, महींस चरबैत रहि जयबैं मुदा जमीन हमरे सभक रहत । तोँ उपजा खयबैं, एक्को पाइ दरमाहा नहि भेटतौक ।''

ठकना अवाक् । की कहि रहल छथिन मालिक ! कोनो ओकरे संग एना छैक ? सभ दरवारसँ तऽ अहिना भेटैत छैक चरबाहकेँ । मालिक सत्ते सुधंग छथिन । बेशी पढ़ि-लिखिकऽ माथ फिरि गेल छनि ।

भास्कर नहिए मानलकै । गेनमाकेँ स्कूल पठबऽ लगलैक जबर्दस्ती । सिलेट पेंसिल आ किताब कीनि देलकै । ओजहक जमीनक अतिरिक्त पचास टाका मास दरमाहा बान्हि देलकै । देबानजी माथा पीटिकऽ रहि गेलथिन ।

देयादबाद सभ मुदा चुप्प नहि रहलैक । सभ आबिकऽ दवाब देबऽ लगलैक– ई तऽ सभटा नियम-कानून बिगाड़ि रहल छह तोँ । किछुओ

करबासँ पहिने सभसँ विचारि लेबाक चाही । एना तऽ गाममे रहब मस्किल भऽ जयतैक लोकक ।

भास्करकेँ ई आक्षेप सहन नहि भेलैक । कहलकनि– जहिआ हमर जमीन अहाँ लोकनि बिन पुछने जोति लेने रही, तहिआ कहाँ गेल छल ई विचार ? खेतमे हर लऽ जैबासँ पूर्व एक बेर पूछि लितहुँ ! हम अपन चरबाहकेँ कतेक दरमाहा देबै से हमरा लोकसँ पूछऽ पड़त ?

ओहो लोकनि बिगड़ि उठलथिन– अबस्स पूछऽ पड़त । ई सौंसे समाजक प्रश्न छैक ।

भास्कर कने आर तीव्रतासँ कहलकनि– की छैक सामाजिक प्रश्न ? हम पचास टाका मास बेशी दऽ देलियैक से, की अहाँ लोकनि एक युगसँ बिन-दरमाहाक खटबैत आयल छियैक से ?

पित्ती लोकनि नरम भऽ गेलथिन— "देखऽ, ई किताबी बात छैक । व्यवहारिकताक तोरा ज्ञान नहि छऽ । तेँ जन-बनिहार चरवाह-नोकर सभ ठकैत रहैत छऽ । अइ सभमे हमर सभक बात मानह । भैया केहन जाबिर छलाह एहि सभमे । कोनो जन-बनिहारक कल्ला अलगैत छलैक ?

–आबो सैह चाहैत छी अहाँ लोकनि ? —भास्कर व्यंग्यसँ पुछलकै– अहाँ लोकनि जे दयापूर्वक दऽ दियैक, ताहीसँ सन्तुष्ट भऽ जाय सभ ? कहिओ कल्ला नै अलगाबै ?

ओ लोकनि सगर्व कहलथिन— "मजाल छैक जे कल्ला अलगाओत ! तोरे सन-सन लोकक बहसौलापर ओकर सभक मोन बढ़ैत छैक, कल्ला अलगैत छैक ।"

भास्कर उदास जकाँ कहलकनि— से करैत तऽ बाते कोन छलैक ! ओ सभ तऽ आइयो नहि अलगबैत अछि कल्ला । सभटा अहीं लोकनिक कृपापर जीबैत रहैत अछि ।

लोहछिकऽ चल गेलथिन ओसभ– "तऽ तों सिखा दहक कल्ला अलगौनाइ । मुदा कहि दैत छिअऽ, मस्किल भऽ जयतह गाममे रहनाइ । आखिर समाजक बन्हेजो तऽ एकटा चीज छैक !"

भास्करपर हुनका लोकनिक धमकीक कोनो असरि नहि भेलैक । डरो नहि

भेलैक । जे करबाक होनि से करथुन । मुदा ओहो जे करऽ चाहैत छल, ताहूमे अनेक बाधा छलैक । किरण बेर-बेर टोकऽ लगलैक– 'ई की सभ करऽ लगलिऐक अहाँ ? भरि गामक लोक रुष्ट भेल अछि । जनक बोनि दास टाका दैत छिऐक । एतुक्का रेट छलैक तीन टाका रोज ।'

भास्कर ओकरा बुझबैत कहलकै– "अहाँकेँ नहि बूझल अछि किरण ! रेट छलैक अढ़ाइ सेर अन्न । से तीन टाकामे कोन अन्न अढ़ाइ सेर हेतैक ? दसो टाकामे हेतैक– ताहूमे सन्देह अछि ।"

देबानजी बेर-बेर चलि जयबाक धमकी देबऽ लगलथिन । ओकर मायकेँ चिट्ठी लिखलथिन जे सभटा जमीन बेदखल भेल जाइए, सभटा जन-बनिहार बेकहल भेल जा रहल अछि । भास्कर बौआ सभक मोन बढ़ा रहल छथिन । अपने जल्दी घुरि आउ ।

माय नहि घुरलैक । देबानजियोकेँ नहि जाय देलकनि ओ । मुदा किरणक दबाब बढ़ऽ लगलैक । ओ ओकरा पटने जाय लेल, फेरसँ पढ़ऽ-लिखऽ लेल ज़ोर देबऽ लगलैक– ई काज अहाँक बसक नहि अछि ।

भास्कर हँसी कयलकै– "हम कहने रही ने किरण जे गामेपर बेसी रहि जायब तऽ अहीं कहब जे बड़ भेल दुलार-मलार ! आब जाउ, पढ़ू-लिखू गऽ । मुदा अखन तऽ अहाँ कहबो करब तऽ हम नहि जायब । भरि गाम अनेरो विरोधमे प्रचार कऽ रहल अछि । अइसँ डेराकऽ तऽ हम हर्गिज नहि जायब । आ अखन तऽ अहाँकेँ छोड़िकऽ किन्हु ने जा सकब । ने माय अछि, ने बाबी छथि अइ बेर ।

किरण चुप्प भऽ गेलैक । बेर नजदीक आबि रहल छैक । डर ओकरो मनमे छैक । एकटा सुधा छैक, सभ बातक ध्यान रखैत छैक । ओकरे बलपर थोड़े-बहुत निश्चिन्त रहैत अछि ।

भास्करकेँ मुदा चैन नहि छैक । गाममे रहब जेना एकटा पैघ चुनौती छैक ओकरा लेल । एकबेर गेल रहय खतबेटोली नेनपनमे, ठकनाक मायकेँ टाका दऽ आयल रहैक ठकनाक इलाज लेल तऽ बाबूजी बिगड़िकऽ गामेसँ निकालि देने छलथिन । दरभंगाक स्कूलमे पठा देने रहथिन । आइ ओकरा बिगड़ऽवला क्यो नहि छैक । ओ जाइत अछि बेर-बेर ओइ टोलसभपर– खतबेटोली, धनुकटोली, मलहटोली, दुसधटोली, आ चमरटोली दिस । ओकरा सभ लग बैसैत अछि, गप्प करैत अछि, मुदा जेना सन्तोष नहि होइत छैक । अपन अभाव, अपन गरीबीकेँ बेसी लोक अपन

नियति मानि बैसल छैक । भास्करक बात ओ सभ नहि बुझैत छैक । बकर-बकर सुनैत छैक । कतेको गोटे तऽ मुँहेपर कहि दैत छैक- 'अहाँ तऽ मालिक ई सभ कहिकऽ चल जायब आ हमरा औरकेँ ई सभ काम बन्द कऽ देताह, खेत-पथारमे रोपनी-कटनी बन्द कऽ देताह । धीया-पुता भुक्खे मरि जायत ।'

भास्कर घुरि अबैत अछि । लगैत छैक जेना ओ ओकरा सभकेँ नहि बुझा सकतैक । मोनमे प्रश्न उठैत छैक– किएक ने बुझा सकतैक ? अपन हितक गप्प.... ओकर उत्थानक गप्प ओ सभ किएक नहि बुझैत छैक ? किएक ने सुनऽ चाहैत छैक ?

कौखन भास्करकेँ लगैत छैक जे ओकरा सभक मोनमे आगि छैक, मुदा ओकरे सभ घुसपैठिया बुझैत छैक । अपन वर्गक लोक नहि बुझैत छैक । भास्करक पुरखा जमीन्दार छलैक, अखनो गाममे सभसँ बेशी जमीन ओकरे छैक । ओ मजदूरक उचित मजूरी आ बोनिक गप्प करैत छैक... तऽ ओकर चल अयलापर ओ सभ हँसैत छैक– बेसी नहि पढ़ना-लिखना चाही । देखहिक ने ऐ मालिककेँ.... किदन सभ गप्प करै हइ !''

ब्रह्मो ओकरा नहि बुझलकै । जन-बनिहार सेहो फैदा उठा लैत छैक आ ओकरा बकलेल-बताह बुझैत छैक । ओकर बात सुनऽ लेल, ओकर संग देबऽ लेल तैयार नहि छैक । ओकर सहानुभूति आ चिन्ताकेँ एकटा भारी छद्म बुझैत छैक— सर्वहाराकेँ परतारबाक लेल, शोषण करबा लेल नव सामन्ती छद्म । राजा भेष बदलिकऽ आयल छौक....होशियार रह ।

ओकरा बड़ दु:ख होइत छैक । ओ जे करऽ चाहैत अछि तकर बाट चारू कातसँ अवरुद्ध लगैत छैक । संग देबा लेल जेना क्यो तैयार नहि छैक । ने अपने घरमे...ने गाममे । मुदा ओ हारि मानऽ नहि चाहैत अछि । एही लेल ओ पढ़ाइ छोड़ने अछि, केरियरक चिन्ता छोड़ने अछि । एही गाममे एकटा सामन्तक सन्तान जकाँ नहि, एकटा खेतिहार-मजदूर जकाँ रहऽ चाहैत अछि । लोक ओकरा नकली आ पाखण्डी बुझैत छैक तऽ बुझौक । एकदिन सभकेँ ओकर बात मानऽ पड़तैक ।

भास्कर नित्य एहन किछु चेष्टा करैत अछि जे ओकरे सभक सन लागय... शुद्ध एकटा ग्रामीण खेतिहर सन । खेतपर जाइत अछि...जन-बनिहारक संग अपनो लागि जाइत अछि...दिन भरि ओकर सभक संग रहैत अछि, तैयो जेना दूरी रहिए जाइत छैक । ओ सभ ओकरा अपन वर्गक मानऽ लेल तैयारे नहि होइत छैक । ओकरा सभक लेल ओ राजा छैक...पुरना मालिकक बेटा छैक...आर किछु नहि ।

ठकना तऽ कहिए देलकै- ''नै नीम्मन लगै हय मालिक ! अहाँ हमरा सभ जोरे सभठाम जाइ छी, सभ काज करे लगै छी, हँसै है । कोन कमी है अहाँ के ! बैठू घर पर...हमरा आर के बोलू, देवानजी छथि...जिरतिया सभ हय । अपने कैलऽ हरान होइ छी मालिक ! हमरा पचास टा टाका बढ़ा देली, ताहू जरे सभ गारी दैत है हमरा बहु-बेटी लगाकऽ । दस रुपया रोज दै छियै, तैयो जन नै अबै हय...कहै हय तोहर मालिक तऽ पलबरिश नै करथुन हमरा आर के...अपन मालिक जे दै हय, सभ दिन देत तकरे ओइ जौं काम करबै...

भास्कर निराश होबऽ लगैत अछि । लगैत छैक जेना किछुओ संभव नहि छैक । जमींदारी गेलैक, मुदा मालिक छैके आइयो । एकरा सभ लेल मालिक सभ दिन रहतैक– महेन्द्र चौधरी नहि तऽ उपेन्द्र चौधरी...ओहो नहि तऽ क्यो आर...जे एकरा बोनि देतैक, कम्म वा बेशी, सभक बेगार बनि जयतैक ई...एकर मालिक सभ दिन जीतैक । एकरा सभक नवका पीढ़ी सेहो ओहने छैक । हमरे बतारी तऽ अछि ठकना, मुदा कोनो चेतना नहि छैक । आइयो ककरो दयापर जीबि लेबा लेल आ जीबिकऽ प्रसन्न रहबा लेल तैयार अछि । जे नबका छौंड़ा सभमे कने चिनगी छैक, से शहरक बाट धरैत छैक...रिक्शा चलबैत छैक— होटलमे काज करैत छैक— मिलमे काज करैत छैक आ अपन गाममे ओहो कोनो मालिके जकाँ अबैत अछि— चिक्कन पहिरन देखा...बढ़ियाँ खा-पी अपने लोककेँ देखबैत छैक जे हम तोरासँ फराक भऽ गेल छी...हम नै छी तोहर वर्गक लोक ।

भास्कर तऽ सभ दिन अपनाकेँ ओही वर्गक लोक बुझैत रहल अछि । जकरा तकलीफ छै, जे पीड़ित अछि, प्रताड़ित अछि, जकरा अभाव आ समस्या छैक, भास्कर सदिखन अपनाकेँ ओकरे लोक बुझैत आयल अछि...ओही वर्गक लोक बुझैत आयल अछि । नेनपनेसँ ओकरे कल्याण, ओकरे उत्कर्षक बारेमे सोचैत आयल अछि । एकटा अवसर भेटल छैक तऽ ओकरा क्यो स्वीकार नहि कऽ रहल छैक । वैह लोक सभ...ओकरा नकली बहुरुपिया आ बकलेल-बताह बुझैत छैक । भास्करकेँ लगैत छैक जेना पराजय स्वीकार करऽ पड़तैक— अपना लेल कोनो दोसरे बाट ताकऽ पड़तैक ।

बेर-बेर बाबी मोन पड़ैत छैक । कठरी बाबाजीक खिस्सा मोन पड़ैत छैक । कठरी बाबाजी सभ दिन चोरबाक बाटपर बैसि जाइत छलैक— के थिका, कहाँ जाइ छऽ– हमरा नहि कहै छऽ । भास्करकेँ बाटसँ हँटऽ पड़तैक ? बाबीक खिस्सा झूठ भऽ जयतैक ?

आशाक एकटा क्षीण रेखा उगैत छैक । उपेन्द्र चौधरीक आंगनमे सभ काज बन्द कऽ दैत छनि । अपन चरवाहकेँ अनेरो मारलथिन– ओकर बहु-बेटीकेँ गारि पढ़लथिन । भोरे बहिष्कार कऽ देलकनि । ने चरवाह अयलनि...ने पनिभरनी । जन अढ़बऽ गेलाह तऽ क्यो नहि अयलनि । हरबाह बैसि रहलनि । तामसे गरजैत उपेन्द्र चौधरी भास्कर लग अयलाह— देखि लैह अपन करनीक फल ! आइ हमरा संग भेल अछि, काल्हि ककरो आनक संग हेतैक । भरि गामक संग हेतैक । तोहूँ नहि बचबह । उठा लहक आर माथपर..."

भास्कर हुनका किछु जवाब नहि देलकनि मुदा ओकरा प्रसन्नता भेलैक । कतहु तऽ कोनो सुगबुगी छैक । एकदम मुइल नहि छैक सभटा । जान छैक तऽ हेतैक– अबस्से हेतैक...! लोक जगतैक....अपन अधिकार आ मेहनतिक मूल्य बुझतैक ।

मुखियाजी ओकरे बुझबऽ पहुँचि गेलथिन । गामक मुखिया बजरंगी चौधरी । कहऽ लगलथिन– ई जे भेल अछि से नीक नहि भेल । आगू नहि बढ़य तेँ अपने लग आयल छी । एना तऽ ई सभ एकदम बेहाथ भऽ जायत । हमरालोकनि अपने महीस चरायब, अपने धान रोपब-काटब...अपने जल भरब आ घर-आँगन नीपब ?

हुनकर चिन्ता देखि भास्करकेँ मोनेमोन हँसी लागि गेलैक । अपन काज अपने करऽ पड़तनि ताहि लेल एतेक चिन्ता ? ओकरे सभक वोटसँ मुखिया बनैत छथि । गाममे ब्राह्मण वोट बीसे प्रतिशत छनि । बाँकी वैह सभ । मुदा ओकरा कोनो अधिकार दियैबाक बदला, ओकरा लेल सोचबाक बदला मुखियाजी अपना वर्ग... अपना देयाद-वाद लेल सोचि रहल छथि, अपना लेल सोचि रहल छथि ।

ओ कहलकनि— से किएक हेतैक ? ई चिन्ता निरर्थक मुखियाजी ! मजदूर अबस्स भेटतैक–खेतमे काजो करतैक । खाली ओकरा उचित मजूरी भेटैक । ओकरो लोक मनुक्खे बुझैक, माल-जाल जकाँ मारै-पीटै नहि...विवशताक लाभ उठा इज्जति नहि खरीदैक ओकर क्यो । ई तऽ कोनो अधलाह बात नहि सिखबैत छिऐक ओकरा सभकेँ हम ? हम कहाँ किछु सिखा सकलियैक ? हमर बात तऽ ओ सभ सुनहे नहि चाहैत अछि । ओ तऽ हमरा अहींक लोक बुझैत अछि, अहींक वर्गक प्रतिनिधि ।

मुखियाजी उत्साहित भऽ कहलथिन–"सैह तऽ हमहूँ कहैत छी, एकरा सभ लेल लाख करबैक, अहाँक नहि हैत । बेरपर अबस्से धोखा देत । पलटाक तीन पुश्तसँ परिवरिश कयलथिन उपेन्द्र चौधरी आ से हुनकेपर उनटि गेलनि । अपन जाति-भाइ– कहू जे सभ लोककेँ जुटा लेलक । बन्हेज कऽ देलकै । उपकारक बेस बदला देलकनि !''

भास्कर हँसिकऽ कहलकनि– कथीक उपकार ? मजूरीक आधा बोनि देलथिन तकर उपकार ? बेगारीमे पुश्त-पुश्तैनसँ खटबौलथिन तकर उपकार ? काल्हि जे अकारण माल-जाल जकाँ बेंतसँ देह फोड़ि देलथिन– तकर उपकार ? ई उपकार तऽ हम सभ सबदिनसँ करैत आयल छियै मुखियाजी ! कम सँ कम अहाँ तऽ एहन गप्प नहि कहियौक, ओकरो सभक प्रतिनिधि छियैक अहाँ ।

मुखियाजी ओकरा दिस दयासँ देखैत बुझनुक जकाँ हँसलथिन– नेन्ना छी अखन अहाँ । छुच्छ आदर्शवादपर मोहित छी । व्यावहारिक ज्ञान दुइयो पाइक नहि अछि । ओकर सभक प्रतिनिधि छियैक हम ? जहिआ ओकर सभक प्रतिनिधि होमऽ लगतैक, हम हैब मुखिया गामक ? ओकरे क्यो भाइ-भातिज हेतैक । हम तऽ अहाँ सभक प्रतिनिधि छी । अहाँ सन-सन सम्पन्न लोक, जकर ओ आदमी अछि, जन-रैयत अछि । अहाँक माध्यमसँ ओकर भोट हमरा भेटि जाइत अछि । ओकरा सभकेँ बूथपर जाय के दैत छैक ? ओकर मालिक तँ अहाँ छिऐ । अहाँ प्रसन्न तऽ ओकर सभक वोट तऽ हमर अछिए । तेँ कहैत छी, अपने पैरमे कुरहरि नहि मारू । स्थितिकेँ नियंत्रणसँ बाहर जायसँ पहिने सम्हरि जाउ । अइ बेर हम सम्हारि दैत छियनि । हमर लोक ओकरो सभमे अछि । समझा-बुझाकऽ काजपर लगबा दैत छियनि । मुदा आगू फेर नहि होअय एना...से देखब अहाँक हाथमे अछि ।

मुखियाजी चल गेलथिन । भास्करकेँ पुछबाक इच्छा भेलैक जे— हमरा हाथमे अछि की उपेन्द्र चौधरी सन-सन लोकक हाथमे छनि ? वैह सभ जन्म दैत छथिन एहन-एहन घटनाक । हुनका किएक ने बुझबैक छियनि ?

सत्ते सभटा ठीकठाक करबा देलथिन मुखियाजी । भास्करक मोन हल्लुक भेलैक । ओ अनेरो चिन्तित छल । आगि छैक...तरे-तर सुनगि रहल छैक...अबस्से भड़कि उठतैक एक दिन– समय आबि रहल छैक ।

हल्लुक मोनसँ, उत्साहित मोनसँ अंगना दिस बिदा होमऽ चाहैत छल भास्कर । तखने डाकपिउन अयलैक । तार दऽ गेलैक । तार देखि चिन्ता जकाँ भऽ उठलैक । फाड़िकऽ पढ़लक– कांग्रेचुलेसन्स क्वालिफाइड इन रिटन टेस्ट ।

आरतीक चिट्ठी सेहो अयलैक । तारक पाँचम दिन ।

–तार भेटि गेल हैत । अगिला मास बीस तारीखकेँ इन्टरव्यू अछि । होस्टलक पतासँ आयल अहाँक चिट्ठी आ कागत-पत्तर सेहो पठा रहल छी । अहाँ बिगड़ल हैब । अहाँक चिट्ठीक लगले कोनो उत्तर नहि देलहुँ । मासक मास बीति

गेल तैयो कोनो उत्तर देल पार नहि लागल । कोनो आन कारणसँ नहि । अहाँ एकटा बात लिखने रही पत्रमे । ओकर उत्तर देबामे हमरा कोनो लज्जा नहि छल, ने अछि । मुदा अहाँ एकटा अनुरोध कयने रही, पप्पाक सिफारिशपर । जे बात हम अहाँकेँ नहि कहि सकलहुँ, से पप्पा अहाँकेँ कहलनि, बेटीक लाज अपनापर ओढ़ि लेलनि । पप्पाक बड़ दुलारू बेटी छियनि हम । मुदा ई हमर लज्जा नहि छल, ने अछि । ई तऽ हमर मोनक सम्पत्ति छल– कौशलसँ राखल सम्पत्ति । पप्पा एकरा बाँटि देलनि । एकसर हमर मोनमे रहैत आ भरि जन्म हमही एकरा आस्ते-आस्ते भोगितहुँ तऽ बड़ नीक रहैत । पप्पा से नहि होमऽ देलनि । तकर कोनो तामस वा रोष नहि अछि– ने हुनकापर, ने अपनापर । अहूँ तामस नहि कयने हैब से विश्वास अछि । मोनक बातपर अपन जोर नहि रहैत छैक– हमहूँ चेष्टा कऽ हारि गेलहुँ ।

अहाँ जोर दऽ लिखलहुँ । अहाँ अपन मान राखऽ चाहैत छी । अहाँक मान रखबाक लेल हमरा एकटा संगी ताकऽ कहलहुँ अछि । ताकऽमे एतेक मास बीति गेल, चिट्ठियो ने लिखि सकलौं । आइ चिट्ठी लिखि देलहुँ, संगीक तलाश जारी अछि । भेटत तऽ अबस्से अहाँक मान रहि जायत । पप्पा बड़ आशा लऽकऽ अहाँसँ अनुरोध कयने हेताह, हम जनैत छी ।

हमर बाट अहाँ निष्कंटक कऽ देल, तदर्थ धन्यवाद । टौप अबस्से कऽ जायब अइ बेर । पप्पाक कमसँ कम एकटा इच्छापूर्ण हेतनि । ओ सभ क्लासमे टौप कयने छलाह, बेटी कमसँ कम अन्तोमे एकटा टौप पाबि जेतनि । मुदा अहाँ कोनो गलत धारणामे नहि रहब । पढ़बाक मामिलामे कोनो तरफदारी नहि कयने रही हम । सभ दिन इच्छा छल अहाँकेँ हरैबाक । पूर नहि भेल । अइ बेर अबस्से पूर होइत, मुदा डरे पड़ा गेलहुँ अहाँ ।

इन्टरव्यू अबस्स दऽ आयब । ज्वाइन करब वा नहि करब अपन हाथमे छैक । इन्टरव्यू लेल पटने बाटे जायब दिल्ली तऽ भेंट हैबे करत–"

पटने बाटे गेल भास्कर । चिट्ठी भेटिते जोर देबऽ लगलैक किरण–अबस्स दऽ आउ इन्टरव्यू । अहाँकेँ ओतेक इच्छा रहय, अवसर किएक छोड़ब ?

आरतीक चिट्ठी पढ़िकऽ किरणक आँखिमे किछु चमकि उठलैक । स्पष्ट देखलकै भास्कर । कहलकै एतबे–"नहि जानि की सब लिखने छथि अहाँक बुद्धिमती संगी ! एको अक्षर बुझबामे नहि आयल । हमरा लोकनि तऽ मूर्ख छी ।"

मूर्ख नहि छलैक किरण, मुदा आरतीक बेरमे नहि जानि किएक मूर्ख जकाँ

करऽ लगैत छैक । भास्करकेँ तामस होइत छैक । जहिआ आरतीकेँ चिट्ठी लिखने रहैक, तहियो किरणक शंकालु प्रश्नपर भास्करकेँ तामस भेल रहैक । आइयो किरणक आँखिमे शंकालु चमक देखलै भास्कर, तामसो भेलैक, मुदा किछु कहलकै नहि ।

बात मुदा मानि लेलकै । इन्टरव्यू देबऽ गेल । पटने बाटे गेल । भोरे-भोर पहुँचल छल । सोझे सिनहा साहबक बंगलापर गेल छल । देखिकऽ आरती अकचका गेलैक– अहाँ बहुत बदलि गेल छी भास्कर !

ओ हँसिकऽ कहलकै– कारी भऽ गेल छी...हाथ-पैर रुच्छ भऽ गेल अछि, सैह ने ! खेतिहर छी हम आरती...सभ दिन खेतमे काज करैत छी ।

किरण गम्भीर छलैक– से नहि भस्कर– गोर-कारीक बात नहि । रंग जरूर मद्धिम भऽ गेल अछि अहाँक । मुदा हम दोसर परिवर्तनक गप्प कऽ रहल छी । यू आर नो मोर ऐ बेबी फादर– यू हैव मेच्योर्ड ।

भास्कर हँसिकऽ कहलकैक– ठीके तऽ अछि । बाप मुइलापर लोक बालिग भैये जाइत अछि । जा धरि बाप जीबैत रहैत छैक, कतबो वयस भेलापर लोक नाबालिगे रहैत अछि ! हमर बाबूजी स्वर्गीय भऽ गेलाह । हमरो बालिग भऽ गेनाइ जरूरी अछि ।

आरती नहि हँसलैक । ओ भास्करक आँखि देखि रहल छलैक जाहिमे एकटा तीव्र बौद्धिक जिज्ञासा सदिखन झलकैत रहैत छलैक । बालसुलभ जिज्ञासामे क्रमशः बौद्धिकता आबि गेल छलैक, मुदा ओकर सरलता आ सहजता ओहिना कायम छलैक । मुदा किछुए मासमे आँखिक ओइ जिज्ञासामे जेना एकटा बुझनुक सन प्रगाढ़ता आबि गेल छैक !

भास्कर टोकलकै–"एना की देखै छी ?"

आरती निस्संकोच कहलकै– "अहाँकेँ । अहीं जकाँ हमरो आब सौन्दर्य दिस ध्यान जाय लागल अछि, खाली मोनेक सुन्दरता नहि देखैत छिऐक आब ! आइ लगै अछि जे एतेक दिन किएक ने ध्यान गेल जे अहाँ एतेक सुन्दर छी...गाममे रहिकऽ तऽ आर सुन्दर भऽ गेल छी ।"

तावत सिनहा साहब बाहर आबि गेलथिन । आरती पुरने परिचित दुष्टताक संग कहलकै–"अखन जे कहलहुँ से बात अहाँ कहि सकैत छियनि...अहाँ जकाँ हमर हाथसँ प्याली नहि खसत ।" फेर हँसऽ लगलैक–"खसत कोना ? हाथमे तऽ अछिए नहि ।"

सिनहा साहब टोकलथिन–"देखैत देरी शैतानी शुरू । हमरा संगे तऽ तेना शान्त गम्भीर बनल रहत जेना हमर नानी होअय ! पहिने भीतर तऽ आबऽ दहिक आरती...!"

–"सौरी पप्पा ! भीतर आउ भास्कर !"

लग पहुँचि गोड़ लगलकनि सिनहा साहबकेँ । स्नेहसँ पीठ थपथपा देलथिन ओ–"वेल डन भास्कर ! कांग्रेचुलेसन्स ।" अहाँ इन्टरभ्यूमे अवश्य सफल हैब ।

सभ क्यो भीतर ड्राइंग रूममे आबि गेलाह ।

सिनहा साहब कहलथिन–'ई नीक काज कयलहुँ भास्कर ! हमरा तऽ डर छल जे कही इन्टरव्यू छोड़ि ने दी अहाँ । रिजल्ट भेटितहि आरतीकेँ कहलिऐक लिखि दहिक भास्करकेँ, इन्टरव्यू अबस्स देथि ।

भास्कर असमंजसमे छल जेना ! कहलकनि–किछुओ निर्णय नहि कयने छी अखन । गाममे रहऽ चाहैत छी, मुदा लोक नहि चाहैत अछि जे हम रही । जकरा लेल रहऽ चाहैत छी, ओहो ने चाहैत अछि । तैयो लगैत अछि जे हमर आवश्यकता छैक ओतऽ...हमरा गाममे रहबाक चाही ।

सिनहा साहब बुझबैत कहलथिन–"नीक लोकक आवश्यकता कतऽ नहि छैक ? प्रशासनमे नहि छैक ? आइ प्रशासन ततेक भ्रष्ट भऽ गेल अछि, जे नीक लोकक ओहूमे टिकब मस्किल छैक । तैयो लोक टिकल अछि । जे समझौता कऽ लेने अछि सेहो आ जे नहि कयने अछि सेहो । नीक लोक टिकतैक नहि, औतैक नहि, तऽ प्रशासनक की हाल हेतैक ? योग्य प्रशासकक संग, ईमानदार आ कर्त्तव्यनिष्ठ प्रशासकक आवश्यकता छैक । एकसँ एक योग्य प्रशासक अबैत छैक, मुदा परिस्थिति, सरकारी दलक दवाब आ राजनीति ओकरा भ्रष्ट कऽ दैत छैक । जकरा भ्रष्ट नहि कऽ पबैत छैक, तकरा टिकऽ नहि दैत छैक । ई समस्या सभ ठाम... सभ काजमे लागू छैक भास्कर ! अहाँ अपन संघर्ष, अपन लड़ाइ कतहु जारी राखि सकैत छी । जरूरी नहि छैक जे गामेसँ शुरू कयल जाय । जे जतऽ अछि, ततहिसँ ई लड़ाइ शुरू करय । तखने कल्याण संभव छैक । कोना-कानी निर्बल स्वर उठैत रहतैक तऽ एहिना दबैत रहतैक । भ्रष्टाचार आ अनीति-अनाचारक दल काफी मजबूत छैक । ओकरासँ लोहा लेब एतेक आसान नहि छैक आब । एक भास्कर नहि, बहुत रास भास्करकेँ जन्म लेबय पड़तैक, सभ स्तरपर संघर्ष जारी करऽ पड़तैक ।

भास्कर अवाक् सुनैत रहि गेल । सिनहा साहबक नव रूप देखि रहल छल ओ । सिनहा साहब जेना कतहु भसिया गेलथिन–"हमहूँ बहुत आदर्श, बहुत स्वप्न लऽ आयल रही भास्कर ! सभक नीक ...सभक उत्कर्ष चाहैत रही । गरीबी देखल छल...अनीति-अन्यायक स्वयम् शिकार भऽ चुकल रही । अपन मेहनतिक बलपर जिनगीमे किछु हासिल कयने रही । मुदा आब लगैत अछि किछुओ हासिल नहि भेल । सभटा अनीति-अनाचारक हिस्सा बनिकऽ रहि गेल छी...ओही तंत्रक एकटा स्तंभ बनल छी । तमशगीरो तऽ ओतबे उत्तरदायी होइत अछि कोनो भ्रष्टाचारक जतबा भ्रष्टाचार करऽवला । हमरालोकनि वैह तमशगीर छी । स्वयम् नहि करै छी किछु, मुदा जे होइ छैक तकरा बैसल देखैत छी । हम तेँ कहने रही जे अहाँकेँ अहूमे सफल भेलासँ दिक्कति हैत । आइ लगैत अछि अर्थहीन छल हमर ओ बात । दिक्कति कतऽ नहि छैक ? अहाँ अही ठामसँ अपन यात्रा प्रारम्भ करू... शुभास्ते सन्तु पन्थानः ...।

भास्कर गोड़ लागिकऽ ओही राति बिदा भेल छल– घरमे श्रेष्ठ क्यो नहि रहलाह– बाप-भाइ दूनू संगे जरि मरलाह । माय काशीमे बैसल अछि– संन्यासिनी भऽ गेल । अपने श्रेष्ठ छी...सत्पुरुष छी...अपने आशीर्वाद दिअ हमरा जे सही बाट चुनि सकी आ सभदिन ओइ बाटपर चलबाक साहस बनल रहय ।

आरती छोड़ऽ आयल रहैक ट्रेनमे । प्लेटफार्मपर गुमसुम ठाढ़ि रहलैक । ओ सीटपर बैसियो गेल, हरियर बत्ती भऽ गेलैक, तैयो ओकर खिड़की लग ठाढ़ि रहलैक । भास्करे कहलकै– किछु कहब नहि आरती ?

आरती कहलकै– कहबा लेल की रहि गेल अछि आब ?

गाड़ी खुजलैक तऽ हाथ हिलबैत आरतीक आँखिमे नोर छलैक । भास्कर नहि देखि सकलैक ।

गामक स्टेशन एकदम सुन्न छलैक । पहलेजेघाटमे सूति रहल छल । दरभंगासँ गाड़ी खुजलैक तऽ निन्न टूटल रहैक । बाट भरि मुर्दा जकाँ सूतल रहल । पटने बाटे घुरल छल । साँझखन पहुँचल रहय पटना । तीन घंटा समय

छलैक । आरतीसँ भेंट कऽ अयलैक । सिनहा साहब नहि छलथिन । कतहु दौरापर गेल छलथिन ।

आरती इन्टरव्यूक गप्प खोदि-खोदि कऽ पुछैत रहलैक । भास्कर जानि-बूझि कऽ अनठायल-पनठायल उत्तर दैत रहलैक जे खूब बढ़ियाँ नहि भेल । बहुत रास जवाब नहि देलियैक ।

आरती कनिओ हताश नहि भेलैक-"सभ प्रश्नक जबाव के दैत छैक ? अहाँकेँ अबस्से हैत ।"

भास्करक अपनो मोनमे आशा छलैक । इन्टरव्यू नीक भेल छलैक । आयोगक सभ सदस्यक आकृति संतुष्ट सन लगलैक । ओ अपन उत्तरसँ पूर्ण सन्तुष्ट छल । यदि चुनि लेल जयतैक तऽ ओकरा ओतेक आश्चर्य नहि हेतैक ।

आश्चर्य ओकरा आरतीपर भऽ रहल छलैक । अइ बेर एक्को बेर बेबी फादर नहि कहि रहल छलैक । हरदम गुमसुम आ उदास ।

भास्कर टोकलकै-'हमरासँ कोनो अपराध भेल आरती ?'

आरती आश्चर्यसँ मुँह देखऽ लगलैक । भास्कर कहलकै-'दुइए-तीन घंटा लेल छी आयल । ने एक्को बेर बेबी फादर कहलहुँ, ने एक्को बेर हँसलहुँ । अहाँ तऽ एकदम अनचिन्हार सन लगैत छी ।'

आरती हँसबाक चेष्टा करैत कहलकै- अनचिन्हार तऽ भैये जायब भास्कर, दुइए-तीन घण्टा लेल आयल छी अहाँ । आइ जायब तऽ फेर नहि जानि कहिआ भेंट हैत । चाहे हाकिम बनब...कहाँ-कहाँ पोस्टिंग हैत, नै तऽ गामपर अपन खेती देखब । आरती तऽ दुनू स्थितिमे अनचिन्हार भैये जयतीह ।

भास्कर दृढ़तापूर्वक कहलकै- किन्हु ने आरती ! अनचिन्हार अहाँ भैये ने सकैत छी । अहाँ तऽ सभ दिन स्मरण रहब- नितान्त आत्मीय आ अप्पन रहब ।

आरतीक आँखिमे कृतज्ञता छलैक आ भास्करक आँखिमे तरलता । नहि जानि किएक आरतीक अनचिन्हार भऽ जयबाक गप्प ओकरा भीतर तक मथि देने छलैक आ बहुत रास नोर बहरेबा लेल जबर्दस्ती कऽ रहल छलैक । ओकरा सभकेँ सप्रयास भीतरेमे नुकबैत कहलकै भास्कर-"हम एम.ए. अबस्स करब आरती ! परीक्षाक बाद अपन नोट्स पठबा देब । एहि युनिभरसिटीमे तऽ नहि, आन ठामसँ प्राइवेट दऽ देबै-एम.ए. कहुना पास कैये जायब । एकटा पुच्छड़ लागि जायत ।"

भास्करक हँसीमे आरती संग नहि देलकै । ओकर आँखिक तरलता भरिसक देखि लेने छलैक आरती । ओकर आँखिक कृतज्ञ-भाव घनीभूत भऽ गेलैक ।

ओकरा चुप्प देखि भास्कर टोकलकै-"कोन सोचमे पड़ि गेलहुँ ! आब हमरासँ कोन डर ? जहिआ छल, तहिओ अपन नोट हमरा दऽ दैत छलहुँ । एक्कोटा लेक्चर छुटए नहि दैत छलहुँ । आब तऽ उदारतापूर्वक दान दिअ । कोनो खतरा नहि अछि हमरासँ ।"

आरती हँसलैक पहिल बेर...। एतेक कालमे पहिल बेर । समय कम छैक । भास्करकेँ जयबाक छैक । आरती कहलकै-"मँगनीमे मान दऽ रहल छी अहाँ । अहाँकेँ हमर नोटक काज पड़त ? अहाँ तऽ आइयो, अही युनिभर्सिटीसँ अही बैचमे टौप कऽ सकैत छी । ई बात हमरे नहि, युनिभरसिटीक सभ टीचर आ पढ़ऽवला विद्यार्थीकेँ बूझल छैक ।"

भास्करकेँ चुप्प देखि फेर हँसैत कहलकै- चिन्ता नहि करू । नोट्स अबस्स भेटि जायत ।

बिदा करबाकाल हँसबाक ई चेष्टा जारी रखने छलैक । जेटीपर ठाढ़ भास्करक आँखिमे नोरे-नोर छलैक ।

गामक स्टेशनक प्लैटफार्मपर ठाढ़ भास्करकेँ ई सभटा मोन पड़ि रहल छलैक । प्लेटफार्म सुन्न छलैक, एक्कोटा लोक नहि छलैक, तकर चिन्ता ओकरा नहि भेलैक, ओ तऽ किछु आर सोचैत ठाढ़ रहि गेल छल ।

स्टेशनमास्टरक कोठली सेहो भीतरसँ बन्द छलैक । गाड़ी जाइत देरी एक टा प्राणी स्टेशनपर नहि बँचलैक । पानक दोकान, चाहक दोकान, सभ बन्द छलैक । पैटमैन सेहो बड़ा बाबूक संग कोठलीक भीतरे बन्द छलैक ।

अपन सूटकेस उठा भास्कर गाम दिस बिदा भेल । बाटो एकदम सुन्न छलैक । सभटा लोक एना कोना बिला गेलैक ? खेत-पथार, दोकान-दरबज्जा सभ सुन्न किएक छलैक ? आब भास्करकेँ चिन्ता होबऽ लगलैक । ककरोसँ किछु पुछितैक से लोके ने अभरि रहल छलैक कोनो ।

पहिले गाम छलैक रानीहाट । एकदम भम्ह पड़ैत । दोकान उजड़ल, जराओल । घरक कोठली-दरबज्जा बन्द । भास्करकेँ कनी-कनी अर्थ लागऽ लगलैक । अखबारमे पढ़ने रहैक । जमशेदपुरमे भारी दंगा भेल छलैक । बहुत लोक मारल गेल छलैक । मुदा ओकर इलाकामे कोनो प्रतिक्रिया हेतैक से ओ नहि सोचने

छल । मुदा आब सोचबाक अवसर नहि छलैक । बीच रानीहाटमे पहुँचि गेल छल ओ । पाछाँ घुरबा आ आगू बढ़ब दूनू एक्के रंग छलैक । रानीहाटक बाद कोनो खतरा नहि...सभ अपने बस्ती छैक ।

बस्ती तऽ रानियोहाट अपने छैक । एतुक्का लोक अपन छैक...समाज अपन छैक । ओकरा जुम्मन चाचाक पछिला बेर कहल गेल गप्प मोन पड़लैक । तहिया ओकरा अविश्वास भेल रहैक । आइ अपने आँखिसँ देखि रहल अछि ।

भास्कर डेराइत नहि अछि, आगू बढ़ल जाइत अछि । किछुए दूर जा पबैत अछि । एकटा घरक दरबज्जा खुजैत छैक आ भास्करकेँ भीतर खीचि लैत छैक दूटा हाथ । भीतर अबितहिँ भास्कर अकचका गेल । सौंसे घर भरल छलैक । लाठी-गड़ाँस आ मनुखसँ । चिन्हार-अनचिन्हार लोक सब गजल । एक गोटे भास्करकेँ कहलकै-"कतऽ बढ़ल जाइत रही ओम्हर ? खाली वैह सभ अछि ओइ दिस । किछु बूझल नहि अछि ?"

भास्कर अवाक् छल । ई की सभ भऽ रहल छलैक ? ओकरा गाम लग, ओकर अपन लोकक बीच ई कोन खेल पसरल छैक ? एतबे कहलकै- हमरा जाय दिअऽ, किछु ने हैत हमरा । सभ क्यो चीन्हैत अछि ।

ओ आदमी रोकलकै-'सभ चीन्हैत अछि, तैं तँ बेशी खतरा अछि । अनचिन्हार रहितहुँ तँ धोखा-धोखीमे बचिकऽ निकलियो जैतहुँ । चुपचाप बैसल रहू अइ घरमे । बाट ठीक हेतैक तखन जायब ।'

ओ भोरक उतरल दुपहरिया होमऽ लगलैक । भास्कर ओही घरमे बन्द रहल । गोड़ पचीसेक लोक छलैक । सभ कठमस्त सभ । शिकारक ताकमे रहैक सभ । अभरि गेलैक भास्कर । ओकर सभक मोन छोट भऽ गेलैक । एक गोटे बजबो कयलैक- एक्कोटा दढ़ियल बहराये ने रहल छौ ।

भास्करकेँ घृणा होमऽ लगलैक ओकर सभक गप्प सुनि-सुनि । झूठ-सच किदन-किदन बाजि रहल छलैक ओ सभ । भास्कर कतबो जिद कयलकै, बाहर जाय नै देलकै । कहलकै-तीनटा हिन्दूकेँ मारि चुकल भोरसँ । आब चारिम बनऽ लेल अहाँकेँ नहि जाय देब । चारिक बदला चालीस । हमहूँ सभ छोड़बनि नै । एक-एकटाकेँ गामसँ उजाड़ि देबनि । काटि-काटि कऽ आधा कऽ देबनि ।

भास्कर छटपटाकऽ रहि गेल । मुदा बेशी छटपटा उठलैक किरण । भोरे पैटमैन आ बड़ा बाबू देखने रहैक उतरैत । से खबरि नहि जानि कोना रामचन्द्रपुर

हवेली पहुँचि गेलैक । किरणकेँ कहलकै लोक । मुदा भास्कर नहि पहुँचलैक । किरण बताहि होमऽ लागलि । देवानजीकेँ कहलकनि- ठकनाकेँ कहलकै । सभतरि ताकि-हेरि घुरि अयलैक । किरणकेँ कोनो होश नहि रहलैक । अपने बाटपर बहरा गेलि । सुधा पाछाँ-पाछाँ दौड़लैक- एहन अवस्थामे अहाँ कोना बहरायब ? चलू, घर चलू ! लोक सभ ताकिए रहल छनि ।

लोकक तकबापर विश्वास नहि भेलैक किरणकेँ । आशंकासँ करेजा ततेक जोर धड़कि रहल छलैक जेना छाती फाटि जयतैक ! कहलकै-"अहाँ खाली राजाकेँ पकड़ि कऽ रखबै । हमरा जाय दिअऽ । राजा ने बहराय किम्हरो ।

सड़कपर आबि दौड़ऽ लगलैक किरण । देवानजी किछु दूर संग अयलथिन । बूढ़ लोक थाकि कऽ बैसि गेलथिन । ठकना, सुबधा आ जे भेटलनि सभकेँ पाछाँ दौड़ा देलथिन । आरो-आरो लोक जे एना जाइत देखलकै किरणकेँ, संग धऽ लेलकै । सभक हाथमे लाठी-भाला सेहो छलैक । किरण से सभ किछु नहि देखलकै । ओ तऽ खाली बताहि जकाँ दौड़ि रहल छलि । देह हल्लुक छलैक, मुदा पैर भारी छलैक । पूर समय । पेट काफी पैघ सन निकलल छलैक । चलबोमे असुविधा छलैक । दौड़बामे तऽ आरो कष्ट । मुदा ओकर ध्यान कथूपर नहि छलैक । ओकर सर-संसारे उजड़ि रहल छलैक । बताहि जकाँ दौड़ि रहल छलैक । बेस पैघ सन हसेड़ी तैयार भऽ गेलैक ओकर पाछाँ ।

उठैत-बैसैत, कुहरैत-हकमैत रानीहाट तक पहुँचि गेल किरण । लोक सभ पकड़ैत-पकड़ैत रहि गेलैक मुदा ओ नहि मानलकै । कानऽ लगैक-"जाय दिअऽ हमरा । हमर दुनियाँ उजड़ि गेल तऽ हमहीं जीबिकऽ की करब ?" लोक सब छोड़ि दैक । जाहि कनियाँक आइ धरि गामक लोक मुँह नहि देखने रहैक, बोलो नहि सुनने छलैक, से आइ सभक सामनेसँ दौड़ल बताहि बनलि जा रहलि छलैक आ ओकरा रोकि लेबाक सामर्थ्य ककरोमे नहि छलैक ।

अपने सामर्थ्य जवाब दऽ गेलैक । हाट लग पहुँचैत-पहुँचैत सड़कपर ओंघरा गेलि । खसिकऽ छटपटाय लागलि । कथुक होश नहि रहलैक । रहि-रहिकऽ तीव्र चीत्कार उठऽ लगलैक ।

ओ चीत्कार ओहू कोठलीमे पहुँचलैक, जाहिमे भास्कर बन्द छल । कोनो आशंकासँ चौकन्ना होइत दरबज्जा खोलि बाहर देखलक । सड़कपर बड़ भीड़ छलैक- बड़का हसेड़ी आ कोनो स्त्रीक तीव्र आर्त्तनाद पसरि रहल छलैक । सड़कपर बलात्कार कऽ देलकै भरिसक...।

बीसो-पचीसो नुकायल लोक लाठी-गँड़ास लऽ दौड़ल । भारी काण्ड भऽ जइतैक । मुदा किछु लोक चीन्हि लेलकै आ हाथ रोकि देलकै । आपसेमे भिड़न्त बचि गेलैक ।

पाछाँ-पाछाँ भास्कर बहरायल । ओ सोझे घर जाय चाहैत छल । बड़ विलम्ब भऽ चुकल छलैक । मुदा स्त्रीक आर्त्तनाद ओकर पैरकें जबर्दस्ती ओम्हरे घीचि लेलकै । कहुना भीड़ हँटबैत आगू पहुँचल । किरणकें ओना अर्धनग्न सड़कपर छटपटाइत...चीत्कार करैत देखि हाथ-पैर सुन्न भऽ गेलैक ।

आपसमे सभ गलगुल कऽ रहल छलैक-"हिनका दर्द शुरू भऽ गेल छनि । आब कोन उपाय हेतनि ? जल्दी किछु करै जैयनु । छटपटा कऽ मरि जयतीह एना तऽ ।"

भास्करकें देखि ठकना-सुबधा दौड़लैक-"नहि मानलथिन कनियाँ । सभ रोकैत-रोकैत हारि गेलनि । क्यो कहि देलकनि जे अहाँ बलू भोरका गाड़ीसँ अयलियैक आ निपत्ता छियैक । एहिना उधबा उठबै छैक । कहै छै बीसटा खून भऽ गेल । बीसटा चुहियो ने मरल छैक कतहु ।" मलिकाइनक हालति देखि ठकना तामसे प्रचण्ड भऽ गेल छल । ओ हतबुद्धि ठाढ़ छल । मालिककें देखि किछु भरोस भेलैक । मुदा भास्करक अपने बुद्धि हेरा गेल छलैक । किछु फुरिए ने रहल छैक ।

तावत एकटा दरबज्जा खुजलैक आ एकटा दाढ़ीवला दौड़लैक ओम्हर । भास्कर डेरा गेल । ओ बीसो-पचीसो भोरेसँ दाढ़ीबलाक ताकमे छल । कहीं काण्ड ने कऽ दैक कोनो ! मुदा ओ दौड़ले चल अयलैक-"ले चलू...हिनका एना सड़कपर कैलै छोड़ने छिअनि ? जल्दी करू । लगाउ हाथ सभ क्यो ।"

उठा-पुठाकऽ ओ दाढ़ीवला किरणकें घरक भीतर लऽ गेलैक । चौखटिएपर ओकर घरक स्त्रिगण सभ डेरायल-सहमल ठाढ़ छलैक । किरणकें देखितहि ओकरा सभ मिलि भीतर लऽ गेलैक ।

जुम्मन अपने घरसँ बहरैल-"की बात छै हजूर...अहाँ अइ भीड़मे...अहाँ कैसे फँसि गेली... के छथऽ ई दाइ ?...

भास्कर कृतज्ञ भावसँ कहलकै- अहींक पुतहु छथि जुम्मान काका !

तावत नेनाक कानब भीतरसँ सुनाइ पड़ऽ लगलैक । भास्करक चेहरापर प्रसन्नता आबि गेलैक । भीड़ोक लोकक चेहरापर प्रसन्नता आबि गेलैक ।

जुम्मन बाहर अयलैक आ दुनू हाथ ऊपर उठा कहलकै-'खोदा मियाँकें रहमत छनि हजूर ! रानीहाटमे फेनो रानी माँ आयल छथि । बेटी भेल अछि हजूर... निकालू बुढ़बा जुम्मनकें बख्शीश...।

भास्करक आँखिमे नोर आबि गेलैक । जुम्मन मियाँ देखलकै । ओकरो आँखिमे किछु झलफला उठलैक-"मिल गेल हजूर...बक्शीश हमरा मिल गेल । खोदा बिटिया आ हमर रानी माँकें खूब लम्बा उमिर देतैक...किच्छो अहू बुढ़बाक उमिर से काटि के...।

भीड़ पतराय लागल छलैक । जुम्मन ओकरा सभक बीच आबि कहलकै-जा, आइ सभ । खोदा मियाँ बड़ा अलबेला खेलाड़ छथ । देखऽ ने...आगिमे फूल खिला देलनि...रानीहाटकें रानी माँ घुरि अयली आइ...सभ से कह दई जे अपन दरबज्जा-खिड़की खोलि के स्वागत करतनि ।

बुढ़बा जुम्मन दिस ककरो ताकल नहि गेलैक । लाजे सभ घुरि गेल अपन-अपन घर दिस । ठकना आ सुबधा पालकी लाबऽ गाम दिस दौड़ल । कनियाँकें लऽ जेतनि । भास्कर आँखिमे नोर लेने ठाढ़ छल ।

भरि गाम भास्करकें बिदा करऽ जमा भेल छलैक । क्यो ने बाँचल छलैक- छोटका-बड़का सभ ।

पहिने अपने देयाद सभ अयलथिन-"हमरा लोकनिक बातकें मोनमे नहि रखिहऽ भास्कर ! हमरालोकनि छी संकुचित विचारक...अपन घर-गृहस्थीमे ओझरायल लोक । तोरा सन उच्च विचार हमरा लोकनिक कोना हैत ? बिसरि जैहऽ सभटा । अपन परिवार...अपन घरक लोक सभकें देखिहऽ...कतेक गौरवक बात अछि हमरा लोकनिक लेल ।

भास्करकें हिनकालोकनिक स्वार्थी गप्प ओइ दिन ओतेक अधलाह नहि लागल रहैक, जतेक आइ लगलैक । शुद्ध मोनसँ आशीर्वाद देबऽ नहि आयल छलथिन क्यो । अप्पन सिफारिश शुरू कऽ देने छलथिन- अपन घरकें देखिअहक...

भास्करकें हँसी लगलैक- अखन ट्रेनिंगो ज्वाइन नहि कयने अछि...आ सिफारिश शुरू भऽ गेलैक ।

गरिबहाक स्नेह ओकरा विगलित कऽ देलकै । सब टोलक बुझनुक लोक सभ अयलैक–"हमर सभक गल्ती-सल्ती क्षमा कऽ देब मालिक ! अहाँक बात नहि कऽ सकली हमरा सभ...साहसे ने हय हमरा सभमे । अहाँक संग चलिती तऽ भाग बदलि जाइत हमरा आरके, मुदा हमरा आरक पयर तऽ बन्हायल अछि । अहाँ कतबो कहली ई बन्हन नै कटल हमरा आर से । नै जानि, आब की होत ।

भास्कर सभकेँ सान्त्वना देलकै, बोल-भरोस देलकै, किछु ने हेतौ भाइ ! तोरा हाथमे ताकति छौक, तोँ अप्पन बन्हन काटि सकै छैं । मोनमे साहसो औतौक । बेशी दूर नै छैक ओ दिन ।

बड़कहबा सभ सेहो अयलैक–"हमरा आर अहाँकेँ बकलेल पागल बुझली मालिक ! अहाँ तऽ भारी विद्यामान हती...एते गो हाकिम बनि गेली...गरिबहो सभकेँ ध्यान रखबैक मालिक...

भास्कर ओकरा सभकेँ स्नेहपूर्वक बिदा कयलकै । मोन कोनादन करऽ लगलैक– मालिक शब्द एकरा सभक जीहसँ सटि गेल छैक । कहिओ छुटतैक की नहि...?

आरतिए लिखने छलैक । लिखऽसँ पहिने तारसँ बधाइ देने छलैक । पत्रमे आग्रहपूर्वक लिखने छलैक–"अहाँ ज्वाइन अबस्स कऽ लेब । कोनो इतस्ततःक काज नहि छैक । अधिकार तऽ नै अछि मुदा तैयो कहै छी जे सप्पत ।"

जयबाक तैयारी करहे पड़लैक । मायकेँ चिट्ठी देलकै । किरण बड़ कमजोर छलैक । तीन मासक भेलैक नेन्ना, मुदा अखनो कमजोरी छैक । शोणित कम छैक देहमे । ओकर स्वास्थ्य एकदम चौपट भऽ गेल छैक । मुदा मोनमे बड़ साहस छैक । जहिए खबरि अयलैक, तहिए हँसिकऽ कहलकै– हमर चिन्ता नहि करू । ठीक छी हम । देखू, केहन भागमन्त बेटी आयल अछि ! पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि देने रही अहाँ । गामक दुनियाँमे घुरि आयल रही । ई फेर एक बेर अहाँकेँ ओइ दुनियाँमे वापस पठा रहल अछि जकरा अहाँ अनुपयुक्त बूझि त्यागि देने रहियैक । हमर बेटीकेँ अइ सौभाग्यसँ वँचित नहि करियौक...हमरे सप्पत ।

किरणक सप्पत । आरतीक सप्पत । दुनूमे ककरो तोड़बाक साहस ओकरा नहि छलैक । जाय तऽ पड़बे करतैक ।

माय अयलैक । भौजी सेहो अयलथिन । बड़ प्रसन्न छलैक माय– हम की जाने गेलियै जे की बनल छह । मुदा जा अबस्स । ओतऽ सभ कहलक जे बेटा बड़का हाकिम भेल छथि ।

मायकेँ ओ कहऽ चाहलकै जे हाकिम बनऽ ओ नहि चाहैत अछि । कहिओ ने चाहलक अछि । ओ तऽ अपन कमाइ...अपन इमानदारीक कमाइसँ घर बना रहऽ चाहैत अछि...रुक्ख-सुक्ख खाकऽ जीवऽ चाहैत अछि । गाममे से संभव नहि छैक । फूसोक घरमे वस्तुक अम्बार रहैत छैक । किछु करऽ चाहैत अछि तऽ लोक करऽ नहि दैत छैक । कतबो लुटबैत अछि...बँटैत अछि–कोनो कमी नहि होइत छैक । बैसिकऽ खयनाइ, पुरखाक अरजल सम्पत्ति खयनाइ ओकरा नीक नहि लगैत छैक । ओइ खेतमे ओ मेहनति करऽ चाहलक, प्रत्येक मजदूरकेँ ओइ खेतक उपजमे हिस्सा देबऽ चाहलक, तऽ गाममे बिरड़ो मचि गेलैक । एतऽ किछु ने करऽ देलकै ओकरा लोक ।

ओ जायत तेँ । देखतैक किछुओ दिन कमसँ कम जे ओतऽ किछु कयल जा सकैत अछि वा नहि ।

माय कहलकै– एतुक्का चिन्ता नहि करऽ तोँ । जा धरि कनियाँ बच्चाकेँ लऽ नै जैबहुन, ताधरि नहि घुरब काशी हमरालोकनि ।

भास्कर कहलकै–"काशी फेर किएक जयबैं माय ? हमरोलोकनि चल जायब–तोँहू दुनू गोटे चलि जयबैं...तखन के रहतौक अइ ठाम ?"

माय कहलकै– अपने देखबऽ आबि-आबिकऽ । तोरे तऽ छऽ सभटा । हमरा लोकनिक मोन लागि गेल अछि विश्वनाथक शरणमे । फेर अइ मायामे घुरि आयल छी । अहीमे नहि लपटा दैह आब । जा धरि तोँ नै छऽ...भार हम्मर । निश्चिन्तसँ जा । तोँ घुरि अयबऽ...तखन तोँ जानह । गाममे नहि रहबऽ क्यो– तऽ इएह ब्रह्माक कनियाँ अछि, एकरे दिअहक सभटा भार । सभ देखतह सुनतह । रक्षा करतह ।

सुधा कानऽ लगलैक– हमरा नहि एतेक मान देथु । हम अभागलि कोन जोगरक छी ! हिनके देल खाइ छी...हिनके दयासँ नेन्ना पढ़ै अछि...अपन शोणितो चढ़ाकऽ हैत तऽ रक्षा करबनि हम । हिनकर सभक भारी कर्ज छनि हमरा ऊपर । एकटा ओ छलाह जे हिनकर सभ-किछु डाहि देलथिन– एकटा ई सभ छथि...

–"नै करू ओकर चर्चा कनियाँ ! ओइ बातकेँ फेर नै दोहराउ अहाँ । सभटा बिसरि गेल छी हम । बाबाक शरणमे बड़ शान्ति अछि । घुरि जायब हुनके शरणमे फेर । नहि दोहरायब फेर किछुओ हमरा सामने...

सुधा डरे चुप्प भऽ गेल । आशा चौधराइनक उत्तेजना आस्ते-आस्ते कमि गेलनि । राजा बाबी लग आबि कहलकनि– अहाँ कहाँ चल गेल रही बाबी ? माय एकटा आर बौआ अनने छैक...एतनीटाकेँ । हमर बहिन हैत, अहाँकेँ के हैत बाबी... ?

बाबी हँसि कऽ पुछलथिन– तोँ हमर के हेबैँ ?

राजा झट उत्तर देलकनि– पोता !

बाबी फेर पुछलथिन– तऽ तोहर बहिन के भेल हमर ?

राजा कने रुकल मुदा कनिए काल ! झट बाजि उठल– पोती !

आ लागल अपन बाबीक हाथ पकड़ि घीचऽ–चलू ने बाबी ! देखब नहि अपन पोतीकेँ ! बड़ सुन्नर छैक । काकी–मौसी चलू ने ! देखबै अहूँ । अहूँसँ बेसी सुन्दर छैक ।

रम्भा हँसलीह । बड़ कम हँसैत छथि आब । कहिआ ने हँसी बिला गेलनि । गुमसुम आ शान्त रहैत छथि हरदम । अपन सासुक संग बाबा विश्वनाथक सेवामे लागल रहैत छथि, मुदा मोन शान्त नहि होइत छनि । सासु नहि बुझैत छथिन ई बात । ओ तऽ बाबामे लीन भऽ गेल छथि ।

कोठलीमे जाकऽ पोतीमे सेहो लीन भऽ गेलीह आशा चौधराइन । रम्मो कोरामे लेलकै । किरणक हालति देखि दुनू अवाक् रहि गेलीह । सुधा कहलकनि– ''हिनके लोकनिक आशीर्वादसँ बाँचि गेलीह, सैह बुझथु । भगवान हमरो लाज बचा लेलनि, बड़का जिम्मेदारी दऽ गेल रहथि ।''

आशा चौधराइनक आँखिमे कृतज्ञता छलनि ।

भास्कर निश्चिन्त मोने ट्रेनिंगपर गेल ।

ब्रह्मा एकदम नकारि देलकै ।

दादाक आँखि रँगि गेलैक । ब्रह्मापर ओकर कोनो असरि नहि भेलैक । ओ अपन निर्णय दऽ चुकल छलैक–आब बस्स । आब नै पार लागत हमरासँ ?

ओ थाकि गेल छल, उबिया गेल छल निरन्तर हत्या आ रक्तपातसँ । ओकर मोनमे प्रश्न ठाढ़ होमऽ लागल छलैक । प्रश्न मना छलैक दादा लग । ओकरा खाली अपन आज्ञाक पालन चाहिऐक–बिना नाकर–नुकुर आ अविलम्ब । से नहि भेल तऽ दादा उग्र भऽ जाइत छलैक, किछुओ कऽदऽ सकैत छलैक । ब्रह्मा जनैत छल ई बात । मुदा नहि डेरायल तैयो । एकदम नकारि देलकै– नै...आब नहि हैत हमरासँ ई अकारण निरन्तर हत्या । अइ उद्देश्यहीन हिंसासँ ऊबि गेल छी हम । हमरा क्षमा करू दादा आब, आर संग नहि दऽ सकब अहाँक ।

बड़ संग देलकै ब्रह्मा । निरन्तर पाँच वर्षसँ संग दऽ रहल छलैक । दादाक आज्ञा ओकरा लेल ईश्वरक आदेश छलैक । आँखि मूनिकऽ मानैत चल गेलैक । पाँच वर्ष धरि मानैत रहलैक ।

एकटा फोटो दैक हाथमे आ कहैक–"नीक जकाँ चीन्हि लिऔ एकरा । हमरा लोकनिक अगिला शिकार आ ई राखू पता । धोखा नहि हैबाक चाही । काल्हि भोरे ।

दादाक हाथसँ रिवाल्वर लऽ लैत छल ब्रह्मा । ओकर नामक संग हत्याक एकटा आर अपराध जुटि जाइत छलैक ।

गामसँ दू–दू टा हत्या कऽ भागल छल ओ । जिविते पलंगक संग बान्हि देने छलैक दुनूकेँ । मुँहपर पट्टी बान्हि देने रहैक आ किरासन छीटि देने रहैक । पहिने बन्हलकै सचिनकेँ । बड़ जोर मारलकै मुदा ब्रह्मापर खून सवार रहैक । महेन्द्रनाथ चौधरी लगले देह–हाथ नेरा देलकै । दुनू घरक दरबज्जा नीक जकाँ बन्द कऽ देलकै । पहिने घरमे सलाइ खड़रिकऽ फेंकि देलकै । फेर दरबज्जामे आगि लगा देलकै...सभटा खिड़कीमे आगि लगा देलकै । खपरैलपर एकटा जरैत ऊक फेंकि देलकै आ खाली पछबरिया कोठामे पड़ाइत–पड़ाइत आगि लगा देलकै । पछुआर दने भगैत काल चरबाह सभ रोकलकै–'के हय... के भागल जाइ हय...ब्रह्मा पड़ाइते रहल...। अपन आँगन गेल । सुधाकेँ कहलकै सभटा आ फेर पड़ायल ।

पड़ाइत–पड़ाइत दिन बितलैक, सप्ताह बितलैक । मासो बीति गेलैक । कतौ चैन नहि भेटलैक । पुलिस शिकारी कुकुर जकाँ पाछाँ पड़ल छलैक । भूखल–पिआसल...थाकल आ ठेहिआयल पड़ाइत ब्रह्मा पटना आबि गेल । दादाक कार्ड छलैक संगमे । बड़ मस्किलसँ पता लगलैक । एकदम खोहमे रहैत छलैक दादा–सेहो भारी पहरापर । पहिने जाये ने दैक क्यो । कार्ड देखौलोपर नहि । दादाकेँ खबरि भेलैक तऽ स्वयम् बजबा लेलकै ।

खूब स्वागत कयलकै । भोजन करौलकै, नव–वस्त्रक इन्तजाम करा देलकै । सूतऽ लेल नीक बिछौन भेटलैक । प्रात भेने सुनलकै ओकर सभटा कथा । सुनिकऽ प्रसन्न भऽ गेलैक–"बड़ नीक काज कयलैं तोँ ।" अपन मायक अपमानक बदला लेलैं तों...हमरा एहने बहादुर आ जिन्दादिल नौजवान सभक काज अछि ।''

ब्रह्मा दीक्षित भऽ गेल । ओकर प्रशिक्षण शुरू भऽ गेलैक । बन्दूक रिवाल्वर बम सब चलौनाइ सिखलक । दादा अपने सभ सिखबैत छलैक ई सभ ।

एक दिन एकटा फोटो देलकै बामा हाथमे आ दहिनामे रिवाल्वर । एकरा

नीक जकाँ चीन्हि ले । तोहर पहिल शिकार । आइए राति काज भऽ जयबाक चाही ।

ब्रह्मा अज्ञाक पालन कयलकै । दादा प्रसन्न भऽ उठलैक–"आइ तोहर नाम क्रान्तिक पोथीमे अग्रिम पन्नामे लिखा गेलौक । नव समाजक निर्माण लेल, एहन-एहन कतेको पाथर हँटबऽ पड़तौक बाटसँ । ढेंग सभ पड़ल भेटतौक बाटमे । ओंघरौने चल ।

ब्रह्मा दनादन ओंघरौने गेल । जे दादा कहलकै-से कयने गेल । कहिओ कोनो प्रश्न नहि, कोनो निषेध नहि, अस्वीकार नहि...। नव समाजक स्वप्नमे लीन छल ब्रह्मा । आर किछु ने देखाइत छलैक ओकरा । खाली दादाक देखाओल शिकार... बस...। ओकर नामे लिखल हत्याक सूची पैघ होइत गेलैक । ओ दादाक आँखिसँ देखैत छल...हुनके दिमागसँ सोचैत छल । अपन सोचबा-बुझबाक अवसरे नहि भेटैक । आज्ञा अबिलम्ब पूर्ण हैबाक चाही ।

आज्ञापलन ब्रह्मा करैत गेल, मुदा आस्ते-आस्ते ओकर मोनमे प्रश्न उठऽ लगलैक । ई उद्देश्यहीन हत्या आखिर ककरा लेल–कथीक लेल ? दादा की चाहैत छैक ? कोन नव समाजक कल्पना छैक ओकर जे एतेक रास निरपराध हत्यापर जीवित छैक ? पहिल बेर दबल स्वरमे शंका उठलैक तऽ डाँटि देलकै दादा–निरपराध हत्या ? के कहैत छौक जे ई सभ दोषी नहि अछि ? सभ एकसँ एक बढ़िकऽ पाखण्डी छौक...समाजद्रोही आ देशद्रोही छौक । एकरा मारलासँ पुण्य होइत छैक ब्रह्मा ! जकर गाममे खून कयने छैं तेहने अपराधी आ पाखण्डी सभ छलौक ई सभ । एकरा मारलासँ बड़ पुण्य भेलौक ।

ब्रह्मा चुप्प लगा गेल । ओइ दिनुका बाद फेर आपत्ति नहि कयलकै । शिकारक संख्या बढ़िते गेलैक । कोनो सेठ...कोनो घूसखोर अफसर...कोनो अत्याचारी... कोनो कारोबारी ।

ओइ दिन एकदम नकारि गेलैक ब्रह्मा । दादाक रंगल आँखि कोनो काज नै कयलकै । ब्रह्मा फैसला कऽ चुकल छल– आब आर नहि...बस–आब बहुत भेल ।

ओ फोटो कोनो डाक्टरक छलैक । ब्रह्मा कहलकै– एना किएक दादा ? ई डाक्टर कोना आबि गेल अहाँक लिस्टमे ? ई कथीमे बाधक अछि ? ई तऽ मानवताक सेवा करैत अछि ।

दादा बिगड़ि उठलैक–क्यो ककरो सेवा नहि करैत अछि, खाली अपन सेवा करैत अछि । एकर तिजोरी नोटसँ भरल छैक । एकरामे आ कोनो सेठ-साहुकारमे कोनो अन्तर नहि छैक । दादा क्रोधित भऽ उठलैक–"एना प्रश्न किएक उठि रहल छौक तोरा मोनमे ? हमरापर विश्वास नहि छौक ?

ब्रह्मा झट कहलकै–अविश्वास नै, दादा ! अहाँ अबस्से किछु सोचिकऽ कयने हैब । करैत छी । मुदा हमरा तऽ कोनो बाट सुझाइ नहि पड़ि रहल अछि । ततेक आगाँ बढ़ि आयल छी अपन पुरना बाट छोड़िकऽ जे घुरिकऽ ओइ बाटपर गेनाइयो सम्भव नहि अछि । हमर मदति करू दादा ! ई निरन्तर हत्या आ रक्तपातक खेल बन्द करू आब । बस्स, बहुत भेल । हमरा मुक्त करू । प्राण छटपटा रहल अछि हमर ।

दादाक आँखि रँगि गेलैक । ब्रह्मा तैयो अड़ले रहल । दादा हारि मानि लेलकै–बेस...तऽ जाउ अहाँ । हमरा दिससँ कोनो रोक नहि । मुदा हम जनैत छी...घुरिकऽ अयबे करब अहाँ । अन्यत्र क्यो नहि देत एहन सुरक्षित स्थान आ स्नेह । दादाक दरबज्जा अहाँ लेल सदिखन खूजल रहत ।" ब्रह्मा प्रसन्न भऽ दादाकेँ धन्यवाद देलकै आ जयबाक तैयारी करऽ लागल । किछुए कालमे अपन झोरा-झपटा लऽकऽ विदा भऽ गेल ।

दादा ओकरा जाइत देखलकै आ बुदबुदा उठलैक–'अनफारचुनेट...अपन मृत्युक अपने वरण करऽ जा रहल अछि । एकरा लेल हमरा दुख रहत ।

कनिए कालमे एकटा दोसर युवक अयलैक । दादा कहकै–ब्रह्मा चल गेल। किछु बेशीए बात जानि गेल अछि हमरा सभक । एकर व्यवस्था अहाँक हाथ । अज्ञानक नाश अवश्यम्भावी छैक ।

भोरमे एकटा लाश गंगाक कछेरमे पड़ल छलैक...शहरक एकदम आखिरी छोरपर । पुलिसक गाड़ी उठाकऽ लऽ गेलैक । अस्पताल लऽ गेलैक । पोस्टमार्टम भेलैक । छातीमे गोली लागल छलैक ।

मुइल व्यक्तिक कोनो पता-ठेकाना नहि लगलैक । जरा देबा लेल सरकारी व्यवस्था भेलैक । असहृदय आ अनचिन्हार डोम सभ आधा-छीधा जरा गंगाजीमे भसिया देलकै ।

भास्करो पाँच वर्ष धरि औनाइते रहल...एक ठामसँ दोसर ठाम फेंकाइत रहल, कतहु टिकि नै सकल । जतहि चेष्टा करय...लगैक जे आब किछु कऽ सकत, वर्तमान रुग्ण आ भ्रष्ट पद्धतिकेँ बदलि सकत, राताराती बदली भऽ जाइक ।

एस.डी.ओ. आ डी.एम. क बदली टुटपुजिया नेता आ एम.एल.ए., एम.एल.सी. करैत छैक । कर्मिक विभागमे हमला करैत छैक पहिने–'केहन अयोग्य आ नाखरुस

लोकके‍ँ दऽ देलियै हमर सबडिवीजनमे । सभटाकेँ चौपट कऽ देत । मुख्यमंत्रीजीसँ गप्प भऽ गेल...अहाँ कागत बढ़बियौक ।

धौंस लहलैक तऽ लहलैक, ने तऽ कोनो मंत्री वा बेसी चलता-पुर्जा रहल तऽ मुख्यमंत्रीसँ दवाब । एस.डी.ओ., डी.एम., कमिश्नर, विभागीय सचिव सभ घुमैत रहैत छथि...राताराती बदलि जाइत छथि ।

जगह बदलैत-बदलैत भास्कर थाकि जाइत अछि ।

किछुओ होमऽवला नहि लगैत छैक । ओकर एकटा सहयोगी कहलैक एक दिन–सुन, तों नाहक फेरामे पड़ैत छैं । हमरे जकाँ ज्वाइन करैत देरी तीन टा खोली बना ले । जे कोनो फाइल अबैत छौ, अही तीनू खोलीमे बाँटि ले– अखन... अखन नहि...कखनो नहि । जाहि केसमे जोर छैक, पैरबी छैक–तकरा अविलम्ब कर। जाहिमे नहि छैक तकरा किम्हरो फेकि दहिक, तेना फेकहिक जे कहिओ नहि भेटैक । जाहिमे पैरवीकारकेँ पूरा दाम नहि भेटल छैक वा किछु आर अयबाक संभावना छैक, ताहिमे किछु पूछिकऽ घुरा दहिक । मतलब अखन नहि । खिस्से खतम । कहिओ कोनो समस्या नहि हेतौक ।"

ओकर सुझावपर भास्करकेँ हँसी लगैत छैक । मानबाक कोनो प्रश्ने नहि छैक । भास्करक लेल ओहन समझौता असंभव छैक ।

शुरूएसँ संघर्ष भऽ गेलैक । ट्रेनिंग कहुना समाप्त भेलैक । पोस्टिंग भेलैक । किरण आबि गेलैक राजा आ मुन्नीक संग । जुम्मन काकाक रानी माँ पैघ भऽ रहलैक अछि । बाजियो लैत छैक किछु-किछु । राजाक देह घिचा रहल छैक। खूब लम्बा हैतैक बापे जकाँ । किरणोक स्वास्थ्य ठीक भऽ गेल छलैक— लाली घुरि आयल छलैक । एक संग रहबाक योजनासँ सभ अत्यन्त आह्लादित छैक ।

अही घरक कल्पना कयने छल भास्कर । अपन मेहनतिक कमाइ, छोटछीन घर आ छोटछीन परिवार । घर भेटल छैक–पैघे सन घर । भास्करक मोनक अशान्ति ओहिना छैक ।

हवेलीक बाप छलैक ई तऽ ! नौकर चाकर-अर्दली-किरानीक ढेर । कतबो मना करैक, नहि मानलकै क्यो । हुजूर..सर...सुनैत-सुनैत मोन पगला उठैक भास्करक। एकदम रटल सुग्गा सभक स्वर– जी हुजूर..."बड़ा साहब कोठी पर याद किए हैं।"

भास्करक देह जरि गेलैक । कोठी । नबाब मरि गेलाह– नाति छोड़ि गेलाह । कलक्टर साहब छथि, तेँ निवास नहि कहौतनि । बड़की टा बोर्ड चमकैत

छनि दिनराति— कलक्टर कोठी । अबैत-जाइत ओ बोर्ड देखिकऽ ओकर आत्मा विद्रोह कऽ उठैत छै आ मोन होइ छै जे सभटा शीशा फोड़िकऽ ओ बोर्ड चकनाचूर कऽ दैक ।

फेर अपनो चार्ज भेटैत छैक जिलाक । नव-नव बहुत रास जिला बनैत छैक, सब-डिवीजन सभ जिला बनि जाइत छैक आ एस.डी.ओ. सभ जिलाधीश बनि जाइत छथि । भास्करक डेरामे सेहो चमकऽ लगैत छैक–कलक्टर कोठी । ओइ बोर्डकेँ हँटबऽमे ओकरा भारी संघर्ष करऽ पड़ैत छैक । ओकर सम्पूर्ण आफिस ओकरा आश्चर्यसँ देखैत छैक ।

आश्चर्य ओकरा अपनो होइत छैक जे सभटा जनैत किएक आबि गेल रहय ऐ काजमे । बड़का-बड़का पार्टी, राजधानीक फाइव स्टार, थ्री स्टार होटल । मुफ्तक शराब । देश-भ्रमण । मौका भेल तऽ विदेशो घुमब । सेमिनार-कनफ्रेंस । एहि सभमे जकरा मोन लगैत छैक ओकरे लेल ठीक छैक ई सभ । एहन-एहन पार्टी भास्करकेँ एकदम असह्य भऽ उठैत छैक । सभक हाथमे गिलास । भास्करो अपन गिलासमे कोका वा शुद्ध जल लऽ लैत अछि–चियर्स ।

ओकर आगाँ-पाछाँक बहुत रास परिचित सभ छैक कम्पीट कयने । बराबरि भेटो होइत छैक । ओकर सभक परिवर्तित रूप देखिकऽ ओ चकित रहि जाइत अछि । ओ छौंड़ा जे कालेजमे भास्करे सन रहय...वा ओकरोमे बेशी पढ़ाकू आ परहेजी रहय, से सभ अपन रूप बदलि लेने अछि । एक गोटेकेँ भास्कर टोकलकै–'तोहूँ शुरू कऽ देलैं ई सभ ?'

भास्करसँ अइ प्रश्नक अपेक्षा नहि छलैक भरिसक । सकपका गेलैक । फेर सम्हरैत कहलकै–"की करबै भाइ ! चीफ सेक्रेटरी अपने सर्व करैत छलथिन, नै कोना कहितियनि...इट इज ए क्वेश्चन आफ सोसाइटी मैनर्स–''

अइ तथाकथित उच्चवर्गक अइ तथाकथित मेनर्ससँ ओकरा वितृष्णा होइत छैक । अहाँ तक संभव होइत छैक, किरण आ अपन धीयापुताकेँ एहन-एहन पार्टी आ जुटानसँ फराके रखैत छैक । अइ वर्गक महिला सभक जुटान तऽ आर विचित्र । सभ अपन आभिजात्यक प्रदर्शनमे अयस्याँत...अपन-अपन मन्दबुद्धि धीयापुताक चामत्कारिक प्रतिभाक प्रदर्शनमे अपस्याँत...नर्सरी राइम...सँ लऽकऽ सिनेमाक गीत धरि । आत्ममुग्ध...आ प्रदर्शनक आकांक्षी...।

कौखन किरण आ राजा लेल ओकरा बड़ चिन्ता होइत छैक । मुन्नी अखन छोट छैक...ओकर समस्या नहि छैक अखन । मुंदा निरन्तर स्थानान्तरणसँ राजाक

शिक्षापर बड़ असरि पड़ि रहल छैक । एकसरि पड़लि-पड़लि किरण कुम्हला रहल छलैक । भास्कर स्वयम्कें दोषी अनुभव करैत अछि ।

राजा लेल निर्णय लऽ लेलक ओ । किरण कानऽ लगलैक—एतेक अन्याय नहि करू हमरा संग । वैह टा तऽ एकटा आनन्दक वस्तु अछि अहाँक अइ अप्रिय आ अनिच्छित वातावरणमे । ओहो चल जायत तऽ कोना रहब हम ? अहाँकें अपना रहि हैत ? राजा रहि सकत ? दिनभरि केहन प्रतीक्षामे रहैत अछि अहाँक घुरबाक ? एहन अन्याय नहि करू हमरा सभपर ।"

भास्कर मनबैत-मनबैत मना लेलकै । राजाक भविष्य आ ओकर पढ़ाइक समस्या दऽ कहलकै । अपन नेनपन आ एकसर रहबाक खिस्सा कहलकै । कनैत किरण मानि गेलैक ।

राजाकें लऽ पटना गेल भास्कर । फादर मर्फी देखिकऽ लगले चीन्हि गेलथिन । भास्कर राजाकें देखबैत कहलकनि— हमर बेटा...अभिताभ चौधरी, अहाँक लग देबऽ आयल छी...एकरा राखि लिऔ ।

—वेलकम माइ सन ! टू मी इट विल अपियर एज इफ यू हैव कम बैक टु स्कूल एगेन...।

फादर एकदम बूढ़ भऽ गेल छलथिन । दाढ़ी एकदम उज्जर भऽ गेल छलनि । आँखिपर चश्मा छलनि । भास्करक लेल हुनकर स्नेह छलकि रहल छलनि । बहुत रास गप्प पुछलथिन । भास्कर कहलकनि सभटा । फादरक आकृतिपर गर्व-मिश्रित स्नेह छलनि— आइ एम प्राउड आफ यू माइ सन—

राजाकें स्कूल बड़ नीक लागि रहल छलैक । फैल— खूब साफ । एकटा प्रतिमा लग ओकर दृष्टि बेर-बेर अँटकि जाइत छलैक । नहि रहल गेलैक तऽ पुछिए देलकनि—"ई के छथि पप्पा ? हिनका एना के टाँगि देने छनि ?

फादर मर्फी भास्कर दिस तकलथिन । हुनकर वृद्ध आकृतिपर बालसुलभ हँसी छलनि ।

भास्कर निश्चिन्त घुरि आयल । यद्यपि अबैत काल फादर मर्फी कहलथिन— थिंग्स हैव चेन्ज्ड वेरी फास्ट भास्कर ! वी आर ट्राइंग आवर बेस्ट टू एडजस्ट...

फादरो सैह कयलथिन । मुदा ई समझौता भास्कर नहि कऽ पबैत अछि । प्रतिदिन ओकरा औनाहटि आ टकराहटि होइत छैक । सभ दिन ओ चाहैत अछि जे जतेक लोक भेंट करऽ आयल छैक तकरा सुनय पहिने...ओकरा सभसँ भेंट करय

पहिने । मुदा दसटा-पाँचटा टोपीवला पैरवीकार चकचक खादी पहिरि भोरेसँ बाट छेकने रहैत छैक...। भास्करक मोन तरंगि जाइत छैक । ओही तरंगमे किछु कहि दैत छैक वा ककरो नहि सुनैत छैक पैरवी, तऽ शिकायत जाय लगैत छैक— पटना आ फेर एकटा अप्रत्याशित स्थानान्तरण ।

आरतीक चिट्ठी अबैत रहैत छैक । छोट सन्तुलित चिट्ठी । जानि-बूझिकऽ ओहो पैघ पत्र नहि लिखैत छैक, बेशी पत्र नहि लिखैत छैक । किरणक आँखिमे आरतीक नाम देखितहिँ स्पष्ट शंकालु चमक आबि जाइत छैक । भास्कर ओइ चमककें नीक जकाँ चीन्हि गेल छैक ।

आरतियो ओकर विवशता बूझि गेल छैक भरिसक । काजक अतिरिक्त किछुओ फाजिल नहि लिखैत छैक । ओ पत्र भास्कर किरणोकें देखा दैत छैक । किरणक आँखिक ओ शंकालु चमक क्रमशः बिला जाइत छैक ।

अपन वचन निभौने छलैक आरती । परीक्षाक बादे अपन सभटा नोट्स पठा देने छलैक । ओकर रिजल्ट बहुत बादमे भेलैक । ओकर नाम प्रथम श्रेणीमे प्रथम देखि भास्करक आँखिमे नोर आबि गेलैक । आरतीकें पैघ सन चिट्ठी लिखलकै—"आइ अहाँक रिजल्ट देखि आँखिमे नोर आबि गेल आरती ! कतेक संकुचित आ कमजोर छी हम । हम्मर नाम ओइ स्थानपर पढ़िकऽ अहाँ अपने अखबार लेने हँसैत अबैत छलहुँ । मात्र हमरा हँसैत देखबा लेल ।

सभ लोक मुदा अहीं सन नहि होइत अछि । एतऽ जकर हमरासँ प्रतियोगिता छैक वा नहि छैक...सेहो हमरा छल-बलसँ कहुना हरा ठेलिकऽ आगू बढ़ि जाय लेल तैयार अछि । जे आगूओ अछि हमरासँ सेहो हमर क्रिया-कलापमे अनावश्यक रुचि रखैत अछि आ विद्रूप करैत रस लैत अछि । एकरा सभक लेल हम पागल आ बताह छी— आदर्शवादी सनकी । प्रशासन लेल एकदम अनुपयुक्त आ अक्षम छी । प्रशासनमे 'टैक्ट' चाही, डिप्लोमेसी चाही, नेतृत्वक क्षमता चाही—खोखला आदर्श नहि । सत्य आ सिद्धान्त नहि— व्यवहारपरक चालाक बुद्धि । उदार चारित्रिक क्षमता आ मानवीय संस्पर्श नहि...कुटिल स्वार्थपूर्ण चतुरता आ पदलोभी अवसरवादी चाटुकारिता । एतबे दिनमे लगैत अछि जेना कहाँ आबि गेलहुँ हम ! ट्रेनिंग समाप्त कऽ प्रारम्भे कयने छी कैरियर...आ लागि रहल अछि जेना गलत ट्रैकपर आबि गेल होइ...''

जेना-जेना समय बितलैक ई अनुभव आर गाढ़ होइत गेलैक । ओकरा सम्बन्धमे विभागमे तरह-तरहक खिस्सा भरि गेलैक, जेना ओकर सनकी स्वभावसँ

तंग आबि ओकर पत्नी दू बेर आत्महत्याक कोशिश कऽ चुकल छैक, जेना आफिसमे आबि चपरासीकेँ पहिने वैह सलामी ठोकैत छैक...जेना ओकर आफिसमे हरदम साधु-महात्मा सभ बैसल रहैत छैक...जेना प्रशासनक कोनो काजसँ ओकरा मतलब नहि रहैत छैक, जतऽ जाइत अछि एकटा गोष्ठी बना लैत अछि जाहिमे सभ दिन सत्य, समानता आ मनुष्यत्वपर ओकर प्रवचन होइत छैक...आदि-आदि। भास्करकेँ सभटा सुनल छैक, मुदा एकर प्रतिवाद करबाक ने इच्छा छैक ने लूरि। खिस्सा पसरल जाइत छैक आ ओकर विरक्त मौनकेँ स्वीकृति रूपमे प्रचारित कयल जाइत छै-जिला स्तरसँ मुख्यमंत्री धरि। दबल मुहेँ विपक्षी दल आ विक्षुब्ध सरकारी दल इहो बजैत सुनल जाइत अछि-अपन जातिक छनि, तेँ मुख्यमंत्री एहन अयोग्य अफसरकेँ बर्दाश्त करैत छथिन। तेँ ओकरा साहस होइत छैक जे जनताक प्रतिनिधिक एम.एल.ए., एम.एल.सी. आ कोनो नेताक अपमान कऽ सकय। छोटभैया नेता आ सरकारी पक्षक वक्ता सभ सौंसे कहि अबैत छथिन- 'एहन-एहन दू-चारि टा अफसर देब आर, तऽ गुजर कोना हैत हमरा सभक ? लोकक काज नहि करा सकबैक...तऽ किएक पूछत लोक ? पठबियौ कोनो ढंगक लोककेँ...हटाउ अइ पगला बगुलाभगतकेँ। कम्बल ओढ़िकऽ घी पीबैत अछि आ ऊपरसँ आदर्श झाड़ैत अछि।'

भास्कर बोरिया-बिस्तर बान्हिकऽ तैयार रहैत अछि। एक ठामसँ दोसर ठाम। एक जिलासँ दोसर जिला करैत-करैत पाँच वर्ष बीति जाइत छैक। भास्कर ओहिना 'मिस फिट' बनल रहि जाइत अछि प्रशासनिक यंत्रमे।

पोथी कीनैत अछि आ पढ़ि जाइत अछि। इएह क्रम एकटा सान्त्वना दैत छैक। प्राइवेटसँ एम.ए.क परीक्षा दऽ दैत अछि आ राजाकेँ दऽ अबैत छैक फादर मर्फीक संरक्षणमे। भास्करक मोनमे फेर कोनो संकल्प जनमिकऽ मजबूत होबऽ लगैत छैक।

मुन्नी पाँच वर्षसँ ऊपरक भऽ गेलैक। राजाक डेरापर नहि रहलासँ बड़ उदास लगैत छैक ओकरा। किरण तऽ बताहि सन भऽ जाइत छैक। भास्कर बुझबैत छैक...राजा पैघ भेल, आइ स्कूलमे अछि...फेर कालेजमे पढ़त। ओ आब कोना रहत सभदिन अहाँक संग ? मुन्नीकेँ देखियौ...अनमन अहींसन भेल जाइत अछि।

किरण उदास भेल कहैत छैक- सैह ने अदृष्ट छैक ! बपमुँही बेटी होइत तऽ भागमन्त होइत। नहि जानि केहन कपार लऽ जनमल छथि अइ अभगलीक कोखिसँ !"

भास्कर चौंकल-"की बाजि रहल छी अहाँ किरण ? अहाँ अभगली किएक छी...कोन दुख आ अभाव अछि अहाँकेँ...?

किरण ओहिना उदास स्वरमे कहलकै-"हमरा सन अभगली के हैत आर ? भरल-पूरल हवेलीमे आयल रही, सभटा जरिकऽ सुड्डाह भऽ गेल। धन गेल-समाङ्ग गेल। अहाँ सन स्वामी भेटल- लाखमे एक। एतेक पैघ ओहदा भेटल, जकरा लेल तरसैत अछि लोक...जकरासँ ईर्ष्या रखैत अछि लोक। सोन सन-सन बेटा-बेटी भेल। मुदा स्वामीकेँ सुखी नहि देखि सकलौं कहियो। अहाँक चेहरापर हँसी देखबा लेल तरसि गेलहुँ। अहाँ जे चाहैत छी...जे अहाँक मोनमे अछि, से नहि कऽ पबैत छी अहाँ। सभक मुँह देखि कमजोर भऽ जाइत छी अहाँ...अनिच्छापूर्वक ई बोझ ऊघने जाइत छी..." बजैत-बजैत कानऽ लगलैक किरण।

भास्कर ओकर पीठपर स्नेहसँ हाथ फेरैत कहलकै-"अहाँ लोकनि हमर कमजोरी नहि छी किरण ! शक्ति छी हमर। अहाँ लेल नहि रुकल छी हम। जहिआ लागत जे आर बेसी टिकब आब सम्भव नहि...विदा भऽ जायब। अहाँ तऽ चिर-संगिनी, शक्तिक मूल स्रोत छी हमर। फेर कहिओ ने सोचब जे अहाँ अभागलि छी। बड़ कष्ट भेल हमरा अहाँक बात सुनिकऽ। अभागल सभक कष्ट दूर होइ-ओकरा सामर्थ्य भेटै...सैह तऽ लड़ाइ अछि हमर। अपने घरमे, हमरा चलते क्यो अपन भाग्य कोसऽ लागत तऽ अनकर भाग्य लेल कोना लड़ि सकब हम ?

-सैह तऽ कहै छी हम। हमर सब बात अहाँक लेल दुखक कारण भऽ जाइत अछि। केहन भाग अछि हमर...

भास्कर ओकर मुँहपर हाथ राखि दैत छैक- "फेर वैह बात ! अभाग हेतैक अहाँक दुश्मनक। अहाँ हँसू-बाजू-गाउ। आ मुन्नी ! हमर कोरामे आ। एकटा गीत सुना माँकेँ। खुशीवला गीत। माँ सेहो गौथुन। तोरा संग हमहूँ गायब।" मुन्नीकेँ पप्पाक अइ अप्रत्याशित दुलारक कोनो अर्थ नहि लगैत छैक। पप्पाक कोरामे आबि मुलुर-मुलुर मुँह ताकऽ लगैत छैक,-कोन गीत गाउ पप्पा...? "माँ तोंही शुरू कर ने !" भास्करो जिद्द कऽ दैत छैक-सत्ते किरण ! आइ अहीं शुरू करू। बड़ दिन भऽ गेल अहाँक गीत सुनना। गाममे कोना नहुँए-नहुँए गाबि सुनबैत छलहुँ- भरि-भरि राति। गाउ ने किरण...

किरणक आँखिसँ नोर भट-भट खसऽ लगलैक-"आब की मोनो अछि ओ सभ गीत...! नहि जानि कहिया बिसरि गेल। एक्को पाँती ने रहल मोन।

-"हम मोन पाड़ि दैत छी किरण !" भास्कर झूठ-मूठ मोन पाड़ैत कहलकै-

आजि रजनि बड़ भागिनी लेख्यहुँ
पेख्यहुँ पिया-मुख चन्दा।

मुन्नी बीचेमे बजलैक– ई कोन गीत भेलैक पप्पा ! अहाँ तऽ फकरा पढ़ै छी । किरण हँसलैक । बेटीक पकठोसल गप्पपर ओकर उदासी– ओकर नोर सभ बिला गेलैक ।

मुन्नी बापक कोरासँ माइक कोरामे आबि गेल–"नै अबै छनि गीत गाबऽ पप्पाकेँ । तोही गा ने ! नै गेबैं तऽ खिस्सा कह । कहिओ ने कहै छैं खिस्सा । किरण दुलारसँ कहलकै– ''पप्पा लग जो । वैह कहथुन तोरा । बड़ खिस्सा अबैत छनि हुनका ।''

मुन्नी फेर मायक कोरासँ बापक कोरामे आबि गेल– सत्ते पप्पा ? हमरा तऽ कहियो ने कहै छी कोनो खिस्सा... ?

भास्कर मुन्नीकेँ छातीसँ सटा लेलकै– अपन संघर्षमे... अपन समस्यामे ततेक व्यस्त आ केन्द्रित भऽ गेल अछि ओ जे मोने ने रहलैक जे एकटा बेटी छैक, ओकरा पप्पा चाहिऐक... खिस्सा चाहिऐक । किरण ठीके कहै छलैक ।

मुन्नी छातीसँ मूड़ी अलगा कहलकै– ''कहू ने खिस्सा पप्पा !''

भास्कर कहऽ लगलैक । कठरी बाबाजीक खिस्सा ।

बाबी फेर जीबि उठलैक... हवेलीक ओ घर... बाबीक देहसँ सटल भास्कर आ चोरबाकेँ टेकैत कठरी बाबाजी– ''के तोँ थिका हौ ? के थिका ? कहाँ जाइ छऽ ? हमरा नै कहै छऽ ?'' भास्कर कहने जाइत छैक विभोर...

मुन्नी सूति रहैत छैक । ओकरा आस्तेसँ कात कऽ दैत छैक भास्कर । किरण जागि रहल छैक । ओकरा समीप घीचि लैत छैक । छातीसँ लागलि सिसकी सुनै छैक ओकर... ।

–''कानि रहल छी ?''

–''नै तऽ !'' किरणक सिसकी बन्द भऽ जाइत छैक ।

भास्करक बन्हन शिथिल होमऽ लगलैक– "हमरासँ कोनो अपराध भेल ? कहिओ उपेक्षा कयलहुँ अहाँक हम ? बाजू किरण...एना कानू नहि... ।''

किरण सम्हरि गेल छलैक– ''उपेक्षा नहि । ओ अहाँ ककरो कैये ने सकैत छियैक, अपन दुश्मनोक नहि । मुदा उष्णता... कहाँ हेरा गेल हमर–अहाँक सम्बन्धक ओ उष्णता आ आवेग... ।

भास्कर हँसलैक– समय लऽ गेल । ओ उष्णता आ आवेग कतऽसँ औत

आब ? हमरा लोकनि प्रौढ़ भऽ रहल छी ।

किरण हँसलैक– 'सुकुर जे बूढ़ा-बूढ़ी नहि कहलहुँ । पचीसमे बरखमे सभ सुख-मनोरथ सठि गेल... ।

भास्करक चेहरापर बहुत दिनुका बाद एकटा दुष्ट हँसी पसरि गेलैक– की-की सुख-मनोरथ रहि गेल... कने सुनी तऽ... ?

किरण कहलकै किछु नहि । बाँहिक बन्हन मजगूत भऽ गेलैक । ओकर सिहरनसँ भास्करक सम्पूर्ण शरीर गनगना उठलैक । किरणक सम्पूर्ण शरीर ताल-लय युक्त तरंगमे थिरकि रहल छलैक ।

आवेग समाप्तो भेलापर वैह उष्णता, ओहने गर्मी । भास्कर फुसफुसाकऽ किरणक कानमे कहलकै– देखलिऐ किरण...हेरायल किछुओ ने रहैत छैक– ने तऽ सम्बन्धक उष्णता, ने प्रगाढ़ता । खाली समयक खोल तरमे नुकायल रहैत छैक । कोनो एकटा आत्मीय क्षणमे अनायास उघरि जाइत छैक सभ-किछु । अहाँ तऽ ओहिना छी किरण... बल्कि ओहूसँ नीक... ।

किरण पुनः एकटा उन्मादक आवेगक संग लपटि गेलैक– ''अहूँ तऽ बुढ़ारीमे भारी निर्लज्ज भऽ गेल छी ।''

आवेग शिथिल भेलापर आँखि मुना गेलैक किरणक । भोर धरि सूतलि रहल । जागलि तऽ भास्करकेँ बिछौनपर बैसल देखलकै । डर जकाँ भेलैक– एना किएक बैसल छथि ?

किरणक पुछबासँ पहिने भास्कर स्वयम् कहलकै– ''हम निर्णय कऽ लेलहुँ किरण ! रातिए निर्णय कऽ लेलहुँ । आब आर टारलासँ नहि चलत काज । राति लागल जेना बहुत-किछु छीनि लेलक अछि ई नौकरी । अइ नौकरीक सङ्ग रहब तऽ नहि जानि आर की-की छिना जायत । ओइसँ पहिने हमहीं एकरा छोड़ि देबैक । अहाँ की कहै छी किरण....

किरण किछु नहि कहलकै, मुदा भास्करकेँ बुझबामे आपत्ति नहि रहलैक जे ओ ओकर संग छैक । ओ उत्साहित भऽ उठल । फेर शिकायत गेल छैक । कोनो स्थानान्तरण आदेश बाटेमे हेतैक ।

आदेश भेटलैक । भास्कर प्रस्तुत छल । ओकरे संग अपन बड़का पत्र, त्यागपत्र पठा देलकै, जकर एक प्रति प्रेसकेँ पठबा देलकै । प्राते भेने अखबारमे सनसनी छलैक । प्रान्तक सभ अखबारमे मुखपृष्ठपर न्यूज । देशक आनो अखबार

देलकै न्यूज । एकटा भारी हंगामा आ विवाद ठाढ़ भऽ गेलैक । ककरो-ककरो ई एकटा पैघ साहसिक डेग लगलैक, तऽ ककरो स्पष्ट पब्लिसिटी स्टण्ट । भास्करकेँ ओइ टीका-टिप्पणीमे रुचि नहि छलैक । ओ निर्णय कऽ चुकल छल ।

जहिआ चार्ज दऽ विदा भऽ रहल छल... किरणकेँ पूछि लेलकै– "अहाँकेँ कोनो अफसोच तऽ नहि भऽ रहल अछि किरण ?"

किरण आश्चर्यसँ पुछलकै– कथीक अफसोच ?

भास्कर ओकर मोनक थाह लैत कहलकै– "ई बंगला छुटबाक अफसोच । हवेली छूटल... बंगलीमे अयलहुँ । आब एतऽसँ मास्टरक खोपड़ीमे चलब... ।

किरण पूर्ण उत्साहसँ कहलकै– हमरा लेल तऽ जतऽ अहाँ, सैह सभसँ नीक स्थान । जतऽ अहाँक ठोरपर हँसी, से स्थान हमरा लेल स्वर्ग...

भास्कर कृतज्ञतासँ कहलकै– अहाँक ई उपकार मोन रहत किरण... चिरदिन मोन रहत ।

विदा करबा लेल एक पतिआनीसँ ठाढ़ सम्पूर्ण स्टाफ हाथ जोड़ने छलैक । सभक आँखि भीजल छलैक । ककरो आँखिमे विद्रूप वा निष्कृति भेटबाक भाव नहि । एकाएक की भऽ गेलैक एकरा सभकेँ ?

पटनामे डेरा भेटैत देरी किरण जिद्द धऽ लेलकै– "राजाकेँ लऽ अनियौक डेरामे आब । ओकरा बिना मोन नै लगैत अछि एक्को क्षण । आब कोन बदलीक डर अछि ? अपन डेरा अछि, तखन किएक रहत नेन्ना होस्टलमे ?"

भास्कर बड़ मुस्किलसँ बुझौलकै ओकरा– "कमसँ कम किछु दिन रुकि जाउ । ओतऽ बड़ नीक लोकक संरक्षणमे अछि– देवता सन लोक । हमरा मानितो बड़ छलाह फादर मर्फी । राजाकेँ अपन बेटा जकाँ मानैत हेथिन, अहाँ निश्चिन्त रहू । नै मोन लगतैक ओकर तऽ लऽ अनबै डेरामे । शनि रवि कऽ तऽ ओनाहो अयबे करत, फादरसँ अनुमति लऽकऽ ।

आरती सेहो आयल रहैक ओकर डेरा देखऽ । एकसरे । सिनहा साहब कतहु बाहर गेल छलथिन । आरतीकेँ देखि किरणक आँखिमे वैह चमक फेर स्पष्ट भऽ उठलैक । आरती नहि देखलकै, मुदा भास्कर स्पष्ट देखि लेलकै ।

ओ झट परिचय करा देलकै आ आरतीसँ कहलकै– "किरण अहाँक बड़ आभारी छथि । अहीं द्वारे आइ पटनामे आबि सकल छी । अहाँ नोट पठा तगेदा नहि करितहुँ तऽ नहि पार लगैत हमरा बुते एम.ए. कयनाइ ।"

आरतीक बाजऽसँ पहिने किरण कहलकै– "सत्ते अहाँक बड़ उपकार अछि । ओइ काजमे हिनकर एकदम मोन नहि लगैत छलनि ।"

–"सभ काजक सैह हाल छैक । हम अपनेक नाम लऽ सकैत छी– "पैघ छी अहाँसँ ?"

किरण हड़बड़ा कऽ कहलकै– हमर भाग... । हिनका छोड़ि आर क्यो तऽ नहि बजबै अछि नाम लऽकऽ । आब तऽ इहो अहाँ, हे, ऐ सऽ काज चलबऽ लगलाह अछि । किछु दिनमे राजा-माय, मुन्नी-माय कहि सोर पाड़ऽ लगताह...

आरती हँसलैक । किरणकेँ मोने-मोन ईर्ष्या भेलैक । ओकरासँ कतेक नव...कतेक जवान लागि रहल छलैक आरती ! ओ वयसमे छोट भैयोकऽ ओकर जेठ बहीन सन लागि रहल छलैक ।

किछु काल गप्प-सप्पक बाद चलबा काल आरती आग्रह कयलकै– एक दिन आउ भास्कर संगे हमर डेरा... पप्पोसँ भेंट भऽ जायत । अबस्स अनबनि भास्कर !

भास्कर मूड़ी डोला अपन स्वीकृति देलकै । जाइत-जाइत आरती फेर कहलकै– पटना युनिभरसिटीमे नहि भेल अहाँक तकर दुख अछि हमरा...। जगह ओतहु छलैक । मुदा आइ-काल्हि तऽ सभ ठाम वैह हाल छैक । पैरबी आ प्रभाव नै तऽ अहाँ सन रिजल्टवलाकेँ किएक दोसर युनिभरसिटीमे जाय पड़ितै ।

भास्कर ओकर बात कटैत कहलकै– "एक्के बात छैक । मतलब पढ़ाबऽसँ छैक । आ नीक विद्यार्थीसँ कठिन छैक कमजोर आ औसत विद्यार्थीकेँ पढ़ौनाइ ।

आरती कहलकै– अहाँ कोन दुनियाँमे रहै छी भास्कर ? आइ-काल्हि पढ़बा लेल के कालेज अबैत अछि ? एक सत्रमे कालेज खुजले कतेक दिन रहैत छैक ? नाम लिखा जाइ छैक आ परीक्षा आगू-पाछू होइत रहैत छैक । हम प्रीमियर युनिभरसिटीक गप्प कहि रहल छी, ताहीसँ आन-आन युनिभरसिटीक हाल बूझि लिअऽ । खैर, से तऽ अपने देखि लेबैक । अखबारमे तऽ बड़ पढ़ने हैब– आब असली नजारा सेहो देखि लिऔक ।

नजारा वास्तवमे बड़ खराब छलैक । पहिले दिनसँ आफत शुरू भऽ गेलैक भास्करक लेल । जिम्हरे जाय, जही क्लास लग दने जाय... ओकरापर रनिंग

कमेण्टरी शुरू भऽ जाइ–

—बड़ा बौड़म प्रोफेसर हौ रे ! कलक्टरी छोड़ि के मास्टरी करे आयल हौ...

—बड़ी गीता रामायण पढ़ौतउ रे बाउ... चेति ले अभी से । अंगरेजी के प्रोफेसर पर नहि जो... बड़का गो पण्डीजी हौ–

—माथा किछु खराब हइ रे... दू बेर काँके रिटर्न हौ–

—पागल से अलगे रहिऐ रे भाइ... काटियौ लै छै ।

कमेण्टरीक संग ठहाका । पिहकारी । अभद्र हँसी । बाट चलब मस्किल कऽ देलकै भास्करक । ओकर छात्र सभ अपन गुरुक स्वागत लेल पूर्णरूपसँ तैयार छलैक– पूरा विवरणक संग ।

सहकर्मी प्राध्यापक लोकनिक प्रतिक्रिया आर खराब छलैक । जाइत-अबैत स्टाफरूम वा बाट-घाटमे भास्कर सुनि लैत छलैक ।

—बड़का इमेज लऽकऽ आयल छथि ! आइ.ए.एस.कें लात मारि प्राध्यापक । तकरे रोब देखबऽ चाहैत छथि हमरालोकनिपर ।

—मुदा वर्मा साहब ! हमरा कोनो अर्थ नहि लगैत अछि । कोनो सज्ञान मनुक्ख कलक्टरी छोड़ि प्रोफेसरीमे आबि सकैत अछि ?

—कोनो भितरिया बात हेतैक तिवारीजी ! जरूर कोनो अभियोग छल हेतैक– खूब गम्भीर अभियोग । बचबा लेल भागि पड़ायल अछि ।

—नै यौ ! अनेरो बतंगड़ करै छी अहाँ लोकनि । एक्सेपसनल मेरिट छैक । अखबारमे ओतेक हंगामा भेल रहैक एकर त्यागपत्रपर ! सभटा बिसरि गेल, हालेके तऽ बात छैक ।'' प्रोफेसर लाल कहलथिन ।

हुनका श्रीवास्तव लुलुआ लेलकनि– खाक एक्सेपसनल मेरिट ! टौपरसँ कम के अछि आब कालेजमे ? ढौये ढाकी तऽ फस्ट क्लास होइ छै आब । एम.ए. सेहो पटना विश्वविद्यालयसँ नहि छथि । हमरा लोकनिक मेरिट कतऽ हिनकासँ दब्ब अछि ।

भास्कर सभटा सुनिकऽ अनठा दैत छैक । कालेजक स्टाफरूमक वातावरण आ ओकर गप्प ओकरा कने कोनादन लगैत छैक । मुदा ओ जल्दी कोनो प्रतिक्रिया नहि देखबैत अछि । पछिला प्रयासक कटु अनुभव ओकरा बान्हि देने छलैक । ओ

चुपचाप सभटा सहि जाइत छल । ककरो तऽ ने कहै छलै, किरणोकें नहि । आस लगौने रहै अछि जे ई सभ उत्पात, उपद्रव शान्त भऽ जयतैक । मुदा दिनानुदिन ओकर मात्रा बढ़ल जाइत छैक । भास्करक मानसिक तनाव बढ़ऽ लगैत छैक ।

किरण बूझि जाइत छैक । एक दिन बहटारबा लेल जिद कऽकऽ ओकरा आरतीक डेरा लऽ जाइत छैक । भास्करकें बड़ आश्चर्य होइत छैक । सिनहा साहब किरणकें बड़ पसिन्द करै छथिन, बेटी बना लैत छथिन ।

किरणो आरतीक संग बेशी घनिष्ठ भऽ जाइत अछि । उपराग दैत छैक– अहाँ तऽ बस्स बीध कऽ निपत्ता भऽ गेलहुँ ? दोबारा खोजो-खबरि नहि ।

भास्करक आश्चर्य आरो बढ़ि जाइत छैक । किरण रहस्यमयी बनि जाइत छैक । आँखिमे ओ शंकालु चमक आ ठोरपर निमंत्रण ।

आरती आबऽ-जाय लगैत छैक– बेशी-बेशी काल रूकऽ लगै छै । भास्करक संग ओकर घण्टो बहस चलैत छैक, अंग्रेजीमे बेशीकाल । किछु नहि बूझि अकच्छ भऽ किरण ओतऽसँ उठि जाइत अछि । धीयो-पुताक संग किरण एकदम घुलि-मिलि गेल छैक । मुन्नी आण्टी-आण्टी कहैत रहैत छैक आ राजा जहिआ होस्टलसँ डेरामे आबि जाइत छैक ओकर संग एकदम बच्चा बनि जाइत छैक आरती । दिन भरि दुनूक अंग्रेजीमे बकर-बकर । शुरू-शुरूमे बड़ नीक लगलै किरणकें, बेटा फटाफट अंग्रेजी बजैत छलैक । फेर ओकरा सभटा अति लागल लगलै– एना किएक बैसलि रहैत छैक आरती भरि-भरि दिन । बेशी-बेशी राति धरि । आबऽ-जायक निमंत्रण देने छलैक । अड्डा मारिकऽ जमि जाय नहि कहने छलैक ।

एकदिन भास्कर लग उगलि देलकै किरण— ''ई तऽ बेस कयलनि अहाँक दोस्त ! नोत देलियनि तऽ अड्डा मारऽ लगलीह । एतेक किएक अबै जाइ छथि अहाँक आरती ?

किरणक बातक भँगिमापर बड़ तामस भेलैक भास्करकें । डाँटि लेलकै– ''पहिनहुँ मना कऽ चुकल छी अहाँकें... आरती लेल छोट बात ने सोचू ने बाजू... ओ बड़ उच्च विचारक छथि, सुनती तऽ बड़ दुख हेतनि हुनका ।''

किरण ओकर डाँटबकें दोसरे अर्थमे लेलकै– ''हुनका अधलाह लगतनि तकर बड़ चिन्ता अछि अहाँकें ! मुदा एना कुमारि लड़की भऽकऽ एतेक राति धरि अड्डा मारने रहैत छथि, से अधलाह नहि लगै अछि । बापोकें कोना आँखि निपट्ट भेल छनि से नहि जानि । एहन अजग्गि बेटी... !

भास्करक पित्त लहरि उठलैक– चुप्प रहू किरण ! अहाँ सभटा मर्यादा तोड़ने जा रहल छी । अपनासँ श्रेष्ठ लेल कोना बाजी, सेहो बिसरि गेल अहाँकेँ ?

किरण सोहो सुरमे बजैत रहलैक– आब तऽ हम बनबे करब असभ्य, अलूरि । कोनो ज्ञान अछि हमरा लोकनिकेँ ! मूर्ख जाहिल छी हम सभ ।

भास्कर नरम भऽ उठलैक– अनेरो हमरा तामस चढ़ा दैत छी किरण ! हमर से मतलब नहि छल । अहाँ बुधियारि आ सुसभ्य छी, मुदा नहि जानि अहाँकेँ की भऽ जाइ अछि आरती बेरमे ? सभटा ज्ञान हेरा जाइए अहाँक ।

किरण उग्रतासँ कहलकै– हम कहू जे की भ' जाइ-ए... ?

भास्कर मुँह ताकऽ लगलैक । किरण स्पष्ट कहलकै– सौतिया डाह ।

"किरण !" ततेक जोरसँ चिचिआयल भास्कर जे सौसेँ डेरा गनगना उठलैक । दोसर कोठलीसँ आरती दौड़ल अयलैक, राजा आ मुन्नी सेहो भागल अयलैक ।

–"की भेल भास्कर ?" आरतीक स्वरमे चिन्ता छलैक ।

किछु कहि नहि भेलैक । चुप्पे रहल भास्कर । धीया-पुता लग आ आरतियो लग अपन एहन उत्तेजनापर लाज भेलैक ।

किरण चुपचाप उठिकऽ दोसर कोठली चलि गेलैक । आरतीकेँ किछु सन्देह भेलैक मुदा । किछु पुछलकै नै फेर । ओइ दिन जे गेलैक से फेर नहि अयलैक कहिओ । तीन-चारि रवि बीति गेलैक । भास्कर चुप्प छलैक मुदा राजा-मुन्नी जिद्द मारने छलैक– "आरती मौसी लग चल ने माय... किएक ने अबै छथि एतेक दिनसँ ?

आइ दूनू नेनाक प्रश्नक उत्तर क्यो नहि दैत छैक । ओकर सभक जिद्द बढ़ले जाइ छैक । राजा तऽ साफ कहि दैत छैक– "आरती मौसी नहि औथुन तऽ हमहूँ ने अयबौक रविदिन कऽ । दोस्ते सभक संग किम्हरो घूमि आयब..."

किरणक करेजा फाटऽ लगलैक । ओकर अपन बेटा ओकरा नहि चाहैत छैक । ओकरा आरती मौसी चाहिऐक । खाली वैह टा फालतू अछि अइ घरमे । ओकरा क्यो ने चाहैत छैक ।

भास्करक चुप्पी ओकरा आरो कष्ट दैत छैक । ओइ दिन कने कहि देलकै तामसमे अण्ट-शण्ट तकर एतेक मान ! आ ओइ महारानीकेँ सेहो बड़का रोष लागि गेलनि ! ओइ दिनसँ निपत्ता भेल छथि । गेल छथि तऽ गेल रहथु । हम नहि जैबनि नेहोरा करऽ ?

नेहोरा कयलकै किरण । टेलीफोनेपर कानऽ लगलैक– जल्दी आउ आरती ! अन्हेर भऽ गेल ।

आरती किछु बुझबे नहि कयलकै– "की बात छैक ? की अन्हेर भऽ गेल ?

किरणकेँ बाजल नहि जाइत छैक, कनैत-कनैत बेहाल छैक– "हमरा एना नै छोड़ू एकसर । बचा लिअनु हुनका... जल्दी आउ । अस्पतालमे पड़ल छथि बेहोश । पेटमे छूरा मारने छनि ।

आरतीक हाथसँ रिसीवर खसि पड़ैत छैक । गाड़ी निकालि पागल जकाँ हँकैत अछि । एक्सीडेण्ट होइत-होइत बँचैत छैक । गाड़ी अस्पतलाक पोर्टिकोमे छोड़ि दौड़ऽ लगैत अछि आरती ।

ओइ दिनुका बाद कहिओ भेँट नहि छलैक । तमसायल नहि छल ओ, मुदा ओकरा किछु सन्देह भेल छलैक । लागल छलै जेना ओकर बेशी अयनाइ-गेनाइ भास्करक सुखी दाम्पत्यमे दरारि आनि सकैत छैक । ओ नहि गेल छलि तहिआसँ । ने क्यो बजबऽ आयल छलैक । टेलीफोनो नहि अयलैक कहिओ ।

अजुका टेलीफोन सुनि बताहि भऽ गेल आरती । कथुक होश नहि रहलैक । की पहिरने छल.... मुँह केहन छलैक... तकरो होश नहि रहलैक । गाड़ीकेँ बिहाड़ि जकाँ हँकैत अस्पताल पहुँचलि छल ।

बाहर बरण्डामे किरण छलैक, बैंचपर बगलमे बैसल मुन्नी छलैक । एकाध टा अनचिन्हार लोक । आरतीकेँ देखितहिँ चीत्कार कऽ उठलैक किरण । दौड़िकऽ लपटि गेलैक– "अहाँ कहिअनु आरती ! एतेक टा दण्ड हमरा नहि देताह । हमर अपराध एहन नहि छल जकर एतेक टा दण्ड दऽ देता हमरा । अहाँ कहिअनु आरती, अहाँक बात मानताह । हमर नहि सुनै अछि क्यो, देखहो ने दैत अछि ।

आपरेशन थियेटरमे छलैक भास्कर । बाहर टहलैत लोक ओकरे कालेजक छलैक । खबरि सुनि आयल छलैक । मुदा ककरो ठीकसँ बुझल नहि छलैक । ड्यूटी रूमसँ पता लगलैक जे एकटा रिक्शावला बेहोश उठाकऽ अनने छलैक । संगक प्रोफेसर पड़ा गेल छलथिन आ अगल-बगलसँ क्यो संग आबऽ लेल तैयार नहि भेल छलैक । कतेको गाड़ी अयलैक आ चल गेलैक । क्यो तैयार नहि भेलैक

छटपटाइत भास्करकेँ अस्पताल लऽ चलबा लेल । एकटा रिक्शावला एकसरे पहुँचा गेलैक– नामो ने बूझल छलैक ओकरा ।

गलगुल भऽ गेल छलैक घटनास्थल लग । कालेज तक खबरि गेलैक । किछु प्रोफेसर सर्जिकल ब्लौकक इमरजेन्सी विभागसँ पता कयलथिन । भास्करकेँ देखलथिन । किरणकेँ खबरि देलथिन । भास्करकेँ कोनो होश नहि छलैक ।

अस्पताल पहुँचैत-पहुँचैत किरण अर्धमृत भऽ गेल छल । भास्करकेँ देखियो नहि सकलैक । हालति बड़ खराब रहैक । लऽ गेलैक आपरेशन थियेटरमे । बरण्डापर मुन्नीकेँ कोरामे लेने बौआइत किरणकेँ आरती मोन पड़लैक ।

आरतीक आबि गेलासँ किछु साहस भेलैक ओकरा । किछु कालमे सिनहा साहब सेहो आबि गेलिथन । सभटा व्यवस्था भऽ गेलैक । बड़का-बड़का डाक्टर आबिकऽ देखऽ लगलथिन । मुदा किरण नहि देखि सकलै ओकरा अखन तक । सिनहा साहबक नेहोरा करऽ लगलैक– "कने देखा दिअऽ हमरा दूरेसँ, किछु ने बाजब हम, कनबो ने करब... कहिऔ डक्टरबा सभकेँ असली बात कहत, क्यो नहि किछु कहैए ।"

सिनहा साहब ओकर पीठ थपथपा देलथिन– "शान्त रहू बेटी ! सभटा कोशिश भऽ रहल छैक । बाँकी भगवानक हाथ ?"

किरणकेँ राजा मोन पड़लैक । सिनहा साहेबकेँ हाथ जोड़ऽ लगलनि– नेहोरा करै छी, कने हमर बेटाकेँ बजबा दिअऽ स्कूलसँ... कहिऔ जे ओकर बापकेँ पेटमे...

–बताहि भेल छी अहाँ ? नेन्ना अछि अखन । ओ आबिकऽ की करत ? स्कूल फोन कऽ दैत छिअनि फादरकेँ । भोरमे लऽ अनथिन ।

भोरे ? किरणक मोनमे कने आशा जगलैक । भोरखन अपन बापसँ भेंट करऽ आओत राजा । सिनहा साहब ठकि नहि रहल छथिन । भास्कर बँचि जयतैक...

बँचि जयतैक तऽ माफी मांगि लेतैक किरण । फेर नहि करतैक कहिओ अविश्वास । केहन भऽ गेल छलैक ओइ दिनक बाद भास्कर । ने ककरोसँ हँसब, ने बाजब, जेना बड़ पैघ मानसिक यातनामे होइ । किरण बुझैत छलैक ओकर कष्ट। जे सम्पूर्ण समाज आ मानव समुदायकेँ जीतऽ चाहैत छल, तकरेपर सन्देह भेलैक । से क्यो आन नहि कयलकै । अपन स्त्री...ओकर किरण ? जकरापर ओकरा अत्यन्त विश्वास आ गर्व छलैक । ओकर दृष्टिमे किरण छोट बनि गेल छल । से जनैत छल किरण, मुदा ओहो जिदपर अड़ल छल । मानिनीक मान ओकर कर्त्तव्य आ विवेकपर हावी भऽ गेल छलैक ।

मान कऽ बैसलैक भास्करो । घण्टोसँ अस्पतालमे बेहोश पड़ल छैक । किरणक चीत्कार, आरतीक मौन रुदन आ मुन्नीक निश्च्छल आँखिक पुकार– किछु ने सुनि रहल छलैक ओ । कनैत-कनैत बेहाल छलैक मुन्नी– पप्पा लग जायब माँ ! पप्पा लग जायब ।

ओकरे लग जयबा लेल तऽ किरणो कानि रहल छलैक मुदा क्यो जाय नहि दऽ रहल छैक । भास्करकेँ भीतर बन्द रखने छैक, देखहो नहि दैत छैक ।

सिनहा साहबकेँ सभटा हाल कहलकनि प्रोफेसर सभ । किरणकेँ जानि-बूझिकऽ नहि कहने छलैक । एकटा छौड़ाकेँ परीक्षासँ निकालि देने छलैक भास्कर । चोरि करैत पकड़ने छलैक । छौंड़बा जिदपर अड़ल छलैक- "हम नै निकलब । चोरि तऽ सभदिनसँ करैत आयल छी । सभ परीक्षा तऽ चोरिएसँ पास कयने छी । तखन आइ किएक ने करऽ देब चोरी ? अहूँ परीक्षामे घूमि जाउ, देखियौ सभ रूममे जे चोरी भऽ रहल छैक वा नहि ? असगर अहींक रूममे किएक हेतैक स्पेशल कड़ाइ ?...

भास्कर नहि सुनलकै । निकालि देलकै परीक्षासँ । जाइत-जाइत धमकी देलकै ओ छौंड़बा । भास्कर तकर परबाहि नहि कयलकै ।

प्राध्यापक सभ आ प्रिंसिपल मना कयने छलथिन । एकसर नहि जाय देने छलथिन । एकटा प्रोफेसरकेँ संग कऽ देलथिन । मुदा बोरिंग कनाल रोड लग छौंड़बा अकस्मात् झपटलकै किछु गुण्डा सभक संग आ पूरा चक्कू भास्करक पेटमे घोपि पड़ा गेलैक । संगक प्रोफेसर डरे पड़ा गेलथिन आ बड़ी काल धरि ओ सड़कपर ओहिना छटपटाइत रहल । शोणित बड़ निकलि गेलैक ।

सिनहा साहब चिन्तामे डूबि गेलाह । किछु कहलथिन नहि ककरो, मुदा आशंकासँ भितरे-भीतर सिहरि गेलाह । बेटी दिस देखलनि । आपरेशन थियेटरक बन्द दरबज्जापर टकटकी लगौने छलनि । किरणकेँ देखलथिन— विह्वल आतुर प्रतीक्षामे छलैक आशावर्धक समाचारक । बन्द दरबज्जे दिस ओकरो टकटकी छलैक । ओहो ओम्हरे टकटकी लगाकऽ बैसि गेलाह ।

भोर हैबामे बेसी विलम्ब नहि छैक ।

भास्कर बेडपर आबि गेल अछि । होश नहि भेलैक अछि । पेटपर बड़का

पट्टी छैक । खून चढ़ि रहल छैक । तखनेसँ टप-टप-टप ठोपे-ठोपे शोणित चूबि रहल छैक ट्यूबसँ । बाँहिक नसमे सीरिंज घोपल छैक । बेडक एक कात किरण आ दोसर कात आरती बैसल छैक । सिनहा साहब चल गेलथिन । नहि जा रहल छलथिन, मुदा आरती जोर दऽकऽ मुन्नीकें लऽकऽ पठा देलकनि । मुन्नी सूति गेल छलैक । ओकरा अस्पतालमे राखब ठीक नै होइतैक ।

ओना सभ व्यवस्था छैक । पेइंग वार्डमे अछि । सिनहा साहबकें एक बेर डर भेलनि जे होशमे आओत तऽ बिगड़त भास्कर— 'ई स्पेशल ट्रीटमेण्ट किएक ? जेनरल वार्ड नीक रहैत ।' मुदा ओ दोसरे आशंकासँ त्रस्त छलाह । कोनो तरहक खतरा नहि चाहैत छलाह । अपना भरि सब कोशिश भऽ रहल छलैक ।

कोशिश बहुतो लोक कयने छलैक- ने किरण गेलैक, ने आरती । ने एक्को बुन्द जल गेलैक अछि तखनसँ दूनुक मुँहमे । जखन आपरेशन रूमसँ वार्डमे अनलकै, दुनू दूनू कात बैसि गेलैक आ तखनसँ ओहिना बैसल छैक- एकटक भास्करक मुँह देखैत ।

लगैत छैक जेना सूतल होइ भास्कर ! मुँहक रंगति कनिओ मलिन नहि भेल छै.... ओहिना चमकैत आकृति । खाली आँखि बन्द छैक । हाथमे सीरिंज घोपल छैक जाहिपर लिकोप्लास्ट साटल छैक । हाथकें स्थिर कऽ किरण पकड़ने छैक । टप-टप-टप । स्वर नै होइत छैक कोनो । खाली ठोपे-ठोपे ट्यूबमे खसैत देखैत छैक आरती । राति भरि देखैत बैसल छै- कतहु कोनो गड़बड़ी ने होइ ।

भास्करक मुँहसँ किछु शब्द बहराय लगैत छैक...लगैत छैक जेना किछु बाजि रहल होइ । मुदा किछुओ स्पष्ट नहि होइत छैक । किरण मुँह लग कान सटा लैत अछि- केहन मोन अछि ? कोनो जवाब नहि दऽ होइत छैक जेना ! दृष्टिमे बड़ बैचनी आबि जाइत छैक, जेना भीतरसँ कष्ट भऽ रहल होइ । आरती लग घुसकि कहै छैक— किछु कहब ?

स्वर चीन्हि जाइत छैक जेना ! आस्तेसँ मूड़ी हिलबै छैक । बजबामे बड़ कष्ट होइ जेना ! ठोर थरथराइ छै...। किरण विह्वल होइत कहै छै— नै बाजू...नै बाजू किछुओ— डाक्टर मना कयने अछि ।'' भास्करक ठोरपर पीड़ासँ घनीभूत हँसी पसरि जाइत छैक- ''किरण ! बाजऽ दिअऽ हमरा...समय बड़ थोड़ अछि.... आरती अहूँ लग आउ, सुनि लिअऽ दूनू गोटे... आह....बड़ कष्ट अछि किरण...! क्यो आरीसँ चीरि देलक अछि जेना आर-पार ।''

—''नै-नै...'' किरण जोरसँ कानऽ लगलैक- ''एना नै बाजू...। हमरा एतेक पैघ दण्ड नहि दिअऽ... अज्ञानी छी हम ।'' ओहने घनीभूत पीड़ामे ठोर हँसलैक फेर— बताहि ! अहाँकें दण्ड देब ? मुदा बेर आबि गेल अछि । बिन कहने प्राण नै छूटत हमर...सुनि लिअऽ अहाँ दूनू गोटे... ।

आरतीक आँखिसँ टपटप नोर टघरऽ लगैत छैक- कहू ने भास्कर...हम छी... अहाँक लगेमे छी...किरणो छथि... ।

भास्कर जेना बजबाक शक्ति जमा करऽ लगैत अछि ।

बड़ मस्किलसँ शब्द बहराइत छैक- ''हम हारल नहि छी किरण...आरती, हम हारल नहि छी ! अन्हार बड़ बेसी छैक....ओइमे डूबि रहल छी हम...मुदा हारल नहि छी...लड़ाइ जारी रहय ! कहबै राजाकें... नेन्ना अछि अखन...भरिसक बिसरि जाय ! मुदा ई भार रहल दुनू पर....ओकरा बिसरऽ नहि देबै ! कहबैक ओकरा- जे ओकर बाप के चक्कू घोपिकऽ मरि देने रहैक, मुदा ओकर बाप चोर आ बदमाश नहि छलैक...ओ अन्याय आ अनीतिसँ लड़ऽ चाहैत छलैक ! लड़ैत-लड़ैत मारल गेलैक मुदा हारलैक नहि...।''

हकमऽ लगलै भास्कर । साँस घरघरा उठलैक, तैयो जेना झोंकमे होइ ! किरण आ आरती ओकरा शान्त कऽकऽ पाड़ि देबऽ चाहैत छलैक मुदा ओ नै मानलकै- राजाकें अबस्स कहबै किरण... ओकरा बिसरऽ नै देबै.. अहूँ हारब नहि... कानब नहि आरती अहाँ ! किरणक संग देबैक...राजाक संग ।...

दूनू एक्के बेर बजलैक- ''अबस्स देबै...अहाँ चुप्प भऽ जाउ आब ।''

फेर घनीभूत पीड़ाक बीच वैह मोहक हँसी- चुप्पे भऽ रहल छी आब... मुदा खिस्सा खतम नहि भऽ जाय.... कहैत रहबैक आरती राजाकें...मुन्नीकें... । अपन सभ सन्तानकें कहबैक....।

फेर प्रलाप शुरू भऽ गेलैक । शून्यमे तकैत बड़बड़ाय लगलैक....बाबी तों किम्हरसँ आबि गेलैं बाबी....तोहर खिस्सा खतम नै होबऽ देलियो बाबी...खिस्सा चलैत रहतौक । आरती कहलक अछि, किरण कहलक अछि मुदा एकटा बात तों झूठ कहने छलैं । कठरी बाबाजीक देह काठक नै छलै...ओइमे चक्कू घप्पसँ घोपा जाइ छैक...चोरबा सभ आर जोरगर भऽ गेल छै बाबी...ओकरा हाथमे चक्कू सेहो छैक...नग्र छोड़िक पड़ाइ नै छै आब...सभ बाटपर छिड़िआ जाइ छै, सभ बाटपर एक-एकटा कठरी बाबाजी बैसाबऽ पड़तौक ।

उत्तेजना शान्त भऽ गेलैक । देह शिथिल भऽ गेलैक । आरती नाड़ी

देखलकै आ चिचिया उठलैक— नर्स...

किरण देहपर पछाड़ खाकऽ खसलैक । भोर भऽ गेल छलैक । फादर अपने संग राजाकेँ लेने आयल छलथिन । कोठलीमे पैसिते राजाकेँ जोरसँ सटा लेलथिन अपना देहमे...ओह-नो... !

आ ठेहुनियाँ दऽकऽ बेड लग बैसि गेलथिन, आ राजोकेँ बैसा लेलथिन । गराँक क्रास छूबि प्रार्थना कयलथिन । राजा कानऽ लागल । फादर ओकर माथपर हाथ रखैत कहलथिन— डोन्ट क्राइ चाइल्ड ! योर फादर वाज ए होली मैन, प्रे फार हिम...।

राजा फादरक संग प्रार्थनाक मुद्रामे बैसि गेल । आरती कानि रहल छलैक । भास्कर कहने छलैक कानब नहि आरती –कानब नहि- 'व्हेन आइ एम डेड, सिंग नो सैड सौंग फोर मी डियरेस्ट...गुड बाइ बेबी फादर...।

किरण अपन स्वामीक छातीपर बेहोश पड़लि छलि ।

इजोत कोठलीमे पैसि रहल छलैक ।

हवेली नहि छैक आब ! कहिया ने जरि गेलैक ।

रामचन्द्रपुरमे एकटा फूसक घर छैक । चारिटा स्त्री आ दूटा नेन्ना रहै छै ओइमे । सरबन पैघ भऽ रहल छैक...हाइ स्कूलमे पढ़ि रहल छैक । मुन्नी छोट छैक। खिस्सा कहबा लेल बड़ जिद्द करैत छैक । किरण अपनेसँ खिस्सा कहैत छैक– कठरी बाबाजीवला खिस्सा । चोरकेँ टोकारा दैत रहैत छैक ।

पटनामे अपन स्कूलमे राजा ईसाक मूर्ति लग घण्टो ठाढ़ रहैत अछि । अप्पन पप्पा सन लगै छैक ओ मुँह ओकरा । फादर मर्फीसँ पुछैत छैक- ''ईसाकेँ एना सलीबपर के ठोकि देने छनि ?

फादर कहै छथिन- वी हैव डन इट माइ चाइल्ड ! वी हैव आलवेज हैंगड दोज हू ट्राइड टु टेल अस द टुथ....

ह्वाइ फादर....? किएक ?

तलाश जारी छैक । ई खिस्सा चलैत रहतैक ।

●

परिशिष्ट